

तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत

तिरुवाचकम्

2



लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

‘तिरुवाचकम्’, तमिल के नवीं शती के शैवभक्त कवि माणिक्यवाचकर की ‘अध्यात्म-यात्रा’ है। यह भक्ति-काव्य का उच्चतम सोपान है; आत्मा द्वारा ईश्वर के प्रति प्रेमपूर्ण समर्पण और शिव द्वारा अपनी ‘कृपा’—‘अरुळ्’ प्रदान करना इसका मूल आधार है। आस्था और प्रकाश का यह अद्भुत संयोग ईश्वर की अगाध करुणा के रहस्यों को जानने की प्रक्रिया है। तिरुवाचकम् परम्परागत मान्यताओं से अनाबद्ध, अंतर्मन के संकेत पर निरंतर अग्रसर होने वाली कृति है। माणिक्यवाचकर के पदों में अद्भुत भावनापूर्ण आलोड़न है जिनको हृदय में उतार लेना आनन्द-सागर में निमज्जित होने के समान है।

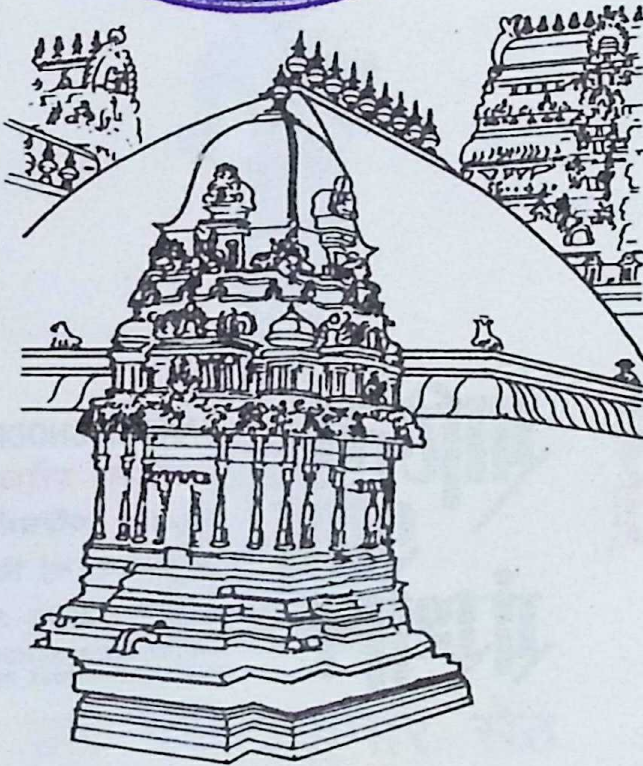
गहन आध्यात्मिक चिंतन, प्रभु-अनुग्रह का साक्षात् अनुभव, अटूट आस्था से आप्लावित ‘तिरुवाचकम्’ मानव और परमतत्त्व ‘शिव’ के सम्बन्ध का भावपूर्ण चित्रण है। कवि मानवमात्र के लिए शिवानुग्रह-प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। अनन्त, स्वप्रकाश, चैतन्य ‘शिवशक्ति’ के प्रति समर्पण से पशुत्व का विनाश होता है; अहंभाव, ‘मैं’ और ‘मेरा’ की अनुभूति से मुक्त होकर मानव अनन्त-ज्ञान की गंगा में स्नान करता है। ‘तिरुवाचकम्’ के इस हिन्दी भावानुवाद में मूल तमिल गीतों की सहज अनुभूति, अभूतपूर्व विरह-वेदना, प्रभु-दर्शन की उत्कट अभिलाषा, प्रभु के करुणापूर्ण अनुग्रह का सजीव, सहज वर्णन सहृदय को द्रवीभूत करने में समर्थ है। परम सौंदर्यमय सत्य की अनुभूतिमयी वाणी भक्ति-भाव से ओतप्रोत है। यह काव्यकृति प्रेरणादायक रहस्यवाद के भावों को संजोये हुए युगों से तमिलभाषी भक्तों के हृदयों को प्रभु-प्रेम के रस से आप्लावित करती रही है। एक भक्त के हृदय की तल्लीनता, एकनिष्ठता और सघन अभिरुचि से युक्त यह अद्भुत काव्य मूल तमिल, देवनागरी लिप्यंतरण एवं हिन्दी भावानुवाद सहित हिन्दी के सहृदय विद्वानों, भक्ति-मार्ग पर अग्रसर जन-मानस और भारतीय साहित्य में अभिरुचि रखने वालों के लिए अमूल्य निधि सिद्ध होगा ऐसा हमारा विश्वास है।

डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ ने अपनी सशक्त, प्रवाहमयी, प्राञ्जल शैली द्वारा इसका अनुवाद हिन्दी साहित्य को अर्पित कर राष्ट्रीय भावात्मक ऐक्य को एक ठोस धरातल देने का महद् अनुष्ठान किया है।

तिरुवाचकम्

तमिल शैवभक्त कवि माणिक्यवाचकर कृत

द्वितीय खण्ड



KUMARAGURU COLLEGE OF TECHNOLOGY
COIMBATORE-641066
UNDER THE AEGIS OF
RAMANANDA ADIGLAR FOUNDATION



साहित्य
शोध
संस्थान

SAHITYA SHODH SANSTHAN

साहित्य शोध संस्थान

8ए/141, पश्चिमी विस्तार क्षेत्र,
करोलबाग, नई दिल्ली-11000.

दूरभाष : 2572-6216

8-A/141, W.E.A. KAROL BAGH
NEW DELHI-110005, PHONE: 2572-6

तिरुवाचकम्

तमिल शैवभक्त कवि माणिकवचकर कृत

(मूल तमिल, देवनागरी लिप्यंतर, हिन्दी भावानुवाद
एवं संक्षिप्त परिचायात्मक विवेचन सहित)



डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

© डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ (जन्म 3.9.1939)

ISBN : 81-85073-21-X

CC : O 31, 1 (R 673); g 152
Q 28 : 417 X 5, 1

DDC : 894.8111009

मूल्य : छः सौ पचास रुपये मात्र (रु. 650/-); दोनों खण्डों का

संस्करण : प्रथम, 2006 ई.

प्रकाशक : साहित्य शोध संस्थान
8ए/141, पश्चिमी विस्तार क्षेत्र,
करौल बाग, नई दिल्ली-110005
फोन : 2572-6216

लेज़र : साहित्य शोध संस्थान

लेज़र : कैपिटल क्रिएशन्ज़, फ्लैट नं. 4,
शुभ्रम् काम्पलेक्स, डी.-96,
मुनीरका (गाँव), नई दिल्ली-110067

पुस्तकबन्ध : गोयल एन्टरप्राइज़िज, दिल्ली-110032

मुद्रक : शकुन प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

Part - II

TIRUVACHKAM

TAMIL ŚAIVA-BHAKTA KAVI
MĀNIKKAVĀŚAKAR

KRIT

with Tamil text, transliteration into Devnāgari,
Translation into Hindi and brief informative note.

Translator : Dr. RAVINDER KUMAR SETH

Publisher : SAHITYA SHODH SANSTHAN

8A/141, W.E.A. Karol Bagh,
New Delhi-110005; Ph. 25726216

Price : Rs. 650/- (Rupees Six hundred fifty only)
Part-I & II

email : drrkseth@hotmail.com

ISBN : 81-85073-21-X

तमिळ् से देवनागरी लिप्यंतर संकेत चिह्न தமிழ்—தேவநாகரி ஒலியாக்கம்

स्वर

அ	-	अ	எ	-	ए
ஆ	-	आ	ஏ	-	ए
இ	-	इ	ஐ	-	ऐ
ஈ	-	ई	ஊ	-	आ'
உ	-	उ	ஓ	-	ओ
ஊ	-	ऊ	ஔ	-	औ

व्यजन

க	-	क, ग, ह	ம	-	म
ங	-	ङ	ய	-	य
ச	-	च, ज, श, स	ர	-	र
ஞ	-	उ	ல	-	ल
ட	-	ट, ड	வ	-	व
ண	-	ण	ழ	-	ळ
த	-	त, द	ள	-	ळ
ந	-	न	ற	-	र
ப	-	प, ब	ன	-	न

ग्रंथाक्षर

ஐ	-	ज	ஹ	-	ह
ஷ	-	ष	க்ஷ	-	क्ष
ஸ	-	स			

Mission

KUMARAGURU COLLEGE OF TECHNOLOGY
an engineering college
par excellence



Kumaraguru College of Technology is committed to provide quality education and Training in Engineering and Technology to prepare our students for life and work equipping them to contribute to the technological, economic and social development of India. The College pursues excellence in providing training to develop a sense of professional responsibility, social and cultural awareness and set the students on the path to leadership.

OUR MOTTO
CHARACTER IS LIFE



RAMANANDA ADIGALAR AUDITORIUM

Kumaraguru College of Technology
Coimbatore - 641 006 Tamil Nadu - INDIA

UNDER THE AEGIS OF
RAMANANDA ADIGALAR FOUNDATION

Phones: [0422] 866424 / 866521 Fax: [0422] 866667

E mail: kcttch@satyam.net.in

**Kumaraguru College of Technology
Coimbatore - 641006**

Kumaraguru College of Technology (KCT), Coimbatore is a leading engineering college in Tamilnadu. The college was established in 1984, by Dharmarathnakara Dr. N. Mahalingam, Chairman, Sakthi Group, under the aegis of Ramanandha Adigalar Foundation (RAF) of which Dr. N. Mahalingam is the Managing Trustee. The college offers the following courses;

Under-Graduate Courses :

4 year B.E/B. Tech Degree in

- i] Civil Engineering
- ii] Mechanical Engineering
- iii] Electrical & Electronics Engineering
- iv] Electronics & Communication Engineering
- v] Computer Science & Engineering
- vi] Textile Technology
- vii] Information Technology
- viii] Mechatronics Engineering

3 year B.Sc. (Applied Science) courses in

- i] Computer Technology
- ii] Apparel & Fashion Technology

Post-Graduate courses :

- 3-Semester ME Industrial Engineering
- 3-Semester M.E. Computer Science and Engineering
- 3-year (MCA) Master of Computer Applications
- 2-year M.Sc. (Applied Science) Computer Technology
- 5-year M.Sc. Software Engineering

Excellent infrastructure, well qualified faculty and an enlightened management, and successive batches of highly motivated and industrious students have brought this college well deserved reputation as a centre of excellence for engineering and technological studies. High academic standards are evidenced by the consistently high percentage of passes, university ranks and gold medals, achieved by the students of this college year after year.

Man making education is imparted through well planned personality development programmes and a variety of co-curricular and extra-curricular activities. The college owes its growth, development and reputation to the dynamic leadership of Dr. N. Mahalingam the Chairman of its governing council and the experience, expertise and untiring efforts of Prof. K. Arumugam, Correspondent of the college.

The concerted efforts of the college placement centre brings scores of leading employers to conduct campus recruitment programmes and select candidates for appointment. Every year nearly a hundred students find gainful and satisfying employment through campus interviews. All the 2200 of our alumni are all very well placed in life after college.

The most important of the features in the 150-acre college campus are 27,000 sq m. of buildings; 51 laboratories; 23 acres of play fields; separate hostels for 500 men and 150 women students; Auditorium of capacity 1800; Indoor games complex and Gymnasium, Staff Quarters, Internet Centre; Students Co-operative Stores; Yoga & Meditation Centre; Music and Fine arts Club; Canteens, etc.

शीर्षक सूची

क्र सं अध्याय	पृष्ठ
(अ) माणिक्यवाचक एवं तिरुवाचकम् विषयक संक्षिप्त परिचय	9-50
प्रथम खण्ड	51-514
1. शिव पुराण : शिव का आदि-अनादि स्वरूप	52-71
2. शिव की कीर्ति : शिवानुग्रह की प्रशस्ति	72-95
3. ब्रह्माण्ड प्रकरण : शिव का स्थूल सूक्ष्म	96-133
4. शिव-चरण प्रशस्तिगान : जगत् की उत्पत्ति	134-179
5. श्रीशतक : भक्ति-वैराग्य का वैचित्र्य	180-295
6. निर्वेद निवेदन : प्रपंच वैराग्य	296-349
7. तिरु ऐम्बावै : ईश-शक्ति से चमत्कृत होना	350-373
8. तिरु अम्मानै : आनन्दोल्लास	374-397
9. मंगल चूर्ण कूटना : आनन्द तन्मयता	398-421
10. भ्रमर-संदेश : शिव-सायुज्य	422-443
11. शिव में एकाकार होना : ताली बजाकर गाना	444-467
12. चाळल् नृत्य : शिव-कारुण्य	468-483
13. पुष्प-चयन गीत : माया जनित विषयों से निवृत्ति	484-499
14. कंदुक गीत : ज्ञान की विजय	500-514
द्वितीय खण्ड	523-984
15. श्री स्कन्ध-दर्शन : प्रपंच शुद्धि	524-535
16. सुनहरा झूला : अनुग्रह शुद्धि	536-547
17. मातृ-पृच्छा दशक : आत्मपूर्णता	548-557
18. कोकिल दशक : आत्म-क्रंदन	558-567
19. दासत्व का अंगीकार	568-577
20. जागरण-गीत : तिरोधान शुद्धि	588-591
21. आदि देवालय-गीत : शाश्वत सत्य	592-605
22. देवालय-गीत : अनुभव लक्षण	606-619
23. अश्रान्ति-दशक : अपरिमेय शिवानन्द	620-633

24.	शरणागति-दशक : पक्वता-निर्णय	634-645
25.	इच्छा-दशक : आत्म-लक्षण	646-659
26.	चमत्कार-दशक : मुक्ति-लक्षण	660-673
27.	संयोग-दशक : अद्वैत-लक्षण	674-687
28.	जीवन-असारता : मुक्ति के उपाय	688-701
29.	अनुग्रह-दशक : महामाया शुद्धि	702-715
30.	गृध्राचल-दशक : सद्गुरु दर्शन	716-725
31.	दर्शन-दशक : नृत्य-दर्शन	726-739
32.	प्रार्थना-दशक : सदामुक्ति	740-753
33.	विगलित हृदय-दशक : आत्म-निवेदन	754-767
34.	जीव-निगलित दशक : शिवानन्द का अतिरेक	768-781
35.	भीति-दशक : आनन्द निमग्नता	782-795
36.	पांड्य-भूमि दशक : शिवानन्द समृद्धि	796-809
37.	कसकर पकड़ना : मुक्ति-मिलन	810-823
38.	स्मृति और पीड़ा : वस्तुनिष्ठता से निवृत्ति	824-837
39.	प्रलाप : शिवानन्द परिपक्वता	838-843
40.	उल्लास-दशक : अनस्यूत आनन्दानुभव	844-853
41.	चमत्कार-दशक : अनिर्वचनीय आनन्द	854-867
42.	शीर्ष-दशक : शिव-सम्प्राप्ति	868-881
43.	श्रीवार्ता : आनन्द बाँटना	882-895
44.	सुविचार दशक : अक्षुण्ण आनन्द में विभोर होना	896-905
45.	यात्रा दशक : अलौकिक आनन्द की अभिव्यक्ति	906-919
46.	सैन्य अभियान : प्रपंच-संग्राम	920-925
47.	श्री छंद : सिद्ध-लक्षण	926-935
48.	आदि चतुर्वेद : आनन्दानुभव का अमोघत्व	936-943
49.	विजय-पताका : जीवोपाधि से निवृत्ति	944-961
50.	आनन्द माला : शिवानुभव लालसा	962-971
51.	विस्मय दशक : ज्ञानदेशिक की अपार करुणा	972-983



Prof. K. ARUMUGAM

Prof. K. ARUMUGAM

Prof. K. Arumugam (73), Correspondent, Kumaraguru College of Technology, has rich experience of a life time as a teacher and educational administrator. After finishing his schooling in his native town, Pollachi, he joined the Government College of Technology, Coimbatore for his under graduate course in Civil Engineering. He passed B.E. Civil Engineering with Honours and took his M.S. in Structural Engineering from Berkley, California in 1959-'61.

His first posting was as a Research Officer in the Central Water and Power Commission, Pune. He worked here for five years before joining the Nachimuthu Polytechnic, Pollachi as its Vice-Principal and Head of Department of Civil Engineering.

In 1965 he was elevated to the post of Principal of this premier institution offering Diploma level courses in Engineering and Technology. He continued in this assignment till 1982 when he took voluntary retirement and assumed the responsibility of Correspondent of Nachimuthu Polytechnic, Pollachi and also the newly started Sakthi Institute of Technology at Sakthi Nagar. During the time that he was the principal of Nachimuthu Polytechnic, he had introduced many new courses and a lot of development activity. He later took up his assignment as Correspondent of Kumaraguru College of Technology.

Prof. Arumugam has travelled widely in the US, Canada and Europe. It is now over four decades that Prof. Arumugam has been associated with Dr. N. Mahalingam in managing the many technical institutions run by the Sakthi Group.

द्वितीय खण्ड

2

तमिल शैवभक्त कवि माणिकवचकर
कृत

तिरुवाचकम्

मूल तमिल पद, देवनागरी लिप्यंतरण
एवं
हिन्दी भाषानुवाद

(पद के बाईं ओर मूल तिरुवाचकम् की पद संख्या दी गई है।
पद के साथ दी गई संख्या क्रमशः तिरुमुरै आठ के साथ
शीर्षक क्रम संख्या तथा पंक्ति क्रमांक दिया गया है।)

15

திருத்தோள்நோக்கம்

तिरुत्तोळ्‌नोक्‌கம்

பிரபஞ்ச சுத்தி

पिरपंच शुक्ति

392. பூத்தாரும் பொய்கைப் புனலிதுவே எனக்கருதி
 பேய்த்தோர் முகக்குறும் பேதைகுண மாகாமே
 தீர்த்தாய் திகழ்தில்லை அம்பலத்தே திருநடஞ்செய்
 கூத்தா உன் சேவடி கூடும்வண்ணந் தோணோக்கம்! 1

392. பூதாரும் பாய்மீபு புனலிதுவே ஐனகருதி
 பேய்தோர் முகக்குறும் பேதைகுணமாகாமே
 தீர்த்தாய் திகழ்தில்லை அம்பலவன் குணம்பரவித்
 துன்றார் குழலினீர் தோணோக்கம் ஆடாமோ!
 (திருமுரே ஆட - 15 பங்கி 1-4)

393. என்றும் பிறந்திறந் தாழாமே ஆண்டுகொண்டான்
 கன்றால் விளவெறிந் தான்பிரமன் காண்பரிய
 குன்றாத சீர்த்தில்லை அம்பலவன் குணம்பரவித்
 துன்றார் குழலினீர் தோணோக்கம் ஆடாமோ! 2

393. ஐனம் பிர்ந்நிர்நாடாமே ஆண்டுகாண்டான்
 கனாலு விளவீர்ந்நான் பிர்மன் காண்பரிய
 குனாட சீர்திலு அம்பலவன் குணம் பரவித்
 துனார் குழலினீர் தோனகமாடாமோ!
 (திருமுரே ஆட - 15 பங்கி 5-8)

15

श्री स्कंध-दर्शन

प्रपंच शुद्धि

392. मृग-मरीचिका को
 कुसुमित कमलसरोवर मानकर
 तृषा बुझाने की चेष्टा में रत हैं
 भ्रमजाल में निमग्न जन
 प्रभो ! तुमने बचाया मुझे
 ऐसी मिथ्यामाया से
 जाज्वल्यमान तिल्लै चित्सभा में
 नर्तित नटराजराज !
 प्राप्त हो जाँ तुम्हारे चरणकमल
 इसी लक्ष्य से हम बालाएँ
 खेल रही हैं तोणोक्कम्।

(तिरुमुरै आठ - 15 पंक्ति 1-4)

393. धेनुकासुर को वृक्षासुर पर दे मारा
 दोनों को ध्वस्त किया था विष्णु ने
 ऐसे कमलनयन के संग कमलासन
 ढूँढ-ढूँढ कर जिसे हार गए
 दोनों के लिए दुर्लभ प्रभु
 अक्षय तिल्लै की चित्सभा में
 नृत्यरत हैं, दयामय प्रभु ने
 उद्धार किया मेरा
 जनन-मरण के भवसागर से
 प्रभु की पुण्यकीर्ति का गान करती हुई
 खेल रही हैं तोणोक्कम्।

(तिरुमुरै आठ - 15 पंक्ति 5-8)

526 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

394. பொருட்பற்றிச் செய்கின்ற பூசனைகள் போல்விளங்கச்
செருப்புற்ற சீரடி வாய்க்கலசம் ஊனமுதம்
விருப்புற்று வேடனார் சேடெறிய மெய்குளிர்தங்கு
அருட்பெற்று நின்றவா தோனோக்கம் ஆடாமோ ! 3

394. पोरुट् पट्टिच् चय्किन् पूशनैगळ् पोन् विळङ्ग
चरुपुट्ट् चीरडि वाय्ककलशम् ऊनमुदम्
विरुपुट्टरु वेडनार् चेडरिय मय्कुळिन्डङ्गु
अरुट्पट्टरु निन्वा तोणाक्कमाडामो !
(तिरुमुறை आठ - 15 पंक्ति 9-12)

395. கற்போலும் நெஞ்சங் கசிந்துருகக் கருணையினால்
நிற்பானைப் போலஎன் நெஞ்சினுள்ளே புகுந்தருளி
நற்பாற் படுத்தென்னை நாடறியத் தானிங்ஙன்
சொற்பால தானவா தோனோக்கம் ஆடாமோ ! 4

395. कर्पोल् नञ्जम् कशिन्दुरुगक् करुणैयिनाल्
निर्पानैप् पोलवन् नञ्जिनुळ्ळे पुगुन्दरुळि
नर्पाल् पडुत्तन्नै नाडरियत् तानिङ्ङन्
चार्पालदानवा तोणोक्कमाडामो !
(तिरुमुறை आठ - 15 पंक्ति 13-16)

396. நிலம்நீர் நெருப்புயிர் நீள்விசம்பு நிலாப்பகலோன்
புலனாய மைந்தனோ டெண்வகையாய்ப் புணர்ந்து
நின்றான்
உலகே மெனத்திசை பத்தெனத்தா னொருவனுமே
பலவாகி நின்றவா தோனோக்கம் ஆடாமோ ! 5

396. निलम्नीर् नरुपुयिर् नीळ् विशुम्बु निलाप्यगलोन्
पुलनाय मैन्दनोर्डण्वगैयायप् पुणन्दु निन्नान्
उलगेळ् नत्तिशै पत्तनत्तनारुवुमे
पलवागि निन्वा तोणाक्कमाडामो !
(तिरुमुறை आठ - 15 पंक्ति 17-20)

394. चाह थी मन में विधि अनुसार पूजा करने की
चले आए व्याध कण्णप्प
धारण किए थे पैरों पर चर्म के पदत्राण
अर्ध्य-जल भरा था मुख-कलश पर
हाथ में था मांस-अमृत निभ नैवेद्य
प्रसन्न हुए तुम इस पूजा से
आदृत हुआ व्याध का निर्मल हृदय
अनुगृहीत कण्णप्प खड़े थे सुधबुध भूल कर
प्रभ महिमा का गान करती हुई
सखियो ! खेलें हम तोणोक्कम्।

(तिरुमुरै आठ - 15 पंक्ति 9-12)

395. पाषाण सदृश मेरे हृदय को
पिघला दिया मृदुल बना दिया
करुणा से करुणामय ने,
प्रकट हुए मेरे समक्ष
और फिर झट में प्रवेश कर गए हृदय में
प्रवर्तित किया शील सदाचार में
और अब प्रेरणा दे रहे हैं
शब्द-चित्र खींचूँ अंतर्दामी प्रभु का
ताकि जान लें जगवासी
दयामय प्रभु ! तुम्हारा यशोगान करती हुई
हम बालाएँ खेल रही हैं तोणोक्कम्।

(तिरुमुरै आठ - 15 पंक्ति 13-16)

396. धरती अंबर अनल अनिल के संग
सलिल फिर चंद्र-सूर्य
तदनंतर मानव
यों विलसे प्रभु अष्टमूर्ति बन
निज सृजित सप्तलोक की दशों दिशा में
एक वह प्रकट हुआ बहुविध रूप में
प्रभो ! तुम्हारा कीर्तिगान करती हुई
खेल रही हैं बालाएँ तोणोक्कम्।

(तिरुमुरै आठ - 15 पंक्ति 17-20)

528 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

397. புத்தன் முதலாய புல்லறிவிற் பல்சமயம்
தத்தம் மதங்களில் தட்டுநுப்புப் பட்டுநிற்கச்
சித்தஞ் சிவமாக்கிச் செய்தனவே தவமாக்கும்
அத்தன் கருணையினால் தோனோக்கம் ஆடாமோ !

6

397. पुत्तन् मुदलाय पुल्लारिविर् पल्चमयम्
तत्तम्मतङ्गाळिर् तट्टुळुपुप् पट्टु निर्कच्
चित्तम् चिवमाविकच् चय्दनवे तवमाक्कुम्
अत्तन् करुणैयिनाल् तोणोक्कमाडामो !

(திருமுரே ஆட - 15 பங்கி 21-24)

398. தீதில்லை மாணி சிவகருமஞ் சிதைத்தானைச்
சாதியும் வேதியன் தாதைதனைத் தாளிரண்டுஞ்
சேதிப்ப ஈசன் திருவருளால் தேவர்தொழ்ப்
பாதகமே சோறு பற்றினவா தோனோக்கம் !

7

398. तीदित्लै माणि शिवकरुमम् चिदैत्तानैच्
चादियुम् वेदियन् तादै तनैत् ताळिरण्डुम्
चेदिप्य ईशन् तिरुवरुळाल् तेवर् ताळप्
पातकमे चोरु पट्टिनवा तोणोक्कम् !

(திருமுரே ஆட - 15 பங்கி 25-28)

399. மானம் அவிந்தோம் மதிமறந்தோம் மங்கைநல்லீர்
வானந் தொழுந்தென்னன் வார்கழலே நினைந்தடியோம்
ஆனந்தக் கூத்தன் அருள்பெறில்நாம் அவ்வணமே
ஆனந்த மாகிநின் றாடாமோ தோனோக்கம் !

8

399. मानमळिन्दोम् मति मरन्दोम् मङ्गै नल्लीर्
वानम् ताळुम् तन्नन् वार्कळले निनैत्तडियोम्
आनन्दक् कूत्तनरुळ् पॅरिल् नामव्वणमे
आनन्दमागि निन्नाडोमो तोणाक्कम् !

(திருமுரே ஆட - 15 பங்கி 29-32)

397. बौद्ध आदि विविध मतमतांतर
 डगमगा रहे हैं स्वयं के बुने भ्रमजाल में
 प्रभु की अपार करुणा से अनुग्रह से
 मेरा हृदय भ्रमरहित है
 चित्त बन गया है शिवमय
 प्रत्येक कार्य मेरा तपस्या तुल्य है
 ऐसी प्रभु-करुणा का गान करती हुई
 सखियो खेलें हम तोणोक्कम्।

(तिरुमुरै आठ - 15 पंक्ति 21-24)

398. शिव-पूजन में विघ्न डालने के अपराध में
 काट दिए दोनों पाँव
 सच्चे वटु चण्डेश ने
 सोचा नहीं कि वह द्विज है और फिर निज तात है
 मुदित ईश ने उत्कृष्ट ऐसा पद दिया चंडेश को
 देवगण भी नमन करते हैं नित्य ही
 इस प्रसंग में देखो पाप भी पुण्य बन गया
 प्रभु की महिमा का गान करती हुई
 सखियो खेलें हम तोणोक्कम्।

(तिरुमुरै आठ - 15 पंक्ति 25-28)

399. ईश के अनुराग रंग में रंग कर
 ललनाओ ! हम
 भूल गई जाति कुल का अभिमान
 भूल गई सुध बुध
 रति है केवल दक्षिणेश के चरण-युगल की
 इसी भांति अनुग्रह पाने के हित
 आनंद-नृत्य करेंगी आनंद बनकर
 सखियो, खेलें हम तोणोक्कम्।

(तिरुमुरै आठ - 15 पंक्ति 29-32)

530 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

400. எண்ணுடை முவர் இராக்கதார்கள் எரிபிழைத்துக்
கண்ணுதல் எந்தை கடைத்தலைமுன் நின்றதற்பின்
எண்ணிலி இந்திரர் எத்தனையோ பிரமர்களும்
மண்மிசை மால்பலர் மாண்டனர்காண் தோனோக்கம்! 9

400. ெண்ணுடை முவர் இராக்கதார்கள் எரிபிழைத்துக்
கண்ணுதல் எந்தை கடைத்தலைமுன் நின்றதற்பின்
எண்ணிலி இந்திரர் எத்தனையோ பிரமர்களும்
மண்மிசை மால்பலர் மாண்டனர்காண் தோனோக்கம்!
(திருமுரே ஆட - 15 பங்கித் 33-36)

401. பங்கயம் ஆமிரம் பூவினிலோர் பூக்குறையத்
தங்கண் இடந்தரன் சேவடிமேல் சாத்தலுமே
சங்கரன் எம்பிரான் சக்கரம்மாற் கருளியவாறு
எங்கும் பரவிநாம் தோனோக்கம் ஆடாமோ! 10

401. பங்கயம் ஆமிரம் பூவினிலோர் பூக்குறையத்
தங்கண் இடந்தரன் சேவடிமேல் சாத்தலுமே
சங்கரன் எம்பிரான் சக்கரம்மாற் கருளியவாறு
எங்கும் பரவிநாம் தோனோக்கம் ஆடாமோ!
(திருமுரே ஆட - 15 பங்கித் 37-40)

402. காம னுடலுமிர் காலன்பற் காய்கதிரோன்
நாமகள் நாசிசிரம் பிரமன் கரம்எரியைச்
சோமன் கலைதலை தக்கனையும் எச்சனையுந்
தூய்மைகள் செய்தவா தோனோக்கம் ஆடாமோ! 11

402. காமனுடலுமிர் காலந் பல் காய் கதிரோன்
நாமகல் நாசி சிரம் பிரமன் கரம்எரியைச்
சோமன் கலைதலை தக்கனையும் எச்சனையுந்
தூய்மைகள் செய்தவா தோனோக்கம் ஆடாமோ!
(திருமுரே ஆட - 15 பங்கித் 41-44)

400. त्रिपुर-दहन के समय
 बच गए तीन असुर दहकती ज्वाल से
 सुकृत उनका कितना बड़ा था
 नियुक्त किया नाथ ने उन्हें
 शिवपुर की द्वार-रक्षा में
 और फिर उसके बाद
 जन्म ले लेकर मरे
 कितने ही विरिंचि और इंद्र भी
 देखो सखियो ! चलो
 खेलें हम तोणोक्कम्।

(तिरुमुरै आठ - 15 पंक्ति 33-36)

401. सहस्र कमलों से पूजा का था संकल्प
 न्यून हुआ एक प्रसून
 कमल-नयन ने निकाला एक नयन
 चढ़ा दिया न्यून सुमन के स्थान पर
 प्रमुदित प्रभु ने प्रदान किया
 विष्णु को चक्रायुध अमोघ
 इस कथा का गान करती हुई
 सखियो, खेलें हम तोणोक्कम्।

(तिरुमुरै आठ - 15 पंक्ति 37-40)

402. प्रभु समक्ष जो भी आए जैसे भी जाए
 अहंकार नष्ट कर अपनाया प्रभु ने
 तजे प्राण काल ने, तनु काम ने
 दंतावलि सूर्य ने, नासिका वाग्देवी ने
 शीर्ष विरिंचि ने, हाथ अग्नि ने
 कला सोम ने, शीर्ष यज्ञपति दक्ष ने
 अनुग्रह बरसाते प्रभु का गान करें
 सखियो खेलें हम तोणोक्कम्।

(तिरुमुरै आठ - 15 पंक्ति 41-44)

532 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

403. பிரமன் அரியென் றிருவருந்தம் பேதைமையால்
பரமம் யாம்பரமம் என்றவர்கள் பதைப்பொடுங்க
அரனார் அழலுருவாய் அங்கே அளவிறந்து
பரமாகி நின்றவா தோணோக்கம் ஆடாமோ ! 12

403. பிரமநரி ஐந்திருவருத் தம் பேதையையால்
பரமம் யாம் பரமம் ஐந்தவர்க ள்பதைப்பொடுங்க
அரனார் அழலுருவாய் அங்கே அளவிறந்து
பரமாகி நின்றவா தோணோக்கம் ஆடாமோ !
(திருமுறை ஆட - 15 பங்கித் 45-48)

404. ஏழைத் தொழும்பனென் எத்தனையோ காலமெல்லாம்
பாழக் கிறைத்தேன் பரம்பரனைப் பணியாதே
ஊழிமுதற் சிந்தாத நன்மணிவந் தென்பிறவித்
தாழைப் பறித்தவா தோணோக்கம் ஆடாமோ ! 13

404. ஏழைத் தொழும்பனென் எத்தனையோ காலமெல்லாம்
பாழக் கிறைத்தேன் பரம்பரனைப் பணியாதே
ஊழிமுதற் சிந்தாத நன்மணிவந் தென்பிறவித்
தாழைப் பறித்தவா தோணோக்கம் ஆடாமோ !
(திருமுறை ஆட - 15 பங்கித் 49-52)

405. உரைமாண்ட உள்ளொளி உத்தமன்வந் துளம்புகலும்
கரைமாண்ட காமப் பெருங்கடலைக் கடத்தலுமே
இரைமாண்ட இந்திரியப் பறவை இரிந்தோடத்
துரைமாண்ட வாபாடித் தோணோக்கம் ஆடாமோ ! 14

405. உரை மாண்ட உல்லாசி உத்தமன் வந்துவழி புதுவழி
கரை மாண்ட காமப் பெருங்கடலைக் கடத்தலுமே
இரை மாண்ட இந்திரியப் பறவை இரிந்தோடத்
துரை மாண்ட வாபாடித் தோணோக்கம் ஆடாமோ !
(திருமுறை ஆட - 15 பங்கித் 53-56)

403. अबोधता वश दंभ भरते थे
परमपुरुष होने का
विष्णु विरिंचि ने परस्पर
फूलते अहंकार को नष्ट करने के लिए
स्थित हुए प्रभु ज्योति-स्तंभ बनकर
अपरिमेय आद्यंतविहीन होकर
प्रभु स्थित हुए परब्रह्म रूप में
सखियों खेलें हम तोणोक्कम्।

(तिरुमुऱै आठ - 15 पंक्ति 45-48)

404. अकिंचन यह दास
न जाने कितने जन्म जन्मांतर तक
सींचता रहा ऊसर को
उपासना नहीं की परमेश्वर की
सकल चराचर के आदि मूल
निर्मल अनिंद्य मणिरत्न
करुणामय प्रभु आए धरती पर
काट दिया मेरा भव-बंधन
प्रभु की करुणा का गान करती हुई
सखियो हम खेलें तोणोक्कम्।

(तिरुमुऱै आठ - 15 पंक्ति 49-52)

405. वाक् से परे है ज्योतिर्मय परमेश्वर
जब वह घर कर गया मेरे मानस में
तर गया मैं काम-मोह के भव सागर से
विषय रूपी आहार से वंचित हो कर
उड़ गए इन्द्रिय के पंछी
मिट गया अहंकार जीव-बोध
प्रभु की अपरंपार महिमा का गान करें
सखियो खेलें हम तोणोक्कम्।

(तिरुमुऱै आठ - 15 पंक्ति 53-56)



534 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - डॉ. रेवरेण्ड जी. यू. पोप; 1900 ई.

Source : Tiruvacagam by Rev. G.U. Pope; 1900 A.D.

The demon-car allures : 'a stream flowing from flowery lake,'
Men think, and rush to draw, in ignorance and folly lost !
Thou hast such fond delusions far removed, O Dancer blest
In shining Tillai's court ! As we Thy roseate Foot would reach,
PLAY WE TŌṆŌKKAM !

The Lord of Tillai's court, whose glory never wanes;
Whom 'he who hurled the calf at fruit,' and Brahmā could not see ;
Lest I in endless births and deaths should sink, made me His
own !
Praising His excellence, ye maids with thickly clustering locks,
PLAY WE TŌṆŌKKAM !

As in the worship paid true ministrations HE discerned :—
The glorious slippered-foot, the chalice-mouth, the flesh for food ;—
Such gifts acceptance gained ! He knew the woodman's pure
desire ;
And as the saint stood there, with joyous mind, fulfilled of grace,
PLAY WE TŌṆŌKKAM !

So that my stony heart was melted, He all tenderly
Compassionate stood by, and came within my soul in grace,
Led me in way of good ; and then, as all the country knows,
He here drew nigh, spake with me face to face ; and thus
PLAY WE TŌṆŌKKAM !

Earth, water, fire, air, ether vast, the wandering moon, the sun,
 And man,—to sense revealed : EIGHT WAYS He joined Himself
 to me ;
 Throughout seven worlds, in regions ten, He moves : yet One
 alone
 Is He ! As manifold He comes and 'bides with us ; and so
 PLAY WE TÔṆŌKKAM !

Buddhists, and others,—in their wisdom fools,—the men of many
 sects,
 All with their systems worthless and outworn, bewildered
 stand ;—
 My every power He fills with bliss superne, makes all life's
 works
 Devotion true,—through His compassion, FATHER seen ! And
 thus
 PLAY WE TÔṆŌKKAM !

The Neophyte from evil free, cut off the feet of him
 Who rashly overturned the work in Çivan's honour done :
 A Brāhman he in caste, His father too ! Through Içan's grace,
 While gods adored, his crime was utterly consumed ; and thus
 PLAY WE TÔṆŌKKAM !

Our pride is gone, forgotten reason's laws ; ye maidens fair !—
 We think but of the cinctured foot of Him, Lord of the south,
 Whom heaven adores ! The rapturous Dancer's grace if we
 obtain,
 His slaves,—even so in rapture lost, we then shall dance ; and
 thus
 PLAY WE TÔṆŌKKAM !

16

திருப்பொன்னாசல்

तिरुप्पान्नुशल

அருட்குத்தி

अरुदशुत्ति

406. சீரார் பவளங்கால் முத்தங் கயிறாக
ஏராகும் பொற்பலகை ஏறி இனிதமர்ந்து
நாராயணன்அறியா நாண்மலர்த்தாள் நாயடியேற்கு
ஊராகத் தந்தருளும் உத்தர கோசமங்கை
ஆரா அமுதின் அருள்தா ளிணைபாடிப்
போரார்வேற் கண்மடவீர் பொன்னாசல் ஆடாமோ! 1

406. चीरार् पवळम् काल् मुत्तम् कयिराग
वेरारुम् पार्पलगै एरि इनिदमन्दु
नारायणन् अरिया नाण्मलर्ताळ् नायडियेकुं
कूरागत् तन्दरळुम् उत्तरकोश मङ्गै
आरावमुदिन् अरुळ् ताळिणै पाडिप्
पोरार् वेल् कण्मडवीर् पान्नुशलाडोमो !

(तिरुमुரै आठ -16 पंक्ति 1-6)

16

सुनहरा झूला

अनुग्रह शुद्धि

406. शोभामय प्रवाल के डांड पर
 मुक्तामय रज्जु बांधकर
 निर्मित है सुनहरा झूला
 इसके स्वर्ण खचित फलक पर बैठकर
 गाएँ सखियो प्रभु गहिमा
 नारायण के लिए भी अज्ञात-चरण प्रभु ने
 प्रदान किया मुझे
 उत्तरकोशमंगै का सुंदर धाम
 भाले सदृश सुनयना सखियो !
 करुणामय अमृतस्वरूप का
 महिमागान करती हुई
 सानंद झूलें हम सुनहरे झूले पर।

(तिरुमुरै आठ - 16 पंक्ति 1-6)

538 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

407. முன்றங் கிலங்கு நயனத்தன் மூவாத
வான்தங்கு தேவர்களுங் காணா மலரடிகள்
தேன்தங்கித் தித்தித் தமுதாறித் தான்தெளிந்தங்கு
ஊன்தங்கி நின்றுருக்கும் உத்தர கோசமங்கைக்
கோன்தங் கிடைமருது பாடிக் குலமஞ்ஞை
போன்றங் கனநடையிர் பொன்னாசல் ஆடாமோ !

2

407. மூந்ந்ரீகிலங்கு நயனத்தன் மூவாத
வான்தங்கு தேவர்களுங் காணா மலரடிகள்
தேன்தங்கித் தித்தித் தமுதாறித் தான்தெளிந்தங்கு
ஊன்தங்கி நின்றுருக்கும் உத்தர கோசமங்கைக்
கோன்தங் கிடைமருது பாடிக் குலமஞ்ஞை
போன்றங் கனநடையிர் பொன்னாசல் ஆடாமோ !

(திருமூரே ஆட - 16 பங்கி 7-12)

408. முன்னிறும் ஆதியு மில்லான் முனிவர்குழாம்
பன்னூறு கோடி மிமையோர்கள் தாம்நிற்பத்
தன்நீ றெனக்கருளித் தன் கருணை வெள்ளத்து
மன்னூற மன்னுமணி யுத்தர கோசமங்கை
மின்னேறு மாட வியன்மா ளிகைபாடிப்
பொன்னேறு பூண்முலையிர் பொன்னாசல் ஆடாமோ !

3

408. முன்னிறும் ஆதியு மில்லான் முனிவர்குழாம்
பன்னூறு கோடி மிமையோர்கள் தாம்நிற்பத்
தன்நீ றெனக்கருளித் தன் கருணை வெள்ளத்து
மன்னூற மன்னுமணி யுத்தர கோசமங்கை
மின்னேறு மாட வியன்மா ளிகைபாடிப்
பொன்னேறு பூண்முலையிர் பொன்னாசல் ஆடாமோ !

(திருமூரே ஆட - 16 பங்கி 13-18)

407. शोभित हैं त्रिनयन मुखारविंद पर
 अज्ञात हैं दिव्य चरण अजर देवगण के लिए भी
 नाथ वह प्रकट हुआ प्रत्यक्ष ही
 मानो प्रवाहित है उत्तरकोशमंगै धाम में
 मधुर मधु की धार अमृत की धार
 आओ हंस निभ चाल की
 मयूरी सखियो, नाथ महिमा का गान करती हुई
 झूलें हम स्वर्णमय झूले पर।

(तिरुमुरै आठ - 16 पंक्ति 7-12)

408. स्तुतिरत खड़े थे
 कोटि-कोटि मुनिवृंद के संग अमरगण
 प्रदान किया नाथ ने मुझे
 अपनी विभूति करुणा से
 प्रवाहित हुआ अनुग्रह-वारिधि
 आओ सखियो गाएँ महिमा
 विद्युत सेवित मणिमय तुंग प्राचीर बलयित
 उत्तरकोशमंगै के दिव्यधाम की
 कनकभूषण सुभगस्तनी सखियो
 झूलें हम स्वर्ण खचित झूले पर
 प्रभु महिमा गान करती हुई।

(तिरुमुरै आठ - 16 पंक्ति 13-18)

540 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கீர்த்தி திருவாசகம்

409. நஞ்சுமார் கண்டத்தன் அண்டத் தவநாதன்
மஞ்சுதோய் மாடமணி உத்தர கோசமங்கை
அஞ்சொலார் தன்னோடுங் கூடி அடியவர்கள்
நெஞ்சுளே நின்றமுத முறிக் கருணை செய்து
துஞ்சல் பிறப்பறுப்பான் தூய புகழ்பாடிப்
புஞ்சுமார் வெள்வனையிர் பொன்னாசல் ஆடாமோ !

4

409. नञ्जुमार् कण्डत्तन् अण्डत्तवर् नातन्
मञ्जुतोय् माडमणि उत्तरकोश मङ्गै
अञ्चालाळ् तन्नोडुम् कूडि अडियवर्गळ्
नञ्जुळे निन्मदुमूरिक् करुणैचय्यदु
तुञ्जल् पिरप्परुप्पान् तूयपुगळ् पाडिप्
पुञ्जमार् वळ्वळैयीर् पान्नुशलाडामो !

(திருமுறை ஆட - 16 பங்கித் 19-24)

410. ஆணோ அலியோ அரிவையோ என்றிருவர்
காணாக் கடவுள் கருணையினால் தேவர்குழாம்
நாணாமே உய்யஆட் கொண்டருளி நஞ்சுதனை
ஊணாக உண்டருளும் உத்தர கோசமங்கைக்
கோணார் பிறைச்சென்னிக் கூத்தன் குணம்பரவிப்
பூணார் வனமுலையிர் பொன்னாசல் ஆடாமோ !

5

410. आणो अलियो अरिवैयो ँन्निरुवर्
काणाक्कडवुळ् करुणैयिनाल् तैवर्कुळाम्
नाणामे उय्य आट्काण्डरुळि नञ्जु तनै
ऊणाग उण्डरुळुम् उत्तरकोशमङ्गै
कोणार् पिरैच्चैन्निक् कूत्तन् कुणम्परविच्
पूणार् वनमुलैयीर् पान्नुशलाडामो !

(திருமுறை ஆட - 16 பங்கித் 25-30)

409. नीलकण्ठ प्रभु वह ब्रह्मांड नायक है
 विलस रहा है मृदुबैनी के संग
 हिममंडित मणिमय प्राचीर युत
 उत्तरकोशमंगे के सुंदर धाम में
 वास करता है भक्तजन हृदय में
 अमिय-धार बन करुणामृत बनकर
 काट देता है मृत्युकारण जन्म-बंधन को
 ऐसे महिमामय प्रभु का कीर्तिगान करती हुई
 शुभ्र कंकणधारिणी सखियो,
 झूलें हम सुनहरे झूले पर।

(तिरुमुरै आठ - 16 पंक्ति 19-24)

410. भ्रम में पड़े विष्णु विरिंचि
 समझ नहीं पाए थे
 नर है कि नारी है अथवा क्लीव है
 आद्यंतविहीन नाथ करुणा से
 देवगण के उद्धार के हित
 अशन किया हलाहल को प्रिय भोजन सा
 चंद्रकलाधर प्रभु नर्तन करता है
 उत्तरकोशमंगे धाम में
 भूषण-विभूषित सुभगस्तनी सखियो
 नाथ-महिमा का गान करती हुई
 झूलें हम सुवर्णमय झूले पर।

(तिरुमुरै आठ - 16 पंक्ति 25-30)

542 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

411. மாதாடு பாகத்தன் உத்தர கோசமங்கைத்
தாதாடு கொன்றைச் சடையான் அடியாருள்
கோதாட்டி நாயேனை ஆட்கொண்டென் தொல்பிறவித்
தீதோடா வண்ணந் திகழப் பிறப்பறுப்பான்
காதாடு குண்டலங்கள் பாடிச் சசிந்தன்பால்
போதாடு பூண்முலையிர் பொன்னாசல் ஆடாமோ!

6

411. मादाडु पागतन् उत्तरकोश मङ्गैत्
तादाडु कान्त्रैच् चडैयान् डियारुळ्
कोदाट्टि नायेनै आट्काण्डन् ताल् पिरवित्
तीदोडावण्णम् तिगळ्पिरप्परुप्पान्
कादाडु कुण्डलङ्गळ् पाडिक् कशिन्दन्बाल्
पोदाडु पूण्मुलैयीर् पान्नुशलाडामो !

(तिरुमुரै आठ - 16 पंक्ति 31-36)

412. உன்னற் கரியதிரு வுத்தர கோசமங்கை
மன்னிப் பொலிந்திருந்த மாமறையோன் தன்புகழே
பன்னிப் பணிந்திறைஞ்சப் பாவங்கள் பற்றறுப்பான்
அன்னத்தின் மேலேறி ஆடுமணி மயில்போல்
என்னத்தன் என்னையும் ஆட் கொண்டான் எழில்பாடிப்
பொன்னொத்த பூண்முலையிர் பொன்னாசல் ஆடாமோ!

7

412. उन्नर्करिय तिरु उत्तरकोश मङ्गै
मन्निप् पालिन्दिरुन्द मामरैयोन् तन्पुगळ्
पन्निप् पणिन्दिरैञ्जप् पावङ्गळ् पट्ररुप्पान्
अन्नत्तिन् मेलेरि आडुमणि मयिल्पोल्
ऐन्नत्तन् ऐन्नैयुम् आट्काण्डान् ऐळिल् पाडिप्
पान्नात्ति पूण्मुलैयीर् पान्नुशलाडामो !

(तिरुमुरै आठ - 16 पंक्ति 37-42)

411. अर्धनारीश्वर प्रभु हैं
 अरुणिम जटा पर शोभा पाते सुनहरे कनेर
 विराजे हैं उत्तरकोशमंगै के
 सुंदर धाम में संतजन के मध्य
 दूर कर सकल पाप अपनाया मुझे
 अपना बना लिया करुणामय प्रभु ने
 काट दिया जनन-मरण का बंधन
 सुमन-भूषित सुभगस्तनी सखियो
 गाओ मेरे संग डोलें सुभग कुंडल कान पर
 झूलें हम सुनहरे झूले पर।

(तिरुमुऱै आठ - 16 पंक्ति 31-36)

412. अर्चितनीय महिमा के धनी
 विलसित हैं श्रीलसित उत्तरकोशमंगै
 धाम में आमोद से
 नाथ की महिमा का गान करते हुए
 प्रणत होते हैं जो चरणयुगल में
 मुक्त हो जाते हैं भव-बंधन से तत्क्षण ही
 हंस पर आरूढ़ होकर नर्तित नीलकंठ सम
 प्रकट हुए तात, अपनाया मुझे अपार करुणा से
 कनकस्तनी सखियो ! आओ
 नाथ महिमा का गान करती हुई
 झूलें हम सुनहरे झूले पर।

(तिरुमुऱै आठ - 16 पंक्ति 37-42)

544 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

413. கோல வரைக்குடுமி வந்து குவலயத்துச்
சால அமுதுண்டு தாழ்கடலின் மீதெழுந்து
ஞால மிகபிரிமேற் கொண்டு நமையாண்டான்
சீலந்த திகழுந் திருவுத்தர கோசமங்கை
மாலுக்கரியானை வாயார நாம் பாடிப்
பூலித் தகங்குழைந்து பொன்னாசல் ஆடாமோ !

8

413. कोलवरैक् कुडुमि वन्दु कुवलयतुच्
चाल अमुदुण्डु ताळ्कडलिन् मीदळ्दु
जाल मिगप्परि मेर्काण्डु नमैयाण्डान्
शीलन्तिगळ्दुम् तिरु उत्तरकोशमङ्गै
मालुक्करियानै वायार नाम् पाडिप्
पूलित्तगम् कुळैन्दु पान्नुशलाडामो !

(तिरुमुरै आठ - 16 पंक्ति 43-48)

414. தெங்குலவு சோலைத் திருஉத்தர கோசமங்கை
தங்குலவு சோதித் தனியுருவம் வந்தருளி
எங்கள் பிறப்பறுத்திட் டெந்தரமும் ஆட்கொள்வான்
பங்குலவு கோதயுந் தானும் பணிகொண்ட
கொங்குலவு கொன்றைச் சடையான் குணம்பரவிப்
பொங்குலவு பூண்முலையிர் பொன்னாசல் ஆடாமோ !

9

414. तङ्गुलवु चोलैत् तिरु उत्तरकोश मङ्गै
तङ्गुलवु चोतित् तनियुरुवम् वन्दरुळि
ऐङ्गळ् पिरप्परुत्तिट्टु ऐम्तरमुम् आद்கाळ्वान्
पङ्गुलवु कोदैयुम् तानुम् पणिकाण्ड
काङ्गुलवु कान्दैन् चडैयान् कुणम् परविप्
काङ्गुलवु पूण्मुलैयीर् पान्नुशलाडामो !

(तिरुमुरै आठ - 16 पंक्ति 49-54)

413. सुभग कैलास के तुंग शृंग से
 उतर आए प्रभु धरणीतल पर
 उत्थित हुए नीलसागर की वीचियों से
 अश्वारूढ़ होकर आए हमारे सामने
 अपना लिया हमें करुणा से अनुग्रह से
 शील शालीनता भरे उत्तरकोशमंगै का
 अधीश प्रभु वह
 दुर्लभ है स्वयं विष्णु के लिए भी
 आओ सखियो आमोदमय हृदय से
 महिमामय प्रभु का कीर्तिगान करती हुई
 झूलें हम सुनहरे झूले पर।

(तिरुमुरै आठ - 16 पंक्ति 43-48)

414. नारिकेल निबिड़ श्री उत्तरकोशमंगै धाम में
 आए प्रभु अनुग्रह-ज्योति रूप में
 अपनाया हमें काटकर जननमरण का बंधन
 सुगंधित कनेर से शोभित जटाधर
 अर्धनारीश्वर प्रभु के
 चरण-युगल पर प्रणत हैं हम
 आओ सुभगस्तनी सखियो
 नाथ महिमा का गान करती हुई
 झूलें हम सुनहले झूले पर।

(तिरुमुरै आठ - 16 पंक्ति 49-54)



546 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : पाथवे दू गोंड थू द तिरुवाचकम् - जी. वनमीकनाथन्

Source : Pathway to God through the Tiruvacagam by
G. Vanmikanathan

Ascending the beautiful golden plank
which has lovely coral as struts
and (strung) pearls as ropes,
and seated gracefully thereon,
let us, O maidens with lance-like smiting eyes,
swing singing of the gracious twin feet
of the unsatiating Ambrosia of Uththarakosamangai
Who graciously bestows on us, cur-like devotees,
His morning-fresh blossom feet—
not known to Naaraayanan—
as home-town for us

O pedigree peacock-resembling damsels
with gait like that of swans !
Let us swing on the golden swing,
singing of Idaimaruthu
where abides the King of Uththarakosamangai—
He with three shining eyes—
Whose never-ageing honey-filled
ambrosia-exuding
sweet-tasting blossom feet—
never beheld even by the heaven-dwelling *devas*—
abide in my flesh and melt it
whereby I become clear (of all doubts and fears).

O damsels with breasts decked with jewels
of high grade gold !
Let us swing on the golden swing,
singing of the lightning playing around
turreted huge mansions
in Uththarakosamangai of the Gem—
He with neither the antecedent end nor beginning—

Who while the concourse of sages
and several hundred crores of heavenly ones
were waiting,
graciously bestowed on me
His sacred ash
and took root (in my heart)
that I might be eternally established
in His flood of grace.

Poison-sedimented throat has He ;
Lord of the heavenly ones is He ;
from Uththarakosamangai's cloud-capped gem-like mansion
He will come with Her whose words are music,
and in His slave's heart take abode.
Elixir of deathlessness will well up in our hearts,
as He, in His grace,
sunders the bonds of death and birth.
Let us His holy praises sing,
O ye who wear rows of bracelets white,
and swing on the golden swing. !

O damsels with beautiful breasts
adorned with jewels !
Let us swing on the golden swing,
singing of the qualities
of Uththarakosamangai's Dancer
with the curved crescent moon on His head—
the God unknown by the two
as to whether He is male or neuter or female—
Who graciously ate the poison as food
so that the concourse of *devas*
may be redeemed from being disgraced.

17

அன்னைப்பத்து

अनैप्पत्तु

ஆத்தும பூரணம்

आत्तुम पूर्णम्

415. வேத மொழியர்வெண் ணீற்றர்செம் மேனியர்
நாதப் பறையினர் அன்னே என்னும்
நாதப் பறையினர் நான்முகன் மாலுக்கும்
நாதரிந் நாதனார் அன்னே என்னும்.

1

415. वेद मांळियर् वंणीट्टर् चंम्मेनियर्
नादप् परैयिन् अन्नै ऍन्नुम्
नादप् परैयिन् नान्मुगन् मालुक्कु
नादरिन्नादर् अन्ने ऍन्नुम् ।

(तिरुமுரै आठ - 17 पंक्ति 1-4)

416. கண்ணஞ் சனத்தர் கருணைக் கடலினர்
உந்நின் றுருக்குவர் அன்னே என்னும்
உந்நின் றுருக்கி உலப்பிலா ஆனந்தக்
கண்ணீர் தருவரால் அன்னே என்னும்.

2

416. कण्णंजनत्तर् करुणैक्कडलिन्
उळ् निन्नुरुक्कुवर् अन्नेयन्नुम्
उळ् निन्नुरुक्कि उलप्पिला आनन्दक्
कणीर् तरुवराल् अन्ने ऍन्नुम् ।

(तिरुமுரै आठ - 17 पंक्ति 5-8)

17

मातृ-पृच्छा दशक

आत्मपूर्णता

415. प्रेम की परिपक्व दशा में पहुँची नायिका द्वारा
 अपनी माँ से नायक (परमात्मा) के गुणों का वर्णन}
 कहती—“माँ, अरुणिम देहकांति है
 उच्चार करते हैं चतुर्वेद का
 भस्म-लेपित सकल शरीर
 मुरज भी है संग में
 नाद प्रसारित है अगजग में”
 फिर कहती—“जानती हो ये नाथ मेरे
 अगोचर हैं वे विष्णु विरिंचि के लिए भी।”

(तिरुमुरै आठ - 17 पंक्ति 1-4)

416. कहती—“ओ माँ !
 अंजन-रंजित हैं उनके नयन
 करुणा-वारिधि हैं नाथ
 अंतर् में प्रवेश कर
 पिघला रहे हैं मेरा हृदय
 द्रवित कर हृदय को
 उत्पन्न करते हैं अक्षय अश्रुधार।”

(तिरुमुरै आठ - 17 पंक्ति 5-8)

550 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

417. நித்த மணாளர் நிரம்ப அழகியர்
சித்தத் திருப்பரால் அன்னே என்னுஞ்
சித்தத் திருப்புவர் தென்னன் பெருந்துறை
அத்தர்ஆ னந்தரால் அன்னே என்னும்.

3

417. नित्त मणाळर् निरम्ब अळगियर्
चित्तिरुप्पाराल் அன்னை ஐன்னும்
चित्तिरुप्पவர் தன்னன் பெருந்துறை
அத்தர் ஆனந்தரால் அன்னை ஐன்னும் ।

(திருமூரே ஆட - 17 பங்கி 9-12)

418. ஆடரப் பூணுடைத் தோல்பொடிப் பூசிற்றோர்
வேடம் இருந்தவர் றன்னே என்னும்
வேடம் இருந்தவர் கண்டுகண் டென்னுள்ளம்
வாடும் இதுவென்னே அன்னே என்னும்.

4

418. आडरप् पूणुडैत् तोल् पांडिप् पूशिट्टोर्
வேடம் இருந்தவர் றன்னே ஐன்னும்
வேடம் இருந்தவர் கண்டுகாண்ட்னுஊம்
வாடும் இது வன்னே அன்னை ஐன்னும் ।

(திருமூரே ஆட - 17 பங்கி 13-16)

419. நீண்ட கரத்தர் நெறிதரு குஞ்சியர்
பாண்டிநன் னாடரால் அன்னே என்னும்
பாண்டிநன் னாடர் பரந்தெழு சிந்தையை
ஆண்டன்பு செய்வரால் அன்னே என்னும்.

5

419. नीण्ड करत्तर् नीरितरुकुंजियर्
பாண்டி நனாடரால் அன்னை ஐன்னும்
பாண்டி நனாடர் பரந்த்ஊ சிந்தையே
ஆண்ட்னு சய்வரால் அன்னை ஐன்னும் ।

(திருமூரே ஆட - 17 பங்கி 17-20)

417. कहती—“ओ माँ
जन्म-जन्म से मेरे प्रियतम
सुंदरेश प्रभु अति सुंदर हैं
बसे हुए हैं चित्त में मन में ध्यान में”
फिर कहती—“माँ
चित्त में बसे मेरे प्रियतम दक्षिणेश हैं
परुन्तुरै धाम के अधीश
आनंदस्वरूप हैं”।

(तिरुमुरै आठ - 17 पंक्ति 9-12)

418. “प्रिय के आभूषण हैं नाचते फणिराज
परिधान है व्याघ्र का चर्म
अंग-अंग शोभित है धवल भस्म से
इस वेश में विराजे हैं प्रियतम
सच माँ” कहती
“इस वेश में उनको निहारती हूँ
सुधबुध खो जाती हूँ
बोलो ऐसा क्यों होता है माँ” ?

(तिरुमुरै आठ - 17 पंक्ति 13-16)

419. “अति दीर्घ है उनकी सुरम्य भुजाएँ
सघन जटा के धनी हैं
सुंदर पांड्य देश के वासी हैं, माँ !”
फिर कहती—
“पांड्य देश के सुंदरेश वे
व्याप्त होकर मेरे चित्त में हृदय में
वर्षा करते हैं प्रेम की
सच, माँ”।

(तिरुमुरै आठ - 17 पंक्ति 17-20)

552 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

420. உன்னற் கரியசீர் உத்தர மங்கையர்
மன்னுவ தென்றெஞ்சில் அன்னே என்னும்
மன்னுவ தென்றெஞ்சில் மாலயன் காண்கிலார்
என்ன அதிசயம் அன்னே என்னும்.

6

420. उन्नर्करिय चीर् उत्तर मङ्गैयर्
मन्नुवदन् नञ्जिल् अन्ने ऐन्नुम्
मन्नुवदन् नञ्जिल् मालयन् काण्गिलार्
ऐन्न अतिशयम् अन्ने ऐन्नुम् ।

(திருமுரே ஆட - 17 பங்கி 21-24)

421. வெள்ளைக் கலிங்கத்தர் வெண்திரு முண்டத்தர்
பள்ளிக்குப் பாயத்தர் அன்னே என்னும்
பள்ளிக்குப் பாயத்தர் பாய்பாரி மேற்கொண்டென்
உள்ளங் கவர்வரால் அன்னே என்னும்.

7

421. वळ्ळैक् कलिंगत्तर् वण्णतिरु मुण्डत्तर्
पळ्ळिवकुप्पायत्तर् अन्ने ऐन्नुम्
पळ्ळिवकुप्पायत्तर् पायपरि मेर्काण्डन्
उळ्ळम् कवर्वराल् अन्ने ऐन्नुम् ।

(திருமுரே ஆட - 17 பங்கி 25-28)

422. தானி அறுகினர் சந்தனச் சாந்தினர்
ஆளெம்மை ஆள்வரால் அன்னே என்னும்
ஆளெம்மை ஆளும் அடிகளார் தங்கையில்
தான மிருந்தவா றன்னே என்னும்.

8

422. ताळि अरुगिन् चन्दनच् चान्दिन्
आळ्म्मै आळ्वराल् अन्ने ऐन्नुम्
आळ्म्मै आळुम् अडिगळार् तड्कैयिल्
ताळमिरुन्दवारन्ने ऐन्नुम् ।

(திருமுரே ஆட - 17 பங்கி 29-32)

420. कहती—“ओ माँ !
 उत्तरकोशमंगै के अधीश
 मेरे प्रियतम का वैभव अगम्य है
 ऐसे महिमामय घुस गए हैं
 मेरे मन में हृदय में”
 फिर कहती है—“हाँ माँ
 मेरे हृदय में वही बसे हैं
 जो अगोचर हैं विष्णु विरिंचि के लिए
 यह कैसा आश्चर्य है !”

(तिरुमुऱै आठ - 17 पंक्ति 21-24)

421. कहती है—“ओ माँ !
 श्वेतांबरधारी है, शोभित है
 भालदेश पर भस्म का त्रिपुंङ्ग
 पहने हैं साधुओं जैसा शुभ्र लंबा चोगा
 हाँ माँ सच !”
 फिर कहती—“ओ माँ
 शुभ्र लंबा चोगा पहने प्रिय
 आरूढ़ हैं तीव्रगामी अश्व पर
 और घुराते हैं मेरा हृदय”।

(तिरुमुऱै आठ - 17 पंक्ति 25-28)

422. कहती है—“प्रिय के गले में
 शोभित है ‘ताळी’ और दूर्वा की माला
 अंग-अंग पर चंदन का अंगराग
 इस भंगिमा से शासन करते हैं हम पर”
 फिर कहती—“ओ माँ !
 हम पर शासन करते प्रियतम हैं न !
 उनके हाथ में बज रहा है करताल
 अहा ! कैसी रमणीय है उनकी भंगिमा !”

(तिरुमुऱै आठ - 17 पंक्ति 29-32)

554 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

423. தையலோர் பங்கினர் தாபத வேடத்தர்
ஐயம் புகுவரால் அன்னே என்னும்
ஐயம் புகுந்தவர் போதலும் என்னுள்ளம்
நையுமிது வென்னே அன்னே என்னும்.

9

423. तैयलोर् पङ्गिनर् तापद वेडत्तर्
ऐयम् पुगुवराल् अन्ने ऐन्नुळ्ळम्
ऐयम् पुगुन्दवर् पोदलुम् ऐन्नुळ्ळम्
नैयुमिदुवन्ने अन्ने ऐन्नुम् ।

(திருமூரே ஆட - 17 பங்கித் 33-36)

424. கொன்றை மதியமுங் கூவின மத்தமும்
துன்றிய சென்னியர் அன்னே என்னும்
துன்றிய சென்னியின் மத்தம்உன் மத்தமே
இன்றெனக் கானவா றன்னே என்னும்.

10

424. कांन्रै मतियमुम् कूविळम् मत्तमुम्
तुन्निय चंन्नियर् अन्ने ऐन्नुम्
तुन्निय चंन्नियिन् मत्तम् उन्मत्तमे
इन्ननक्कानवारु अन्ने ऐन्नुम् ।

(திருமூரே ஆட - 17 பங்கித் 37-40)

423. कहती—“ओ माँ !

क्या बताऊँ विचित्र बात है यह

वाम भाग में है वामा शोभित

और वेश बनाए हैं तपस्वी का

फिर घर-घर में जाकर

माँग रहे हैं भिक्षा”

फिर कहती—“भिक्षा लेकर

जब लौट जाते हैं वे

भर जाता है अवसाद

मेरे हृदय में, क्यों माँ ?”

(तिरुमुरै आठ - 17 पंक्ति 33-36)

424. कहती—“ओ माँ !

पता है कैसे अटा हुआ है उनका जटामंडल

कनेर के फूल से चंद्र की कला से

विल्वदल के त्रितय से धतूरे के पुष्प से !”

फिर कहती—“अब पता चला, माँ

धतूरा पहने हैं न सिर पर ?

इस लिए मैं भी उन्मत्त हो गई हूँ

आज, सच, माँ !”

(तिरुमुरै आठ - 17 पंक्ति 37-40)



स्रोत : तिरुवाचकम् - वर्ड बीटिफिक — एस. ए. शंकरनारायनन्

Source : Tiruvacagam : Word Beatific by S.A. Sankaranarayanan

“O Mother ! Lord is Gnosis
 imparting worded one;
 wearer of holy argent ash;
 ruddy miened; possessor
 of a drum metonymous with om.
 This Om-sonic one
 is heroic leader of Ayan and Hari
 O ! Mother” sings she.

“His eyes are collyrium-drawn;
 has territorial sea of grace;
 entempled in heart He melts it;
 Mother ! Thus shrined
 He would rain tears of joy
 flowing ever
 from off the heart melting
 batelessly, Mother” sings she.

“He is ever my spouse,
 especially Handsome;
 abider in thought
 ceaseless, mother !
 thus thought of, He is
 the Lord of fair Perunthurai
 He's bliss great come
 carnate, Mother”, sings she.

“Dancing serpent is His
 ornament; Tiger hyde
 His wear; ash dust upon Him
 His is matchless mien, ma.

Having seen His fancy mien,
 my mind languishes.
 What could be the reason,
 Ma ?" sings she.

"He has longish hands;
 dense locks upon head;
 Pantyalander of courage good
 is He; O ! Mother.
 This Pantyalander could
 tame the roving straying
 mind and grace it
 in fixity, Ma" sings she.

"Mother, Lord of fair
 Uttarakosamangkai
 is greatly famed reachless
 to thought; but is firm
 planted in my heart even.
 While this be so, how come
 fair Maal and Brahma are
 powerless to eye Him, Ma" sings she.

"He is dressed in Kalinga white;
 is ash-coated in forehead;
 has the proper cloak
 fit for an ascetic school
 Ma. With that equestrian cloak,
 He, mounted on a galloping
 steed, stole heart away
 O ! Mother", sings she.

18

குயிற்பத்து

कुयिल् पत्तु

ஆத்தும இரக்கம்

आत्तुम इरक्कम्

425. கீத மினிய குயிலே கேட்டியேல் எங்கள் பெருமான்
பாத மிரண்டும் வினவில் பாதாளம் ஏழினுக் கப்பால்
சோதி மணிமுடி சொல்லிற் சொல்லிற்றது

நின்றதொன்மை

ஆதிசுண மொன்றுமில்லான் அந்தமி லான்வரக்கூவாய் ! 1

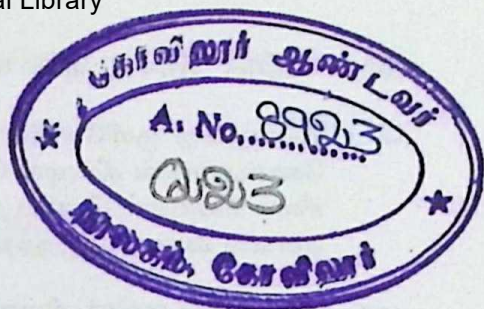
425. गीतमिनिय कुयिले केट्टियेलङ्गळ् परुमान्
पादमिरण्डुम् विनविल् पाताळमेळिनुक्कप्पाल्
चोतिमणि मुडि चाल्लिर् चाल्लिरन्दु निन् तान्मै
आदि गुणमान्मिल्लान् अन्तमिलान् वरक्कूवाय् !

(तिरुमुரै आठ - 18 पंक्ति 1-4)

426. ஏர்தகும் ஏழுல கேத்த எவ்வுரு வந்தன் னுருவாய்
ஆர்கலி துழ்தென் னிலங்கை அழகமர் வண்டோதரிக்குப்
பேரருளின்ப மளித்த பெருந்துறை மேய பிராணைச்
சீரியவாயாற் குயிலே தென்பாண்டி நாடனைக் கூவாய் ! 2

426. एर् तरुमेळु लगेत्त ऐव्युवुम् तन्नुरुवाय्
आर्कलिचूळ् तन्निलङ्कै अळगमर् वण्डोदरिकुप्
पेररुळ् इन्वमळित्त परुन्तुरै मेय पिरानैच
चीरिय वायार् कुयिले तन्पाण्डिनाडनैक् कूवाय् !

(तिरुमुरै आठ - 18 पंक्ति 5-8)



18

कोकिल दशक

आत्म-क्रंदन

425. सुमधुर गीत गा रही कोयलिया !
 जानना चाहती हो हमारे नाथ चरणों की महिमा ?
 ये पुण्य चरण व्याप्त हैं
 अतल वितल सुतल से लेकर पाताल तक
 नीचे के सातों के भी पार
 नाथ के ज्योतिर्मय मणिमुकुट की महिमा ?
 इतना पुरातन है इतना वैभवपूर्ण
 कि वर्णन के लिए शब्द नहीं मिलते
 आदिपुरुष वह गुणातीत है अंतरहित है
 ऐसे महिमामय स्वामी के स्वागत में
 कोयलिया ! कूको तो।

(तिरुमुरै आठ - 18 पंक्ति 1-4)

426. सप्त लोक से संस्तुत हैं नाथ
 दृश्यमान जो रूप हैं सब उसी के रूप हैं
 विरले ही कोई विशेष अनुग्रह पाता है
 गुंजायमान सागर वीचियों से वलयित
 दक्षित लंका की मंदोदरी धन्य है
 अचंचल भक्ति कर पाया नाथ का विशेष अनुग्रह
 नाथ वह अधीश है परंत्तुरै धाम का
 ऐसे महिमामय नाथ के स्वागत में
 दक्षिण पांड्य देश के अधीश के स्वागत में
 कोयलिया ! तुम कूको तो।

(तिरुमुरै आठ - 18 पंक्ति 5-8)

560 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

427. நீலவுருவிற் குயிலே நீள்மணி மாடம் நிலாவுங்
கோலஅழகில் திகழுங் கொடிமங்கை உள்ளுறை கோயில்
சீலம் பெரிதும் இனிய திருவுத் தரகோச மங்கை
ஞாலம் விளங்க இருந்த நாயக னைவரக் கூவாய் ! 3

427. नीलवुरुविर् कुयिले नीष्मणि माडम् निलावुम्
कोलअळकिल् तिगळुम् काँडिमंगै उळ्ळुरै कोयिल्
शीलम् परिदुमिनिय तिरुवुत्तर कोशमङ्गै
आलम् विळङ्ग इरुन्द नायकनै वरक्कूवाय् !
(तिरुमुரै आठ - 18 पंक्ति 9-12)

428. தேன்பழிச் சோலை பயிலுஞ் சிறுகுயி லேமிது கேள்நீ
வான்பழித் திம்மண் புகுந்து மனிதரை ஆட்கொண்ட
வள்ளல்
ஊன்பழித் துள்ளம் புகுந்தென் உணர்வது வாய்
வொருத்தன்
மான்பழித் தாண்டமெல் நோக்கி மணாளனை நீவரக்
கூவாய் ! 4

428. तेन् पळच्चोलै पयिलुम् चिरुकुयिले इदुकेळ् नी
वान् पळित्तिम्मण् पुगुन्दु मनिदरै आदकाण्ड वळ्ळल्
ऊन् पळित्तुळ्ळम् पुगुन्दन् उणर्वदुवाय आरुत्तन्
मान् पळित्ताण्ड मल्लनोक्कि मणाळनै नी वरक्कूवाय् !
(तिरुमुரै आठ - 18 पंक्ति 13-16)

429. சுந்தரத் தின்பக் குயிலே துழுகடர் ஞாயிறு போல
அந்தரத் தேநின் நிழிந்திங் கடியவ ராசை அறுப்பான்
முந்தும் நடுவும் முடிவு மாகிய மூவ ரறியாச்
சிந்துரச் சேவடி யானைச் சேவக னைவரக் கூவாய் ! 5

429. सुन्दरतिन्वक् कुयिले चूळ्चुडर् आयिरुपोल
अन्तरत्ते निन् इळिन्दिङ्गडियवर् आशै यरुप्पान्
मुन्दुम् नडुवुम् आगिय मूवररियाच्
चिन्दुरच् चेवडियानैच् चेवकनै वरक्कूवाय् !
(तिरुमुरै आठ - 18 पंक्ति 17-20)

427. नीलाभ कोयलिया ! मणि-खचित
 सुदीर्घ तुंग अटारियों से पटा है
 शीलशालीनता से पूर्ण उत्तरकोशमंगै धाम
 और यहाँ मंदिर के अंदर
 सुभग सुंदर वल्ली सदृश
 उमा सुकुमारी के संग विलस रहा है नाथ
 द्युतिमय होकर भासित है सकल लोक
 शिवशक्ति के अद्भुत सान्निध्य से
 ऐसे महिमामय नाथ के स्वागत में
 छेड़ो पंचम राग कोयलिया
 करो स्वागत गान।

(तिरुमुरै आठ - 18 पंक्ति 9-12)

428. मधुरिम फल-पूरित उपवन में
 बारंबार आती नन्ही कोयलिया !
 मेरी यह बात सुनो !
 देवलोक को तजकर आए धरणीतल पर
 अपनाया नाथ ने नरलोक को प्रेम से
 मांस-मज्जा पर ध्यान दिए बिना
 सीधे प्रवेश कर गए मेरे हृदय में
 व्याप्त हुए चित्त में मन में भावना में
 नाथ हों मृगनयनी उमा का प्राणनाथ
 ऐसे महिमामय सुंदरेश के स्वागत में
 कोयलिया ! करो कलगान।

(तिरुमुरै आठ - 18 पंक्ति 13-16)

429. सुमधुर तान में मधु घोलती कोयलिया !
 ज्योतिकिरण भास्कर के समान भासमान
 प्रभु अंतरिक्ष से उतरकर आते हैं धरणीतल पर
 निज भक्त जनों का इच्छाबंधन काटने को
 सब का आदि मध्य-अंत वही है
 त्रिमूर्तियों के लिए अविदित है
 सिंदूर सम अरुणिम चरणयुत प्रभु
 उनके स्वागत में कूको तो।

(तिरुमुरै आठ - 18 पंक्ति 17-20)

562 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

430. இன்பந் தருவன் குமிலே ஏழுல கும்முழு தாளி
அன்பன் அமுதளித்தாறும் ஆனந்தன் வான்வந்த தேவன்
நன்பொன் மணிச்சுவ டொத்த நற்பரி மேல்வரு வாணைக்
கொம்பின் மிழற்றுங் குமிலே கோகழி நாதனைக்

கூவாய்! 6

430. इन्वन्तरुवन् कुयिले एळुलगुम् मुळु दाळि
अन्वनमुदळितूरुम् आनन्दन् वान्वन्द तेवन्
नन्पान् मणिच्चुवडात्त नल्परिमेल् वरुवानै
कांम्बिन् मिळदरुम् कुयिले कोकळि नातनैक् कूवाय् !
(तिरुமுரै आठ - 18 पंक्ति 21-24)

431. உன்னை உகப்பன் குமிலே உந்துணைத் தோழியும் ஆவன்
பொன்னை அழித்தநன் மேனிப் புகழில் திகழும் அழகன்
மன்னன் பரிமிசை வந்த வள்ளல் பெருந்துறை மேய
தென்னவன் சேரலன் சோழன் சீர்ப்புயங் கன்வரக்

கூவாய்! 7

431. उन्नै युगप्पन् कुदिले उन् तुणैत्तोळियुम् आवन्
पान्नै यळित्त नन्मेनिप् पुगळिन् तिगळ्ळுम् அळுगந்
மன்னு பரிமிசை வந்த வல்லு ப்ருந்துரே மேய
தன்னவன் சேரலன் சோழன் சீர்ப்புயங் வரவகூவாய் !
(तिरुமுரै आठ - 18 पंक्ति 25-28)

432. வாயிங்கே நீகுயிற் பிள்ளாய் மாலொடு நான்முகன்தேடி
ஓவியவ குன்னி நிற்ப ஒண்தழல் விண்பிளந் தோங்கி
மேவி அன் றண்டங் கடந்து விரிகட ராய்நின்ற மெய்யன்
தார் வரும்பரிப்பாகன் தாழ்சடை யோன்வரக்

கூவாய்! 8

432. वाङ्ङिगे नी कुयिर्पिळ्ळाय् मालाङ्ङु नान्मुगन् तेडि
ओवियवरुन्नि निर्प आण्तळल् विण् पिळन्दोङ्ङि
मेवियन्ऱण्डम् कडन्दु विरि चुडराय् निन्न मय्यन्
तावि वरुम् परिप्पागन् ताळ्चडैयोन् वरवकूवाय् !
(तिरुமுரै आठ - 18 पंक्ति 29-32)

430. आह्लाद दूँगी मैं तुम्हें, कोयलिया !

राज करते हैं सप्तलोक पर

प्रियतम आनंदामृत दाता हैं

उत्तर आए हैं देवाधिदेव वह आकाशदेश से

आरूढ़ होकर मणि-रत्न-खचित सुंदर अश्व पर,

डाल-डाल पर बैठकर मधु घोलती कोयलिया

करो स्वागत-गान छेड़ो पंचम तान

मेरी कोयलिया ! उनको बुलाती हुई।

(तिरुमुरै आठ - 18 पंक्ति 21-24)

431. ढेर सारा प्यार दूँगी तुम्हें कोयलिया

और बनी रहूँगी सतत सहेली तुम्हारी

कनक को भी हराने वाली देहकांति के

धनी, सबसे प्रशस्त सुंदरेश

प्रभु वह अश्वारूढ़ वीर

परमोदार वह अधीश है परन्तु रै धाम का

दक्षिणेश वह पांड्यराज ही नहीं

चेर चोल मंडल के राजाधिराज भी है

सुभगबाहु प्रियतम के

स्वागत में कूको तो

मेरी कोयलिया !

(तिरुमुरै आठ - 18 पंक्ति 25-28)

432. आओ नहीं कोयलिया ! सुनो

विष्णु के साथ विरिंचि मिलकर दूँदे

कहीं न पाकर थके-हारे

चकित होकर खड़े रह गए - और तब

जाज्वल्यमान ज्योति-स्तंभ प्रकट हुआ

नभ को चीरते हुए

सकल ब्रह्मांड के पार स्थित

सत्य-वस्तु आगत है अश्व पर आरूढ़ होकर

सघन जटा के धनी प्रियतम के

स्वागत में कोयलिया ! कूको तो।

(तिरुमुरै आठ - 18 पंक्ति 29-32)

433. காருடைப் பொன்திகழ் மேனிக் கடிபொழில் வாழுங்
சீரடைச் செங்கம லத்தில் திகழுரு வாகிய செல்வன்
பாரிடைப் பாதங்கள் காட்டிப் பாசம் அறுத்தெனை
ஆருடை அம்பொனின் மேனி அமுதினை நீவரக்
கூவாய்! 9

433. காருடேஃ பாந் திஃகல்மேனிக் கடிபாஃலில் வாஃ ம்ஃகுயிலே
சீருடேஃ ஃக்ட்ஃகமலதில் திஃகல்ருவாஃகிய ஃல்வன்
பாரிடேஃ பாடஃகல் காட்ஃடிஃ பாசம் அறுத்தெனை
வாருடே யம்பாநின் மேனி அமுதினே நீ வரஃகூவாய் !
(திருமூரே ஆட - 18 பஃக்தி 33-36)

434. கொந்தண வும்பொழிற் சோலைக் கூங்குயி லேயிது
அந்தண னாகிவந் திங்கே அழகிய சேவடி காட்டி
எந்தம ராம் இவ னென்றிங் கென்னையும் ஆட்கொண்
செந்தழல் போல்திரு மேனித் தேவர்பி ரான்வரக்
கூவாய்! 10

434. கான்்ணவும் பாஃலில் சோலேஃகூஃக்யிலே ஃஃடு கேஃநீ
அந்ணநாஃகி வந்ஃக்ட்ஃக அஃகிய சேவடி காட்ஃடி
எந்ணம ராம் இவ னெந்ணிங் கெந்ணையும் ஆட்ஃகொண்
செந்ணதழல் போல் திருமேனித் தேவர்பி ரான்வரஃகூவாய் !
(திருமூரே ஆட - 18 பஃக்தி 37-40)

433. सुरभित उपवन की वासिनी
 श्यामाभ कनक सी कांति युत कोयलिया !
 सुभग अरुणिम कमल सी उनकी देहकांति है
 धरणीतल पर दिखे उनके चरण-युगल
 आए यहाँ और काटकर सकल बंध-पाश
 अपनाया मुझे
 कुंदन सम जाज्वल्यमान कांतियुत
 अमृत-स्वरूप प्रियतम के स्वागत में
 कोयलिया, कूजन करो तो।

(तिरुमुऱै आठ - 18 पंक्ति 33-36)

434. पुष्प गुच्छों से पूरित उपवन में
 रहती मेरी कोयलिया ! सुनो
 द्विज रूप धरकर आए थे
 सुभग चरण युगल दिखाए थे
 'बंधु है यह मेरा' कहते हुए
 अपनाया था मुझे
 अग्निशिखा से अरुणिम थी देहकांति
 देवाधिदेव उस प्रभु के स्वागत में
 कूजन करो तो
 कोयलिया !

(तिरुमुऱै आठ - 18 पंक्ति 37-40)



स्रोत : तिरुवाचकम् - टी. एन. रामचन्द्रन्

Source : Tiruvaachakam by T.N. Ramachandran

O dulcet-voiced *kuyil* ! If asked where the feet twain
Of our Lord, are, they are beyond the seven nether worlds.
If (again) asked where His effulgent and gemmy crown is,
Lo, it is of ineffable pre-primordiality. He is
Without Beginning, *Guna* or End. Call Him to come.

He is hailed by the seven beautiful worlds; every form
Is His (own). He blessed Mandotari, sought by beauty,
of southern Lanka,
Girt with the ever-resounding sea, with the bliss
Of great grace. The Lord-God – the One of southern
Paandya realm –, is entempled in Perunturai.
O *Kuyil*, with your lovely voice, call Him to come.

O *Kuyil* of the blue hue ! The liana-like woman who
Blazes in Her pulchritudinous form, is enshrined
In Uttharakosamangkai which is pure, exceedingly
Sweet and divine and is also rich in extensive
And gemmy mansions. There abides the Lord-Master
That the world may thrive in splendour. Call Him to come.

O little *Kuyil* that frequents the groves of melliferous
Fruitage, listen to this. He, the munificent Lord, ignoring
Heaven, came down to earth and redeemed men.
Unmindful of my flesh, He entered me and became my
Consciousness. He is the unique One. He is the Consort of Her
Whose soft looks put to shame the antelope's.
Do call Him to come.

O pretty and delightful *Kuyil* ! He who is like the Sun
 Enircled by rays radiant, from the Heaven, came down
 Here to shatter the worldly longings of His devotees. The Triad
 Constituting the Beginning, the Middle and the End,
 Do not know Him. Lo, the salvific feet of the Hero
 Are incarnadine. Call Him to come.

O *Kuyil* I will cause you to rejoice. He is the Ruler
 Of the seven worlds. He is the abode of Love. He confers
 Nectar and springs from within as the blissful one.
 He is the Lord of the Empyrean. He rode on an excellent
 Charger shining like gold inlaid with rubies
 O *Kuyil* that pipest from a spray,
 Call the Lord of Kokazhi to come.

Lines : 1 - 24

19

திருச்சதசாங்கம்

तिरुच्चतशाङ्गम्

அடிமைகொண்ட முறைமை

अडिमैकाण्ड मुरैमै

435. ஏரார் இளங்கிளியே எங்கள் பெருந்துறைக்கோன்
சீரார் திருநாமம் தேர்ந்துரையாய் - ஆநுரன்
செம்பெருமான் வெண்மலரான் பாற்கடலான்

செப்புலபோல்

எம்பெருமான் தேவர்பிரான் என்று !

1

435. एरारिळङ्ळिळिये ँङ्गळ् पंरुन्तुरैक्कोन
चीरार् तिरुनामम् तेन्दुरैयाय् - आरुनन्
चंम्पुरुमान् वण्मलनान् पार्कडलान् चप्पुवपोल्
ँम्पुरुमान् तेवर् पिरानन्क् !

(तिरुमुरै आठ -19 पंक्ति 1-4)

436. ஏதமிலா இன்சொல் மரசுதமே ஏழ்பொழிற்கும்
நாதன்நமை ஆளுடையான் நாடுரையாய்-காதலவர்க்கு
அன்பாண்டு மீளா அருள்புரிவான் நாடென்றும்
தென்பாண்டி நாடே தெளி.

8

436. एदमिला इन्चाल् मरकतमे एळ्पाळिक्कुम्
नातनमै याळुडैयान् नाडुरैयाय् - कादलवक्कु
अन्वाण्डु मीळा अरुळ् पुरिवान् नाडन्क्म्
तन्पाण्डि नाडे तळि !

(तिरुमुरै आठ -19 पंक्ति 5-8)

19

दासत्व का अंगीकार

435. (नायिका शुकी से प्रश्न करती है, उत्तर भी स्वयं दे लेती है)

“सुंदर कोमल शुकी ! स्मरण करके बोलो तो

परुन्तुरै के अधीश हमारे नाथ का

सुमधुर नाम क्या है ?”

“आरुरन ! आरुर धाम के अधीश

अरुणाभ प्रभु, अथवा

जैसे कि श्वेतकमलासन ब्रह्मा

और क्षीरसागरशायी विष्णु

प्रेम से कहते हैं - ऐम्परुमान् !

हमारे प्रिय नाथ देवाधिदेव प्रभु।”

(तिरुमुरै आठ - 19 पंक्ति 1-4)

436. “त्रुटिरहित मधुरवचनी मरकत शुकी ! बोलो

सप्तलोक के अधीश हमारे नाथ का

प्रिय देश कौन-सा है”

“प्रियतम वे राज्य करते हैं

भक्तजनहृदय प्रेम-साम्राज्य में

अनुग्रह करते हैं मोक्ष-साम्राज्य का

जहाँ से कभी लौटना नहीं होता

ऐसे महिमामय प्रभु को

प्रिय देश है दक्षिण पांड्य भूमि।”

(तिरुमुरै आठ - 19 पंक्ति 5-8)

570 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

437. தாதாடு பூஞ்சோலைத் தத்தாய் நமையாளும்
மாதாடும் பாகத்தன் வாழ்பதியென்- கோதாட்டிப்
பத்தரெல்லாம் பார்மேற் சிவபுரம்போற் கொண்டாடும்
உத்தர கோசமங்கை யூர்!

3

437. ताताडु पूञ्चोलैत् तत्ताय नमैयालुम्
मादाडुम् पागतन् वाळ्पतियन् - कोदाट्टिप्
पत्तरॅल्लाम् पार् मेल् शिवपुरम् पोर् काण्डाडुम्
उत्तरकोश मङ्गैयूर् !

(திருமூரே ஆட - 19 பங்கித் 9-12)

438. செய்யவாய்ப் பைஞ்சிறகிற் செல்வீநஞ் சிந்தைசேர்
ஐயன் பெருந்துறையான் ஆறுரையாய் - தையலாய்
வான்வந்த சிந்தை மலங்கழுவ வந்திழியும்
ஆனந்தங் காணுடையான் ஆறு!

4

438. चंय्यवायप् पैञ्चिरकिल् चंत्वी नञ्चिन्तै चेर्
अय्यन् परुन्तुरैयान् आरुरैयाय् - नैयलाय्
वान् वन्द चिन्तै मलङ्कळुव वन्दिळियुम्
आनन्दम् कण् उडैयान् आरु !

(திருமூரே ஆட - 19 பங்கித் 13-16)

439. கிஞ்சகவாய் அஞ்சகமே கேடில் பெருந்துறைக்கோன்
மஞ்சன் மருவும் மலைபகராய் - நெஞ்சத்
திருளகல வான்வீசி இன்பமரும் முத்தி
அருளுமலை என்பதுகாண் ஆய்ந்து!

5

439. ழிஞ்சுக வாயஞ்சுகமே கேடில் ப்ருந்ருரேக்஑ோந்
மஞ்ந் மருவு மலே பகராய்- நஞ்ந்
திருழ்஑ல வாழ்விசி இந்ந்மரும் முத்தி
அருழ் மலே ஁ந்ந்஑ு காணாய்ந்ந் !

(திருமூரே ஆட - 19 பங்கித் 17-20)

437. "मकरंद विकिरित पुष्पवन की शुकी ! बोलो
 कौन-सा वह नगर है
 जहाँ रहते हैं हम पर शासन करते प्रभु
 वाम भाग में उमा सुकुमारी के संग ?"
 "भक्तजन जिस नगर को
 प्रेमादर के साथ शिवपुर तुल्य मानते हैं
 वही उत्तरकोशमंगै धाम
 नाथ का प्रिय नगर है।

(तिरुमुरै आठ - 19 पंक्ति 9-12)

438. "आरक्त चंचु की धनी ! बोलो,
 कौन-सी है नदी
 हमारे हृदय में बसे नाथ
 परुन्तुरै के अधीश की !"
 "सुनो सुकुमारी ! आनंद ही
 हमारे स्वामी की नदी है
 जो प्रवाहित होती है स्वर्गलोक से
 प्रक्षालन करने को सकल मनोमालिन्य।"

(तिरुमुरै आठ - 19 पंक्ति 13-16)

439. "संधनीकुसुम सम मुख वाली शुकी ! बोलो
 अघहीन परुन्तुरै धाम के अधीश का
 पर्वत वह कौन-सा है
 जहाँ अलसाते हैं वारिधर"
 "नाथ का पर्वत वही (कैलास) तो है
 जो अज्ञान रूपी अंधकार को ध्वस्त करने के हित
 ज्ञान का खड्ग लिये है
 और अनुग्रहपूर्वक प्रदान करता है निर्वाण
 इस तथ्य को गुनकर समझो तो।"

(तिरुमुरै आठ - 19 पंक्ति 17-20)

572 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

440. இப்பாடே வந்தியம்பு கூடுபுகல் என்கிளியே
ஒப்பாடாச் சீருடையான் ஊர்வதென்னே-எப்போதும்
தேன்புரையுஞ் சிந்தையராய்த் தெய்வப்பண் ணேத்திசைப்ப
வான்புரவி யூரும் மகிழ்ந்து !

6

440. इप्पाडे वन्दियम्बु कूडुपुगलन् किळिये
आप्पाडाच् चीरुडैयान् ऊर्वदन्ने - ऐप्पोदुम्
तेन् पुरैयुम् चिन्तैयरायत् तयवम् पण्णोत्तिशैप्प
वान् पुरवि ऊरुम् मगिळ्न्दु !

(திருமுரே ஆட - 19 பங்கி 21-24)

441. கோற்றேன் மொழிக்கிள்ளாய் கோதில்
பெருந்துறைக்கோன்
மாற்றாரை வெல்லும் படைபகராய்-ஏற்றார்
அழுக்கடையா நெஞ்சருக மும்மலங்கள் பாயுங்
கழுக்கடைகாண் கைக்கோள் படை.

7

441. काट्रेन् माळिविकळ्ळाय् कोदिल् परुन्तुरैक्कोन्
माट्टारै वल्लुम् पडै पगराय् - एट्टार्
अळ्ळुक्कडैया नञ्जुरुग मुम्मलङ्गळ् पायुम्
कळ्ळुक्कडै काण् कैक्काळ् पडै।

(திருமுரே ஆட - 19 பங்கி 25-28)

442. இன்பால் மொழிக்கிள்ளாய் எங்கள் பெருந்துறைக்கோன்
முன்பால் முழங்கும் முரசியம்பாய்-அன்பாற்
பிறவிப் பகைகலங்கப் பேரின்பத் தோங்கும்
பருமிக்க நாதப் பறை.

8

442. इन्पान् माळिविकळ्ळाम् ऐङ्गळ् परुन्तुरैक्कोन्
मुन्पाल் मुळङ्गु मुरशियम्बाय्-अन्पार्
पिरविप् पगै कलङ्गप् पेरिन्वत्तोङ्गुम्
परुमिक्क नादप् परै।

(திருமுரே ஆட - 19 பங்கி 29-32)

440. "अपने नीड़ में जाकर घुसो नहीं
 इधर आकर बोलो मेरी शुकी
 अनुपम वैभव-ऐश्वर्य के धनी
 हमारे नाथ का प्रिय वाहन कौन-सा है ?"
 "मधुर मधुरिम भावना की धनी
 देवलोक की ललनाएँ
 स्तुतिगान करती चलती हैं
 और उनके मध्य आरूढ़ है वह
 चिदाकाश के अश्व पर।"

(तिरुमुरै आठ - 19 पंक्ति 21-24)

441. "शिखरस्थ मधु सी मधुवैनी शुकी ! बोलो
 कौन-सा है वह आयुध
 पेरुन्तुरै के हमारे अधीश का
 जो शत्रुओं पर झटिति में विजय पाते हैं ?"
 "सुन लो सुकुमारी !
 शोभित है उनके हाथ में त्रिशूल
 जो निर्मूल कर देने में सक्षम है
 प्रणत जनों के चित्त के त्रिमल को
 और पिघला देता है
 निर्मल सु-मन।"

(तिरुमुरै आठ - 19 पंक्ति 25-28)

442. "दुग्ध सम मधुवैनी शुकी ! बोलो
 कौन सा है वह मुरज
 जो बजता है पेरुन्तुरै अधीश के सान्निध्य में ?"
 "अद्भुत अमोघ निस्वन है
 उनके नाद-मुरज का
 जिसके निनाद से
 त्रस्त होता है जन्म-मरण का शत्रु
 और तरंगित होती है सर्वत्र
 परमानन्द की धार।"

(तिरुमुरै आठ - 19 पंक्ति 29-32)

574 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

443. ஆய மொழிக்கிள்ளாய் அள்ளுறும் அன்பர்ப்பால்
மேய பெருந்துறையான் மெய்த்தாரென்-தீயவினை
நாளுமனு காவண்ணம் நாயேனை ஆளுடையான்
தாளிஅறு காம்உவந்த தார்.

9

443. आय माँविकळ्ळाय् अळळूरुम् अन्बर् पाल्
मेय परुन्तुरैयान् मय्तार् एन् - तीय बिनै
नाळुम् अणुगा वण्णम् नायेनै आळुडैयान्
ताळि अरुगाम् उवन्द तार्।

(तिरुमुரै आठ - 19 पंक्ति 33-36)

444. சோலைப் பசங்கினியே தூநீர்ப் பெருந்துறைக்கோன்
கோலம் பொலியுங் கொடிகூறாய்-சாலவும்
ஏதிலார் துண்ணென்ன மேல்விளங்கி ஏர்காட்டுங்
கோதிலா ஏறாம் கொடி..

10

444. चोलैप्पशुड् वळिळिये तूनीरप् परुन्तुरैक्कोन्
कोलम् पालियुम् काँडिकूराय्-चालवुम्
एतिलार् तुण्णन्न मेल् विळङ्गि एर्काट्टुम्
कातिला एराम् काँडि।

(तिरुमुरै आठ - 19 पंक्ति 37-40)

443. "सुविचारित सुभग वचनी शुकी ! बोलो
माला कौन-सी है
पेरुन्तुरै के अधीश की
जो घिरा रहता है उत्सुक भक्त-मंडली के संग ?"
ताळी और दूर्वा का हार ही
प्रिय माला है प्रभु की
जो इस लघुजन के नाथ हैं स्वामी है
रक्षा करते हैं सदा दुष्कर्म से।"

(तिरुमुदै आठ - 19 पंक्ति 33-36)

444. "उपवन में रमती हरित शुकी ! बोलो
निर्मल जलधार वलयित
पेरुन्तुरै धाम के अधीश का
सुभग सुंदर ध्वज कौन सा है ?"
"नाथ का ध्वज निश्चय ही
अघरहित वृषभ ध्वज है
जो फहर रहा है तुंग आकाश में गांभीर्य से
और फैला रहा है
संत्रास शत्रुओं के हृदय में।"

(तिरुमुदै आठ - 19 पंक्ति 37-40)



स्रोत : पाथवे दू गोंड शू द तिरुवाचकम् - जी. वनमीकनाथन्

Source : Pathway to God through the Tiruvacagam by
G. Vanmikanathan

Parrot fair and young !

Recollect and tell the renowned sacred name
of our King of Perunthurai :

'Aarooran, Semperumaan';

or, as you have heard Brahma and Vishnu say :

'Our Lord Our Lord of the gods !'

O Emerald of faultless sweet speech !

The Lord of the seven worlds,

He who has lordship over us—

tell me His country.

*Know for certain that the South Paandinaadu
is ever the country of Him,*

*Who, accepting their love, bestows on His devotees
the blessing of no return
(to the cycle of birth).*

O Polly in the flower garden

in which pollen swirls about in the air !

Which is the city where resides

He Who rules over us —

He with one side of His body under a woman's sway ?

*His city is Uththarakosamangai
which all devotees praise
and herald as verily Civapuram
on earth.*

O Darling with red beak and green wings !
 Tell me the (name of the) river
 of the Lord of our mind —
 He who abides in Perunthurai.

*O damsel ! Note that our Owner's river
 is the renowned bliss
 which plunges down on earth from heaven
 to wash away the impurity of our minds.*

O beautiful Parrot with beak like the *kinjuka* flower !
 Think well and tell me the mountain
 where abides the Cloud —
 the King of decayless Perunthurai.

*Note it is that Mountain
 which, wielding the sword (of gnosis)
 that the darkness in our heart may depart,
 graciously bestows on us bliss-laden deliverance.*

Come here and tell me ;
 do not go back to your cage, O my Parrot !
 What is the mount
 of Him of unequalled splendour ?

*With divine damsels, who ever entertain honeyed thoughts,
 singing His praises,
 He rides with delight
 the horse of gnosis.*

திருப்பள்ளியெழுச்சி

तिरुप्पळ्ळியळ्ळच्चि

திரோதான சுத்தி

तिरोतान शुत्ति

445. போற்றியென் வாழ்முத லாகிய பொருளே
புலர்ந்தது பூங்குழற் கிணைதுணை மலர்கொண்டு
ஏற்றிநின் திருமுகத் தெமக்கருள் மலரும்
எழில்நகை கொண்டுநின் திருவடி தொழுகோம்
சேற்றிதழ்க் கமலங்கள் மலருந்தண் வயல்தழ்
திருப்பெருந் துறையுறை சிவபெரு மானே
ஏற்றுயர் கொடியுடை யாயெனை யுடையாய்
எம்பெரு மான்பள்ளி எழுந்தருளாயே !

1

445. पोट्रियन् वाळ्मुदलागिय पारुळे
पुलर्न्ददु पूङ्कळ्ळिक्किणै तुणैमलर् काण्डु
एट्रि निन् तिरुमुगत्तमवकरळ् मलरुम्
एळिल् नगै काण्डु निन् तिरुवडि ताळ्गोम्
चेट्रिदळ्ळक् कमलङ्गळ् मलरुम् तण्वयल्लूळ्
तिरुप्परुन्तुरै युरै शिवपरुमाने
एट्रयर् कांडियुडैयाय् एनैयुडैयाय्
एम्परुमान् पळ्ळियळ्ळुन्दरुळाये !

(तिरुमुரै आठ - 20 पंक्ति 1-8)

जागरण-गीत

तिरोधान शुद्धि

445. जय हो मेरे प्राणों के प्राण प्रभु की
जागो मेरे नाथ विहान हो गया
चढ़ा रहा हूँ नव प्रसून चरण-युगल पर
और जब देखता हूँ तुम्हारे मुखमंडल पर
अहा मुस्कान खिल रही है
कमनीय मुस्कान पर रीझकर
प्रणत हैं नाथ चरणांबुज पर
विकसित कमलों से वलयित
शीतल केदार से शोभित
तिरुप्परुन्तुरै धाम के शिवराज !
शोभायुक्त है तुम्हारे हाथ पर वृषभ ध्वज
मेरे नाथ हो स्वामी हो तुम
जाग उठो निद्रा से।

(तिरुमुरै आठ - 20 पंक्ति 1-8)

2

446. अरुणानिन्दिरन् तिशै अणुगिनन् इरुळपोय्
 अगन्नदु उदयम् निन्निरुमुगत्तिन्
 करुणैयिन् सूरियन् ऐळ एळ नयनक्
 कडिमलर् मलर् मट्रण्णल् अडक्कण्णाम्
 तिरळ् तिरै अरुपदम् मुरल्वन् इवैयोर्
 तिरुप्पर्नुत्तुरै युरै शिवर्परुमाने
 अरुळ् निदि तरवरुम् आनन्द मलैये
 अलैकडले पळ्ळियंळु न्दरुळ्ळाये !
 (तिरुमुरै आठ - 20 पंक्ति 9-16)

3

447. कूविन पूङ्गुयिल् कूविन कोळि
 कुरुगुक्क इयम्बिन इयम्बिन चङ्गम्
 ओविन तारकै आळि आळि उदयत्तु
 आरुप्पडुकिन्दु विरुप्पाडु नमक्कुन्
 तेव नर् चरिक्कळल् ताळिणै काट्टाय्
 तिरुप्परुन्तुरैयुरै शिवर्परुमाने
 यावर्मुमरिवरियाय् ऐमक्कळियाय्
 ऐम्परुमान् पळ्ळिर्यळ् न्दरुळ्वाये !
 (तिरुमुरै आठ - 20 पंक्ति 17-24)

446. निकल आया भास्कर इंद्र की पूर्व दिशा में
 तिरोभूत हो गया घनतिमिर भी
 उदय भास्कर सम ज्योतिर्मय है मुखारविंद
 नयनाभिराम हैं
 प्रसून सम विकासमान नयनांबुज
 स्तुतिरत हैं हम
 गुंजार करते अलिकुल सम
 तिरुप्परुन्तुरै में शोभित अधीश
 मेरे शिवराज ! अनुग्रह-निधि हो तुम
 करुणामय आनंदपर्वत हो
 कृपासमुद्र तुम करो नयनोन्मीलन
 हो गया विहान !

(तिरुमुरै आठ - 20 पंक्ति 9-16)

447. कूक रही कोयलिया, सुनो कुक्कुट का कूजन भी
 चहचहा रहे हैं पंछी कोलाहल के संग
 निकल रहा मंगलघोष शंख से
 पूर्व-गिरि में हो रहा भास्कर की प्रभा का प्रसार
 इधर मंद हो रही तारकों की द्युति
 तिरुप्परुन्तुरै में विराजे शिवराज
 प्रेम के साथ बढ़ा दो चरणयुगल हमारी ओर
 हर एक के लिए दुर्लभ तुम
 सुलभ हो हम भक्तजन के लिए
 हमारे नाथ ! करो नयनोन्मीलन
 हो गया विहान !

(तिरुमुरै आठ - 20 पंक्ति 17-24)

582 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

448. இன்னிசை வீணையர் யாரினார் ஒருபால்
 இருக்கொடு தோத்திரம் இயம்பினார் ஒருபால்
 துன்னிய பிணைமலர்க் கையினர் ஒருபால்
 தொழுகையர் அழுகையர் துவள்கையர் ஒருபால்
 சென்னியில் அஞ்சலி கூப்பினர் ஒருபால்
 திருப்பெருந்துறையுறை சிவபெருமானே
 என்னையும் ஆண்டுகொண் டின்னருள் புரியும்
 எம்பெரு மான்பள்ளி எழுந்தரு ளாயே !

4

448. इन्निशै वीणैयर् याळिन् आरुपाल्
 इरुक्कांडु तोत्तिरम् इयम्बिनर् आरुपाल्
 तुन्निय पिणैमलर्क् कैयिनर् आरुपाल्
 ताळ् गैयर् अळ् गैयर् तुवळ्कैयर् आरुपाल्
 चन्नियिल् अञ्जलि कूपिनर् आरुपाल्
 तिरुप्पर्न्नुரैयुरै शिवपर्माने
 ऐन्नैयुम् आण्डुकाण्डिन्नरुळ् पुरियुम्
 ऐम्पर्मान् पळ्ळियळ् न्दरुळाये !
 (तिरुमुரै आठ - 20 पंक्ति 25-32)

449. பூதங்கள் தோறும்நின் றாயெனின் அல்லால்
 போக்கிலன் வரவிலன் எனநினைப் புலவோர்
 சீதங்கள் பாடுதல் ஆடுதல் அல்லால்
 கேட்டறி யோம்உனைக் கண்டறி வாரைச்
 சீதங்கொள் வயல்திருப் பெருந்துறை மன்ன
 சிந்தனைக் கும்அரி யாயெங்கள் முன்வந்து
 ஏதங்கள் அறுத்தெம்மை ஆண்டருள் புரியும்
 எம்பெரு மான்பள்ளி எழுந்தரு ளாயே !

5

449. पूतङ्गळ् तोरुम्निन्नाय् एनिनल्लाल्
 पोविकलन् वरविलर्नन निनैप्पुलवोर्
 कीतङ्कळ् पाडुदलाडुदलल्लाल्
 केट्टरियोमुनैक् कण्डरिवारैच्
 चीतङ्काळ् वयल् तिरुप्पर्न्नुरै मन्ना
 चिन्तनैक्कुम् अरियाय् ऐङ्गळ्मुन्वन्दु
 एतङ्गळ् अरुत्तम्मै आण्डरुळ् पुरियुम्
 ऐम्पर्मान् पळ्ळियळ् न्दरुळाये !
 (तिरुमुரै आठ - 20 पंक्ति 33-40)

448. तुम्हारी सन्निधि में आनंद-तुंदिल हैं भक्तसमाज
 एक ओर खड़े हैं वीणावादक सुमधुर याळू के वादक
 एक ओर ऋग्वेद का हो रहा स्तुतिगान
 इधर देखो पुष्पहार के संग खड़े हैं भक्तगण
 उधर अश्रुपूरित नयनों के संग
 आराधक हैं आनन्द-मूर्च्छा में
 अंजलिबद्ध कर शिर पर धरे हुए
 तिरुप्परुन्तुरै में विराजे मेरे शिवराज
 हंत तुम्हारी करुणा, मुझे भी अपना लिया तुमने
 अपनाकर अनुग्रह का आनंद बरसा रहे हो
 मेरे नाथ ! करो नयनोन्मीलन
 हो गया विहान !

(तिरुमुरै आठ - 20 पंक्ति 25-32)

449. 'तुम निवास करते हो सकल चराचर में घटघट में'
 सुना है 'आवागमन से परे हो नित्य शाश्वत हो'
 ऐसा तुम्हारा गान करते हुए नृत्यरत
 सिद्धजन और ज्ञानी
 ऐसे किसी सुकृती को देखा सुना नहीं
 जो तुम्हारे दर्शन से धन्य बना है
 सुशीतल केदार वलयित
 तिरुप्परुन्तुरै के अधीश ! मेरे शिवराज !
 मनोवाक् के लिए दुर्लभ हो
 पधारो हमारे सामने
 अपनाओ दुःखदुरित दूरकर
 प्रभो ! करो नयनोन्मीलन हो गया विहान।

(तिरुमुरै आठ - 20 पंक्ति 33-40)

584 தமிழ் சீவமக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கீத திருவாசகம்

450. பப்பற வீட்டிருந் துணரும்நின் அடியார்
பந்தனை வந்தறுத் தாரவர் பலரும்
மைப்புறு கண்ணியர் மானுடத் தியல்பின்
வணங்குகின் றாரணங் கின்மண வாளா
செப்புறு கமலங்கள் மலருந்தண் வயல்தும்
திருப்பெருந் துறையுறை சிவபெரு மானே
இப்பிறப் பறுத்தெமை ஆண்டருள் புரியும்
எம்பெரு மான்பள்ளி எழுந்தரு ளாயே !

6

450. पप्यर वीट्टिरुन्दुणरुम् निन्नडियार्
पन्तनै वन्दरुत्तारवर् पलरुम्
मैप्पुरु कण्णियर् मानुडत्तियल्बिन्
वणङ्गुळिन्ऱार् अणङ्गिन् मणवाळा
चप्पुरु कमलङ्गळ् मलरुम् तण्वयल् चूळ्
तिरुप्परुन्तुरैयुरै शिव परुमाने
इप्पिरप्पुरुत्तु ऐमैयाण्डरुळ् पुरियुम्
ऐम्परुमान् पळ्ळियळ्ळुन्दरुळाये !

(திருமுரே ஆட - 20 பங்கி 41-48)

451. அதுபழச் சுவையென அமுதென அறிதற்
கரிதென எளிதென அமரரும் அறியார்
இதுஅவன் திருவுரு இவனவன் எனவே
எங்களை ஆண்டுகொண் டிங்கெழுந் தருளும்
மதுவளர் பொழிதிரு வுத்தர கோச
மங்கையுள் ளாய்திருப் பெருந்துறை மன்னா
எதுஎமைப் பணிகொள்ளும் ஆறது கேட்போம்
எம்பெரு மான்பள்ளி எழுந்தரு ளாயே !

7

451. अदु पळ्ळुवैयैन अमुदन अरिदर्
करिदन ऐळिदन अमररुमरियार्
इदु अवन् तिरुवुरु इवनवननवे
ऐङ्गळैयाण्डு காण्डிङ्गळுन्दரुळுम्
மதுவல் ப்ளில் திரு உத்தர கோச
மஜ்யை உலையு திருப்பரூநுரே மனா
ஐ்டு ஐமேப்பணிகாவுலும் அர்டு கேட்போம்
ஐம்பரமானு ப்ளியுலுலுந்தரூலாயே !

(திருமுரே ஆட - 20 பங்கி 49-56)

450. देव ! तुम्हारे कितने ही साधक
 तपस्या में लीन रहे काट लिए बंधपाश
 प्रीति के आनंदरस में सराबोर निमग्न होने के लिए
 अवतरित हुए अंजनरंजित नयनों के संग स्त्री रूप में
 प्रेमरति में पा गए आनंद अवाच्य
 हे उमा सुकुमारी के प्रिय पति !
 अरुणिम कमल विकसित केदार-बलयित
 तिरुप्परुन्तुरै में विराजे मेरे शिवराज !
 भव-बंधन काटकर अपनाते नाथ !
 करो नयनोन्मीलन ! हो गया विहान।

(तिरुमुदै आठ - 20 पंक्ति 41-48)

451. 'फल रस सरिस मधुरिम है वह'
 'अमृत समान है'
 'अति दुर्लभ होने पर भी अति सुलभ है'-
 इन बातों को जानते हैं देवगण
 हम भक्तजन जानते पहचानते हैं
 'यह है प्रिय का श्रीलसित रूप'
 हमारे अपने हैं यह जो
 अपनाकर हमें विराजे हैं
 मधुसिंचित उपवन बलयित
 उत्तरकोशमंगै धाम में
 तिरुप्परुन्तुरै के शिवराज !
 बताओ, आज्ञा क्या है हमारे लिए
 क्या सेवा करें बोलो तो
 हे नाथ करो नयनोन्मीलन
 हो गया विहान।

(तिरुमुदै आठ - 20 पंक्ति 49-56)

586 தமிழ் சைவத்த கவி மாணிக்கவாசகர் கீர்த்தி திருவாசகம்

452. முந்திய முதல்நடு இறுதியு மானாய்
முவரும் அறிகிலர் யாவர்மற் றறிவார்
பந்தணை விரலியும் நீயும்நின் அடியார்
பழங்குடித் தொறும்எழுந் தருளிய பரனே
செந்தழல் புரைதிரு மேனியுங் காட்டித்
திருப்பெருந் துறையுறை கோயிலுங் காட்டி
அந்தண னாவதுங் காட்டிவந் தாண்டாய்
ஆரமு தேபள்ளி எழுந்தரு ளாயே !

8

452. मुनिय मुदल्लुडु इरुदियुमानाय
मूवरुमरिगिल् यावर् मद्रिवार्
पन्तणै विरलियुम् नीयुम् निन्डियार्
पळङ्कुडिल् तारुमळ् न्दरुळिय परने
चेन्नळल् पुरै तिरुमेनियुम् காட்டித்
திருப்பெருந் துறையுறை கோயிலுங் காட்டி
அந்தண னாவதுங் காட்டிவந் தாண்டாய்
ஆரமு தேபள்ளி எழுந்தரு ளாயே !
(திருமுரே ஆட - 20 பங்கித் 57-64)

453. விண்ணகத் தேவரும் நண்ணவும் மாட்டா
விழுப்பொரு ளேயுன தொழுப்படி யோங்கள்
மண்ணகத் தேவந்து வாழச்செய் தானே
வண்திருப் பெருந்துறை யாய்வழி யடியோம்
கண்ணகத் தேநின்று களிதரு தேனே
கடலமு தேகரும் பேவிரும் படியார்
எண்ணகத் தாய்உல குக்குயி ரானாய்
எம்பெரு மான்பள்ளி எழுந்தரு ளாயே !

9

453. विष्णुगतेवरुम् नण्णुम् माट्टா
विळ् प्पारुळे उनताळ् प्पडियोड्कळ्
मण्णगत्ते वन्दु वाळ्च्यदाने
वण् तिरुप्परुन्तुरै उरैयाय् वळियडियोम्
कण्णगत्ते निन्ऱु कळितरु तेने
कडलमुदे करुम्बे विरुम्बडियार्
एण्णगत्ताय् उलगुक्कुयिर् आनाय्
एम्परुमान् पळ्ळियळ् न्दरुळायே !
(திருமுரே ஆட - 20 பங்கித் 65-72)

452. अनादि तुम सबके
 आदि मध्य अंत बने हो
 अनभिज्ञ हैं त्रिदेव भी तुमसे
 कौन जान सकते हैं तब
 ऐसे महिमामय प्रभु तुम
 इतने सहज सुलभ कि
 कोमलांगी उमा के संग
 भक्तजन के कुटीर में पधारते हो
 करुणामय तुम प्रकट हुए मेरे सामने
 अरुणिम देहकांति के संग
 और दिखाया तिरुप्परुन्तुरै का निजधाम
 दिखाकर द्विज स्वरूप
 अपनाया मुझे हे अमृतमय नाथ !
 करो नयनोन्मोलन ! हो गया विहान !

(तिरुमुुरै आठ - 20 पंक्ति 57-64)

453. देवों के लिए दुर्लभ हे परमेश्वर !
 कृपापूर्वक उतर आए अवनी पर
 गुरुरूप में हमारे उद्धार हेतु
 ताकि हम तुम्हारे चरणों की वंदना करते रहें
 और इस धरती पर आनंद का अनुभव करें
 हे समृद्ध तिरुप्परुन्तुरै के अधीश !
 जन्म-जन्म के तुम्हारे दास हम
 जब दर्शन करते हैं तुम्हारे
 नयन पान करते हैं आनंदामृत का
 मधुर मधुरिम आनंद ! ओ परमेश्वर
 बसे हुए भक्तजन के चित्त में
 ओ जगत् के प्राणस्वरूप हमारे नाथ
 करो नयनोन्मीलन ! हो गया विहान !

(तिरुमुुरै आठ - 20 पंक्ति 65-72)

588 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

454. புவனியிற் போய்ப்பிற வாமையின் நான்நாம்
 போக்குகின் றோம்அவ மேயிந்தப் பூமி
 சிவனுய்யக் கொள்கின்ற வாறென்று நோக்கித்
 திருப்பெருந் துறையுறை வாய்திரு மாலாம்
 அவன்விருப் பெய்தவும் மலரவன் ஆசைப்
 படவும்நின் அலர்ந்தமெய்க் கருணையும் நீயும்
 அவனியிற் புகுந்தெமை ஆட்கொள வல்லாய்
 ஆரமு தேபள்ளி எழுந்தரு ளாயே !

10

454. पुवनियिर् पोयप् पिरवामैयिन् नाळ्नाम
 पोवकुगिन्रोम् अवमे इन्दप्पुमि
 शिवनुय्यक् काळ्गिन्वारेन् नोविक
 तिरुप्परुन्तुरैयुरैवायत् तिरुमालाम्
 अवन् विरुप्पयदवु मलरवनाशैप्
 पडवु निन्नलन्द मयक्करुणैयुम् नीयुम्
 अवनियिर् पुगुन्दमै आट्काळ्ळ वल्लाय्
 आरमुदे पळ्ळियळ्ळु न्दरुळायே !

(திருமூரே ஆட - 20 பங்கி 73-80)

454. तिरुप्परुन्तुरै में कारुण्यमूर्ति
 शिवराज को निहार कर
 स्वर्ग में विष्णु के संग विरिंचि कहें
 "हंत ! वृथा बीत रहे हैं हमारे दिन यहाँ
 शिवानुग्रह कहीं मिल सकता है तो
 अवनी में, मात्र अवनी में
 जन्म लेना है हमें, अवनी में शिवानुग्रह पाने को"
 ऐसे महिमामय तिरुप्परुन्तुरै के अधीश !
 अपरंपार है तुम्हारी करुणा, भक्तवत्सलता
 आए तुम अवनी पर और अपना लिया हमें
 हे आनंदामृत ! अमृत-स्वरूप !
 करो नयनोन्मीलन ! हो गया विहान।

(तिरुमुरै आठ - 20 पंक्ति 73-80)



590 तमिल शैवभक्त कवि माणिक्यवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - डॉ रेवरेण्ड जी. यू. पोप; 1900 ई.

Source : Tiruvacagam by Rev. G.U. Pope; 1900 A.D.

'Thou dwell'st in all the elements,' 'tis said ; and yet
 'Thou goest not, nor com'st ;' the sages thus have sung
 Their rhythmic songs. Though neither have we heard nor learnt
 of those that Thee by seeing of the eye have known.
 Thou King of Perun-turrai, girt with cool rice-fields,
 to ponder Thee is hard to human thought. To us
 In presence come ! Cut off our ills ! In mercy make us Thine !
 Our mighty Lord ! FROM OFF THY COUCH IN GRACE ARISE !

Thy saints, who sinless in Thy home abide and know,
 have come, their bonds cast off ; and now, a mighty host,
 With beauteous garlands decked, and clothed in human shape,
 they all adore Thee, Bridegroom of the Goddess dread !
 Çiva-Lord, Who dwell'st in Perun-turrai's hallow'd shrine,
 girt with cool rice-fields, where th' empurpled lotus
 blooms !
 Cut off this 'birth,' make us Thine own, bestow Thy grace !
 Our mighty Lord ! FROM OFF THY COUCH IN GRACE ARISE !

'The flavour of the fruit is that ;' 'ambrosia that ;'
 'that's hard ;' 'this easy :' thus Immortals too know not !
 'This is His sacred form ; this is Himself :' that we
 may say and know, make us Thine own ; in grace arise !
 In Uttara-kōça-māṅgai's sweet perfumed groves
 Thou dwell'st ! O King of Perun-turrai's hallowed shrine !
 What service Thou demandest, Lo ! we willing pay.
 Our mighty Lord ! FROM OFF THY COUCH IN GRACE ARISE !

Before all being First, the Midst, the Last art Thou.

The Three know not They nature : how should others

know ?

Thou, with Thy tender Spouse, Thy servants' lowly huts
in grace didst visit, entering each, Supernal One !

Like ruddy fire Thou once didst show Thy sacred form ;

didst show me Perun-turrai's temple, where Thou dwell'st ;

As Anthaṇan didst show Thyself, and make me Thine.

Ambrosia rare ! FROM OFF THY COUCH IN GRACE ARISE !

The gods in heaven who dwell may not approach Thy seat !

O Being worthiest ! Yet us who at Thy foot

Pay homage, Thou to earth descending, madèst blest.

Dweller in fertile Perun-turrai's shrine ! our eyes

Beheld Thee ; honied sweetness made our being glad.

Ambrosia of the sea ! Sweetest of sweets ! Thou art

Within Thy longing servants' thought !—Soul of this world !—

Our mighty Lord ! FROM OFF THY COUCH IN GRACE ARISE !

Said sacred Māl and flower-born Ayan as they gazed

on Çivan's form, 'This day in vain we spend and cry.

'Tis time we went to earth and there were born. 'Tis earth,

'tis earth alone where Çivan's grace is wont to save.'

Thou King, Who dwell'st in Perun-turrai's hallow'd shrine,

mighty Thou wert to enter earth, and make us Thine !

Thou and the Grace, that flower-like blooms from forth Thy form,

Ambrosia rare ! FROM OFF THY COUCH IN GRACE ARISE !

Lines : 17 - 40

21

கோயில் முத்த திருப்பதிகம்

कोयिल् मुत्त तिरुप्पदिगम्

அநாதியாகிய சற்காரியம்

अनादियाकिय चर्कारियम्

455. உடையாள் உன்தன் நடுவிருக்கும்
 உடையாள் நடுவுள் நீயிருத்தி
 அடியேன் நடுவுள் இருவீகும்
 இருப்ப தானால் அடியேன்உன்
 அடியார் நடுவுள் இருக்கும்
 அருளைப் புரியாய்ப்பொன் னம்பலத்தெம்
 முடியா முதலே என்சுருத்து
 முடியும் வண்ணம் முன்னின்றே !

1

455. उडैयाळुन्तन् नडुविरुक्कुम्
 उडैयाळ् नडुवळु नी इरुत्ति
 अडियेन् नडुवुळ् इरुवीरुम्
 इरुप्पदनाल् अडियेनुन्
 अडियार् नडुवुळ् इरुक्कुम्
 अरुळैप् पुरियाय् पान्निम्बलत्तम्
 मुडिया मुदले ऐन् करत्तु
 मुडियुम् वण्णम् मुन् निन्ने !

(तिरुமுரै आठ -21 पंक्ति 1-8)

21

आदि देवालय-गीत

शाश्वत सत्य

455. रमती है शक्ति तुम्हारे मध्य में
और तुम रमते हो शक्ति-मध्य
अहा, मेरा अहोभाग्य, कृपापूर्वक
तुम दोनों बसे हो मेरे हृदय में
कनकसभा मध्य नृत्यरत तात
निवेदन यही, ऐसा अनुग्रह करो
स्थान पाऊँ मैं तुम्हारे दासों के मध्य
हे आद्यंतविहीन प्रभु
पूर्ण करो मेरी यह आस !

(तिरुमुरै आठ - 21 पंक्ति 1-8)

594 तमिल शैवभक्त कवि भाणिवक्त्रवाचकर कृत तिरुवाचकम्

456. முன்னின் நாண்டாய் எனைமுன்னம்
யானும் அதுவே முயல்வுற்றுப்
பின்னின் நேவல் செய்கின்றேன்
பிற்பட் பொழிந்தேன் பெம்மானே
என்னின் நருளி வரநின்று
போந்தி டென்னா விடில்அடியார்
உன்னின் நிவனார் என்னாரோ
பொன்னம் பலக்கூத் துகந்தானே!

2

456. मुन्नित्पाण्डाय ऐनैमुन्नम्
यानुमदुवे मुयल्वुदरुप्
पिन्नित्तेवल् चय्यगिन्नेन्
पिर्पट्टाळिन्देन् पम्माने
ऐन्नित्तरुळिवர் निन्
पोन्दिडु ऐन्नाविडिल् अडियार्
उन्नित्तिवनार् ऐन्नारो
पांन्म्वलक्कुत्तुगन्दाने !

(तिरुमुரै आठ -21 पंक्ति 9-16)

457. உகந்தா னேஅன் புடைஅடிமைக்
குருகா வுள்ளத் துணர்விலியேன்
சகந்தான் அறிய முறையிட்டால்
தக்க வாறன் நென்னாரோ
மகந்தான் செய்து வழிவந்தார்
வாழ வாழ்ந்தாய் அடியேற்குள்
முகந்தான் தாரா விடிள்முடிவேன்
பொன்னம் பலத்தெம் முழுமுதலே!

3

457. उगन्दाने अन्नुडैयडिमैक्
कुरुगा उळ्ळत्तु उणर्विलियेन्
चगन्तानरिय मुरैयिट्टाल्
तक्कवारन्ऱु ऐन्नारो
मगन्तान् चय्युदु वळिवन्दार्
वाळ् वाळ्न्दाय् अडियेर्कुन्
मुगन्तान् तराविडिन् मुडिवेन्
पांन्म्वलत्तु ऐम्मुळ्मुदले !

(तिरुमुरै आठ -21 पंक्ति 17-24)

456. पूर्व में तुमने पहल लेकर
 अपना दास बना लिया मुझे
 आदेश मानकर सेवकाई में लगा रहा मैं भी
 किंतु मेरे नाथ ! पीछे रह गया हूँ
 तुम्हारी भक्त-मंडली में।
 इस विकट घड़ी में
 यदि तुम अनुग्रहपूर्वक मुझे बुलाओगे नहीं-
 'आओ वत्स !' कहते हुए
 तो पहुँच नहीं पाऊँगा तुम्हारे पास
 ऐसे में हे कनकमय सभा में नर्तित नटराज !
 तुम्हारे भक्तगण पूछेंगे नहीं क्या
 वह तुम्हारा दास कहाँ है
 जो अनुगमन करता रहा पहले।

(तिरुमुरै आठ - 21 पंक्ति 9-16)

457. प्रेममय दास्यता से प्रमुदित प्रभु !
 पाषाण सदृश हृदय मेरा पिघलता नहीं
 लोक को साक्षी बनाकर
 यदि मैं परिवाद करूँ तुम्हारी उपेक्षा का
 तो लोग कहेंगे नहीं, कि यह अनुचित हुआ ?
 यज्ञ-याग में रत जनों पर परितुष्ट होकर
 कल्याण करते हो तुम उनका
 यदि तुम अभिमुख न होगे
 इस दास की ओर
 तो मैं नष्ट हो जाऊँगा, कहीं का नहीं रहूँगा
 हे कनकसभा में नर्तित नटराजराज !
 मेरे सर्वस्व !

(तिरुमुरै आठ - 21 पंक्ति 17-24)

458. முழுமுத லேஐம் புலனுக்கும்
முவுருக் கும்என்த னக்கும்
வழிமுத லேநின் பழுவடி.
யார்தி ரள்வான் குழுமிக்
செழுமுத லேயருள் தந்திருக்க
இரங்குங் கொல்லோ என்று
அழுமது வேயன்றி மற்றென்
செய்கேன் பொன்னம் பலத்தரைசே!

4

458. मुळमुदले ऐम्पुलनुवकुम्
 भूवकुर्मन् तनवकुम्
 वळिमुदले निन् पळवडि
 यार् तिरळ्वान् लुळुमिक्
 कळमुदले अरळ् तन्दिरुवक्
 इरङ्गुङ्काल्लो ऐन्ऱ
 अळमुदुवे अन्नि मद्रन्
 चय्येन पान्न्म्वलत्तरैशे !

(तिरुमुरै आठ - 21 पंक्ति 25-32)

459. அரைசே பொன்னம் பலத்தாடும்
அமுதே என்றுன் அருள்நோக்கி
இரைதேர் கொக்கொத் திரவுபகல்
ஏசற் றிருந்தே வேசற்றேன்
கரைசேர் அடியார் களிசிறப்பக்
காட்சி கொடுத்துன் னடியேன்பால்
பிரைசேர் பாலின் நெய்போலப்
பேசா திருந்தால் ஏசாரோ?

5

459. अरैशे पान्मन्बलत्ताडुम्
अमुदे एँङ्गन्नरुळ् नोविक
इरै तेर् काक्कात्तिरवु पगल्
एशट्टिरुन्दे वेशट्टेन्
करै चेरडियार्गर् कळिचिरप्पक्
काट्टि काडुत्तुन्नडियेन् पाल्
पिरैचेर् पालिन् नय् पोल्प्
पेशातिरुन्डाल् एशारो ?

(तिरुमुरै आठ - 21 पंक्ति 33-40)

458. हे परिपूर्ण ! नाथ हो स्वामी हो
मेरे पंचेन्द्रिय के, मन-बुद्धि-अहंकार के
और स्वयं मेरे नाथ हो तुम !
ओ परमेश्वर ! अनुपम है यह दृश्य
नभोमंडल में तुम्हें घेरे खड़े हैं
अनगिनत तुम्हारे पुराने भक्त
इधर मैं खड़ा हूँ एकाकी तुमसे बिछुड़कर
ऐसे में सिसक-सिसक रोने के सिवा
अनुग्रह के लिए कल्पने के सिवा
कर ही क्या सकता हूँ
कनकसभा में नर्तित नटराज !

(तिरुमुदै आठ - 21 पंक्ति 25-32)

459. प्रभु मेरे ! कनकसभा में नर्तित नटराज !
अमृतस्वरूप ! खड़ा हूँ मैं तुम्हारी सन्निधि में
अनुग्रह की आस लेकर
जैसे सरोवर तट पर खड़ा हो कोई बगुला
भोजन की आस में
तर गए तुम्हारे सभी भक्तगण
नाच रहे हैं आह्लाद में
यदि दर्शन देकर अपनाओगे नहीं
- दुग्ध में मक्खन के समान छिपे रहोगे -
तो हैंसेंगे नहीं लोग तुम पर ?

(तिरुमुदै आठ - 21 पंक्ति 33-40)

598 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கீர்த்தி திருவாசகம்

460. ஏசா நிற்பர் எண்ணெனக்
 கடியா னென்று பிறரெல்லாம்
 பேசா நிற்பர் யான்தானும்
 பேணா நிற்பேன் நின்னருளே
 தேசா நேசர் சூழந்திருக்குந்
 திருவோ லக்கஞ் சேவிக்க
 ஈசா பொன்னம் பலத்தாடும்
 எந்தாய் இனித்தான் இரங்காயே !

6

460. एशा निर्पर ऐन्ने उनक्
 कडियानन् पिररल्लाम्
 पेशा निर्पर् यान् तानुम्
 पेणा निपेन् निन्नरुळे
 तेशा नेशर् चूळन्दिरुक्कुम्
 तिरु ओलक्कम् सेविक्क
 ईशा पान्म्वलत्ताडुम्
 ऐन्ताय् इनित्तान् इरङ्गाये !

(तिरुமுரै आठ - 21 पंक्ति 41-48)

461. இரங்கும் நமக்கம் பலக்கத்தன்
 என்றென் றேமாந் திருப்பேனை
 அருங்கற் பனைகற் பித்தாண்டாய்
 ஆள்வா ரிலிமா டாவேனோ
 நெருங்கும் அடியார் களும்நீயும்
 நின்று நிலாவி வினையாடும்
 மருங்கே சார்ந்து வரஎங்கள்
 வாழ்வே வாவென் றருளாயே !

7

461. इरङ्गुम् नमक्कम्बलक्कूत्तन्
 ऐन्न्रे मान्दिरुप्पेनै
 अरुङ्कर्पनै कर्पित्ताण्डाय्
 आळ्वारिलि माडावेनो
 नरुङ्गुम् अडियार्कुम् नीयुम्
 निन्ऱु निलावि विळैयाडुम्
 मरुङ्गे चान्दु वर ऐङ्गळ्
 वाळ्वे वा ऐन्ऱुळायै !

(तिरुமுரै आठ - 21 पंक्ति 49-56)

460. मेरी असहाय दशा देख, हँसेंगे लोग
 देखो कैसा खड़ा है अपने को कहता था
 परमेश्वर का दास
 भांति-भांति की बात बनाएँगे
 किंतु मैं चुपचाप खड़ा रहूँगा
 आस लेकर तुम्हारे अनुग्रह की
 हे देशिकोत्तम ! भक्तमंडली से वलयित
 तुम्हारी शोभा का दर्शन कर सकूँ
 ऐसी कृपा करो अब भी
 हे कनकसभा में नर्तित नटराज !

(तिरुमुऐ आठ - 21 पंक्ति 41-48)

461. यही आस लेकर खड़ा था तुम्हारी सन्निधि में
 तुम मुझ पर करुणा करोगे अपनाओगे
 और तुमने अपना लिया नूतन ढंग से
 अद्भुत अनोखा उपदेश दिया
 आज तुम पराङ्मुख बनो तो
 तो क्या मैं रह न जाऊँगा बिन स्वामी की गाय,
 हे मेरे देशिक ! अद्भुत है यह दृश्य
 भक्त-मंडली नाच रही है आह्लाद में
 और तुम उनके मध्य प्रमुदित हो
 हो रहा आनंद का उत्सव सर्वत्र ही
 ऐसे में क्या तुम मुझे नहीं बुलाओगे
 कनकसभा में नर्तित मेरे नाथ !
 कृपा करो ! अपनाओ मुझे अब भी।

(तिरुमुऐ आठ - 21 पंक्ति 49-56)

600 தமிழ் சைவமத கவி பாணிக் கவாசகர் கृत திருவாசகம்

462. அருளா தொழிந்தால் அடியேனை
எஞ்சேல் என்பார் ஆர்இங்குப்
பொருளா என்னைப் புருந்தாண்ட
பொன்னே பொன்னம் பலக்கூத்தா
மருளா மனத்தோ டுனைப் பிரிந்து
வருந்து வேனை வாவென்றுன்
தெருளார் கூட்டங் காட்டாயேல்
செத்தே போனாற் சிரியாரோ?

8

462. அருடாதிநீநால் அடியேனே
அஜெல் ஁னாராரி஁குப்
பாருளா ஁ன்னேப் புருந்தாண்ட
பாந்நே பாந்நம்பலக்கூதா
மருளா மனத்தாடுநேப் பிரிந்து
வருந்துவேனே வாவென்று
தருளா கூட்டம் காட்டாயேல்
செத்தே போனாற் சிரியாரோ ?

(திருமுரே ஆட - 21 பங்கி 57-64)

463. சிரிப்பார் களிப்பார் தேனிப்பார்
திரண்டு திரண்டுன் திருவார்த்தை
விரிப்பார் கேட்பார் மெச்சுவார்
வெவ்வே நிருந்துன் திருநாமந்
தரிப்பார் பொன்னம் பலத்தாடுந்
தலைவா என்பார் அவர்முன்னே
நரிப்பாய் நாயேன் இருப்பேனோ
நம்பி இனித்தான் நல்காயே !

9

463. சிரிப்பார் களிப்பார் தெனிப்பார்
திரண்டு திரண்டுந் திருவார்த்தை
விரிப்பார் கேட்பார் மெச்சுவார்
வெவ்வே நிருந்துந் திருநாமம்
தரிப்பார் பாந்நம்பலக்கூதம்
தலேவா ஁னாரவ் முந்நே
நரிப்பாய் நாயேநிருபேனோ
நம்பி இனித்தான் நல்காயே !

(திருமுரே ஆட - 21 பங்கி 65-72)

462. यदि तुम नहीं करोगे अनुग्रह
 कहाँ जाऊँ मैं ? कौन देगा मुझे अभय ?
 इस जन को भी कुछ मानकर
 पधारे और अपनाया था उस दिन
 कनकमय चित्सभा नर्तित नटराज !
 भ्रमजाल में पड़ गया मेरा चित्त
 इसलिये बिछुड़कर तुमसे तड़प रहा हूँ
 ऐसे में प्रभो !
 यदि तुम मुझे 'आओ' कहकर नहीं बुलाओगे
 मिलाओगे नहीं अपनी भक्तमंडली में
 और मैं नष्ट हो जाऊँ
 तो जग-हँसाई नहीं होगी तुम्हारी ?

(तिरुमुरै आठ - 21 पंक्ति 57-64)

463. प्रेमाभक्ति की चरमदशा में हैं तुम्हारे भक्त
 हँस रहे हैं बरबस आह्लाद से नाचते हैं
 ध्यान करते हुए मौन रहते हैं कभी
 अगले क्षण में लग जाते हैं महिमा के विस्तार में
 श्रवण करते हुए गुणगान में रत हैं
 जाप करते हैं तुम्हारे पावन नाम का
 शुरू होता है फिर तुम्हारा यशोगान
 इस भक्तमंडली में केवल मात्र मैं
 अनाड़ी कहलाऊँ
 क्या यह उचित रहेगा तुम्हारे लिए
 इसलिये प्रभो अपनाओ मुझे भी।

(तिरुमुरै आठ - 21 पंक्ति 65-72)

602 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

464. நல்கா தொழியான் நமக்கென்றுன்
நாமம் பிதற்றி நயனநீர்
மல்கா வாழ்த்தா வாய்குழறா
வணங்கா மனத்தால் நினைந்துருகிப்
பல்கா லுன்னைப் பாவித்துப்
பரவிப் பொன்னம் பலமென்றே
ஒல்கா நிற்கும் உயிர்க்கிரங்கி
அருளாய் என்னை உடையானே!

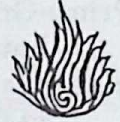
10

464. नल्गादाळियान् नमक्कन्नुन्
नामम् पिदट्टि नयन नीर्
मल्गा वाळ्त्ता वाय् कुळरा
वणङ्गा मनत्ताल् निनैन्दुरुगिप्
पल्गाल् उन्नैप् पावित्तुप्
परविप् पांन्म्वलमन्त्रे
आल्गा निर्कुम् उयिर्किरङ्गि
अरुळाय् ऐन्नै उडैयाने !

(திருமுரே ஆட - 21 பங்கி 73-80)

464. थकित चकित श्रान्त क्लान्त मैं
 यही आस लेकर खड़ा हूँ
 तुम मेरे स्वामी हो और मैं तुम्हारा दास
 कदापि परित्याग न करोगे मेरा
 चित्त लगा है चरणयुगल पर
 बारंबार ध्यान लगाता हुआ खड़ा हूँ
 नयनों से प्रवाहित है अश्रुधार
 लड़खड़ा रही है जिह्वा और
 मैं स्तुति गान कर रहा हूँ
 तिल्लै चिदंबर की कनकसभा में
 नर्तित नटराजराज ! मेरे स्वामी
 इस जन पर बरसाओ अनुग्रह।

(तिरुमुरै आठ - 21 पंक्ति 73-80)



604 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - वर्ड बीटिफिक एस. ए. शंकरनारायणन्

Source: Tiruvacagam: Word Beatific by S.A. Sankaranarayanan

Civa-Sakti is instinct in you.
 you are immanent thro' Her.
 As Two of you are instinct in me,
 would you not come forth
 to fulfil my wish of belonging
 to servitors' midst
 and thus grace. O, Endless
 auric Spatium Dancer Primordial.

Prime-Gracer mine, gracing before
 I attained worthiness. I follow you
 in service trying become worthy ;
 in this trial I went tarried !
 Stand me if you don't, gracing
 to enter release, won't servitors
 on your side wonder who I could be.
 O Holy auric-spatium-dance Lover !

Our Primordial Ens adance at spatium
 auric ! Willing acceptor of Love
 endorsed vassal-service ! I'm an
 ignoramus, heart unmelting to love.
 Were I to shout for the world to know
 craving my want won't they call it
 channel improper. Abider gracing those
 sacrificers. If your fair face shows up not, I'll die.

I, your spouse could see you, the causal Ens
 of five sensoria and three inner Entia
 Mind, Intellect, self. O, First one gracing great
 your ancient servitors' thick clan acrowding !
 Would you deign to pity me to grace me
 to live in Release-Thus would I
 grieve and sob, but whatelse to do. O, king
 adance in auric spatium. O Ens Entia Primal.

Auric spatium dancer king, Dear Alembic !
 Thus hailing, seek your grace I shall, waiting
 on, day and night with surge, wearied like
 a stork selecting its prey with intent.
 If you but show up to servitors reaching
 the shore of Release and remain hid
 as ghee in clabber never in dialogue with me
 won't the worlders gibe at me ?

Lines : 1 - 40

22

கோயிற்றிருப்பதிகம்

कोयिल् तिरुप्पदिगम्

அதுபோக இலக்கணம்

अदुपोग लक्कणम्

465. மாறிநின் றென்னை மயக்கிடும் வஞ்சப்
புலனைந்தின் வழியடைத் தழுதே
ஊறிநின் றென்னுள் எழுபரஞ் சோதி
உள்ளவா காணவந் தருளாய்
தேறலின் தெளிவே சிவபெருமானே
திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
ஈறிலாப் பதங்கள் யாவையுங் கடந்த
இன்பமே என்னுடை அன்பே!

1

465. मारिनिर्न्नै मयविकडुम् वञ्जप्
पुलनैन्दिन् वळियडैत्तमुदे
ऊरि निन्न्नुळ् एळ् पञ्जोति
उळ्ळवा काण वन्दरुळाय्
तेरलिन् तळिवे शिवपरुमाने
तिरुप्परुन्तुरैयुरै शिवने
ईरिलाप् पन्दङ्गळ् यावैयुम् कडन्द
इन्वमे ऐन्नुडै अन्वे !

(तिरुमुரै आठ - 22 पंक्ति 1-8)

22

देवालय-गीत

अनुभव लक्षण

465. मुझे बहलाते बरगलाते थे
प्रवंचक पंचेंद्रिय
अवरुद्ध किया तुम्हीं ने उनका मार्ग,
और मेरे हृदय में आनन्द का उत्स बनकर
विलसे अमृतस्वरूप !
मधु से मधुरिम प्रभु !
दर्शन देने के लिए पधारो
देखूँ यथासत्य रूप में
तिरुप्परुन्तुरै में विराजे शिवराज
अंतहीन आनंदलोक से परे व्याप्त हो
आनंदकंद मेरे नाथ !

(तिरुमुदै आठ - 22 पंक्ति 1-8)

608 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கீழ் திருவாசகம்

466. அன்பினா லடியே னாவியோ டாக்கை
யானந்த மாய்க்கசிந் துருக
என்பர மல்லா இன்னருள் தந்தாய்
யானிதற் கிலனொர்கைம் மாறு
முன்புமாய்ப் பின்பும் முழுதுமாய்ப் பரந்த
முத்தனே முடிவிலா முதலே
தென்பெருந் துறையாய் சிவபெரு மானே
சீருடைச் சிவபுரத் தரைசே!

2

466. அந்நிலாபதியேந் ஆவியோடாகை
அந்நிலமாபுக் கசிந்துருக
என் பரமல்லா இன்னருள் தந்தாய்
யானிதற்கிலனொர்கைம் மாறு
முன்புமாய்ப் பின்பும் முழுதுமாய்ப் பரந்த
முத்தனே முடிவிலா முதலே
தென்பெருந் துறையாய் சிவபெரு மானே
சீருடைச் சிவபுரத் தரைசே!

(திருமுரே ஆட - 22 பங்கி 9-16)

467. அரைசனே அன்பர்க் கடியனே னுடைய
அப்பனே ஆவியோ டாக்கை
புரையுரை கனியப் புருந்துநின் றுருக்கிப்
பொய்யிருள் கடிந்தமெய்ச் கடரே
திரைபொரா மன்னும் அமுதத்தெண் கடலே
திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
உரையுணர்வு இறந்துநின் றுணர்வதோர் உணர்வே
யானுள்ளை உரைக்குமா றுணர்த்தே!

3

467. அரேசனே அந்நிலாபதியேந் ஆவியோடாகை
அப்பனே ஆவியோ டாக்கை
புரையுரை கனியப் புருந்துநின் றுருக்கிப்
பொய்யிருள் கடிந்தமெய்ச் கடரே
திரைபொரா மன்னும் அமுதத்தெண் கடலே
திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
உரையுணர்வு இறந்துநின் றுணர்வதோர் உணர்வே
யானுள்ளை உரைக்குமா றுணர்த்தே!

(திருமுரே ஆட - 22 பங்கி 17-24)

466. प्रकंपित हो रहा है प्रेमातिरेक से
 इस दास का शरीर
 पिघल रहा है हृदय भी
 परम आनंद के अतिरेक से
 अहह ! इतनी अनुग्रह-वर्षा !
 मैं इस योग्य कहाँ था !
 बदले में क्या दे सकता हूँ मैं ?
 आदिनाथ तुम व्याप्त हो परिपूर्ण होकर
 मुक्तिदाता, अंतहीन चिरंतन !
 दक्षिण परंत्तुरै में विराजे शिवराज !
 सुंदर शिवपुर के अधीश !

(तिरुमुऱै आठ - 22 पंक्ति 9-16)

467. प्रभो ! तुम्हारा प्रिय दास हूँ मैं
 और तुम मेरे प्रिय तात हो
 तुम्हारे हैं ये प्राण और यह देह
 बरबस आकर विराजे मेरे हृदय में, देह में
 भरते हुए आनंद का मधु रोम-रोम में
 पिघल गया अंतर् मेरा
 बह गए सकल दोष निःशेष ही
 तिरोहित हुआ अंधकार
 ज्योतिस्वरूप के प्रताप से
 लहरा रहे आनंद-सागर !
 तिरुप्परुन्तुरै में विराजे शिवराज
 मौन हो जाते हैं वाक् और शब्द
 भावना और अनुभूति से वेद्य हो
 प्रभो ! ऐसी कृपा करो
 यशोगान करूँ मैं तुम्हारा सुमधुर गिरा में।

(तिरुमुऱै आठ - 22 पंक्ति 17-24)

610 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

468. உணர்ந்தமா முனிவர் உம்பரோ டொழிந்தார்
 உணர்வுக்குந் தெரிவரும் பொருளே
 இணங்கிலி எல்லா உயிர்கட்கும் உயிரே
 எனைப் பிறப் பறுக்கும்எம் மருந்தே
 திணிந்ததோர் இருளில் தெளிந்ததூ வெளியே
 திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
 குணங்கன்தா மில்லா இன்பமே உன்னைக்
 குறுகினேற் கினியென்ன குறையே?

4

468. उणर्न्द मामुनिवरुम्बरोडाङ्गिन्दार्
 उणर्वुक्कुम् तंरिवरुम् पारुळे
 इणंगिलि ऐल्ला उयिर्गट्कुमुयिरे
 ऐनैप् பிர்ஃபுரஃகுமம் மருन्दே
 तिणिन्दोरिरुळिल् तंळिन्द तूवंळिये
 திருஃபுரஃநுரே யுரே சிவனே
 குணங் தாம் இல்லா இன்பமே உன்னை
 குறுகினெந் கினியென்ன குறையே?

(திருமூரே ஆட - 22 பங்கி 25-32)

469. குறைவிலா நிறைவே கோதிலா அமுதே
 ஈறிலாக் கொழுஞ்சுடர்க் குன்றே
 மறையுமாய் மறையின் பொருளுமாய் வந்தென்
 மனத்திடை மன்னிய மன்னே
 சிறைபெறா நீர்போல் சிந்தைவாய்ப் பாயுந்
 திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
 இறைவனே நீயென் உடலிடங் கொண்டாய்
 இனியுன்னை யென்னிரக் கேனே?

5

469. கुरேவிலா நிரேவே கோதிலா அமுதே
 இரிலாக் காடூ ஃசுடர்க் குந்ரே
 மரேயுமாய் மரேயின் பாரஃகுமாய் வந்ந்
 மனத்திடை மனிய மன்னே
 சிரேபரஃ நீர் போல் சின்தைவாய் பாயும்
 திருஃபுரஃநுரே யுரே சிவனே
 இரேவனே நியன்னுடலிற் றிடஃகாண்டாய்
 இனியுன்னே இந்நிரஃகனே?

(திருமூரே ஆட - 22 பங்கி 33-40)

468. पूर्णतः ज्ञानी

मुनिजन और देवगण भी
जान न पाए पूर्ण रूप से तुम्हें
ओ अनुपम ! प्राणों के प्राण !
भवबंधन से मुक्तिदायक महौषध !
घनतिमिर के मध्य ज्योतिर परमज्योति !
परुन्तुरै धाम में विराजे शिवराज
गुणातीत आनंद ! तुम तक पहुँच गया हूँ
अब और किसी की चाह नहीं
कोई कमी नहीं है।

(तिरुमुरै आठ - 22 पंक्ति 25-32)

469. ओ अन्यून परिपूर्ण ! विशुद्ध अमृत !

भावनातीत जाज्वल्यमान ज्योतिपर्वत
वेद बनकर वेद का सार बनकर आए तुम
आकर मेरे हृदय में बस गए आनंद से
तिरुप्परुन्तुरै धाम के अधीश शिवराज !
कूल तोड़कर बह रहे प्रवाह सम आकर
मेरे हृदय-देश में बस गए तुम
निजधाम बना लिया मेरे शरीर को
अब माँगने के लिए क्या है
परितृप्त मैं माँगूंगा कुछ नहीं।

(तिरुमुरै आठ - 22 पंक्ति 33-40)

470. இரந்திரந் துருக என்மனத் துள்ளே
 எழுகின்ற சோதியே இமையோர்
 சிரந்தனிற் பொலியுங் கமலச்சே வடியாய்
 திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
 நிரந்தஆ காயம் நீர்நிலம் தீகால்
 ஆயவை அல்லையாய் ஆங்கே
 சுரந்ததோர் உருவே களித்தனன் உன்னைக்
 கண்ணுறக் கண்டுகொண் டின்றே !

6

470. इरन्तिरन्तुरग एन् मनसुद्धे
 ऐङ्गुगिन् चोतिये इमैयोर्
 चिरन्तनिर् पालियुम् कमलच्चेवडियाय्
 तिरुप्परन्तुरैयुरै शिवने
 निरन्तआकायम् नीरनिलम् तीकाल्
 आयवै अल्लैयायाङ्गे
 करन्दोरुरुवे कवित्तननुन्नैक्
 कण्णुरक्कण्डुकाण्डिन्ने !

(திருமுரே ஆட - 22 பங்கித 41-48)

471. இன்றெனக் கருளி இருள்கடிந் துள்ளத்
 தெழுகின்ற ஞாமிறே போன்று
 நின்றநின் தன்மை நினைப்பற நினைந்தேன்
 நீயலால் பிறிதும்ற் நின்மை
 சென்றுசென் றனுவாய்த் தேய்த்துதேய்த் தொன்றாம்
 திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
 ஒன்றும் நீயல்லை அன்றியொன் றில்லை
 யாகுன்னை அறியகிற் பாரே?

7

471. इन्वनक्कवि इरुळ् कडिन्दुळ्ळत्
 तळ्ळुकिन् आयिरे पोन्
 निन् निन् तन्नै निनैप्पर निनैन्देन्
 ईयलार् पिरिदु मद्रिन्नै
 चन् चन्नुवायत् तेयन्दु तेयन्दान्नाम्
 तिरुप्परन्तुरै उरै शिवने !
 आन् नी अल्लै अन्नि आन्निल्लै
 आरुन्नै अरियकिर्पारे ?

(திருமுரே ஆட - 22 பங்கித 49-56)

470. मेरे अंतरतम में विराजे ज्योतिराट् !
 ज्यों-ज्यों ध्यान करता हूँ कृपा की कामना से
 पिघल जाता हूँ खो जाता हूँ
 प्रकट होते हो तुम ज्योति बनकर
 शोभित हैं अरुणिम चरण-युगल
 देवगण के शिरों पर कांति से
 हे तिरुप्परुन्तुरै में विराजे शिवराज
 तुम धरणी हो सलिल हो
 अनिल-अनल और नभतल हो
 और यह सब नहीं भी हो
 छिपे हो इन सभी में निराकार होकर
 अहा ! ऐसे निराकार को साकार देख लिया मैंने
 धन्य हूँ ! धन्य धन्य !

(तिरुमुदै आट - 22 पंक्ति 41-48)

471. अनुग्रह वर्षा कर दी तुमने आज के दिन
 दूर कर तिमिर मेरे अंतर् का
 उदित हुए दिनकर सरिस
 बिखेरते हुए प्रभापुंज
 असीम करुणा पर खो गई सुध-बुध मेरी
 प्रभो ! कोई नहीं कुछ भी नहीं तुम्हारे सिवा
 विघटित अणु घिसकर विलुप्त होते हैं
 फिर जुड़ जुड़ कर लेते हैं आकार
 असीम है तव महिमा
 तिरुप्परुन्तुरै में पधारे मेरे शिवराज !
 तुम कुछ नहीं हो शून्य हो
 या तुम्हारे सिवा कुछ नहीं है
 इस रूप में कौन जान सकता है
 महाज्ञानियों को छोड़कर।

(तिरुमुदै आट - 22 पंक्ति 49-56)

614 தமிழ் சைவத்த கவி மாணிக்கவாசகர் கீத திருவாசகம்

472. பார்பதம் அண்டம் அனைத்துமாய் முளைத்துப்
 பரந்ததோர் படரொளிப் பரப்பே
 நீருறு தீயே நினைவதேல் அரிய
 நின்மலா நின்னருள் வெள்ளச்
 சீருறு சிந்தை எழுந்ததோர் தேனே
 திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
 யாகுற வெனக்கிங் காரய லுள்ளார்
 ஆனந்தம் ஆக்குமென் சோதி!

8

472. பார்பதம் அண்டம் அனைத்துமாய் முளைத்துப்
 பரந்ததோர் படரொளிப் பரப்பே
 நீருறு தீயே நினைவதேல் அரிய
 நின்மலா நின்னருள் வெள்ளச்
 சீருறு சிந்தை எழுந்ததோர் தேனே
 திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
 யாகுற வெனக்கிங் காரய லுள்ளார்
 ஆனந்தம் ஆக்குமென் சோதி!

(திருமுறை ஆட - 22 பங்கி 57-64)

473. சோதியாய்த் தோன்றும் உருவமே அருவாம்
 ஒருவனே சொல்லுதற் கரிய
 ஆதியே நடுவே அந்தமே பந்தம்
 அறுக்கும் ஆனந்தமா கடலே
 தீதிலா நன்மைத் திருவருட் குன்றே
 திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
 யாதுந் போவதோர் வகையெனக் கருளாய்
 வந்துநின் இணையடி தந்தே!

9

473. சோதியாய்த் தோன்றும் உருவமே அருவாம்
 ஒருவனே சொல்லுதற் கரிய
 ஆதியே நடுவே அந்தமே பந்தம்
 அறுக்கும் ஆனந்தமா கடலே
 தீதிலா நன்மைத் திருவருட் குன்றே
 திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
 யாதுந் போவதோர் வகையெனக் கருளாய்
 வந்துநின் இணையடி தந்தே!

(திருமுறை ஆட - 22 பங்கி 65-72)

472. अंड-बहिरंड बनकर
 अग-जग में व्याप्त ज्योतिः पुंज !
 सलिल में प्रच्छन्न अनल हो तुम !
 ध्यान करने से प्राप्य नहीं हो
 हे निर्मल ! कृपानंद वारिधि !
 हृदय में झरते अमृत के उत्स !
 मधुरिम मधु !
 तिरुप्परुन्तुरै में विराजे शिवराज !
 पा गया हूँ मैं तुम्हें
 अब कौन है यहाँ अपना ? कौन पराया ?
 आनंद ही आनंद है
 हे मेरे नाथ ! परंज्योति !

(तिरुमुऱै आठ - 22 पंक्ति 57-64)

473. ज्योति बनकर दर्शन देते तुम साकार हो
 निगूढ़ निराकार भी हो
 मन और वाक् के लिए अतीत
 आदि-मध्य-अन्त !
 आनंद के महासागर !
 काट देते हो भव-बंधन के पाश
 निर्मल कृपा अनुग्रह के पर्वत
 तिरुप्परुन्तुरै में विराजे शिवराज !
 पधारो ! धन्य करो मुझे
 चरणयुगल धरकर
 इसीलिए तो आया हूँ मैं तुम्हारे पास में।

(तिरुमुऱै आठ - 22 पंक्ति 65-72)

616 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

474. தந்ததுன் தன்னைக் கொண்டதென் தன்னைச்
சங்கரா ஆர்கொலோ சதுரர்
அந்தமொன் றில்லா ஆனந்தம் பெற்றேன்
யாதுநீ பெற்றதொன் றென்பால்
சிந்தையே கோயில் கொண்டஎம் பெருமான்
திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
எந்தையே ஈசா உடலிடங் கொண்டாய்
யான்இதற் கிலன்ஓர்கைம் மாறே !

10

474. तन्ददुन् तन्नैक् काण्डदन् तन्नैच्
चङ्करा आर्कालो चतुरर्
अन्तर्मान्त्रित्वा आनन्दम् पट्रेन्
यादुनी पट्टदु आन्त्रन्याल्
चिन्तैये कोयिल् काण्डवम्परुमान्
तिरुप्परुन्तुरैयुरै शिवने
ऐन्तैये ईशा उडलिडम् काण्डाय्
यान् इदकिर्लनार् कैम्मरै !

(திருமூரே ஆட - 22 பங்கித் 73-80)

474. अपने आपको देकर मुझे
 बदले में ले लिया मुझको
 हे शंकर ! इस लेन-देन में
 बोलो, कौन ठहरा चतुर !
 मैंने तो पाया सीमातीत आनंद
 क्या पाया तुमने मुझसे !
 नाथ मेरे ! तुमने मंदिर बना लिया
 मेरी काया को अपने निवास के लिए
 हे तिरुप्परुन्तुरै के अधीश !
 मेरे तात ! नाथ ! धन्य हूँ मैं
 जो मेरी काया को बना लिया
 निज धाम तुमने
 बदले में क्या दे पाऊँगा मेरे ईश !

(तिरुमुरै आठ - 22 पंक्ति 73-80)



618 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - द हिन्दू टेस्टामैन्ट ऑफ़ लव :

रत्ना नवरत्नम् 1963 ई.

Source : Tiruvacagam : The Hindu Testament of Love by
Ratna Navaratnam 1963 A.D.

“O Supreme Splendour that rises within me !
O Ambrosia that wells up and blocks
The outlets of my deluding senses five !
Show Thyself to me in Grace as Thou art—
Essence of Purity, Lord Siva,
Dweller in the great and holy shrine,
Thou who transcends all happy states without end,
My Love sublime, Oh bliss ineffable.

With love Thy bondsman's body and soul melt in bliss.
Sweet grace by me not deserved, Thou did'st grant.
For this I have naught to give in return.
Thou who pervades o'er all, before and after,
Oh Thou free One ! Principle everlasting !
Dweller in the great southern shrine, Lord Siva,
The Sovereign of the beauteous realms.

O King, to me a bondsman of thy Faithful,
Art Thou the Father. My body and soul
Did'st Thou penetrate and melt away
All my falsehood dim, O Light of Truth !
Calm, clear, full ocean of Ambrosia,
Dweller in the great holy shrine, Siva—
Experience Thou, that surpasseth all experiences,
Teach me how I could speak of Thee ?

Thou that art not known nor felt in experience
 By the Seers of great wisdom nor by celestials—
 Thou that art the source of Life to all diverse beings,
 Our healing balm that cures me of life's afflictions.
 Purest Space that came forth from dense darkness,
 Dweller in the great holy shrine, Siva—
 O Bliss immaculate, beyond the ken of gunas,
 What else can they lack who have neared Thee ?

Perfect Fullness, flawless Ambrosia,
 Mount of endless flaming light !
 O King who came as the Vedas and its meaning.
 And did enter the portals of my being,
 Breaking all bounds like the rushing torrent.
 Siva, dweller in the great holy Shrine,
 Sovereign Lord, who hast made my body thy abode,
 What else can I now beg of Thee ?

O Splendour that relumes my heart,
 To the intensity of my asking do I melt.
 Thy lily-feet adorn the crown of celestials,
 Siva, dweller in the great holy Shrine,
 Who art all-pervading, space and water,
 Earth, fire and air, and yet art not seen
 In these and other forms around.
 How I rejoice, having seen Thee this day !

This day in mercy unto me, my darkness dispelled,
 Thou filleth my heart as yonder morning Sun.
 Thy mode of rising I comprehend not by thought.
 There being naught else but Thou, atom by atom
 All things great and small change and merge
 Into thy oneness, Siva, dweller in the holy Shrine.
 Tho' Thou art not in this and that, yet art Thou
 The essence in all — who, oh who can know Thee ?”

23

செத்திலாப் பத்து

चत्तिलाप् पतु

சிவானந்தம் அளவறுக்க ஒண்ணாமை

शिवानन्दम् अववृक्क ओण्णामै

475. பொய்யனேன் அகம்நெகப் புகுந்தமு தூறும்
புதும லார்க்கழ லிணையடி பிரிந்துங்
கையனேன் இன்னுஞ் செத்திலேன் அந்தோ
விழித்திருந் துள்ளக் கருத்தினை இழந்தேன் .
ஐயனே அரசே அருட்பெருங் கடலே
அத்த னேஅயன் மாற்கறி யொண்ணாச்
செய்யமே னியனே செய்வகை அறியேன்
திருப்பெ ருந்துறை மேவிய சிவனே!

1

475. पाय्यनेन् अगम् नंगप् पुगुन्दमुदूरम्
पुदुमलर्क् कळलिणैयडि पिरिन्दुम्
कैयनेनिन्नुम् चत्तिलेनन्तो
विळितिरुन्दुळ्ळक् करुत्तिनै इळन्दरेन्
ऐयने अरशो अरुदपंरुङ्कडले
अत्तने अयन्मार्करियाणाच्
चय्य मेनियने चय्वगैयरियेन्
तिरुप्परुन्तुरै मेविय शिवने !

(तिरुमुரै आठ - 23 पंक्ति 1-8)

23

अश्रांति-दशक

अपरिमेय शिवानन्द

475. झूठा और गया बीता हूँ मैं
 तुमसे बिछुड़कर भी जी रहा हूँ
 कृपानिधि ! जिनके सुमन चरण
 मेरी देह में घुसकर हृदय में बसे थे
 सुमनों से झर रहा था मधुमय अमृत
 ऐसे तुम से बिछुड़कर
 श्वानतुल्य मैं जी रहा हूँ
 इस जीने का क्या अर्थ है ?
 हे मेरे नाथ ! प्रभो कृपा-वारिधि !
 तात मेरे ! विष्णु विरिंचि के लिए भी दुर्लभ
 अरुणिम देह कांति के धनी शिवराज !
 जानता नहीं क्या करूँ क्या न करूँ
 हे तिरुप्परुन्तुरै में विराजे मेरे नाथ !

(तिरुमुदै आठ - 23 पंक्ति 1-8)

622 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

476. புற்று மாய்மர மாய்ப்புனல் காலே
உண்டியாய் அண்ட வாணரும் பிறரும்
மற்று யாரும்நின் மலரடி காணா
மன்ன என்னையோர் வார்த்தையுட் படுத்துப்
பற்றினாய் பதையேன் மனம் மிக உருகேன்
பாரிகி லேன்பரி யாவுடல் தன்னைச்
செற்றிலேன் இன்னுந் திரிதரு கின்றேன்
திருப் பெருந்துறை, மேவிய சிவனே!

2

476. पुट्रुमाय मरमायप् पुनल् काने
उण्डियाय अण्ड वाणरुम् पिररुम्
वट्टि यारुम् निन् मलरडिनाण
मन्न वन्नैयोर् वार्त्तैयुद् पडुत्तु
पट्टिनाय पदैयेन् मनम् मिग उरुगेन्
परिगिलेन् परिया उडल् तन्नैच्
चट्टिलेन् इन्नुम् तिरितरुकिन्नेन्
तिरुप्परुत्तुरै मेविय शिवने !

(திருமுரே ஆட - 23 பங்கி 9-16)

477. புலைய னேனையும் பொருளென நினைந்துன்
அருள்பு ரிந்தனை புரிதலுங் களித்துத்
தலையி னால்நடந் தேன்விடைப் பாகா
சங்கரா எண்ணில் வானவர்க்கெல்லாம்
நிலைய னேஅலை நீர்விட முண்ட
நித்த னேஅடை யார்புர மெரித்த
சிலைய னேயெனைச் செத்திடப் பணியாய்
திருப்பெ ருந்துறை மேவிய சிவனே!

3

477. पुलैयनेनैयुम् पारुळ्ந निनैन्दुन्
अरुळ् पुरिन्दनै पुरिदलुम् कळित्तु
तलैयिनाळ् नडन्देन् विडैप्पागा
शङ्करा ऐण्णिल् वानववर्कु एल्लाम्
निलैयने अलै नीर् विडमुण्ड
नित्तने अडैयार् पुरमरित्त
चिलैयने ऐनैच् चत्तिडप् पणियाय्
तिरुप्परुत्तुरै मेविय शिवने !

(திருமுரே ஆட - 23 பங்கி 17-24)

476. तपस्या में निमग्न बैठे थे वे
वर्धित हुआ वल्मीक देह के चारों ओर
वायु का ही भक्षण करते थे
यों तपस्या की थी अमरगणों ने
किंतु फिर भी दर्शन न हुए
तुम्हारे सुमन निभ चरणों के
ऐसे महिमामय तुम मेरे पास आए
एक वाक्य बोलकर दास बनाया
इतने महान् अनुग्रह के बाद भी
मैं तुम्हारे प्रेम में तड़पता नहीं, पिघलता नहीं
तुमसे बिछुड़ने से तड़पकर मरता नहीं
अब भी घूमता फिर रहा हूँ धरती पर
यह कैसी दुःस्थिति है
तिरुप्परुन्तुरै में विराजे मेरे नाथ !

(तिरुमुरै आठ - 23 पंक्ति 9-16)

477. हे वृषभारूढ़ प्रभु !
इस तुच्छ जन को भी 'कुछ' मानकर
अनुग्रह की वर्षा कर दी तुमने
आनंदमग्न होकर नाचा मैं
सिर के बल चलने लगा
अगणित देवगण के आधार !
सागर-उत्थित हलाहल का किया
अशन तुमने लोकहित के लिए
ध्वस्त किए शत्रुओं के त्रिपुर
एक बाण से
मरने का आदेश दो मुझे
कि मैं तुममें मिल जाऊँ
हे तिरुप्परुन्तुरै के मेरे नाथ !

(तिरुमुरै आठ - 23 पंक्ति 17-24)

478. அன்ப ராகிமற் றருந்தவம் முயல்வார்
 அயனும் மாலுமற் றழலுறு மெழுகாம்
 என்ப ராய்நினை வார்எ னைப்பவர்
 நிற்க இங்கெனை எற்றினுக் காண்டாய்
 வன்ப ராய்முரு டொக்கும்என் சிந்தை
 மரக்கண் என்செவி இரும்பினும் வலிது
 தென்ப ராய்த்துறை யாய்சிவ லோகா
 திருப்பெ ருந்துறை மேவிய சிவனே !

4

478. अन्वरागि मद्रुम् तवम् मुयल्वार्
 अयनुमालु मद्रळलुरु मळु गाम्
 ऐन्पराय् निनैवारनैप्पलர்
 निर्क इवङ्गनै ऐट्टिनुक्काण्डाय्
 वन्पराय् मुरुडाक्कुमन् चिन्तै
 मरक्कणन् चंवि इरुन्बिनुम् वलिदु
 तन् परायत्तुरैयाय् शिवलोका
 तिरुप्पर्नुரै मेவிய शिवने !

(திருமுரே ஆட - 23 பங்கி 25-32)

479. ஆட்டுத் தேவர்தம் விதியொழித் தன்பால்
 ஐயனே என்றுன் அருள்வழி யிருப்பேன்
 நாட்டுத் தேவரும் நாடரும் பொருளே
 நாத னேஉனைப் பிரிவுறா அருளைக்
 காட்டித் தேவநின் கழலிணை காட்டிக்
 காயமா யத்தைக் கழித்தருள் செய்யாய்
 சேட்டைத் தேவர்தந் தேவர்பி ரானே
 திருப்பெ ருந்துறை மேவிய சிவனே !

5

479. आट्टुत्तेवर् तम् विदियाँक्षित्तन्पाल्
 ऐयने ऐन्नरुळ्वळि इरुप्पेन्
 नाट्टुत्तेवरम् नाडरुम् पारुळे
 नातनेयुनैप् பிரிவூரா அருळைக்
 காட்டித் தேவநின் கலலிணை காட்டிக்
 காய் மாயதேக் கலித்தருள் செய்யாய்
 சேட்டைத் தேவர்தம் தேவர் பிரானே
 திருप्पर्னுரே மேவிய ஸிவனே !

(திருமுரே ஆட - 23 பங்கி 33-40)

478. जब अगणित भक्तजन तपस्वीगण
 यहाँ तक कि विष्णु-विरिंचि भी
 अस्थियों को गलाते हुए
 तुम्हारे ध्यान में निमग्न थे
 उन सब को प्रतीक्षा में खड़े छोड़कर
 तुमने मुझे क्यों दास बना लिया यहाँ ?
 'पराय' वृक्ष सम कठिन है मेरा हृदय
 उसकी गांठ सम आँखें, कान लौह से भी कठोर
 हे दक्षिण परायत्तुरै में विराजे मेरे नाथ
 प्रभो ! आनंददाता ! तिरुप्परायत्तुरै के शिवराज
 धन्य हूँ मैं।

(तिरुमुुरै आठ - 23 पंक्ति 25-32)

479. छोड़ चुका हूँ भटकाते बरगलाते
 पंचेंद्रियों का मार्ग
 स्थित रहता हूँ प्रेमाभक्ति के साथ
 हे नाथ ! तुम्हारे सन्मार्ग में
 धरणी पर ऋषि-मुनियों के लिए दुर्लभ प्रभो
 ऐसा अनुग्रह करो कि कभी तुमसे बिछुड़ूँ नहीं
 दिखा दो दिव्यचरण युगल
 काट दो जनन-मरण हेतुक भवबंधन को
 क्रियाशील देवों के भी देव हे महादेव !
 तिरुप्परुन्तुरै में विराजे मेरे नाथ !
 अनुग्रह करो कि मैं कभी न बिसरूँ तुम्हें।

(तिरुमुुरै आठ - 23 पंक्ति 33-40)

479. அறுக்கி லேன்உடல் துணிபடத் தீப்புக்
 கார்கி லேன்திரு வருள்வகை யறியேன்
 பொறுக்கி லேன்உடல் போக்கிடங் காணேன்
 போற்றி போற்றியென் போர்விடைப் பாகா
 இறக்கி லேன் உனைப் பிரிந்தினி திருக்க
 என்செய் கேன்இது செய்களன் றருளாய்
 சிறைக்க ணேபுனல் நிலவிய வயல்தழ்
 திருப்பெ குந்துறை மேவிய சிவனே !

6

480. அருவிகலேனுடல் துணிபடத் தீப்புக்
 காரிகி லேன்திரு வருள்வகை யறியேன்
 பொறுக்கி லேன்உடல் போக்கிடங் காணேன்
 போற்றி போற்றியென் போர்விடைப் பாகா
 இறக்கி லேன் உனைப் பிரிந்தினி திருக்க
 என்செய் கேன்இது செய்களன் றருளாய்
 சிறைக்க ணேபுனல் நிலவிய வயல்தழ்
 திருப்பெ குந்துறை மேவிய சிவனே !

(திருமுறை ஆட - 23 பங்கி 41-48)

481. மாய நேமறி கடல்விடம் உண்ட
 வான வாமணி கண்டத்தெம் அமுதே
 நாயி நேன்உனை நினையவும் மாட்டேன்
 நமச்சி வாயஎன் றுன்னடி பணியாப்
 பேயன் ஆகிலும் பெருநெறி காட்டாய்
 பிறைகு லாஞ்சடைப் பிஞ்சுகு நேயோ
 சேய னாகிநின் றலரறுவ தழகோ
 திருப்பெ குந்துறை மேவிய சிவனே !

7

481. மாயநே மரிகடல் விடமுண்ட
 வானவா மணிகண்டத் தீப்புக்
 நாயிநே நுனெ நினையவு மாட்டேன்
 நமச்சிவாய னுன்னடி பணியாப்
 பேயனாகிலும் பெருநெறி காட்டாய்
 பிறைகு லாஞ்சடைப் பிஞ்சுகு நேயோ
 சேய னாகிநின் றலரறுவ தழகோ
 திருப்பெ குந்துறை மேவிய சிவனே !

(திருமுறை ஆட - 23 பங்கி 49-56)

480. टूक टूक करके काट नहीं पाता इस काया को
 कूद नहीं पाता अग्नि में
 सहन नहीं होता काया का यह पिंजड़ा
 छूटकर इससे कैसे मिलूँ तुम से
 तुम्हारी कृपा अनुग्रह पाने का मार्ग क्या है
 कहाँ जाऊँ किसकी शरण लूँ
 नमन है, नमन है, हे वृषभारूढ़ प्रभो !
 अब तक क्यों मरा नहीं मैं
 तुमसे बिछुड़कर रहना महाकठिन है
 क्या करूँ कुछ सूझता नहीं
 तुम्ही बताओ 'ऐसा करो वत्स !'
 जलाशयों से पूरित केदार बलयित
 तिरुप्परुन्तुरै के अधीश ! मेरे नाथ !
 अपनाओ मुझे।

(तिरुमुऱै आठ - 23 पंक्ति 41-48)

481. हे मायामय ! अशन किया तुमने
 सागर-उत्थित हलाहल लोकहित में
 जिससे शोभित हुआ नीलमणि निभ तुम्हारा कंठ देश
 हे नीलकंठ प्रभु ! श्वान तुल्य मैं
 ध्यान नहीं करता तुम्हारा क्षण भर भी
 नमश्शिवाय का दिव्य नाम उचारते हुए
 प्रणत होता नहीं तुम्हारे चरणयुगल में
 फिर भी माँगता हूँ यह वरदान
 दिखा दो मुझे श्रेय का दिव्य मार्ग
 चंद्रकलाधर सांबशिव मेरे नाथ !
 मैं तुम्हारा पुत्र हूँ
 पुत्र को यों चीत्कार करते देना
 शोभा देगा तुम्हें ?
 तिरुप्परुन्तुरै धाम के अधीश
 अपनाओ मुझे।

(तिरुमुऱै आठ - 23 पंक्ति 49-56)

628 தமில் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

482. போது சேரயன் பொருகடற் கிடந்தோன்
புரந்த ராதிகள் நிற்கமற் றென்னைக்
கோது மாட்டிநின் குரைகழல் காட்டிக்
குறிக்கொள் கென்றுநின் தொண்டரிற் கூட்டாய்
யாது செய்வதென் றிருந்தனன் மருந்தே
அடிய னேன் இடர்ப்படுவதும் இனிதோ
சீத வார்புனல் நிலவிய வயல்தூழ்
திருப்பெ ருந்துறை மேவிய சிவனே !

8

482. பௌதேரயந் பாரகடர் கிங்நொன்
புரந் ராதி஑் நிக் மட்ரந்நைக்
கௌது மாட்டி நின் குரைக஑் காட்டிக்
குறிக்஑ொள் கென்றுநின் தொண்டரிற் கூட்டாய்
யாது செய்வதென் றிருந்தனன் மருந்தே
அடிய னேன் இடர்ப்படுவதும் இனிதோ
சீத வார்புனல் நிலவிய வயல்தூழ்
திருப்பெ ருந்துறை மேவிய சிவனே !

(திருமூரே ஆ஠ - 23 பங்கி 57-64)

483. ஞாலம் இந்திரன் நான்முகன் வானவர்
நிற்க மற்றெனை நயந்தினி தாண்டாய்
காலன் ஆர்஑யிர் ஑ொண்டபூங் கழலாய்
கங்கை யாய்அங்கி தங்கிய கையாய்
மாலும் ஑லமிட் டலறும்அம் மலர்க்கே
மரக்க ணேனையும் வந்திடப் பணியாய்
சேலும் நீலமும் நிலவிய வயல்தூழ்
திருப்பெ ருந்துறை மேவிய சிவனே !

9

483. ஆதமிந்நிரந் நான்முகந் வானவர்
நிக் மட்ரந்நை நயந்நிநிதாண்டாய்
காலநாரயிர் காண்ட பூங்க஑்லாய்
கங்கையாங்கி தங்கிய கையாய்
மாலும் ஑லமிட்டலறும் அம்மலர்க்கே
மரக்க ணேனையும் வந்திடப் பணியாய்
சேலும் நீலமும் நிலவிய வயல்தூழ்
திருப்பெ ருந்துறை மேவிய சிவனே !

(திருமூரே ஆ஠ - 23 பங்கி 65-72)

482. कमलासन पर स्थित विरिंचि और
 तुमुल सागर पर शयन करते विष्णु के संग
 पुरंदर और इतर सारे खड़े रहे
 तुम्हारी कृपा की प्रतीक्षा में
 इधर तुमने दूर किये मेरे सकल दोष
 निर्मल बनाया मुझे
 दिखाए अपने नूपुर-शिंजित चरण युग
 लक्ष्य पहचानने का दिया आदेश
 मिला लिया श्रेष्ठ भक्तमंडली में
 विस्मय-विमुग्ध मैं अवाक् रह गया
 ओ मेरे अमूल्य औषध !
 क्या तुम्हें शोभा देगा
 दास यह पीड़ा में रहे
 करुणामय हो तुम
 सुशीतल जलधार से समृद्ध केदार-वलयित
 तिरुप्परुन्तुरै के मेरे नाथ !

(तिरुमुरै आठ - 23 पंक्ति 57-64)

483. इन्द्रादि देवगण, चतुरानन विधि
 और अमरगण खड़े के खड़े रह गए
 तुम्हारे अनुग्रह की आस में और तुमने यहाँ आकर
 प्रेम-वात्सल्य से अपनाया मुझे
 स्वयं मृत्युदेव के प्राणहरण करते
 सुमन-चरण प्रभु ! गंगा के ईश !
 करतल पर शोभित हैं अनल-ज्वाल
 दिव्य सुमन चरण तुम्हारे
 जिनकी कामना में विष्णु ने भी किया रुदन
 उसी चरण युगल पर स्थान दो
 इस तुच्छ जन को भी
 सुभग मीन जिस जल में उछलते
 ऐसे जलाशयों से पूरित केदार वलयित
 तिरुप्परुन्तुरै के मेरे नाथ !

(तिरुमुरै आठ - 23 पंक्ति 65-72)

630 தமிழ் சைவமத கவி பாணிகவாசகர் கீத திருவாசகம்

484. அளித்து வந்தெனக் காவளன் றருளி
 அச்சந் தீர்த்தநின் அருட்பெருங் கடலுள்
 திளைத்துந் தேக்கியும் பருகியும் உருகேன்
 திருப்பெ ருந்துறை மேவிய சிவனே
 வளைக்கை யானொடு மலரவன் அறியா
 வான வாமலை மாதொரு பாகா
 களிப்பெ லாம்மிகக் கலங்கிடு கின்றேன்
 கமிலை மாமலை மேவிய கடலே!

10

484. அஃது வந்தனவகாவு ஐந்தருளி
 அஃதம் தீர்த் நின்ருட் பருங்கடலில்
 திவீதுத் தேவியும் பருகியுமுருகேன்
 திருப்பெருந் தேவிய சிவனே
 வளைக்கையானாடு மலரவ நரியா
 வானவ மலை மாதொரு பாகா
 கலிப்பலாமிகக் கலங்கிடுகின்றேன்
 கயிலை மாமலை மேவிய கடலே !

(திருமுறை ஆட - 23 பங்கி 73-80)

484. कृपा के संग आये तुम अभय देकर
 अपनाया मुझे अनुताप करते हुए
 अनुग्रह की महावारिधि में
 सानंद तैरता अमृतपान करता रहा मैं
 फिर भी पिघलना न आया तुम्हारे प्रेम में
 तिरुप्परुन्तुरै में विराजे मेरे नाथ !
 कटक-भूषित विष्णु और कमलासन के लिए भी
 दुर्लभ शिवराज !
 गगन-घुंवित हिमवान की सुता को
 वाम भाग दिया निज देह में
 आनंद-तुंदिल होकर भी अहंकार में पड़कर
 दुखी हो रहा हूँ मैं ! दो आश्रय
 कैलासगिरि में विराजे हे करुणासागर।

(तिरुमुुरै आठ - 23 पंक्ति 73-80)



स्रोत : तिरुवाचकम् - टी. एन. रामचन्द्रन्

Source : Tiruvaachakam by T.N. Ramachandran

O Sire ! O Sovereign ! O immense Ocean of Mercy ! O Father !
 O One of ruddy body who could not be known
 By Vishnu and Brahma ! O Siva abiding at
 The sacred Perunturai ! You so entered me –
 The one of falsity –, that my bosom melted ! Lo, parted
 From Your fresh, flowery and ankleted feet twain –
 The Spring of Nectar –, I, the little one, had not yet
 Died. Though wide-awake, I lost the goal of my soul.
 I know not what I should do.

O Siva Presiding over the sacred Perunturai !
 Performers of *tapas* over whom have grown
 Ant-hills and trees, and who, for food, consume
 Water and air (only), heaven-dwellers
 And others – whoever they be –, had not beheld
 Your flower-feet. O King, You enslaved me
 By a mystic vocable and netted me. I neither grieve
 Nor suffer my *manam* to abundantly melt.
 I quiver not ; I have not slain the loveless body.
 I still go about roaming.

O Rider of the Bull ! O Sankara ! O the Base and Support
 Of all the innumerable celestials ! O the One
 That ate the venom of the billowy sea and remains
 Athanasic ! O Wielder of the bow that gutted with fire
 The hostile citadels ! Deeming even me – the meanest
 One , as a thing of worth, when You graced me,
 I, in my prideful glee, walked not with my feet
 But with my head. O Siva presiding over
 The sacred Perunturai ! Bid me die.

O Lord of the southern Paraaithurai ! O Siva
 Abiding at the sacred Perunturai ! O Sovereign
 Of Siva-loka ! Becoming Your devotees Brahma and Vishnu
 Perform uncommon *tapas*. Many others, melting
 Like wax in fire, and become mere bones,
 Contemplate You. Ignoring these, why on earth,
 Did You (prefer to) rule me ? My *Chinta* is like
 Tough and rugged *paraai* wood ; my eyes are
 Wooden and my ears are harder than iron.

O Siva abiding at the sacred Perunturai ! I will
 Eschew the behests of those Devas who partake
 Of goat's meat (as havis). Hailing You as Sire,
 I will be poised in the way of Your grace. You are
 The Ens inaccessible to the earthly Devas (Brahmins).
 O Lord-Master, show me the Grace that is
 Inseparte from you. O Deva (par excellence), show me
 Your ankleted feet twain. Do away with my Mayic
 Embodiment and grace me. You indeed are
 The Lord-God of Devas – the celestial vicegerents.

Lines : 1 - 40

24

அடைக்கலப்பத்து

अडैकलप् पतु

பக்குவ நிண்ணயம்

पक्कुवा निण्णयम्

485. செழுக்கமலத் திரளனநின் சேவடிசேர்ந் தமைந்த
பழுத்தமனத் தடியருடன் போயினர்யான் பாவிவேன்
புழுக்கனுடைப் புன்குரம்பைப் பொல்லாக்கல்வி ஞானமிலா
அழுக்குமனத் தடியேன் உடையாய்உன் அடைக்கலமே ! 1

485. செழுக்கமலத்திரல் நின் சேவடி சேர்ந்த
பழுத்த மனத்தடியருடன் போயினர்யான் பாவியேன்
புழுக்கனுடைப் புன்குரம்பைப் பொல்லாக்கல்வி ஞானமிலா
வழுக்கு மனத்தடியேனுடையா உன் அடைக்கலமே !

(திருமுரே ஆட - 24 பவ்தி 1-4)

486. வெறுப்பன வேசெய்யும் என்சிறு மையைநின்
பெருமையினால்
பொறுப்பவ னேஅராப் பூன்பவ னேபொங்கு சுங்கைசடைச்
செறுப்பவ னேநிந்திருவரு ளால்என் பிறவியைவோர்
அறுப்பவ னேஉடை யாய்அடி யேன்உன் அடைக்கலமே ! 8

486. வரூப்பவனே சீயுமன் சிரமையே நின் பரமையினால்
பாரூப்பவனே அராயுப்பவனே பாடி கடுகையே
வரூப்பவனே நின்திருவருடால் பிர்வியே வேர்
அரூப்பவனே உடையா அடியேனுன் அடைக்கலமே !

(திருமுரே ஆட - 24 பவ்தி 5-8)

शरणागति-दशक

पक्वता-निर्णय

485. अरुणिम सरसिज पुंज सरिस
परिपक्व भक्तगण
प्रभु मेरे ! चले गए तुम्हारे संग-संग
इधर हतभाग में खड़ा हूँ
ढोते हुए कृमि-कीट पूरित देह को
मलीन मन को
ढो रहा हूँ ज्ञान-शून्य, विद्या-शून्य में
प्रभो ! तुम्हारा दास हूँ मैं
आया हूँ तुम्हारी शरण में।

(तिरुमुरै आठ - 24 पंक्ति 1-4)

486. यह तुम्हारी महानता है उदारता है
जो क्षमा कर देते हो सदा ही
मेरे नीचतापूर्ण कदर्य कार्य को
हे भुजग भूषण ! धरते हो
उद्दाम गंगा को निज जटाभार में
और काट देते हो जड़ मूल से
मेरे भवबंधन असीम अनुग्रह से
तुम स्वामी हो और मैं तुम्हारा दास
आया हूँ तुम्हारी शरण में।

(तिरुमुरै आठ - 24 पंक्ति 5-8)

636 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

487. பெரும்பெரு மான்என் பிறவியை வேரறுத்துப்

பெரும்பிச்சுத்

தரும்பெரு மான்சது ரப்பெரு மான்என் மனத்தினுள்ளே
வரும்பெரு மான்மல ரோன்றெடு மாலறி யாமல்நின்ற
அரும்பெரு மான்உடை யாய்அடி யேன்உன்

அடைக்கலமே! 3

487. परम्परमानन् पिरिवियै वेररुत्तुप् परम्पिच्युत्

तरम्परमान् चतुरप्परमानन् मनतिनुळ्

वरम्परमान् मलरोन् नडुमालरियामलनिन्

अरम्परमान् उडैयायडियेनुन् अडैवकलमे !

(திருமுரே ஆட - 24 பங்கி 9-12)

488. பொழிகின்ற துன்பப் புயல்வெள் ளத்தில்தின்

சூழற்புணைகொண்டு

இழிகின்ற அன்பர்கள் ஏறினர் வான்யான்

இடர்க்கடல்வாய்ச்

சூழிசென்று மாதர்த் திரைபொர்க் காமச் சூறவெறிய

அழிகின் றனன்உடை யாய்அடி யேன்உன்

அடைக்கலமே! 4

488. पांळिकिन् तुन्यप् पुयल् वळळतिलनिन् कळपुणै काण्डु

इळिकिन् अन्पर्गळ् एरिन् वान्यान् इडवर्कडल्वाय्

चुळिचन् मादतिरैपारक् कामच्चुरवरिय

अळिकिन्ननुडैयाय् अडियेनुन् अडैवकलमे !

(திருமுரே ஆட - 24 பங்கி 13-16)

487. स्वामी हो प्रभु हो तुम मेरे !
 काट कर जनन-मरण का बंधन
 बना लिया मुझे अपना बावरा
 सर्वशक्तिमान हो ! शिवराज तुम
 बरबस आकर बस गए मेरे हृदय में
 अहोभाग्य यह मेरा
 अपना लिया मुझे प्रभु ने
 सुदुर्लभ है जो विष्णु-विरिंचि के लिए
 स्वामी ! यह दास आया है
 तुम्हारी शरण में।

(तिरुमुयै आठ - 24 पंक्ति 9-12)

488. दुख-दुरित की आंधी में
 पीड़ा की वर्षा में, बाढ़ में
 गह लिए तुम्हारे भक्तगण ने
 नौका सरिस तुम्हारे चरण-युगल
 और वे तर गए भव-सागर से
 किंतु मतिहीन मैं डगमगा रहा हूँ
 दुख-दुरित के सागर में
 खाकर कामिनी-वीचियों की चोट
 और काम-तिमिंगल के थपेड़े
 तिलतिल कर मिट रहा हूँ
 पार उतारो हे स्वामी ! यह दास
 आया है तुम्हारी शरण में।

(तिरुमुयै आठ - 24 पंक्ति 13-16)

638 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

489. சுருள்புரி கூழையர் துழலிற் பட்டுள் திறம்மறந்திங்கு
 இருள்புரி யாக்கையி லேகிடந் தெய்த்தனன்
 மைத்துடங்கண்
 வெருள்புரி மான்அன்ன நோக்கிதன் பங்கவிண்
 ணோர்பெருமான்
 அருள்புரி யாய்உடை யாய்அடி யேன்உன்
 அடைக்கலமே. 5

489. चुरळपुरि कूळैयर् चूळलिल् पट्टुन् तिरुमरन्दिङ्गु
 अरळपुरि याक्कैयिले किडन्दयत्तनन् मैत्तडङ्कण्
 वरळपुरि मानन्न नोक्कि तन् पड्ग विण्णोर् परुमान्
 अरळ् पुरियाय् उडैयाय् अडियेनुन्नडैक्कलमे !
 (तिरुमुறை आठ - 24 पंक्ति 17-20)

490. மாழைமைப் பாவி ய கண்ணியர் வன்மத் திடவுடைந்து
 தாழியைப் பாவு தயிர்போல் தளர்ந்தேன் தடமலர்த்தாள்
 வாழியெப் போதுவந் தெந்நாள் வணங்குவன்
 வல்வினையேன்
 ஆழியப் பாவுடை யாய்அடி யேன்உன்
 அடைக்கலமே! 6

490. माळैमैप्पाविय कण्णियर् वन्मत्तिडुडैन्दु
 ताळियैप् पावु तयिर्पोल् तळन्देन् तडमलर्ताळ्
 वाळियप्पोदु वन्दन्नाळ् वणङ्गुवन् वल्विनैयेन्
 आळियप्पा उडैयाय् अडियेनुन्नडैक्कलमे !
 (तिरुमुறை आठ - 24 पंक्ति 21-24)

489. हा मूर्ख मैं फंस गया था
 कामिनियों के घुंघराले केशजाल में
 अनजान होकर तुम्हारी महिमा से प्रताप से
 अज्ञानपूरित इस पापमय शरीर में
 पड़ा-पड़ा मैं थक गया, मेरे प्रभो !
 अंजन-रंजित हरिन-नयना के संग
 विलस रहे देवाधिदेव !
 बरसा दो कृपा-अनुग्रह मुझ पर
 स्वामी ! तुम्हारा यह दास
 आया है तुम्हारी शरण में।

(तिरुमुरै आठ - 24 पंक्ति 17-20)

490. मथनी के घूर्णन से
 टूटकर बिखरे दधि सम थकित हूँ मैं
 अंजन-रंजित अमौरी-सी नयनों की धनी
 कामिनियों के दृग्-विक्षेप से,
 सुमन सरिस चरणयुगल के धनी
 स्वामी तुम्हारी जय हो विजय हो
 बोलो, वह दिन कब आएगा
 जब मैं प्रणत होऊँ तुम्हारे चरण पर
 हे करुणासागर ! कब करूँगा उपासना
 कर्मबंधन का मारा हुआ मैं
 स्वामी ! अपना लो यह तुम्हारा दास
 आया है तुम्हारी शरण में।

(तिरुमुरै आठ - 24 पंक्ति 21-24)

640 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

491. மின்சணிநார் நுடங்கும் இடையார் வெகுளிவலையில்
அசுப்பட்டுப்
புன்கண னாய்ப்புரள் வேணைப் புரளாமற் புகுந்தருளி
என்கணி லேஅமு தூறித் தித்தித்தென் பிழைக்கிரங்கும்
அங்கண னேஉடை யாய்அடி யேன்உன்
அடைக்கலமே! 7

491. मिन्कणिनार् नुडङ्गुम् इडैयार् वळुळि वलैयिलगप्पट्टुप्
पुन्कणनायप् पुरळ्वेनैप् पुरळामर् पुगुन्दरुळि
ऐन्कणिले अमुदूरित् तित्तिन् पिळैविकरङ्गुम्
मङ्कणने उडैयाय् अडियेनुन् अडैक्कलमे !
(तिरुமுரै आठ - 24 पंक्ति 25-28)

492. மாவடு வசிரன்ன சுண்ணி பங்காநின் மலரடிக்கே
கூவிடு வாய்கும்பிக் கேமிடு வாய்நின் குறிப்பறியேன்
பாவிடை யாடு குழல்போற் கரந்து பரந்ததுள்ளம்
ஆகெடு வேன்உடை யாய்அடி யேன்உன்
அடைக்கலமே! 8

492. मावडु वगिरन्न कणिपङ्गा निन् मलरडिक्के
कूविडुवाय् कुम्बिक्केयिडुवाय् निन् कुरिप्परियेन्
पाविडैयाडु कुळल् पोल् करन्दु परन्दुळ्ळम्
आकडुवेनुडैयाय् अडियेनुन्डैक्कलमे !
(तिरुமுரै आठ - 24 पंक्ति 29-32)

491. फँसा हुआ हूँ तन्वंगी कामिनियों के
विद्युल्लता से कटाक्ष-विक्षेप के जाल में
तड़प रहा हूँ पीड़ा से, पश्चात्ताप से
इस तरह मैं लड़खड़ाता ना रहूँ इसके लिए
हे प्रभो ! आओ आकर बस जाओ मेरे हृदय में
मधुरिम मधु सम रिसते हुए
और क्षमा कर दो मेरे सारे अपराध
अपार करुणा से दया से
क्योंकि स्वामी ! मैं तुम्हारा दास हूँ
आया हूँ तुम्हारी शरण में।

(तिरुमुरै आठ - 24 पंक्ति 25-28)

492. अमौरी के टूक सम कमनीय नयना को
वाम भाग में लेकर विलसे प्रभो !
बुला लोगे मुझे निज चरणों पर
या किसी कोख में वास कराओगे
मैं नहीं जानता, इनमें से
क्या करने का तुम्हारा चित्त है ?
डोल रहा है मेरा काममोहित मन
ज्यों डोल रहा हो काठ का टुकड़ा
करघे पर ताना-बाना बुनते हुए
हा, नाश को पा रहा हूँ मैं हे स्वामी !
यह दास आया है तुम्हारी शरण में।

(तिरुमुरै आठ - 24 पंक्ति 29-32)

642 தமிழ் சீவமக்த கவி மாணிகவாசகர் கீத திருவாசகம்

493. பிறிவறி யாஅன்பர் நின்அருட் பெய்கழல்
தாளிணைக்கீழ்
மறிவறி யாச்செல்வம் வந்துபெற் றார்உன்னை
வந்திப்பதோர்
நெறியறி யேன்நின்னை யேஅறி யேன்நின்
னையேஅறியும்
அறிவறி யேன்உடை யாய்அடி யேன்உன்
அடைக்கலமே ! 9

493. पिरिवरिया अन्यर् निन्नरुदप्य कळल् तालिणै वकीळ्
मरिवरियाच् चल्वम् वन्दु पंद्रारुन्नै वन्दिप्पदोर्
नरियरियेन् निन्नैये अरियेनिन्नैये अरियुम्
अरिवरियेन् उडैयाय् अडियेनुन्नडैवकलमे !
(तिरुमुरै आठ - 24 पंक्ति 33-36)

494. வழங்குகின் றாய்க்குன் அருளார் அமுதத்தை
வாரிக்கொண்டு
விழுங்குகின் றேன்விக்கி னேன்வினை யேன்என்
விதியின்மையால்
தழங்குந் தேனன்ன தண்ணீர் பருகத்தந்
துய்யக்கொள்ளாய்
அழுங்குகின் றேன் உடை யாய்அடி யேன்உன்
அடைக்கலமே. 10

494. वळङ्गु किन्नायक्कुन् अरुळारमुदतै वारिककाण्डु
विळुङ्गुकिन्नेन् विविकनेन् विनैयेनन् विदियिन्नैयाल्
तळङ्गरुम् तेनन्न तण्णीर् परुगतन्दुय्यक् काळ्ळाय्
अळुङ्गु किन्नेन् उडैयायडियेन् उन्नडैवकलमे !
(तिरुमुरै आठ - 24 पंक्ति 37-40)

493. आ जुटे हैं तुम्हारे भक्तगण
 तुम्हारे नूपुर-शिंजित चरणयुगल के तले
 चरणयुगल जिनसे वर्षित होता रहता है
 सदा ही अनुग्रह का अमृत
 पा रहे हैं वे अक्षय आनन्द का धन
 हाय, मैं नहीं जानता
 कैसे करूँ वन्दना उपासना आराधना
 जाना नहीं अभी तक तुम्हें
 जानने का ढंग भी नहीं जानता
 हे स्वामी ! मैं तुम्हारा सेवक
 आया हूँ तुम्हारी शरण में।

(तिरुमुरै आठ - 24 पंक्ति 33-36)

494. औढरदानी तुम
 वर्षित कर रहे हो अनुग्रह का
 मधुरिम अमृत अजस्र रूप से
 किंतु भाग्य का हारा हुआ हूँ
 ढंग नहीं आता पान करने का
 रह रहकर आ रही हिचकियाँ
 प्रभो ! करो मुझ पर कृपा
 पान करने दो मुझे कलकल करके
 बह रही इस आनंद वारिधार को
 बचाओ प्रभो ! डूब रहा हूँ दुखदर्द में
 स्वामी ! यह तुम्हारा सेवक
 आया है तुम्हारी शरण में।

(तिरुमुरै आठ - 24 पंक्ति 37-40)



644 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : पाथवे दू गोंड थू द तिरुवाचकम् - जी. वनमीकनाथन्

Source : Pathway to God through the Tiruvacagam by
G. Vanmikanathan

Ripe-minded devotees
who, like luxuriant bunch of lotuses,
had clustered round Your rosy feet,
and gained peace,
all of them have that very instant gone
(to heaven).

I, this worm-infested contemptible-bodied sinner,
this serf with a foul tainted mind,
lacking in perfect education and wisdom,
O Owner, am Your protege !

O You, Who, in Your magnanimity,
put up with the meanness of me
who do detestable things only !
O You Who wear the serpents !

O You Who contain the surging Ganga
in Your matted hair !
O You Who, through Your holy grace,
sever my birth by its roots !
O Owner ! This serf is Your protege.

O great great Lord !
O great Lord,
Who, severing the roots of my birth,
give me great god-madness !
O Lord Who are a great Adept !
O great Lord Who come into my mind !
O rare to be beheld great Lord
Who stood revealed
Without Brahma and Vishnu recognising You !
O Owner ! This devotee is Your protege !

Those devotees, who, taking hold of the raft —
 Your anklet-girt feet—
 entered the flood-waters
 of the down-pour of sorrow,
 have ascended to heaven.
 I, caught in the whirlpool of the sea of sorrow,
 battered by the waves called women,
 and attacked by the shark called lust,
 am perishing.

O my Owner ! This slave is Your protege !
 Caught in the wiles of women with curly tresses,
 and forgetting Your prowess, I am wearied
 of remaining here in this ignorance-breeding body.
 O Partner of Her with collyrium-painted wide eyes
 and glances like those of a frightened deer !
 O great Lord of the heavenly ones !
 Do bestow grace on me !
 O Owner, this slave is Your protege !

Like curd which cracks and spreads
 to the sides of the jar
 on maidens with collyrium-tinted eyes,
 which resemble a split tender mango,
 plunging the hard churn into it,
 I have collapsed.
 Hallowed be Your eminent blossom feet !
 When am I to come up to them
 O Father, O Sea (of mercy),
 and on what day shall I—
 potent karma-ridden one—
 worship them ?
 O owner ! This slave is Your protege !

O beautiful-eyed One Who, graciously entering me—
 who, caught in the net of petulance of women
 with lightning-like glances and willowy waists,
 was tossing about in misery—
 that I may no longer so toss about,
 and Who, welling up as ambrosia in me
 and tasting sweet, take pity on me for my sins !
 O my Owner ! This slave is Your protege !

25

ஆசைப்பத்து

आशैप्पतु

ஆத்தும இலக்கணம்

आतुम लक्कणम्

495. சுருடக் கொடியோன் காண மாட்டாக் கழற்சே
வடியென்னும்
பொருளைத் தந்திங் கென்னை யாண்ட பொல்லா
மணியேயோ
இருளைத் துரந்திட் டிங்கே வாவென் றங்கே கூவும்
அருளைப் பெறுவான் ஆசைப் பட்டேன் கண்டாய்
அம்மானே! 1

495. करुडक्काडियोन् काणमाट्टाक् कळल् चेवडि यन्नुम्
पारुळैत्तन्दिड्कन्नै आण्ड पाल्ला मणियेयो
इरुळैत्तुरन्दिट्टिड्गे वार्वन्ड्गे कूवुम्
अरुळैप् पंरुवानाशैप्पट्टेन् कण्डायम्माने !
(तिरुमुரै आठ - 25 पंक्ति 1-4)

25

इच्छा-दशक

आत्म-लक्षण

495. ओ अक्षत मणि !

अपनाया तुमने मुझे अपार करुणा से
देकर नूपुर शिंजित चरणयुगल
जो अदृश्य हैं गरुड़-ध्वज विष्णु के लिए भी
हे प्रभो ! मैं तुम्हारी उस कृपा के लिए
तरस रहा हूँ
जो मिटा दे मेरा अज्ञान-तिमिर
और बुला ले अपने पास
'आओ वत्स' कहते हुए वात्सल्य से।

(तिरुमुरै आठ - 25 पंक्ति 1-4)

648 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

496. மொய்ப்பால் நரம்பு சுயிறாக முளை என்பு
 தோல்போர்த்த
 குப்பா யம்புக் கிருக்ககில்லேன் கூவிப் கொள்ளாய்
 கோவையோ
 எப்பா லவர்க்கும் அப்பாலாம் சிவனே என்னா
 ரமுதேயோ
 அப்பா காண ஆசைப் பட்டேன் கண்டாய்
 அம்மானே! 2

496. मायप्पानरन्बु कार्यराग मूळैयन्बु तोल्पोत्त
 कुप्पायम् पुक्किरुक्ककिल्लेन् कूविकर्काळ्ळाय् कोवेयो
 एप्पालवक्कुम्प्यालाम् एन् आरमुदेयो
 अप्पा काण आशैप्पट्टेन् कण्डायम्माने !
 (तिरुमुறை आठ - 25 पंक्ति 5-8)

497. சீவார்ந் தீமொய்த் தழுக்கொடு திரியுஞ் சிறுகுடி
 லிதுசிதையக்
 கூவாய் கோவே கூத்தா காத்நாட் கொள்ளுங் குருமணியே
 தேவா தேவர்க் கரியானே சிவனே சிறிதென் முகநோக்கி
 ஆவா என்ன ஆசைப்பட்டேன் கண்டாய் அம்மானே! 3

497. चीवार्न्दीमायत् तळ्ळुक्काडु तिरियुम् चिरुकुडिलिदु चिदैयक्
 कूवाय् कोवे कूत्ता कात्ताट्काळ्ळुम् गुरुमणिये
 तेवा तेवक्करियाने शिवने चिरिदन् मुगनोक्कि
 आवावन्न आशैप्पट्टेन् कण्डायम्माने !
 (तिरुमुறை आठ - 25 पंक्ति 9-12)

496. ओ मेरे प्रभो ! चाह नहीं है मेरी
 मांस-मज्जा रुधिर से निर्मित
 अस्थि-चर्म से ढके इस चोले में
 सिमटकर सीमित रहने की
 स्वामी ! बुला लो मुझे अपने पास
 ओ मधुरिम अमृत !
 विराजे हो सबसे परे सबसे विलक्षण
 तात मेरे ! दर्शन के लिए
 तरस रहे हैं मेरे नयन
 देख लो मेरे प्रभो !

(तिरुमुरै आठ - 25 पंक्ति 5-8)

497. प्रभो ! बुला लो मुझे अपने पास
 टूट कर नष्ट हो जाए देह का यह ढांचा
 जो कृमि-पूरित है पीव से सड़ा है
 बुला लो अपने पास हे नटराजराज !
 मुझे अपनाने वाले मेरे गुरुमणि !
 देवाधिदेव ! देवों के लिए अतीव प्रिय
 शिवराज ! तनिक निहारो मेरे मुख की ओर
 और बुला लो 'आओ वत्स'
 तरस रहा हूँ इसी बुलावे के लिए
 निहार लो मेरी ओर, तात मेरे !

(तिरुमुरै आठ - 25 पंक्ति 9-12)

498. मिडैन्दलुम्पूत्ते मिक्कळुक्कूरल् वीरिलि नडैक्कूडम्
ताडर्न्दनै नलियत् तुयरुरुकिन्नेन् चोत्तमम्परुमाने
उडैन्दु नैन्दुरुगि उळ्ळ्ळळि नोक्कि उन्तिरु मलर्पादम्
अडैन्दु निन्निडुवान् आशैप्पट्टेन् कण्डाय् अम्माने !
(तिरुमुरै आठ - 25 पंक्ति 13-16)

499. अळि पुण्णगत्तुप् पुरन्तोल् मूडि अडिमेनुडैयाक्कै
पुळियम्पळमात्तिरुन्देन् इरुन्दुम् विडैयाय् पाडियाडी
ऐळिवन्दन्नै याण्डुकाण्ड एन्नारमुदेयो
अळियेन् ऐन्न आशैप्पट्टेन् कण्डाय् अम्माने !
(तिरुमुरै आठ - 25 पंक्ति 17-20)

498. चलता-फिरता यह देह-कक्ष
जो बुना हुआ है हड्डियों से, मलीन मज्जा से
घेरे हुए है मुझे, छोड़ता नहीं उन्मुक्त
श्रांत-क्लांत हो रहे हैं मेरे प्राण
जय हो विजय हो ओ मेरे स्वामी !
टूट गया हूँ मैं सब भांति थका हारा
पिघल रहा हूँ तुम्हारी कृपा के लिए
तरस रहा हूँ चरणयुगल पाने के लिए
देख लो निहार लो मुझे मेरे तात !

(तिरुमुरै आठ - 25 पंक्ति 13-16)

499. अंदर हैं अगणित घाव
ढकी हुई है ऊपर चर्म से यह मेरी देह
इमली के फल के समान
हे वृषभारूढ़ प्रभो !
धवलभस्म से विलेपित है सकल देह
मेरे अमृतस्वरूप !
आकर झटिति में अपना लिया मुझे
बना लिया निज दास
तात ! मैं आतुर हूँ
तुम्हारे अनुग्रह के लिए।

(तिरुमुरै आठ - 25 पंक्ति 17-20)

652 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

500. எய்த்தேன் நாயேன் இனியிங் கிருக்க கில்லேன்
இவ்வாழ்க்கை
வைத்தாய் வாங்காய் வானோர் அறியா மலர்ச்சே
வடியானே
முத்தா உன்தன் முகவொளி நோக்கி முறுவல் நகைகாண
அத்தா சால ஆசைப் பட்டேன் கண்டாய் அம்மானே! 6

500. ऐयत्तेनायेनिनि इङ्गिरुक्ककिल्लेन् इव्वाळ्क्कै
वैत्ताय् वाङ्गाय् वानोररिया मलर्च्चेवडियाने
मुत्ता उन्तन् मुगवाळि नोक्कि मुरुवल् नगै काण
अत्ता चाल आशैप्पट्टेन् कण्डाय् अम्माने !
(तिरुमुदै आठ - 25 पंक्ति 21-24)

501. பாரோர் விண்ணோர் பரவி யேத்தும் பரனே பரஞ்சோதி
வாராய் வாரா வுலகந் தந்து வந்தாட் கொள்வானே
பேரா யிரமும் பரவித் திரிந்தெம் பெருமான் எனஏத்த
ஆரா அமுதே ஆசைப் பட்டேன் கண்டாய்
அம்மானே! 7

501. पारोर् विण्णोर् परवियेत्तुम् परने परञ्चोती
वाराय् वारा उलगम् तन्दु वन्दाट्काळ्वाने
पेरायिरम् परवित्तिरिन्दम्परुमानन एत्त
आरा अमुदे आशैप्पट्टेन् कण्डाय् अम्माने !
(तिरुमुदै आठ - 25 पंक्ति 25-28)

500. थका हारा श्वान तुल्य मैं
 अक्षम हूँ अब यहाँ रहने के लिए
 तुमने ही दिये इहलोक-सौख्य के साधन
 प्रभो ! तुम्हीं ले लो अब मुक्त करो मुझे
 देवों के लिए भी अज्ञात दिव्य चरण !
 मुक्तिदाता प्रभो ! तरस रहा हूँ मैं
 तुम्हारे मुखकमल पर मंदहास देखने के लिए
 बड़ी इच्छा है मेरी, निहार लो
 तात मेरे और छिटक दो मंदहास।

(तिरुमुुरै आठ - 25 पंक्ति 21-24)

501. हे परंज्योति ! संस्तुत हो तुम निरंतर
 भूलोक और अमरलोक के वासियों से,
 आओ ! मुझे प्रदान करो वह लोक
 जहाँ से लौटना नहीं होता
 और दास बना लो मुझे
 मैं निरंतर जप रहा हूँ तुम्हारे सहस्र नाम
 तुम्हारी करुणा की प्रशंसा में
 हे नित नवीन अमृतस्वरूप !
 निहारो मुझे, तरस रहा हूँ
 तुम्हारी कृपा-दृष्टि के लिए मेरे तात !

(तिरुमुुरै आठ - 25 पंक्ति 25-28)

654 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

502. கையால் தொழுதுன் கழற்சே வடி-கள் கழுமத்
தழுவிக்கொண்டு
எய்யா தென்றன் தலைமேல் வைத்தெம் பெருமான்
பெருமானென்று
ஐயா என்றன் வாயா லரற்றி அழல்சேர் மெழுகொப்ப
ஐயாற் றரசே ஆசைப் பட்டேன் கண்டாய்
அம்மானே! 8

502. कैयाट्राळु दुन् कळल् चेवडिगुळ् कळ् मत्तळ् विक्काण्डुं
ऐय्यातन्न् तलैமெல் வைத்தெம் பெருமான்
ऐया ऐन्न् वायालरट्टि अळल्चेर् मळ् गुप्प
ऐयाट्रु अरशे आशैप्पट्टெन् कण्डाय् अम्माने !
(திருமூரே ஆட -25 பங்கி 29-32)

503. செடியா ராக்கைத் திறமற வீசிக் சிவபுர நகர்புக்குக்
கடியார் சோதி கண்டு கொண்டென் கண்ணினை
களிகூரப்
படிதா னில்லாப் பரம்பர னேஉன் பழஅடி யார்கூட்டம்
அடியேன் காண ஆசைப் பட்டேன் கண்டாய்
அம்மானே! 9

503. चंडियारावकैत् तिरुमर् वीशिच् चिवपुरनगर् पुक्कुक्
कडियार् चोति कण्डुकाण्डेन् कण्णिणै कळिकूरप्
पडितानिल्लाप् परम्परनेउन् पळवडियार् कूट्टम्
अडियेन् काण आशैप्पट्टेन् कण्डाय् अम्माने !
(திருமூரே ஆட -25 பங்கி 33-36)

502. अपने करयुगल के आलिंगन-पाश में
 लेकर तुम्हारे नूपुर-शिंजित चरणयुगल
 रखकर अपना सिर तुम्हारे चरणकमल पर
 पुकार रहा हूँ 'मेरे स्वामी मेरे नाथ
 अपना लो मुझे मेरे गुरुमणि ! मेरे तात'
 पिघल रहा हूँ पिघल कर पानी पानी होता हूँ
 अनल में पड़े मोम-सम
 हे ऐयारु के अधीश !
 तरस रहा हूँ दर्शन के लिए
 निहारो मुझे मेरे तात !

(तिरुमुरै आठ - 25 पंक्ति 29-32)

503. छोड़ कर निकल जाना चाहता हूँ
 सड़ी-गली इस देह से मेरे प्रभो !
 निकल कर पहुँचना चाहता हूँ
 आनंदधाम शिवपुर में
 जहाँ चतुर्दिक् बिखर रही है प्रभा
 तुम्हारे प्रेमी भक्तगण के सान्निध्य से
 तरस रहे हैं मेरे नयन
 उस ज्योति के दर्शन के लिए
 हे अनुपम अद्वितीय प्रभो ! परंज्योति !
 तुम्हारे पुरातन-सनातन
 प्रेमी भक्त-जन मंडली के दर्शन के लिए
 तरस रहे हैं ये मेरे नयन
 निहारो मुझे मेरे ताल !

(तिरुमुरै आठ - 25 पंक्ति 33-36)

656 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

504. வெஞ்சே லனைய கண்ணார்தம் வெகுளி வலையில்
 அகப்பட்டு
 நெஞ்சேன் நாயேன் ஞானச் சுடரே நானோர்
 துணைகாணேன்
 பஞ்சே ரடியான் பாகத் தொருவா பவளத் திருவாயால்
 அஞ்சேல் என்ன ஆசைப் பட்டேன் கண்டாய்
 அம்மானே ! 10

504. वञ्चेलनैय कण्णार् तम् वंगुळिवलैयिलगप्पट्टु
 नैज्जेन् नायेन् आनच्चुडरे नानोर् तुणैकाणेन्
 पञ्जेरडियाळ् पागत्तारुवा पवळतिरुवायाल्
 अज्जेलन्न आशैप्पट्टेन् कण्डाय् अस्माने !
 (तिरुமுரै आठ - 25 पंक्ति 37-40)

504. फंस कर मीन लोचनियों के काम-पाश में
 थक गया हूँ श्वान तुल्य में
 हे ज्ञान की ज्योति ! कोई नहीं सहारा
 रुई के समान मृदुलचरणा को
 संग में लिये विलसे हो !
 मेरे एकमेव प्रभो !
 तरस रहे हैं मेरे कान
 तुम्हारे प्रवाल-अधरों के स्पंदन से
 यह सुनने को 'आओ वत्स मेरे पास !'
 यह सुनने को 'डरो मत वत्स
 डरो नहीं मैं जो हूँ यहाँ तुम्हे शरण देने के लिए !
 निहारो ! नाथ मुझे, मेरे तात !

(तिरुमुरै आठ - 25 पंक्ति 37-40)



658 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - डॉ रेवरेण्ड जी. यू. पोप; 1900 ई.

Source : Tiruvacagam by Rev. G.U. Pope; 1900 A.D.

O flawless Gem, who gav'st the wealth of Thine own roseate
feet,—
By the kite-banner'd King unseen,—and here mad'st me Thine
own !
My darkness drive far off ; say 'hither come' ! The grace to gain
That calls me there to dwell, BEHOLD, O SIRE, MY SOUL HATH
YEARN'D !

I not endure to wear this garment of the flesh,—of joints
And bones compact,—with fatness filled,—covered with skin !
O King,
Call me ! To men of every sort, as fits their case Thou com'st
Ambrosia rare, ah, Thee to see, BEHOLD, O SIRE, I YEARN !

Call me, my King, that this poor frame, with vileness fill'd, may
die !
Thou 'Dancer,' Guru-gem, Who guarding makest me Thine ;
O God by gods unreach'd Çivan ! Look on my face awhile.
For Thee, to hear Thee call, BEHOLD, O SIRE, MY SOUL HATH
YEARN'D !

This walking cell, with loathly filth filled full, contemptible,
Clings to me, and afflicts my soul ! Hail to Thee, mighty Lord !
Broken, subdued, and melted, looking ever for Thy light,
Thy blest feet's flower to gain, BEHOLD, O SIRE, MY SOUL HATH
YEARN'D !

Within this frame is loathsome ; and without skin-covered sores,
 Sore grief ! Thou Rider on the Bull ! Bedeckt with ashes white,
 Stooping to me, Thou cam'st, and mad'st me Thine ; Ambrosia
 rare !

For word of tenderness, BEHOLD, O SIRE, MY SOUL HATH
 YEARN'D !

Weary, mere dog, I cannot here abide. Take back earth's joys
 Thou gav'st, O Thou whose roseate feet-flowers heaven's sons
 know not !—

Thou know'st no bond ! Thy face's light, the gleaming of Thy
 smile,—

To see, BEHOLD, O SIRE, HOW EAGERLY MY SOUL HATH
 YEARN'D !

Thou Infinite, Whom earth and heaven extol, Thou Light
 superne,—

Thou cam'st to make me Thine ! Give me the world of final bliss ;
 Thy thousand names I'd circling sing. Thee mighty Lord to praise,
 Th' Ambrosia ever new, BEHOLD, O SIRE, MY SOUL HATH

YEARN'D !

Lines : 1 - 28

26

அதிசயப்பத்து

अतिशयप्पत्तु

முத்தி இலக்கணம்

मुक्ति लक्कणम्

505. வைப்புமா டென்றும் மாணிக்கத்
 தொளியென்றும் மனத்திடை உருகாதே
 செப்பு நேர்முலை மடவர
 வியர்தங்கள் திறத்திடை நைவேனை
 ஒப்பி லாதன உவமனி
 லிறந்தன ஒண்மலர்த் திருப்பாதத்து
 அப்பன் ஆண்டுதன் அடியாரிற்
 கூட்டிய அதிசயங் கண்டோமே!

1

505. वैष्णुमाडंन्ऱु माणिकक्त्
 तांळियंन्ऱुम् मनत्तिडै उरुगादे
 चंप्पुनेर्मुलै मडवर
 लियर् तड्गळ् तिरत्तिडै नैवेनै
 आपिलादन उवमनि
 लिरन्दन आण्मलर्त् तिरुप्पादत्तु
 अप्पन् आण्डு तन् अडियरिर्
 कूट्टिय अतिशयम् कण्डामे !

(तिरुமுரै आठ - 26 पंक्ति 1-8)

26

चमत्कार-दशक

मुक्ति लक्षण

505. तरस-तड़पकर

विगलित मन से पुकारा नहीं

'ओ मेरे कनक ! ओ मेरी निधि !'

इसके बजाए निमग्न रहा

सुभगस्तनी तरुणियों के सौंदर्य में

मग्न क्या था डूब रहा था मैं,

ऐसे में मुझे प्राप्त हुआ प्रभु का वरदान

मिल गए नाथ के अनुपम

ज्योतिर्मय चरण

और अनुग्रहपूर्वक मिला लिया

मुझे अपनी भक्तमंडली के संग

अहह ! देखा हमने ऐसा आश्चर्य।

(तिरुमुरै आठ - 26 पंक्ति 1-8)

662 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

506. நீதி யாவன யாவையும்

நினைக்கிலேன் நினைப்பவ ரொடுங்கூடேன்
ஏத மேபிறந் திறந்துமூல்
வேந்தனை என்னடி யானென்று
பாதி மாதொடுங் கூடிய
பரம்பரன் நிரந்தர மாய்நின்ற
ஆதி ஆண்டுதன் அடியாரிற்
கூட்டிய அதிசயங் கண்டோமே!

2

506. नीतियावन यावेयुम्

निनैविकलेन् निनैप्पवராडुम् कूडेन्
एदमे पिरन्दिरन्दुळल्
वेन् तनै ऐन्नडियानन्
पादि मादाडुम् कूडिय
परम्परन् निरन्तरमाय् निन्
आदि आण्डुतन् अडियरिर्
कूट्टियअतिशयम् कण्डामे !

(तिरुमुரै आठ - 26 पंक्ति 9-16)

507. முன்னை என்னுடை வல்வினை

போமிட முக்கண துடையெந்தை
தன்னை யாவரும் அறிவதற்
கரியவன் எளியவன் அடியார்க்குப்
பொன்னை வென்றதோர் புரிசடை
முடிதனில் இளமதி யதுவைத்த
அன்னை ஆண்டுதன் அடியாரிற்
கூட்டிய அதிசயங் கண்டோமே!

3

507. मुन्नै ऐन्नुडै वल्विनै

पोयिड मुक्कण्डुडै ऐन्नै
तननै यावरुम् अरिवदर्
करियवन् ऐळियवनडियाक्कुप्
पान्नै वन्दोर् पुरिचडै
मुडि तनिल् इळमदि अदु वैत्त
अन्नै आण्डु तन्नडियरिर्
कूट्टिय अतिशयम् कण्डामे !

(तिरुमुரै आठ - 26 पंक्ति 17-24)

506. कितना कदर्य था मैं
 नीति-धर्म की बातें सोचता नहीं था
 शीलवानों के संग चलता नहीं था
 जनन-मरण के बीच डोल रहा था
 ऐसे निकृष्ट इस जन को
 अर्धनारीश्वर प्रभु ने, परात्पर परमेश्वर ने
 स्नेह-वात्सल्य से अपनाया
 प्रस्तुत किया निज भक्तमंडली में
 यह कहते हुए
 कि यह मेरा प्रिय दास है
 अहह ! देखा हमने ऐसा आश्चर्य।

(तिरुमुरै आठ - 26 पंक्ति 9-16)

507. सबके लिए सुदुर्लभ
 किंतु भक्तजन के लिए सहज सुलभ
 त्रिनेत्र प्रभु, मेरे तात-मात ने
 जिनकी स्वर्णिम जटा पर शोभित बालचंद्र
 दूर किया दुःख-दुरित, मेरे सारे दुष्कर्म
 और अपनाया मुझे अपना बनाया
 निज भक्तमंडली में स्थान दिया
 अहह ! देखा हमने ऐसा आश्चर्य।

(तिरुमुरै आठ - 26 पंक्ति 17-24)

664 தமிழ் சீவமக்த கவி மாணிக்வாசகர் கृत திருவாசகம்

508. பித்த னென்றெனை உலகவர்
 பகர்வதோர் காரணம் இதுகேளிர்
 ஒத்துச் சென்றுதன் திருவருள்
 கூடிடும் உபாயம் தறியாமே
 செத்துப் போய் அரு நரகிடை
 வீழ்வதற் கொருப்படு கின்றேனை
 அத்தன் ஆண்டுதன் அடியாரிற்
 கூட்டிய அதிசயங் கண்டாமே!

4

508. पित्तनर्ननें उलगवर्
 पगर्वदोर् कारणमिदु केळीर्
 आत्तुच्चन् तन् तिरुवरुळ्
 कूडिडुम् उपायमदरियामे
 चत्तुप्पायर् नरकिडै
 वीळ्वदकु आरुप्पडुकिन्नेनै
 अत्तनाण्डु तन्नडियरिर्
 कूट्टिय अतिशयम् कण्डामे !

(திருமூரே ஆட - 26 பங்கி 25-32)

509. பரவு வாரவர் பாடுசென்
 றணைகிலேன் பன்மலர் பறித்தேத்தேன்
 குரவு வார்துழ லார்திறத்
 தேநின்று குடிசெடு கின்றேனை
 இரவு நின்றொரி யாடிய
 எம்மிறை எரிசடை மிளிர்கின்ற
 அரவன் ஆண்டுதன் அடியாரிற்
 கூட்டிய அதிசயங் கண்டாமே!

5

509. परवुवारवर् पाडु चन्
 रणैकिलेन् पन्मलर् परित्तेत्तेन्
 कुरवुरवार् कुळलार् तिरत
 तेनिन् कुडि कंडुकिन्नेनै
 इरवु निन्ऱि याडिव
 एम्मिरै एरिचडै मिळिर्किन्
 अरवनाण्डु तन्नडियरिर्
 कूट्टिय अतिशयम् कण्डामे !

(திருமூரே ஆட - 26 பங்கி 33-40)

508. सुनलें किस कारण से
 लोक में बावरा कहलाता हूँ मैं
 प्रभु की ओर से संकेत मिलने पर भी
 जोड़ न पाया हृदय का तार
 निरत न रहा प्रभु-मिलन की युक्ति में
 डोलता रहा जग में सामान्य जन के समान
 जनन-मरण के नरक से
 उबरने का मार्ग जाने बिना
 अहह ! कैसा आश्चर्य घटित हुआ
 कि ऐसे जड़मति को स्थान दिया प्रभु ने
 निज भक्त-मंडली में।

(तिरुमुरै आठ - 26 पंक्ति 25-32)

509. कीर्तन करती भक्त-मंडली में
 जाकर मिला नहीं
 किया नहीं पूजन-अर्चन
 चुनकर रंग-रंग के सुमन,
 कामिनियों के श्यामल कुंतल में
 लगी जुही पर रीझता रहा
 दुर्लभ जीवन को नष्ट करता रहा
 ऐसे निकृष्ट जन को अपनाया प्रभु ने
 जो नृत्य करते हैं चिताग्नि मध्य में
 अरुणिम जटा ज्योतिष है अनल सम
 प्रभु ने मुझे बना लिया दास
 मिला लिया भक्त-मंडली में
 अहह ! देखा मैंने ऐसा आश्चर्य।

(तिरुमुरै आठ - 26 पंक्ति 33-40)

666 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

510. எண்ணி லேன்திரு நாமவஞ்
செழுத்தும்என் ஏழைமை யதனாலே
நண்ணி லேன்கலை ஞானிகள்
தம்மொடு நல்வினை நயவாதே
மண்ணி லேபிறந் திறந்துமண்
ணாவதற் கொருப்படு கின்றேனை
அண்ணல் ஆண்டுதன் அடியரிற்
கூட்டிய அதிசயங் கண்டாமே!

6

510. ऐणिलेन् तिरुनाम अञ्
चळुत्तम् ऐन एळैमै अदनाले
नणिलेन् कलैआनिकळ्
तम्माडु नल्विनै नयवादे
मणिले पिरन्दिरन्दु मण्
णावदर्कु आरुप्पडुकिन्ऱेनै
अण्णलाण्डु तन्नडियरिर्
कूट्टिय अतिशयम् कण्डामे !

(तिरुमुऱै आठ - 26 पंक्ति 41-48)

511. பொத்தை ஊன்கவர் புழுப்பொதிந்
துளுத்தகம் பொழுகிய பொய்க்குரை
இத்தை மெய்யெனக் கருதிநின்
றிபர்க்கடற் சுழித்தலைப் படுவேனை
முத்து மாமணி மாணிக்க
வயிரத்த பவளத்தின் முழுச்சோதி
அத்தன் ஆண்டுதன் அடியரிற்
கூட்டிய அதிசயங் கண்டாமே!

7

511. पातैयून् चुवर् पुळ्ळुप्पादिन्
दुळुत्तु सुम्बोळ्ळु गिय पाय्वक्कूरै
इतै मय्यनक् करुदि निन्
रिडर्कडर् कळित्तलैप्पडुवेनै
मुत्तु मामणि माणिक
वयिरत्त पवळत्तिन् मुळ्ळु च्वोति
अत्तनाण्डु तन्नडियरिर्
कूट्टिय अतिशयम् कण्डामे !

(तिरुमुऱै आठ - 26 पंक्ति 49-56)

510. ध्यान नहीं किया पावन पंचाक्षर नाम का
 अपने ही अज्ञान से प्रमाद से,
 लाभ नहीं उठाया भक्तमंडली के सत्संग से
 वांछा नहीं की पुण्य-संचय की
 निपट मूर्ख मैं तुला हुआ था
 बारंबार यहाँ जन्म ले लेके मरने पर
 ऐसे पामर को अपनाया प्रभु ने
 भक्तमंडली में मिला लिया
 अहह ! देखा हमने ऐसा आश्चर्य।

(तिरुमुरै आठ - 26 पंक्ति 41-48)

511. मांस-मज्जा की कच्ची माटी की दीवार को
 घुन भरी सड़ी-गली इस नश्वर देह को
 सत्य शाश्वत मान बैठा था मैं
 घूम रहा था भवसागर के दुःख-दुरित के भंवर में
 ऐसे पामर जन का उद्धार किया प्रभु ने
 मुक्ता-माणिक्य महार्ध-मणि की
 हीरक-प्रवाल की जाज्वल्यमान ज्योति ने
 अपना कर मिला लिया निज भक्तमंडली में
 अहह ! ऐसा आश्चर्य देखा हमने।

(तिरुमुरै आठ - 26 पंक्ति 49-56)

668 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

512. நீக்கி முன்னெனைத் தன்னொடு
நிலாவகை குரம்பையிற் புகப்பெய்து
நோக்கி நுண்ணிய நொடியன
சொற்செய்து நுகமின்றி விளாக்கைத்துத்
தூக்கி முன்செய்த பொய்யறத்
துகளறுத் தெழுதரு கடர்ச்சோதி
ஆக்கி ஆண்டுதன் அடியாரிற்
கூட்டிய அதிசயங் கண்டாமே!

8

512. நீவிசு முன்னீத் தன்னாடு
நிலாவகை குரம்பையிற் புகப் ப்யது
நோவிசு நுண்ணிய நாடியன
சார்ச்சய்து நுகமின்றி விளாக்கைத்துத்
தூவிசு முன்னீத் தய்யரத்
தூகலுத்தல் தரு துடச்சுவிதி
அவிசு அண்டு தன்னடியாரிற்
கூட்டிய அதிசயம் கண்டாமே !
(திருமூரே அட - 26 பங்கி 57-64)

513. உற்ற ஆக்கையின் உறுபொருள்
நறுமலர் எழுதரு நாற்றம்போல்
பற்ற லாவதோர் நிலையிலாப்
பரம்பொருள் அப்பொருள் பாராதே
பெற்றவா பெற்ற பயனது
நுகர்ந்திடும் பித்தர்சொல் தெளியாமே
அத்தன் ஆண்டுதன் அடியாரிற்
கூட்டிய அதிசயங் கண்டாமே!

9

513. உட்ர ஆக்கையின் உரூபாரல்
நன்மலர் எல்லு தரு நாட்ரம் போல்
பட்ரலாவதோர் நிலையிலாப்
பரம்பாரல் அப்பாரல் பாராதே
பட்ரவா பட்ர பயனது
நுகர்ந்திடும் பித்தர் சால் தவியாமே
அத்தனாண்டு தன்னடியாரிற்
கூட்டிய அதிசயம் கண்டாமே !

(திருமூரே அட - 26 பங்கி 65-72)

512. दर्शन-लाभ से वंचित करते हुए प्रभु ने
 प्रथम हटाया मुझे अपने सान्निध्य से
 भेजा यहाँ गर्भवास करने को
 बाद में निहारा मुझे स्नेह वात्सल्य से
 बोले मृदुल-मधुर वचन भी
 हटा दिया फिर कंधे से जुआ
 उबारा, उद्धार किया और इस प्रक्रिया में
 मेरे दुःख-दुरित, मिथ्यामिमान, झूठ सब झड़ गए
 इस तरह अपना लिए परंज्योति स्वरूप
 परात्पर प्रभु ने और
 मिला लिया अपनी भक्तमंडली में
 अहह ! देखा हमने ऐसा आश्चर्य।

(तिरुमुरै आठ - 26 पंक्ति 57-64)

513. जानता नहीं था मैं
 प्रभु बसा हुआ है मुझमें पुष्पों में सुरभि सम
 काया में निहित परमतत्त्व को जाने बिना
 नर जन्म के अर्थ को समझे बिना
 भूला-बिसरा रहा विश्वास करता रहा
 उन्मत्त जनों की भोंडी बातों पर
 डोलता रहा मन-इंद्रियों के वश में पड़कर
 ऐसे पामर को प्रभु ने अपनाया
 अपनाकर स्थान दिया भक्तमंडली में
 अहह ! देखा हमने ऐसा आश्चर्य।

(तिरुमुरै आठ - 26 पंक्ति 65-72)

670 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

514. இருள்தி ணிந்தெழுந் திட்டதோர்
வல்வினைச் சிறுகுடில் இதுஇத்தைப்
பொருளெ னக்களித் தருநர
சுத்திடை விழப்புகு கின்றேனைத்
தெருளும் மும்மதில் நொடிவரை
இடிதரச் சினப்பதத் தொடுசெந்தீ
அருளும் மெய்ந்நெறி பொய்ந்நெறி
நீக்கிய அதிசயங் கண்டாமே!

10

514. इरुळ् तिणिन्दु ऐळु न्दिट्टदोर्
वल्विनैच् चिरुकुडिलिदु इत्तैप्
पारुळनक्कळित्तर नर
कत्तिडै विळप्पुगुकिन्ऱेनैत्
तरुळु मुम्मतिनाडिवरै
इडितरच् चिनप्पदत्ताडु चन्ती
अरुळुमय्यन्ऱि पाय्यन्ऱि
नीविकय अतिशयम् कण्डामे !

(तिरुमुरै आठ -26 पंक्ति 73-80)

514. कर्मबंधन का मारा हुआ मैं
 पड़ा रहा काया के लघु पिंजर में
 पलता रहा अज्ञान के तिमिर में
 यही मान कर मुदित रहा कि
 यही मेरा आस्थान है जीवन का सब कुछ यही है
 अहह ! ज्योतिर्मय प्रभु की परम करुणा
 इस कूप में फैलाई ज्ञान की ज्योति-किरण
 क्रुद्ध पदाघात से ज्वलित अग्नि से
 जिसने ध्वस्त किया त्रिपुर को
 ऐसे करुणामय प्रभु ने कृपा की मुझ पर
 सन्मार्ग मिला ध्वस्त हुआ समग्र मिथ्यात्व,
 अहह ! देखा हमने ऐसा आश्चर्य।

(तिरुमुरै आठ - 26 पंक्ति 73-80)



672 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - वर्ड बीटिफिक एस. ए. शंकरनारायनन्

Source : Tiruvacagam : Word Beatific by S.A. Sankaranarayanan

O Lord ! without ever melting for
 the garnered opulence sought, for
 the light of Ruby collected, at heart,
 I have succumbed in flux for
 the cup-like bosom'd dames' ways ; yet
 it is sheer wonder for all that He
 non pareil Father with instinct luminous
 fair feet lotuses have taken me
 annexing to His True Servitors' fold.
 How we wonder what His deed is !

Think not I of anything just ; nor
 I join such that think and act so ;
 Guilt-carnate I'm, woe-stricken
 in birth and death. Yet it's sheer
 wonder that the Primordial One
 has taken me considering His servitor,
 He with Half His Holy Mien the woman,
 Supreme sempiternal Gracing !
 How we wonder what His deed is !

Trine-eyed father mine is supreme
 to Himself ! unknown to any !
 Easy to servitors ! Mother like He
 has graced in His superior auric
 matted locks sheltering the crescent.
 Yet it's sheer wonder that He gracing
 me unworthy, killing my cruel deededness,
 taking, annexing me to His servitors.
 How we wonder what His deed is !

You may listen. Why the worlders
 call me madness-worn. Without
 knowing the art of communing
 with Lord's holy grace with mind
 correspondent, I have fallen into
 the inferno hard to cross through
 death. Yet it's wonder sheer that
 my father has taken me annexing
 to His servitors' fold; puzzling all.
 How we wonder what His act is ?

Join not I unto those that worship
 Lord ! Nor do I offer flowers various
 unto Him and bow. I seek my own
 damnation standing beside
 the dames deck'd with fragrant
 webera in their locks ; yet it's
 wonder sheer that my Lord Dancer
 Lumen all in the Night of Grand
 Dissolution, with glittering serpent
 on His flaming red locks, has
 taken me annexing to His
 servitors' fold.
 How we wonder what His Act is !

Lines : 1 - 48

27

புணர்ச்சிப்பத்து

पुनर्चिप् पत्तु

அத்துவித இலக்கணம்

अतुवित लक्कणम्

515. கடர்பொற் குன்றைத் தோளா முத்தை
வாளா தொழும்பு கந்து
கடைபட் டேனை ஆண்டு கொண்ட
கருணா லயனைக் கருமால்பிரமன்
தடைபட் டின்னுஞ் சார மாட்டாத்
தன்னைத் தந்தஎன் ஆரமுதைப்
புடைபட் டிருப்ப தென்றுகொல் லொள்ள
பொல்லா மணியைப் புணர்ந்தே?

1

515. चुडर् पार्कुनैन् तोळा
मुत्तै वाळा ताळ्ळु म्बुगन्दु
कडैप्पट्टेनै आण्डुकाण्ड
करुणालयनैक् करुमाल् पिरमन्
तडैप्पट्टिन्नुम् चारमादयत्
तन्नैत् तन्द ऐन्नारमुदैप्
पुडै प्पट्टिरुप्पदंरु काल्लो ऐन्
पाल्लामणियैप् पुणन्दै ?

(तिरुமுரै आठ - 27 पंक्ति 1-8)

संयोग-दशक

अद्वैत लक्षण

515. जाज्वल्यमान कनक-शैल अमूल्य मुक्ता
 करुणा के वरुणालय प्रभु
 चकित भ्रमित रहे किंतु पा न सके
 श्यामल विष्णु के संग विरिंचि
 ऐसे प्रभु मुदित हुए
 मेरी निरर्थक तुच्छ सेवकाई से
 पास आए दास बना लिया इस पामर को
 अमृतस्वरूप ने
 अहा ! दे दिया निज को ही
 अव्याज करुणा के संग मुझे
 सुयोग कब मिलेगा प्रभु के सामीप्य में
 ज्योतिर्मय मणि के आलिंगन-पाश के सुख का।

(तिरुमुरै आठ - 27 पंक्ति 1-8)

676 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

516. ஆற்ற கில்லேன் அடியேன் அரசே
அவனி தலத்தைம் புலனாய
சேற்றி லமுந்தாச் சிந்தை செய்து
சிவனெம் பெருமான் என்றேத்தி
ஊற்று மணல்போல் நெக்கு நெக்கு
உள்ளே உருகி ஓலமிட்டுப்
போற்றி நிற்ப தென்றுகொல் லோஎன்
பொல்லா மணியைப் புணர்ந்தே?

2

516. आद्रकिल्लेनडियेन् अरशे
अवनितलत्तैम्पुलनाय्
चेद्रिलळुन्दाच् चिन्तौ चंय्दु
शिवनंस्पर्मान् ऐन्नेत्ति
ऊदरु मणल् पोल् नक्कुनक्कु
उळ्ळे उरुगि ओलमिट्टुप्
पोट्टि निर्पदन्ऱु कोल्लो ऐन्
पांल्लामणियैप् पुणन्द ?

(திருமுறை ஆட - 27 பங்கி 9-16)

517. நீண்ட மாலும் அயனும் வெருவ
நீண்ட நெருப்பை விருப்பிலேனை
ஆண்டு கொண்ட என்ஆ ரமுதை
அள்ளு றுள்ளத் தடியார்முன்
வேண்டுந் தனையும் வாய்விட் டலறி
விரையா ரும்மலர் தூவிப்
பூண்டு கிடப்ப தென்றுகொல் லோஎன்
பொல்லா மணியைப் புணர்ந்தே?

3

517. नीण्ड मालुमयनुम् वरुव
नीण्ड नरुप्पै विरुप्पिलेनै
आण्डुकाण्ड ऐन्नारमुदै
अळ्ळूरुळ्ळत्तडियार् मुन्
वेण्डुन्तनैयुम् वाय्विट्टलरि
विरैयार् मलर्तूविप्
पूण्डु किडप्पदन्ऱु कांल्लो ऐन्
पांल्लामणियैप् पुणन्द ?

(திருமுறை ஆட - 27 பங்கி 16-24)

516. प्रभु मेरे ! तुम्हारे इस दास से
 हो न पाता इस धरणी पर वास
 बच निकलूँगा कब
 पंचेंद्रिय के दलदस में फँसा हुआ मैं
 चित्त में शिवराज का ध्यान करते हुए
 कब पुकारने लगूँगा मैं
 "ओ मेरे शिवनाथ ! त्राण करो ?"
 कब पिघलने लगेगा मेरा मन
 शिवानंद-धार में रेत-कण सम
 कब उछलने लगूँगा आह्लाद से
 नमोनम का करूँगा उद्घोष कब ?
 कब मिलेगा सुयोग प्रभु के सामीप्य का
 ज्योतिर्मय मणि के आलिंगन पाश का।

(तिरुमुऱै आठ - 27 पंक्ति 9-16)

517. ज्योतिस्तंभ बन स्थित रहा
 चकित भ्रमित देख रहे थे
 दीर्घवसु विष्णु के संग विरिंचि
 उस निर्मोह ज्योतिस्वरूप को
 अमृतस्वरूप प्रभु ने अपनाया मुझे
 प्रेमसिक्त संत जनों के सान्निध्य में
 इस अपार करुणा से आह्लादित होकर
 रोऊँगा मैं जी भर कर
 समर्पित कर सुरंभित सुमन
 धरूँगा मैं निज शीर्ष चरणकमल पर
 कब मिलेगा सुयोग प्रभु के सामीप्य का
 ज्योतिर्मय मणि के आलिंगनपाश का।

(तिरुमुऱै आठ - 27 पंक्ति 17-24)

678 தமிழ் சைவத்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

518. அல்லிக் கமலத் தயனும் மாலும்
அல்லா தவரும் அமரர்கோனும்
சொல்லிப் பரவும் நாமத் தானைச்
சொல்லும் பொருளும் இறந்தகடரை
நெல்லிக் கனியைத் தேனைப் பாலை
நிறையின்அமு தைஅமு தின்கவையைப்
புல்லிப் புணர்வ தென்றுகொல் லோஎன்
பொல்லா மணியைப் புணர்ந்தே?

4

518. அல்லிகமலததயனும் மாலும்
அல்லிடவரும் அமரர் கானும்
சுல்லிப் பரவு நாமதானைச்
சுல்லும் பாரலும் இரந்த குடரே
நல்லிககனியைத் தைநைப்பாலை
நிரையின்அமுததைஅமுதின்கவையைப்
புல்லிப் புணர்வதென்றுகொல் லோஎன்
புல்லாமணியைப் புணர்ந்தே ?

(திருமுருகு. ஆட - 27 பங்கித் 25-32)

519. திகழத் திகழும் அடியும் முடியுங்
காண்பான் கீழ்மேல் அயனும்மாலும்
அகழப் பறந்துங் காண மாட்டா
அம்மான் இம்மா நிலம்முழுதும்
நிகழப் பணிகொண் டென்னை ஆட்கொண்
டாவா என்ற நீர்மையெல்லாம்
புகழப் பெறுவ தென்றுகொல் லோஎன்
பொல்லா மணியைப் புணர்ந்தே?

5

519. திகழ்திகழ்வும் அடியு முடியும்
காண்பான் கீழ்மேலயனு மாலும்
அகழ்ப் பரந்தும் காணமாட்டா
அம்மான் இம்மானிலம் முழுதும்து
நிகழ்ப் பணிகாண்டனையே ஆட்காண்ட
அவா என்ற நீர்மையெல்லாம்
புகழ்ப்பெறுவதென்றுகொல் லோஎன்
புல்லாமணியைப் புணர்ந்தே ?

(திருமுருகு. ஆட - 27 பங்கித் 33-40)

518. कब मिलेगा सुयोग प्रभु के सामीप्य का
ज्योतिर्मय मणि के आलिंगन-पाश का
वाक् और इंद्रियों के अतीत परंज्योति वह
आमलक का पक्व फल है
मधु-दुग्ध है अमोघ अमियधार है
अमृत का मधुरिम स्वाद है
विष्णु विरिंचि अमरपति के संग
इतर जन कर रहे हैं संकीर्तन
प्रभु के पावन नाम का।

(तिरुमुरै आठ - 27 पंक्ति 25-32)

519. जगमगाते चरण और जाज्वल्यमान शीर्ष के
दर्शन हेतु चल निकले ऊपर नीचे
विष्णु और विरिंचि
खोद-खोद कर हारे थे उड़-उड़ कर क्लांत हुए वे
देख न पाए दोनों ही
ऐसे सुदुर्लभ प्रभु मुदित हुए मुझ पर
अपनाया मुझे नियुक्त किया सेवकाई में
सारा जग है साक्षी इसका
अहह मेरा ऐसा सौभाग्य !
कब मिलेगा सुयोग प्रभु सामीप्य का
जाज्वल्यमान मणि के आलिंगन-पाश का।

(तिरुमुरै आठ - 27 पंक्ति 33-40)

680 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

520. பரிந்து வந்து பரமானந்தம்
பண்டே அடியேற் கருள்செய்யப்
பிரிந்து போந்து பெருமா நிலத்தில்
அருமா ஓற்றேன் என்றென்று
சொரிந்த கண்ணீர் சொரிய உள்நீர்
உரோமஞ் சிலிர்ப்ப உகந்தன்பாய்ப்
புரிந்து நிற்ப தென்றுகொல் லோஎன்
பொல்லா மணியைப் புணர்ந்தே?

6

520. परिन्दु वन्दु परमानन्दम्
पण्डै अडियेर्करुळ् चय्यप्
पिरिन्दु पोन्दु परुमा निलतिल्
अरुमालुद्रेन् ऐन्
चारिन्द कण्णीर् चारिय उव्नीर्
उरोमम् चिलिर्प् उगन्दन्पायप्
पुरिन्दु निर्पदन्कराल्लो ऐन्
पाल्लामणियैप् पुणन्दै ?

(திருமூரே ஆட - 27 பங்கி 41-48)

521. நினையப் பிறருக் கரிய நெருப்பை
நீரைக் காலை நிலன்விசும்பைத்
தனையொப் பாரை யில்லாத் தனியை
நோக்கித் தழைத்துத் தழுத்தகண்டம்
கனையக் கண்ணீர் அருவி பாயக்
கையுங் கூப்பிக் கடிமலரால்
புனையப் பெறுவ தென்றுகொல் லோஎன்
பொல்லா மணியைப் புணர்ந்தே?

7

521. निनैयप् पिरुवकरिय नरुपै
नीरेक् कालै निलनै विशुम्बैत्
तनैयाप्पारै इल्लात् तनियै
नोविकत् तवैत्तुत् तळुत्त कण्डम्
कनैयक् कण्णीररुवि पायक्
कैयुम् कूपिक् कडिमलराल्
पुनैयप् परुवदन्कराल्लो ऐन्
पाल्लामणियैप् पुणन्दै ?

(திருமூரே ஆட - 27 பங்கி 49-56)

520. बहुत समय पहले आए प्रभु
 अपने आप ही मेरे पास स्नेह वात्सल्य के संग
 अपनाया बना लिया निज दास
 आनंदमय थे वे दिन
 फिर एकाएक छोड़कर चले गए
 भटकने के लिये मुझे इस विपुल कांतार में
 कब मैं तड़पूंगा प्रभु के स्मरण में
 बहाकर अश्रुधार
 कब पुलकित हूँगा प्रभु-प्रेम की स्मृति में
 कब मिलेगा सुयोग प्रभु-सामीप्य का
 जाज्वल्यमान मणि के आलिंगनपाश का।

(तिरुमुरै आठ - 27 पंक्ति 41-48)

521. अचिंतनीय हो तुम अकल्पनीय हो
 अनल सलिल अनिल हो ! धरती और अंबर हो
 उपमा रहित अद्वितीय हो ! अनोखे-निराले हो
 प्रभो ऐसे महिमामय तुमको
 कब मैं पुकारूँगा गद्गद् कंठ से
 निहारूँगा कब नयन भरकर
 नयनों से बह निकले अश्रुधार
 करांजलि में सुमन भरकर
 कब करूँगा पूजन चरणकमल का
 कब मिलेगा सुयोग प्रभु-सामीप्य का
 जाज्वल्यमान मणि के आलिंगनपाश का।

(तिरुमुरै आठ - 27 पंक्ति 49-56)

682 तमिल शैवभक्त कवि माणिक्यवाचकर कृत तिरुवाचकम्

522. நெக்கு நெக்குள் உருகி உருகி
நின்றும் இருந்துங் கிடந்தெழுந்தும்
நக்கும் அழுதுந் தொழுதும் வாழ்த்தி
நானா விதத்தாற் கூத்துநவிறற்சி
செக்கர் போலுந் திருமேனி திகழ
நோக்கிச் சிலிர்சி விர்த்துப்
புக்கு நிற்ப தென்றுகொல் லோஎன்
பொல்லா மணியைப் புணர்ந்தே?

8

522. नक्कु नक्कुळ् उरुगि उरुगि
निन्ऱु इरुन्दुम् किडन्दळ् न्दुम्
नक्कुम् अळ् दुम् ताळ् दुम् वाळ्ति
नानाविदत्ताल् कूत्तु नविट्टिच्
चक्कर् पोलुम् तिरुमेनि
तिगळ् नोक्कि चिलिर् चिलिर्त्तुप्
पुक्कु निरपदन्ऱु काळ्ळो ऐन्
पाल्लामणियैप् पुणन्दे ?

(तिरुमुरै आठ - 27 पंक्ति 57-64)

523. தாதாய மூவே முலகி னுக்குந்
தாயே நாயேன் தனையாண்ட
பேதாய் பிறவிப் பிணிக்கோர் மருந்தே
பெருந்தேன் பில்க எப்போதும்
ஏதாம் மணியே என்றென் றேத்தி
இரவும் பகலும்எழி லார்பாதப்
போதாய்ந்த தணைவ தென்றுகொல் லோஎன்
பொல்லா மணியைப் புணர்ந்தே?

9

523. ताताय मूवेळुलगुक्कुम्
ताये नायेन् तनैयाण्ड
पेदाय पिरविप्पिणिवकोर् मरुन्दे
परुन्तेन् पिलग एण्पोदुम्
एदाम् मणिये ऐन्ऱेत्ति
इरवुम् पगलुम् ऐळिलार् पादप्
पोदायन्दणैवदन्ऱु कार्ल्लो ऐन्
पाल्लामणियैप पुणन्दे ?

(तिरुमुरै आठ - 27 पंक्ति 65-72)

522. पिघल-पिघल कर कब बनूंगा जल सम
 प्रेम के उन्माद में कब मैं
 नाचता हुआ चलूंगा बैदूंगा
 धरणी पर लुढ़ककर लोट-पोट होऊंगा
 विवश होकर कभी हँसू कभी रोऊँ
 कभी नाचूँ गालियों में डोलकर
 कब मिलेंगे दर्शन अरुणाभ
 कनकमय देहकांति के
 निहार-निहारकर कब पुलकित हूँगा
 प्रभो ! कब मिलेगा सुयोग तुम्हारे सामीप्य का
 जाज्वल्यमान मणि निभ
 तुम्हारे आलिंगन-पाश का।

(तिरुमुरै आठ - 27 पंक्ति 57-64)

523. ओ मेरे करुणामय तात ! त्रैलोक्य और
 सप्तलोक की अधीश्वरी मेरी माँ !
 अपनाया इस तुच्छ दास को प्रेम से करुणा से
 भवरोग के अमोघ औषध !
 हे महार्ध मणि ! आनंद-वारिधार के स्रोत
 कामनाओं को पूरित करते देवदेव !
 यों तुम्हारे नाम ले लेकर
 कब पुकारूँ मैं दिन-रात सुरति में बिलखूँ
 कब मिलेगा सुयोग प्रभु तुम्हारे सामीप्य का
 महार्ध मणितुल्य तुम्हारे आलिंगनपाश का।

(तिरुमुरै आठ - 27 पंक्ति 65-72)

684 தமிழ் சைவமதக் கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

524. காப்பாய் படைப்பாய் சுரப்பாய் முழுதுங்
கண்ணார் விசும்பின்விண் ணோர்க்கெல்லாம்
முப்பாய் மூவா முதலாய் நின்ற
முதல்வா முன்னே எனையாண்ட
பார்ப்பா னேளம் பரமா என்று
பாடிப் பாடிப் பணிந்துபாதப்
பூப்போ தணைவ தென்றுகொல் லோஎன்
பொல்லா மணியைப் புணர்ந்தே?

10

524. काष्पाय पडैप्पाय करप्पाय मुळ्दुम्
कण्णार् विशुम्बिन् विण्णोर्वक्ल्लाम्
मूप्पाय मूवाय मुदलाय निन्
मुदल्वा मुन्ने ऐनैयाण्ड
पारप्पाने ऐम् परमावन्
पाडिप् पाडिप् पणिन्दु पादप्
पूप्पोदणैवदन्ऱ् काल्लो ऐन्
पाल्लामणियैप् पुणन्दे ?

(तिरुमुறை आठ - 27 पंक्ति 73-80)

524. हे परिपालक, सर्जक, संहर्ता !
 देवों अमरों के देवदेव अनादि तत्त्व !
 सनातन चिरंतन सर्वप्रथम प्रभुराट्
 सबके आदिमूल ! देवाधिदेव
 तुमने दास बनाया पुराकाल में
 हे परात्पर ! परमेश्वर !
 कब मैं आ पाऊँगा तुम्हारे सान्निध्य में
 अद्भुत महिमाओं का गान करते हुए
 कब मिलेगा सुयोग प्रभु तुम्हारे सामीप्य का
 मणिनिभ तुम्हारे आलिंगनपाश का।

(तिरुमुरै आठ - 27 पंक्ति 73-80)



686 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : पाथवे दू गोंड शू द तिरुवाचकम् - जी. वनमीकनाथन्

Source : Pathway to God through the Tiruvacagam by
G. Vanmikanathan

When am I to be seated close by Him
locked in an embrace with my uncut Gem,
the sparking golden Hill, the unpierced Pearl,
the Abode of mercy—

Whom the dark Vishnu and Brahma,
being hindered (by their pride),
are yet unable to approach,

Who, pleased with my useless service,
assumed lordship over me, a straggling laggard,—
the delicious Ambrosia
Who gave to me His very self?

I, Your devotee, cannot bear, O King,
to stay in this world !

When am I to escape from sinking
in the mire of the five senses
and contemplate You, calling on You :
“O Civan, our great Lord !”

and, like a spring in sandy soil,
ooze and ooze and melt internally,
and wail and keep on praising You
while remaining locked in an embrace
with You my uncut Gem ?

When am I to remain locked in an embrace
with my uncut Gem —
the Pillar of fire

which grew taller and taller
to the terror of Brahma, and of Vishnu,
who too once grew taller and taller,

my delicious Ambrosia
 who enslaved unwilling me—
 wailing unrestrainedly as much as I like
 in the presence of devotees with love-welling minds,
 and, strewing fragrance-laden flowers (on His feet),
 lie quiescently wearing those feet on my head ?

When am I to remain united with my uncut Gem
 locked in a tight embrace with Him,
 the Flame transcending speech and sense,
 the *Nelli* fruit, Honey, Milk,
 the Ambrosia of Fruition,
 the Savour of that Ambrosia,
 Him with the name repeating which
 Brahma seated on the lotus of lovely petals,
 Vishnu, King of the devas (Indra),
 and others besides them
 worship Him ?

When am I to remain locked in an embrace
 with my uncut Gem,
 praising all the ways by which Ammaan —
 Whom Brahma and Vishnu,
 flying over and digging under the earth
 to see His brilliantly resplendent crown and feet,
 cannot see —
 took me into His service,
 and, enslaving me
 with all this vast world aware of His doing so,
 hailed me : “Ah ! Come unto me” ?

28

வாழாப்பத்து

வாண்ப்பு

+

முத்தி உபாயம்

मुक्ति उपायम्

525. பாரொடு விண்ணாய்ப் பரந்தளம் பரனே
 பற்றுநான் மற்றிலேன் கண்டாய்
 சீரொடு பொலிவாய் சிவபுரத் தரசே
 திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
 யாரொடு நோகேன் ஆர்க்கெடுத் துரைக்கேன்
 ஆண்டநீ அருளிலை யானால்
 வார்கடல் உலகில் வாழ்கிலேன் கண்டாய்
 வருகஎன் றருள்புரி யாயே!

1

525. पारां दु विष्णायप् परन्द ऐम्परने
 पटरु नान् मदिलेन् कण्डाय्
 चीरां दु पालिवाय् शिवपुरत्तरशे
 तिरुप्परुत्तुरैयुरै शिवने
 आरां दु नोगेन् आक्कु ऐंदुत्तुरैक्केन्
 आण्ड नी अरुळिलैयानाल्
 वार्कडलुलगिन् वाळ्गिलेन् कण्डाय्
 वरुग ऐन्ऱुळ् पुरियाये !

(तिरुमुரै आठ - 28 पंक्ति 1-8)

जीवन-असारता

मुक्ति के उपाय

525. धरती और अंबर को अतिव्याप्त करते हुए
 अग-जग के आर-पार प्रसरित
 हे परात्पर परमेश्वर ! तुम्हें छोड़कर
 कहीं कोई आश्रय नहीं है मेरा
 जाज्वल्यमान होकर शोभित हो शिवपुर में
 हे तिरुप्परुन्तुरै के शिवराज !
 अपनाने वाले तुम्हीं
 जब अनुग्रह की बात न सोचते
 तो बोलो मैं किससे जाकर
 प्रकट करूँ अपनी परिवेदना ?
 इतना जान लो समर्थ नहीं हूँ मैं
 अब इस समुद्रवलयित
 धरणी पर जीने के लिए
 अब तो कृपा करो मुझ पर
 और बुला लो अपने समीप।

(तिरुमुदै आठ - 28 पंक्ति 1-8)

690 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

526. வம்பனேன் தன்னை ஆண்டமா மணியே
மற்றுநான் பற்றிலேன் கண்டாய்
உம்பரும் அறியா ஒருவனே இருவர்க்
குணர்விறந் துலகமு நடுவும்
செம்பெரு மானே சிவபுரத் தரசே
திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
எம்பெரு மானே என்னையாள் வானே
என்னைநீ கூவிக்கொண் டருளே !

2

526. वम्बनेन तन्नै आण्ड मामणिये
मदरु नान् पट्रिलेन् कण्डाय्
उम्बरम् अरिया आरुवने इरुवक्
कुणर्विरन्दुलगम् ऊडुरुवुम्
चम्परुमाने शिवपुरत्तरशे
तिरुप्परुन्तुरैयुरै शिवने
एम्परुमाने ऐनौ आळ्वाने
ऐन्नै नी कूविवकाण्डरुळे !

(திருமுரே ஆட -28 பங்கி 9-16)

527. பாடிமால் புகழும் பாதமே அல்லால்
பற்றுநான் மற்றிலேன் கண்டாய்
தேடிநீ ஆண்டாய் சிவபுரத் தரசே
திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
ஊடுவ துன்னோ டுவப்பதும் உன்னை
உணர்த்துவ துனக்கெனக் குறுதி
வாடினேன் இங்கு வாழ்கிலேன் கண்டாய்
வருகஎன் ரருள்புரி யாயே !

3

527. पाडि माल् पुगळ्म् पादमे अल्लाल्
मदरु नान् पट्रिलेन् कण्डाय्
तेडि नी आण्डाय् शिवपुरत्तरशे
तिरुप्परुन्तुरैयुरै शिवने
ऊडुवदुन्नोडु उवप्पदुमुन्नै
उणर्तुवदुनक्कु एनक्कुरुदि
वाडिनेन् इङ्गु वाळ् गिलेन् कण्डाय्
वरुगवन्नरुळ् पुरियाये !

(திருமுரே ஆட -28 பங்கி 17-24)

526. दास रूप में अपनाया इस लघु जन को
 हे महार्ध मणि ! जान लो
 कोई आसरा नहीं मेरा तुम्हें छोड़कर
 देवगण के लिए सुदुर्लभ हो तुम
 विष्णु-विरंचि के समक्ष
 ज्योति-स्तंभ बन खड़े हुए थे अग जग के आर पार
 अरुणाभ प्रभो ! शिवपुर के अधीश !
 तिरुप्परुन्तुरै में विराजे शिवराज !
 अब तो कृपा करो मुझ पर
 और बुला लो अपने समीप।

(तिरुमुदै आठ - 28 पंक्ति 9-16)

527. स्वयं विष्णु से निरंतर संस्तुत
 तुम्हारे चरण-युगल को छोड़ कर
 हे प्रभो ! कहीं आश्रय नहीं है मेरा
 बरबस आकर अपनाया अपना बनाया इस दास को
 तुमने ओ शिवपुर-धाम के अधीश !
 तिरुप्परुन्तुरै में विराजे शिवराज !
 तुम्हीं को सुनाऊँगा अपनी परिवेदना
 मेरे मन-प्राण आनंद पाएँगे तुम्हीं से
 देख लो ! कुम्हला गया हूँ यहाँ रहते रहते
 पल भर भी प्राण धरना संभव नहीं
 अब तो कृपा करो मुझ पर
 और बुला लो अपने समीप।

(तिरुमुदै आठ - 28 पंक्ति 17-24)

692 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

528. வல்லைவா ளரக்கர் புரமொரித் தானே
மற்றுநான் பற்றிலேன் கண்டாய்
தில்லைவாழ் கூத்தா சிவபுரத்தரசே
திருப்பெருந்து துறையுறை சிவனே
எல்லைமூ வுலகும் உருவியன் நிருவர்
காணும்நான் ஆதியீ நின்மை
வல்லையாய் வளர்ந்தாய் வழ்கிலேன் கண்டாய்
வருகஎன் றருள்புரி யாயே !

4

528. வல்லீ வாஹ்வகர் புரமீர்தானே
மடரு நான் மட்ரிலேன் கண்டாய்
தில்லைவாழ் கூத்தா சிவபுரத்தரசே
திருப்பீர்த்துரையுரே சிவனே
எல்லீ மூவுலகுமூவி அந்நிவர்
காணுநாடாடியிரினீ
வல்லீயாய் வல்குடியீ வாஹ்விலேன் கண்டாய்
வருகவீர்துரையுரே !

(திருமூரே ஆட - 28 பங்கி 25-32)

529. பண்ணினோர் மொழியான் பங்கநீ யல்லால்
மற்றுநான் மற்றிலேன் கண்டாய்
திண்ணமே ஆண்டாய் சிவபுரத் தரசே
திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
எண்ணமே உடல்வாய் முக்கோடு செவிகண்
என்றிவை நின்கணே வைத்து
மண்ணின்மேல் அடியேன் வாழ்கிலேன் கண்டாய்
வருகஎன் றருள்புரி யாயே !

5

529. பண்ணிநீர் மாஹ்வால் பங்கநீ அல்லால்
மடரு நான் மட்ரிலேன் கண்டாய்
திண்ணமே ஆண்டாய் சிவபுரத்தரசே
திருப்பீர்த்துரையுரே சிவனே
எண்ணமே உடல்வாய் முக்கோடு செவிகண்
என்றிவை நின்கணே வைத்து
மண்ணின்மேல் அடியேன் வாழ்கிலேன் கண்டாய்
வருகவீர்துரையுரே !

(திருமூரே ஆட - 28 பங்கி 33-40)

528. जला डाला ध्वस्त किया
 खड्ग संचालन में सुदक्ष
 असुरों के त्रिपुर को तुमने
 देवाधिदेव प्रभो ! सुनो, तुम्हें छोड़कर
 कहीं कोई आश्रय नहीं है मेरा
 तिल्लै चिदंबर में शोभित नटराजराज
 शिवपुरधाम के अधीश !
 तिरुप्परुन्तुरै में विराजे शिवराज !
 अहह ! किस भांति वर्धित हुए उस दिन
 विष्णु विरिंचि के सामने
 त्रैलोक्य की सीमाओं के आर पार
 आद्यंतविहीन होकर, मेरे नाथ !
 सुनो, अब इस धरणी पर रहना
 संभव नहीं मेरे लिए प्रभो ?
 अब तो कृपा करो मुझ पर
 और बुला लो अपने पास।

(तिरुमुरै आठ - 28 पंक्ति 25-32)

529. अर्धांगिनी बना लिया तुमने माँ को
 जिनकी बोली गीत सम सुमधुर है
 प्रभो ! निश्चित रूप से अपनाया मुझे
 यहाँ पधार कर वरबस ही
 तुम्हें छोड़कर कहीं मेरा आश्रय नहीं
 हे शिवपुर धाम के अधीश
 तिरुप्परुन्तुरै में विराजे शिवराज !
 तुम मुझमें व्याप गए हो, मेरे सर्वस्व हो
 मेरी काया मुख-नासिका कर्ण और नयन
 सब तुम्हारे अधीन हैं मेरा कोई न वश है
 सुनलो अब यहाँ रहना संभव नहीं
 तुम्हारे दास के लिए इसीलिए प्रभो
 अब तो कृपा करो मुझ पर
 और बुला लो अपने पास।

(तिरुमुरै आठ - 28 पंक्ति 33-40)

694 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கீர்த்தி திருவாசகம்

530. பஞ்சின்மெல் லடியான் பங்கநீ யல்லால்
பற்றுநான் மற்றிலேன் கண்டாய்
செஞ்செவே ஆண்டாய் சிவபுரத் தரசே
திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
அஞ்சினேன் நாயேன் ஆண்டுநீ அளித்த
அருளினை மருளினால் மறந்த
வஞ்சனேன் இங்கு வாழ்கிலேன் கண்டாய்
வருகஎன் றருள்புரி யாயே !

6

530. पञ्चिन् मल्लडियाळ् पङ्ग नी अल्लाल्
पदरु नान् मदिलेन् कण्डाय्
चञ्चवे याण्डाय् शिवपुरत्तरशे
तिरुप्परुन्तुरैयुरै शिवने
अञ्जिनेन् नायेन् आण्डु नी अळित्त
अरुळिनै मरुळिनान् मरन्द
वञ्जनेन् इङ्गु वाळ्गिलेन् कण्डाय्
वरुग ऍन्ऱुळ् पुरियाये !

(तिरुமுரै आठ - 28 पंक्ति 41-48)

531. பருதிவாழ் ஓளியாய் பாதமே யல்லால்
பற்றுநான் மற்றிலேன் கண்டாய்
திருவுயர் கோலச் சிவபுரத் தரசே
திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
கருணையே நோக்கிக் கசிந்துளம் உருகிக்
கலந்துநான் வாழுமா றறியா
மருளனேன் உலகில் வாழ்கிலேன் கண்டாய்
வருகஎன் றருள்புரி யாயே !

7

531. परुदि वाळाळियाय् पादमे यल्लाल्
पदरु नान् मदिलेन् कण्डाय्
तिरुवुयर् कोलच्चिवपुरत्तरशे
तिरुप्परुन्तुरैयुरै शिवने
करुणैये नोविकक् कशिन्दुळ्मुरुगिक्
कलन्दु नान् वाळुमारय्या
मरुळनेन् उलगिल् वाळ्गिलेन् कण्डाय्
वरुग ऍन्ऱुळ् पुरियाये !

(तिरुமுரै आठ - 28 पंक्ति 49-56)

530. अधागिनी बना लिया तुमने माँ को
 जिनके चरण रुई के समान मृदुल हैं
 प्रभो ! कहीं कोई आश्रय नहीं मेरा
 अपनाया अपना बनाया मुझे संपूर्ण रूप से
 ओ शिवपुर के अधीश !
 तिरुप्परुन्तुरै में विराजे शिवराज !
 अपनाया तुमने इस प्रकंपमान श्वान को
 भुला दिया हाय ! इस अपार करुणा को अनुग्रह को
 सब भांति अधम हूँ मैं, किंतु तुम्हारा दास हूँ
 यहां रहना दूभर हो रहा इस जन के लिए
 अब तो कृपा करो मुझ पर
 और बुला लो अपने पास।

(तिरुमुरै आठ - 28 पंक्ति 41-48)

531. सकल भुवन को ज्योतिष करते
 जाज्वल्यमान मार्तंड ! मेरे प्रभो !
 तुम्हें छोड़कर कहीं आश्रय नहीं मेरा
 श्रीलसित तुंग शिवपुर के अधीश !
 तिरुप्परुन्तुरै में विराजे मेरे शिवराज !
 हे करुणा के वरुणालय !
 मुझे वह ढंग नहीं आता जिससे
 मन-प्राण पिघल जाएँ
 और मैं एकाकार हो जाऊँ तुम में
 भ्रम पूरित जग में रहना संभव नहीं
 मेरे लिए हे प्रभो,
 अब तो कृपा करो मुझ पर
 और बुला लो अपने पास।

(तिरुमुरै आठ - 28 पंक्ति 49-56)

696 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

532. பந்தனை விரலாள் பங்கநீ யல்லால்
பற்றுநான் மற்றிலேன் கண்டாய்
செந்தழல் போல்வாய் சிவபுரத் தரசே
திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
அந்தமில் அமுதே அரும்பெரும் பொருளே
ஆரமு தேஅடி யேனை
வந்துய ஆண்டாய் வாழ்கிலேன் கண்டாய்
வருகஎன் றருள்புரி யாயே !

8

532. पन्तणै विरलाक् पङ्ग नी उल्लाल्
पदरु नान् मदिलेन् कण्डाय्
चन्तळल् पोल्वाय् शिवपुरत्तरशे
तिरुप्पन्तुरैयुरै शिवने
अन्तमिलमुदे अरुम्परम् पारुळे
आरमुदे अडियेनै
वन्दुय आण्डाय् वाळ्गिलेन् कण्डाय्
वरुग ऐन्ऱुळ् पुरियाये !

(திருமுரே ஆட - 28 பங்கி 57-64)

533. பாவநா சாவுன் பாதமே யல்லால்
பற்றுநான் மற்றிலேன் கண்டாய்
தேவர்தந் தேவ சிவபுரத் தரசே
திருப்பெருந் துறையுறை சிவனே
முவுல குருவ இருவர்கீழ் மேலாய்
முழங்குழ லாய்நிமிர்ந் தானே
மாவுரி யானே வாழ்கிலேன் கண்டாய்
வருகஎன் றருள்புரி யாயே !

9

533. पावनाशा उन् पादमे अल्लाल्
पदरु नान् मदिलेन् कण्डाय्
तेवर्तम् तेवे शिवपुरत्तरशे
तिरुप्परुन्तुरैयुरै शिवने
मुवुलगुरुव इरुवर् कीळ्मेलाय्
मुळ्ङ्कळ्ळाय् निमिन्दाने
मावुरियाने वाळ्गिलेन् कण्डाय्
वरुग ऐन्ऱुळ् पुरियाये !

(திருமுரே ஆட - 28 பங்கி 65-72)

532. अधागिनी बना लिया तुमने
 महादेवी को जिनकी मृदुल उंगलियाँ
 सहला रही थीं क्रीडा-कंदुक को
 सुनो मेरे प्रभो ! तुम्हें छोड़ कर
 कहीं आसरा नहीं मेरा
 अरुणिम ज्वाल सम ज्योतिष प्रभो !
 शिवपुरधाम के अधीश !
 तिरुप्परुन्तुरै में विराजे मेरे शिवराज !
 आद्यंतविहीन अमृतस्वरूप ! दुर्लभ मणि !
 करुणामृत ! अपनाया था मुझे तारने के लिए
 नाथ मेरे ! अब न रहूँगा यहाँ
 अब तो कृपा करो मुझ पर
 और बुला लो अपने पास।

(तिरुमुदै आठ - 28 पंक्ति 57-64)

533. हे पापनाशक प्रभो !
 तुम्हारे चरण-कमलों को छोड़कर
 नाथ ! कहीं मेरा आसरा नहीं
 देवाधिदेव ! शिवपुर के अधीश !
 तिरुप्परुन्तुरै में विराजे मेरे शिवराज !
 त्रैलोक्य में ढूँढकर थके हारे थे
 दोनों विष्णु और विरिंचि, उनके सामने
 धरती-अंबर के आर पार खड़े हो गए तुम
 जाज्वल्यमान ज्योतिस्तंभ बन कर
 पहन लिया था चीरकर हस्तिचर्म !
 मेरे नाथ ! सुनो दूभर है रहना यहाँ
 अब तो कृपा करो मुझ पर
 और बुला लो अपने पास।

(तिरुमुदै आठ - 28 पंक्ति 65-72)

698 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

534. பழுதில்தொல் புகழான் பங்கநீ யல்லால்
 பற்றுநான் மற்றிலேன் கண்டாய்
 செழுமதி அணிந்தாய் சிவபுரத் தரசே
 திருப்பெருந்துறையுறை சிவனே
 தொழுவனோ பிறரைத் துதிப்பனோ எனக்கோர்
 துணையென நினைவனோ சொல்லாய்
 மழவிடை யானே வாழ்கிலேன் கண்டாய்
 வருகஎன் றருள்புரி யாயே !

10

534. பழுதில்தாற் புகழாழ் பங்கநீ அல்லாற்
 பழுநான் மற்றிலேன் கண்டாய்
 செழுமதி அணிந்தாய் சிவபுரத்தரசே
 திருப்பெருந்துறையுறை சிவனே
 தொழுவனோ பிறரைத் துதிப்பனோ எனக்கோர்
 துணையென நினைவனோ சொல்லாய்
 மழவிடையானே வாழ்கிலேன் கண்டாய்
 வருகஎன் றருள்புரி யாயே !

(திருமுரே ஆட - 28 பங்கி 73-80)

534. अर्धांगिनी बना लिया तुमने माँ को
 निर्मल ज्योतिरूपिणी को, तुम्हें छोड़कर
 कहीं आश्रय नहीं है मेरा
 जटा-मुकुट पर शोभित है बालचंद्र
 शिवपुर-धाम के अधीश
 तिरुप्परुन्तुरै में विराजे शिवराज
 बोलो ! तुम्हें छोड़ कर मैं अन्य किसी को
 नमन करूँगा ? स्तवन करूँगा ?
 उन्हें मान लूँगा अपना आश्रय ?
 बोलो ! वृषभारूढ़ प्रभु !
 एक बात निश्चित है, रहना यहाँ दूभर
 अब तो कृपा करो मुझ पर
 और बुला लो अपने पास।

(तिरुमुरै आट - 28 पंक्ति 73-80)



700 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - टी. एन. रामचन्द्रन्

Source : Tiruvaachakam by T.N. Ramachandran

O God who pervades earth and heaven ! Lo, I have
Other than You, support none. O One who blazes
in splendour !

O Sovereign of Sivapuram ! O Siva abiding at the sacred
Perunturai ! Whom shall I blame ? To whom
Will I appeal ? If You who ruled me bless me not
With grace, I desire not to live in orbis terrarum.
Pray bid me, in grace, to come unto You.

O great Gem who ruled me – a wastrel ! Lo, I have
Support none other than You. O One unknown
Even to the celestials ! O salvific God who beyonding
The Two, penetrated through the worlds !
O Sovereign of Sivapuram ! O Siva abiding at
The sacred Perunturai ! O our God ! O One who
Rules me ! In grace, call me to come unto You.

Lo, I have support none save the feet hailed
And sung by Vishnu ! O Sovereign of Sivapuram !
O Siva abiding at the sacred Perunturai ! Of Your
Own volition, You chose and ruled me.
Ha, I sulk with You and delight in You. It is You
Who should initiate me in Your way. Lo, I wilt ;
I will not live here hereafter. Pray, bid me,
In grace, to come unto You.

O One who burnt, in a trice, the citadels of the Asuras
 Who wielded swords ! O Dancer abiding at Tillai !
 O Sovereign of Sivapuram ! O Siva abiding at
 The sacred Perunturai ! When that day, the Two
 Penetrated the limits of the three worlds to behold
 You, You, the omnipotent, so waxed that neither
 Your feet nor Your crown could, that day, be eyed
 By them. Lo, I will not live henceforth.
 Pray, bid me, in grace, to come unto You.

I have support none other than You who are concreate
 With Her whose words are tunefully melodious.
 O Sovereign of Sivapuram who assuredly ruled me !
 O Siva abiding at the sacred Perunturai !
 As I have had my thought, body, mouth, nose, ears and eyes
 Poised in You, I, Your servitor, will not henceforth
 Live on earth. Pray, bid me, in grace, come to You.

I have support none other than You who are concreate
 With Her, the soles of whose feet are softer than
 silk-cotton !
 O Sovereign of Sivapuram who ruled me so beautifully !
 O Siva abiding at the sacred Perunturai !
 Owing to my befuddlement, I a dog, clean forget
 The grace gifted to me by You who redeemed
 And ruled me. I now quake in dread. Lo, I,
 The deceptious one, will not live here henceforth.
 Pray, bid me, in grace, to come unto You.

29

அருட்பத்து

अरुट्पत्तु

மகா மாயாசுத்தி

महामाया शुक्ति

535. சோதியே கடரே துழொளி விளக்கே
 காரிமுழற் பணைமுலை மடந்தை
 பாதியே பரனே பால்கொள்வெண் ணீற்றாய்
 பங்கத் தயனுமா லறியா
 நீதியே செல்வத் திருப்பெருந் துறையில்
 நிறைமலர்க் குருந்தம்மே வியசீர்
 ஆதியே அடியேன் ஆதரித் தழைத்தால்
 அதெந்துவே என்றருளாயே!

1

535. चोतिये चुडरे चूळ् आळि विळक्के
 चुरिळुळल् पणैमुलै मडन्दै
 पातिये परने पाल् काळ् वण्णीट्टाय्
 पङ्गयत्तयनु माल् अरिया
 नीतिये चत्वत् तिरुप्परुन्नुரैयिल्
 निरैमलक्कुरुन्दम्मैविय चीर्
 आदिये ! अडियेन् आदरित्तळैत्ताल्
 अदन्दुवे ऐन्नरुळाये !

(तिरुமுரै आठ - 29 पंक्ति 1-8)

29

अनुग्रह-दशक

महामाया शुद्धि

535. हे महाज्योति ! जगमग चमकते ज्योति-दीप !
 शोभित है सुरम्य अलकावली और
 कमनीय वक्ष के संग पर्वत राजकुमारी
 तुम्हारे अर्धअंग पर
 दुग्ध-धवल भस्म से विलेपित है सकल शरीर
 कमलासन विरिंचि और विष्णु के लिए सुदुर्लभ
 तुम विराज रहे हो कुरुन्द सुमनों से पूरित
 तिरुप्परुन्तुरै के दिव्यधाम में
 हे आदिदेव ! जब यह दास पुकार उठे
 तुम्हारा नाम लेकर आदर के संग
 प्रत्युत्तर दिया करो 'कहो क्या बात है वत्स !'

(तिरुमुत्रै आठ - 29 पंक्ति 1-8)

704 தமிழ் சைவபக்த கவி பாணிகவாசகர கீத திருவாசகம்

536. திருத்தனே திமலா தீற்றனே நெற்றிக்
கண்ணனே விண்ணுளோர் பிரானே
ஒருத்தனே உன்னை ஒலமிட் டலறி
உலகெலாந் தேடியுங் கானேன்
திருத்தமாம் பொய்கைத் திருப்பெருந் துறையில்
செழுமலர்க் குருந்தம்மே வியசீர்
அருத்தனே அடியேன் ஆதரித் தழைத்தால்
அதெந்துவே என்றரு ளாயே !

2

536. निरुत्तने निमला नित्तने नंद्रिक्
कण्णने विण्णुळोर् पिराने
आरुत्तने उन्नै ओलमिट्टलरि
उलगलाम् तेडियुम् काणेन्
तिरुत्तमाम् पाय्गैत् तिरुप्परुन्नुரैयिल्
चळु मलक्कु'रुन्दम् मेविय चीर्
अरुत्तने अडियेन् आदरित्ठैत्ताल्
अदन्दुवे ऐन्ऱुळ्ळायே !

(திருமுரே ஆட -29 பங்கி 9-16)

537. எங்கள் நாயகனே என்னுயிர்த் தலைவா
ஏலவார் குழலிமார் இருவர்
தங்கள்நா யகனே தக்கநற் காமன்
தனதுடல் தழலெழ விழித்த
செங்கண்நா யகனே திருப்பெருந் துறையில்
செழுமலர்க் குருந்தம்மே வியசீர்
அங்கணா அடியேன் ஆதரித் தழைத்தால்
அதெந்துவே என்றரு ளாயே !

3

537. ँङ्गळ् नायकने ँन्नुयिर्त्तलैवा
एलवार् कुळलि मारिरुवर्
तङ्गळ् नायकने तक्क नर्कामन्
तनदुडल् तळलळ् विळित्त
चङ्कण् नायकने तिरुप्परुन्नुरैयिल्
चेळु मलक्कु'रुन्दम्मे वीयचीर्
अङ्गणा अडियेन् आदरित्ठैत्ताल्
अदन्दुवे ऐन्ऱुळ्ळायே !

(திருமுரே ஆட -29 பங்கி 17-24)

536. हे नृत्यरत प्रभो ! निर्मल नित्यमुक्त !
 भालनेत्र शिव ! अमरगणों के अधीश !
 एकैकनायक मेरे नाथ !
 आतुर होकर पुकार-पुकार कर
 ढूँढता रहा मैं जग के कोने-कोने में
 किंतु कहीं दर्शन नहीं मिले
 और तुम विराजे हो यहाँ
 कुरुन्द सुमनों से पूरित पुष्कर वलयित
 तिरुप्परुन्तुरै के दिव्य धाम में
 सर्वार्थ स्वरूप होकर, हे नाथ
 जब यह दास पुकार उठे
 तुम्हारा नाम लेकर आदर के संग
 प्रत्युत्तर दिया करो, 'कहो क्या बात है वत्स !'

(तिरुमुदै आठ - 29 पंक्ति 9-16)

537. हमारे नाथ ! मेरे मन-प्राण के अधीश !
 एला-सुंगधि से सुरभित कुंतला
 रमणी-द्वय के नायक !
 अनलनेत्र के धनी
 तुम्हारे दृष्टिविक्षेप मात्र से
 दग्ध हुआ सुकुमार-देह कामदेव
 विराज रहे हो तुम
 कुरुन्द-सुमनों से पूरित
 तिरुप्परुन्तुरै के दिव्य धाम में
 ओ कृपा-कटाक्ष के धनी मेरे नाथ
 जब यह दास पुकार उठे
 तुम्हारा नाम लेकर आदर के संग
 प्रत्युत्तर दिया करो, 'कहो क्या बात है वत्स !'

(तिरुमुदै आठ - 29 पंक्ति 17-24)

706 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

538. கமலநான் முகனுங் கார்முகில் நிறத்துக்
கண்ணனும் நன்னனுதற் கரிய
விமலனே எமக்கு வெளிப்படா யென்ன
வியன்தழல் வெளிப்பட்ட எந்தாய்
திமிலநான் மறைசேர் திருப்பெருந் துறையில்
செழுமலர்க் குருந்தம்மே வியசீர்
அமலனே அடியேன் ஆதரித் தழைத்தால்
அதென்துவே என்றரு ளாயே !

4

538. कमल नानुगनुम् कार्मुगिल् निरत्तुक
कण्णनु नण्णुदर्करिय
विमलने ऐमक्कु वळिप्पडायन्न
वियन् तळल् वळिप्पट्ट ऐन्ताय्
तिमिल नान्मरैचेर् तिरुप्परुन्तुयिल्
चळ् मलक्कु रुन्दम्मैविय चीर्
अमलने अडियेनादरित्तळैत्ताल्
अदन्दुवे ऐन्नरुळाये !

(திருமுரே ஆட - 29 பங்கி 25-32)

539. துடிகொன்றே ரிடையான் கரிசூழல் மடந்தை
துணைமுலைக் கண்கள்தோய் சுவடு
பொடிகொள்வான் தழலிற் புள்ளிபோ லிரண்டு
பொங்கொளி தங்குமார் பினனே
செடிகொள்வான் பொழில்சூழ் திருப்பெருந் துறையில்
செழுமலர்க் குருந்தம்மே வியசீர்
அடிகளே அடியேன் ஆதரித் தழைத்தால்
அதென்துவே என்றரு ளாயே !

5

539. तुडिकाव् नेरिडैयाव् चुरिकुळल् मडन्तै
तुणै मुलैक्कण्णव् तोय् चुवडु
पाडिकाव् वान् तळलिल् पुळ्वि पोलिरण्डु
पाङ्गु आळितङ्गु मार्बिनने
चंडिकाव् वान्पाळिल्चूळ् तिरुप्परुन्तुरैयिल्
चळ् मलक्कु रुन्दम्मैविय चीर्
अडिगळे अडियेन् आदरित्तळैत्ताल्
अदन्दुवे ऐन्नरुळाये !

(திருமுரே ஆட - 29 பங்கி 33-40)

538. मेरे तात ! सुदुर्लभ हो तुम
 चतुरानन विरिंचि के लिए और
 नीलमेघ श्यामल विष्णु के लिए
 हे निर्मल ! तुम प्रकट हुए सहज ही
 हमारे सामने अग्निज्वाल रूप में
 विराज रहे हो यहाँ
 चतुर्वेद का तुमुल निर्घोष हो रहा जहाँ
 कुरुन्द सुमन पूरित
 तिरुप्परुन्तुरै के दिव्य धाम में
 जब यह दास पुकार उठे
 तुम्हारा नाम लेकर आदर के संग
 प्रत्युत्तर दिया करो, 'कहो क्या बात है वत्स !'

(तिरुमुरै आठ - 29 पंक्ति 25-32)

539. कमनीय अलकावली की धनी
 तनुमध्यमा सुभगस्तनी पर्वतराजकुमारी के
 परिरंभण से अंकित हुए
 स्तनाग्रभाग के दो चिह्न शोभित हैं
 अनल ज्वाला पर भासमान ज्योतिद्वय ज्यों
 तात तुम विराज रहे हो
 कुरुन्द सुमनों से पूरित
 तिरुप्परुन्तुरै धाम की सघन-शीतल छाया में
 मेरे नाथ ! जब यह दास पुकार उठे
 तुम्हारा नाम लेकर आदर के संग
 प्रत्युत्तर दिया करो 'कहो क्या बात है मेरे वत्स !'

(तिरुमुरै आठ - 29 पंक्ति 33-40)

708 தமிழ் சீவமக்த கவி மாணிக்வாசகர கீத திருவாசகம்

540. துப்பனே தூயாய் தூயவெண் ணீறு
துதைந்தெழு துளங்கொளி வயிரத்து
ஒப்பனே உன்னை உள்குவார் மனத்தில்
உறுகவை யளிக்கும் ஆரமுதே
செப்பமாம் மறைசேர் திருப்பெருந் துறையில்
செழுமலர்க் குருந்தம்மே வியசீர்
அப்பனே அடியேன் ஆதரித் தழைத்தால்
அதெந்துவே என்றரு ளாயே!

6

540. तुप्पने तूयाय तूयवण्णीरु
तुदैन्दळु तुळङ्गोळि वयिरत्तु
आप्पने उन्नै उळ्गुवार् मनत्तिल्
उरुचुवै अळिक्कुम् आरमुदे
चप्पमा मरैचेरु तिरुप्परुन्तुरैयिल्
चळु मलक्कुरुन्दम्मेविय चीरु
अप्पने अडियेन् आदरित्तळैत्ताल्
अदन्दुवे ऐन्नरुळाये !

(तिरुமுரै आठ - 29 पंक्ति 41-48)

541. மெய்யனே விகிர்தா மேருவே வில்லா
மேவலர் புரங்கன்முன் றெரித்த
கையனே காலாற் காலனைக் காய்ந்த
கடுத்தழற் பிழம்பன்ன மேனிச்
செய்யனே செல்வத் திருப்பெருந் துறையில்
செழுமலர்க் குருந்தம்மே வியசீர்
ஐயனே அடியேன் ஆதரித் தழைத்தால்
அதெந்துவே என்றரு ளாயே!

7

541. मय्यने विकिर्दा मेरुवे विल्ला
मेवलर् पुरंगळ् मूर्त्ति
कैयने कालाल् कालनैक् कायन्द
कडुन्तुळर् पिळम्पन्न मेनिच्
चय्यने चत्वत् तिरुप्परुन्तुरैयिल्
चळु मलक्कुरुन्दम्मेविय चीरु
अय्यने अडियेनादरित्तळैत्ताळ्
अदन्दुवे ऐन्नरुळाये !

(तिरुமுரै आठ - 29 पंक्ति 49-56)

540. प्रवाल-ज्योतिरूप ! विशुद्ध निर्मल रूप !
 निर्मल धवल भस्म विलेपित तुम
 जाज्वल्यमान होकर भासित हो हीरक सम
 मधुरिम अमृत सम रिसते हो
 उन धन्य साधकों के चित्त में
 जो ध्यान करते हैं तुम्हें पावन मन से
 ऐसे महिमामय तुम विराजे हो
 कुरुन्द सुमनों से सुशोभित
 तिरुप्परुन्तुरै के दिव्य धाम में
 जहाँ सतत घोष हो रहा चतुर्वेद का
 हे तात ! मेरे नाथ ! जब यह दास पुकार उठे
 लेकर तुम्हारा नाम आदर के संग
 प्रत्युत्तर दिया करो, 'कहो क्या बात है वत्स !'

(तिरुमुऱै आठ - 29 पंक्ति 41-48)

541. हे सत्य स्वरूप ! अद्भुत कलाकार !
 धन्य धन्य हैं हाथ तुम्हारे जिन्होंने
 धनुष बनाकर मेरु को
 ध्वस्त कर दिए शत्रुओं के त्रिपुर झटिति में
 धन्य है तुम्हारे चरण भी
 धराशायी कर दिया स्वयं काल को
 सुंदर रूप ! तुम्हारा शरीर कमनीय है
 अग्निमय रंग के संग
 विराज रहे हो तुम
 कुरुन्द सुमनों से पूरित
 तिरुप्परुन्तुरै धाम में
 हे नाथ ! जब यह दास पुकार उठे
 लेकर तुम्हारा नाम आदर के संग
 प्रत्युत्तर दिया करो, 'कहो क्या बात है मेरे वत्स !'

(तिरुमुऱै आठ - 29 पंक्ति 49-56)

710 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

542. முத்தனே முதல்வா முக்கணா முனிவா
மொட்டறா மலர்பறித் திறைஞ்சிப்
பத்தியாய் நினைந்து பரவுவார் தமக்குப்
பரசுதி கொடுத்தருள் செய்யும்
சித்தனே செல்வத் திருப்பெருந் துறையில்
செழுமலர்க் குருந்தம்மே வியசீர்
அத்தனே அடியேன் ஆதரித் தழைத்தால்
அதெந்துவே என்றரு ளாயே!

8

542. मुत्तने मुदल्वा मुक्कणा मुनिवा
मादट्टा मलर् परित्रैऽजिप्
पत्तियाय् निनैन्दु परवुवार् तमक्कुप्
परगति कांडुत्तरुल् चंय्युम्
चित्तने चंल्वत्तिरुप्परुन्नुரैयिल्
चंळु मलक्कुर्कुन्दम्मेविय चीर्
अत्तने अडियेन् आदरित्तळैत्ताल्
अदन्दुवे ऐन्ऱुळाये !

(திருமூரே ஆட - 29 பங்கி 57-64)

543. மருளேனேன் மனத்தை மயக்கற நோக்கி
மறுமையோ டிம்மையுங் கெடுத்த
பொருளனே புனிதா பொங்குவா ளரவங்
கங்கைநீர் தங்குசெஞ் சடையாய்
தெருளுநான் மறைசேர் திருப்பெருந் துறையில்
செழுமலர்க் குருந்தம்மே வியசீர்
அருளனே அடியேன் ஆதரித் தழைத்தால்
அதெந்துவே என்றரு ளாயே!

9

543. मरुळनेन् मनत्तै मयक्कर नोविक
मरुमैयोडिम्मेयुम् कंडुत्त
पारुळने पुनिता पाङ्गु वाळरवम्
कङ्गै नीर् तङ्गु चञ्चडैयाय्
तरुळ् नान्मरैचेर् तिरुप्परुन्नुरैयिल्
चंळु मलक्कुर्कुन्दम्मेविय चीर्
अरुळने अडियेन् आदरित्तळैत्ताल्
अदन्दुवे ऐन्ऱुळाये।

(திருமூரே ஆட - 29 பங்கி 65-72)

542. हे नित्यमुक्त ! महानायक ! भालनेत्र प्रभो !
 तुम दिखा रहे मुक्ति का प्रशस्त मार्ग
 स्नेहपूर्ण ढंग से उन साधकों को
 जो भक्तिपूर्ण हृदय से समर्पित करते हैं
 करांजलि में विकासमान सुमन
 और स्तुति करते हैं निर्मल मानस के संग तुम्हारी
 चित्त में भर जाता आह्लाद
 ऐसे महिमामय प्रभु तुम विराज रहे हो
 कुरुन्द सुमनों से पूरित
 तिरुप्परुन्तुरै के दिव्य धाम में
 हे तात ! जब यह दास पुकार उठे
 लेकर तुम्हारा नाम आदर के संग
 प्रत्युत्तर दिया करो, 'कहो क्या बात है वत्स !'

(तिरुमुदै आठ - 29 पंक्ति 57-64)

543. भ्रमजाल में फंसा था इस दास का मन
 हे करुणालय ! तुमने जब निहारा
 इस ओर मायामल काटने को
 तब कट गए मेरा वर्तमान और आगे के जन्म-जन्मांतर
 हे सर्वार्थ स्वरूप ! निर्मल परमेश्वर !
 शोभित हैं तुम्हारी अरुणिम जटा पर
 फुफकारते हुए भुजंग और
 तरंग संकुल गंगा
 ऐसे महिमामय नाथ तुम विराजे हो
 कुरुन्द सुमनों से पूरित
 तिरुप्परुन्तुरै धाम में
 जहाँ हो रहा पावन वेदों का उद्घोष
 हे अनुग्रह स्वरूप ! जब यह दास पुकार उठे
 लेकर तुम्हारा नाम आदर के संग
 प्रत्युत्तर दिया करो, 'कहो क्या बात है वत्स !'

(तिरुमुदै आठ - 29 पंक्ति 65-72)

712 தமிழ் சைவக் கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

544. திருந்துவார் பொழில்தும் திருப்பெருந் துறையில்
 செழுமலர்க் கருந்தம்மே வியசீர்
 இருந்தவா நெண்ணி ஏசுறா நினைந்திட்
 டென்னுடை யெம்பிரான் என்றென்று
 அருந்தவா நினைந்தே ஆதரித் தழைத்தால்
 அலைகடல் அதனுளே நின்று
 பொருந்தவா கயிலை புகுநெறி இதுகாண்
 போதராய் என்றரு ளாயே!

10

544. திருந்துவார் பாடில்கூல் திருப்பருநுரையிலு
 சீர் மலர்க்குருந்தமேவிய சீர்
 இருந்துவார் னெண்ணி ஏசுறா நினைந்திட
 டென்னுடை யெம்பிரான் என்றென்று
 அருந்தவா நினைந்தே ஆதரித்தழைத்தால்
 அலைகடல் அதனுளே நின்று
 பொருந்தவா கயிலை புகுநெறி இதுகாண்
 போதராய் என்றரு ளாயே।

(திருமுரே ஆட - 29 பங்கி 73-80)

544. अहह ! तुम विराज रहे थे उस दिन
उपवन बलयित तिरुप्परुन्तुरै धाम में
कुरुन्द सुमनों के कुंज तले
स्मरण कर रहा हूँ उस भंगिमा का
जब तुमने इस दास को अपनाया था
अब मेरा मन तड़प-तड़प कर
तरस रहा है तुम्हारे दर्शन के लिए
हे तपोराट् ! यदि मैं आदर के संग
पुकारूँ तुम्हें आतुर हृदय से
भवसागर की लहरों के मध्य से
क्या तुम प्रत्युत्तर दोगे और बोलोगे
कि हे वत्स ! चलो इस मार्ग पर
यही मार्ग है जिस पर चलकर
पहुँचोगे तुम कैलास-धाम।

(तिरुमुरै आठ - 29 पंक्ति 73-80)



स्रोत : पाथवे दू गोंड शू द तिरुवाचकम् - जी. वनमीकनाथन्

Source : Pathway to God through the Tiruvacagam by
G. Vanmikanathan

O Effulgence ! O Flame !
O Lamp of encompassing light !
O Half of the Dame of curly tresses
and buxom bosoms !
O transcendent One !
O milk-white ash-smeared One !
O Just One whom Brahma of the lotus
and Vishnu do not know !
O magnificent Beginning of all things
Who appeared under the flower-laden *kurunda* tree
in Thirupperunthurai dear to me !
If this slave calls upon You with ardour,
won't You, in Your grace, tell me : "Don't fear" ?

O Dancer ! O Nimalaa !
O ash-adorned One !
O You with an eye on the forehead !
O Lord of those in the heavens !
O unique One !
Though I searched for You
all over the world,
wailing with loud lamentations,
I did not find You,
O superb Reality Who appeared
under the *kurunda* tree of lush blossoms
in Thirupperunthurai with well - constructed tanks !
If this slave calls upon You with ardour,
won't You, in Your grace, tell me : "Don't fear" ?

O our Spouse ! O Lord of my life !
 O Spouse of the two with cardamom-scented tresses !
 O Lord with fiery red eyes
 which stared at the superbly beautiful body of Cupid,
 making it burst into flames !
 O beautiful-eyed superb One
 Who appeared under the *Kurunda* tree
 of lush blossoms in Thirupperunthurai !
 If the slave calls upon You with ardour,
 won't You, in Your grace, say : "Don't fear" ?

Lines : 1- 24

30

திருக்கழுக்குன்றப் பதிகம்

तिरुक्कळु कुन्ऱप् पदिगम्

சற்குரு தரிசனம்

सद्गुरु दरिशनम्

545. பிணக்கி லாதபெ ருந்து ஹைப்பெரு
 மான்உன் நாமங்கள் பேசுவார்க்கு
 இணக்கி லாததொர் இன்ப மேவருந்
 துன்ப மேதுடைத் தெம்பிரான்
 உணக்கி லாதொர் வித்து மேலவிளை
 யாமல் என்வினை ஒத்தபின்
 கணக்கி லாத்திருக் கோலம் நீவந்து
 காட்டி. னாய்க்கழுக் குன்றிலே.

1

545. पिणक्किलाद परुन्तुरैप् பர்
 மானுந் நாமங்ங் ப்ஷுவாக்
 இணக்லிடடார் இந்மே வரம்
 துந்மே துடீது ஐம்பிரான்
 இணக்லிடடார் விதுமேல் விடீ
 யாமல்த் விநீயாத்த பின்
 கணக்லிடாத் திருக்கோல் நீ வந்து
 காட்டினாய் கழுக்குன்றிலே ।

(तिरुமுரै आठ -30 पंक्ति 1-8)

30

गृधाचल-दशक

सद्गुरु दर्शन

545. शांत-सुंदर परुत्तुरै धाम के मेरे नाथ !
अजस्र आनंद मिलता है उन संतों को
जो सतत जाप करते हैं तुम्हारे दिव्यनाम का
उनके दुःख दुरित दूर हो जाते हैं निःशेष
सकल कर्म मिट जाते हैं
जिससे कर्म के बीज से पुनर्जन्म का अंकुर फूटे नहीं
इस तरह मेरा कर्मबंधन समाप्त हो गया
पावन अपार महिमा के संग
प्रकट हुए तुम दिखाया निज स्वरूप
तिरुक्कळु कुन्ऱम के धाम में।

(तिरुमुऱै आठ - 30 पंक्ति 1-8)

718 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

546. பிட்டு நேர்பட மணசு மந்த
 பெருந்து றைப்பெரும் பித்தனே
 சட்ட நேர்பட வந்தி லாத
 சழக்க னேன்உனைச் சார்ந்திலேன்
 சிட்ட னேசிவ லோக னேசிறு
 நாயினுங்கடை யாயவெங்
 சுட்ட னேனையும் ஆட்கொள் வான்வந்து
 காட்டி. னாய்கழுக் குன்றிலே.

2

546. पिट्टु नेरपड मण्चुमन्द
 परुन्तुरैप् परुमित्तने
 चट्टनेरपड वन्दिलाड
 चळक्कनेन् उनैच्चान्दिलेन्
 चिट्टने शिवलोकने चिरु
 नायिनुम् कडैयाय वङ्
 कट्टनेयुम् आट्काळ्वान् वन्दु
 काट्टिनाय् कळ्ळुकुन्निले।

(तिरुமுரै आठ - 30 पंक्ति 9-16)

547. மலங்கி னேன்கண்ணின் நீரை மாற்றி
 மலங்கெ டுத்தபெ ருந்துறை
 விலங்கி னேன்வினைக் கேட னேன்இனி
 மேல்வி னைவத றிந்திலேன்
 இலங்கு கின்றநின் சேவடிகள்
 இரண்டும் வைப்பிட மின்றியே
 கலங்கி னேன்கலங் காமலேவந்து
 காட்டி. னாய்கழுக் குன்றிலே.

3

547. मलङ्गिनेन् कणिन् नीरै माट्टि
 मलम् कडुत्त परुन्तुरै
 विलङ्गिनेन् विनैक्केडनेन् इनि
 मेल् विळैवदरिन्दिलेन्
 इलङ्गुकिन्निन् चैवडिगळ्
 इरण्डुम् वैप्पिडम् इन्निये
 कलङ्गिनेन् कलङ्गामले वन्दु
 काट्टिनाय् कळ्ळुकुन्निले।

..(तिरुமுரै आठ - 30 पंक्ति 17-24)

546. ओ परुन्तुरै के बावरे !

(भक्तिन का संकट दूर करने के हित)

माटी ढोने चले तुम गुड़मिश्रित चावल के प्रतिदान में
जबकि न्याय-मार्ग से च्युत मैं
आया नहीं तुम्हारी शरण में
फिर भी हे करुणामय प्रभो
शिवलोक के अधीश ! तुम
श्वान से भी गए बीते इस दास को
अपनाने के लिए पधारे
प्रकट हुए दिखाया अपना स्वरूप
तिरुक्कळ् कुन्ऱम् धाम में।

(तिरुमुऱै आठ - 30 पंक्ति 9-16)

547. परुन्तुरै के दिव्यधाम में एक बार

मेरे अश्रु बदल गए थे आनंद में

दुःख-दुःखित दूर हुए थे

ऐसे महिमामय धाम को तजकर

दुर्धर्ष कर्म का मारा हुआ मैं

भटका हर कहीं

पता नहीं था अब मेरा क्या होगा

शोभायमान नव चरणयुगल की खोज में

भ्रमजाल में फंसे मेरे सामने

मेरे त्राण हेतु प्रकट हुए तुम

दिखाया अपना दिव्य स्वरूप

तिरुक्कळ् कुन्ऱम् धाम में।

(तिरुमुऱै आठ - 30 पंक्ति 17-24)

720 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

548. பூனொ ணாததொ ரன்பு பூண்டு
 பொருந்தி நாள்தொறும் போற்றவும்
 நானொ ணாததொர் நாணம் எய்தி
 நடுக்க டலுள் அ முந்திநான்
 பேனொ ணாதபெ ருந்து றைப்பெருந்
 தோணி பற்றி யுகைத்தலும்
 கானொ ணாத்திருக்கோலம் நீவந்து
 காட்டி னாய்கழுக் குன்றிலே.

4

548. பூர்ணாடதார் அநு பூண்ட
 பாரந்தி நாத்தாரம் போற்றும்
 நானாடதார் நானமயதி
 நடுக்கடலுள் அநுநிநான்
 பேர்ணாட் பர்ணுரேப் பர்ணம்
 தோணி பற்றி யுகைத்தலும்
 கானாடதார் திருவகோல நீ வந்து
 காட்டினாய் கல்குன்றிலே।

(திருமூரே ஆட - 30 பங்கி 25-32)

549. கோல மேனிவ ராக மேகுண
 மாம்பெ ருந்துறைக் கொண்டலே
 சீல மேதும் அறிந்தி லாதஎன்
 சிந்தை வைத்த சிகாமணி
 ஞால மேகரி யாக நானுனை
 நச்சி நச்சிட வந்திடும்
 கால மேகனை ஓதநீ வந்து
 காட்டினாய் கழுக் குன்றிலே.

5

549. காலமேனி வராகமே குணம்
 அம் பர்ணுரேக் காண்டலே
 சீலமேதும் அறிந்திலாத என்
 சிந்தை வைத்த சிகாமணி
 ஜாலமே கரியாக நானுனை
 நச்சி நச்சிட வந்திடும்
 காலமே உனே ஆட நீ வந்து
 காட்டினாய் கல்குன்றிலே।

(திருமூரே ஆட - 30 பங்கி 33-40)

548. जबकि तुम्हारे अनन्य भक्तगण
 अतिशय प्रेमाभक्ति से युक्त होकर
 स्तवन करते रहते हैं नित्य ही
 इधर मैं निर्लज्ज होकर
 धंसा रहा भवसागर के मध्य में
 अहह ! भाग्य से मिल गई नौका
 तिरुप्परुन्तुरै जिसका नाम
 इस अनुपम नौका के बल पर उबरा मैं
 तब दिखाया दुर्लभ-दर्शन तुमने
 तिरुक्कळु कुन्ऱम् धाम में।

(तिरुमुऱै आठ - 30 पंक्ति 25-32)

549. हे कनकमय कमनीय देह के धनी !
 गुणराशि - परुन्तुरै के वारिद !
 करुणा के वरुणालय शिखामणि तुम
 स्फुरित हुए मेरे चित्त में
 लेश भी जहाँ नहीं गुण-शील का
 ऐसे करुणामय तुम्हें पुकार-पुकार कर
 ढूँढता रहा यह जगत् ही साक्षी है
 जब समय अनुकूल हुआ
 तुम स्वयं प्रकट हुए दिखाया निज स्वरूप
 तिरुक्कळु कुन्ऱम् धाम में
 जिससे कि मैं करता हूँ कीर्ति-गान।

(तिरुमुऱै आठ - 30 पंक्ति 33-40)

722 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

550. பேதம் இல்ல தொர்கற் பளித்த
பெருந் துறைப்பெரு வெள்ளமே
ஏத மேபல பேச நீளனை
ஏதி லார்முனம் என்செய்தாய்
சாதல் சாதல்பொல் லாமை யற்ற
தனிச்ச ரண்சர ணாமெனக்
காத லால்உனை ஓத நீவந்து
காட்டி னாய்க்கமுக் குன்றிலே.

6

550. ப்ரெமில்லதார் கர்பகித்
பர்ருநுரேப் பர்ருவ்வுமே
ஏதமே பல ப்ரேச நியனே
ஏதிலார் முனம்ந் ச்யதாய்
சாதல் சாதல் பர்ல்லாமையத்
தனிச்சரந் சரணாமனக்
காதலாக் உனே ஓத நிவந்து
காத்ரிநாய் கவுகுகுநிலே।

(திருமுரே ஆட - 30 பங்கி 41-48)

551. இயக்கி மாரறு பந்து நால்வரை
எண்குணம் செய்த ஈசனே
மயக்க மாயதொர் மும்ம லப்பழ
வல்வி னைக்குள் அழுந்தவும்
துயக்க றுத்தெனை ஆண்டு கொண்டுநின்
தூய்ம லர்க்கழல் தந்தெனைக்
சயக்க வைத்தடி யார்மு னேவந்து
காட்டி னாய்க்கமுக் குன்றிலே.

7

551. இயகிக் மாரறு பது நால்வரே
ஏண்குணம் செய்த இச நே
மயகக மாயதார் மும்மலப் பவு
வல்வினேகுகுல் அவுந்ருவம்
துமககறுத்தனே ஆண்டுகாண்டு நின்
துமலவர்க்குல் நந்தனேக்
கயகக வுத்தடியார் முனே வந்து
காத்ரிநாய் கவுகுகுநிலே।

(திருமுரே ஆட - 30 பங்கி 49-56)

550. ओ परन्तुरै के करुणा-वारिधि !

ऐसा अनुग्रह किया मुझ पर
मेरा चित्त अभेद रूप से लगा रहे तुम पर
फिर यह तुमने क्या कर दिया
शत्रुओं के सामने
जो मुझ पर व्यंग्य-बाण कसते रहे
किंतु मेरे लिए शरण हैं तुम्हारे चरणयुगल
मृत्यु के संकट में हर तरह के दुरित में
और इसीलिए जब मैं पुकार उठता हूँ
तत्क्षण तुम प्रकट होते हो दिखाते हो अपना रूप
तिरुक्कळु कुन्ऱम् धाम में।

(तिरुमुरै आठ -30 पंक्ति 41-48)

551. चौंसठ कलाओं की यक्षिणियाँ

निज अष्टगुण से तुमने भाग कर दिया
फिर मैं धँसा रहा त्रिमल में
कर्मबंधन के चक्र में
कट गए त्रिमल तुम्हारे अनुग्रह से
प्रदान किये अपने चरण कमल
पावन सुमन सम चरण-युगल
अपने संत-योगियों के सान्निध्य में
आकर प्रगट हुए दर्शाया निज स्वरूप
तिरुक्कळु कुन्ऱम् के दिव्य धाम में।

(तिरुमुरै आठ -30 पंक्ति 49-56)



स्रोत : तिरुवाचकम् - डॉ. रेवरेण्ड जी. यू. पोप; 1900 ई.

Source : Tiruvacagam by Rev. G.U. Pope; 1900 A.D.

O peaceful Perun-turrai's mighty Lord !
 to those whose talk is of Thy thousand names
 One even stream of matchless pleasure flows.
 My Lord, Who once didst wipe away sore griefs,
 When good and evil deeds were balanced,—
 (for aftermath of ill no living seed),—
 In sacred glories countless didst Thou come,
 AND SHOW 'DST THYSELF UPON THE EAGLE'S HILL.

Thou Who for hire of cakes didst carry earth !
 Thou madman great, of the *great haven's* shrine !
 While I, who knew no law of right, to Thee,
 through ignorant delusion drew not near,
 O Best of Beings, Lord of Çiva-world,
 me, lower than the meanest cur, a man
 Of evils sore, Thou cam'st to make Thine own,
 AND SHOW 'DST THYSELF UPON THE EAGLE'S HILL.

In wilderment I strayed from Perun-turrai far,
 Where tears were changed to joy, and foulness purged ;
 By sinful deeds to ruin brought, henceforth
 I sinner knew not what should after grow.
 Reft of the home where Thy bright feet once stood,
 a prey to dire perplexity, I dwelt.
 To save me from confusion sore Thou cam'st,
 AND SHOW 'DST THYSELF UPON THE EAGLE'S HILL.

That I the matchless ornament might wear
 of love unique,—draw nigh, and daily praise,—
 Abashed with awe of reverence, — the shame
 that knows no shame,—sinking amid the sea ;

of Perun-turrai, dear beyond compare,
the glorious ship I seized and climbed thereon;
Straightway, in splendour no eye sees, Thou cam'st,
AND SHOW 'DST THYSELF UPON THE EAGLE'S HILL.

In glorious form displayed, Thou teeming cloud
of perfect good, in Perun-turrai seen !
O matchless Gem, Who putt'st. Thyself within
the thought of me, who naught of virtue knew !
The world itself shall witness bear that I
desired Thee eagerly, and then Thou cam'st,—
That when I called Thee, then Thou cam'st,—
AND SHOW 'DST THYSELF UPON THE EAGLE'S HILL.

Lines : 1 - 40

31

கண்டபத்து

कण्डपत्तु

நிருத்த தரிசனம்

निरुत्त दरिशनम्

552. இந்திரிய வயமயங்கி
 இறப்பதற்கே காரணமாய்
 அந்தரமே திரிந்துபோய்
 அருநரகில் வீழ்வேற்குச்
 சிந்தைதனைத் தெளிவித்துச்
 சிவமாக்கி எனையாண்ட
 அந்தமிலா ஆனந்தம்
 அணிகொள்தில்லை கண்டேனே!

1

552. इंद्रिय वयम् मयङ्गि
 इरप्पदकं कारणमाय्
 अन्तरमे तिरिन्दु पोय्
 अरु नरकिल् वीळ्वेनैच्
 चिन्तै तनैत् तळ्वित्तुच्
 चिवमाविक एँनैयाण्ड
 अन्तमिला आनन्दम्
 अणिकाळ् तिल्लै कण्डेने !

(திருமுறை ஆட - 31 பங்கித் 1-8)

31

दर्शन-दशक

नृत्य-दर्शन

552. मृत्यु कारण इंद्रियों के वश में पड़कर
पाप-पंक्त में लिप्त था मैं
धँसता जा रहा था घोर नरक के गर्त में
आलंबन हीन मैं असहाय-सा
आलंबन देकर उबारा नाथ ने
सन्मार्ग दिखाया
संस्कार-परिष्कार हुआ चित्त का
अपना लिया मुझे शिवमय बनाकर
अपना ही दास बनाया आनंद नटराज ने
अखंड सच्चिदानंद प्रभु नटराजराज के
दर्शन किये मैंने तिल्लै चिदंबरम् में।

(तिरुमुरै आठ -31 पंक्ति 1-8)

728 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

553. வினைப்பிறவி என்கின்ற
வேதனையில் அகப்பட்டுத்
தனைச்சிறிதும் நியையாதே
தளர்வெய்திக் கிடப்பேனை
எனைப்பொரிதும் ஆட்கொண்டென்
பிறப்பறுத்த இணையிலியை
அனைத்துலகுந் தொழுந்தில்லை
அம்பலத்தே கண்டேனே!

2

553. विनैप्पिरवि ऐन्किन्
वेदनैयिल् अगप्पदुत्
तनैच्चिरिदुम् निनैयादे
तळर्वय्दिक् किडप्पेनै
ऐनैप् परिदुम् आदकोण्डन्
पिरप्परुत्त इणैयिलियै
अनैत्तुलगुम् ताळुम् तिल्लै
अम्बलत्ते कण्डेने !

(तिरुमुरै आठ -31 पंक्ति 9-16)

554. உருத்தொரியாக் காலத்தே
உள்புகுந்தென் உளமன்னிக்
கருத்திருத்தி ஊன்புக்குக்
கருணையினால் ஆண்டுகொண்ட
திருத்துருத்தி மேயானைத்
தித்திக்குஞ் சிவபதத்தை
அருத்தியினால் நாயடியேன்
அணிகொள்தில்லை கண்டேனே!

3

554. उरुत्तरियाक् कालत्ते
उदुपुगुन्दन् उळमन्निक्
करुत्तिरुत्ति ऊन् पुक्कुक्
करुणैयिनाल् आण्डुकाण्ड
तिरुत्तुरुत्ति मेयानैत्
तित्तिक्कुम् शिवपदत्तै
अरुत्तियाल् नायडियान्
अणिकाळ् तिल्लै कण्डेने !

(तिरुमुरै आठ -31 पंक्ति 17-24)

553. कर्मबंधन और जनन-मरण के चक्र में
 निरंतर चलते-चलते थक गया मैं
 क्षणभर भी समय न पाया ईश-ध्यान के लिए
 घोर नैराश्य में पड़ा श्रान्त-क्लान्त मैं
 गिर पड़ा चरणों के तले सब ओर से हारकर
 ऐसे मुझको अपनाया नाथ ने परम औदार्य से
 काट दिया जनन-मरण का बंधन
 ऐसे अनुपम अद्वितीय प्रभु को
 देखा मैंने तिल्लै चिदंबर में
 जो कि वंदित है सकल जग से।

(तिरुमुऐ आठ -31 पंक्ति 9-16)

554. प्रवेश कर गए असीम करुणा से
 मेरे चित्त में मन में मांस-मज्जा में
 उसी अबोध अवस्था में
 जब मैं नहीं जानता था नाम-रूप को भी
 यों कायाकल्प करके
 अपनाया, अपना बनाया इस श्वानतुल्य को
 तिरुत्तुरुत्ति धाम के अधीश ने
 ऐसे मधुरिम आनंद-चरण नटराज को
 देखा मैंने तिल्लै चिदंबर में
 आनंद से आमोद से।

(तिरुमुऐ आठ -31 पंक्ति 17-24)

730 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

555. கல்லாத புல்லறிவிற்
கடைப்பட்ட நாயேனை
வல்லாள நாய்வந்து
வனப்பெய்தி யிருக்கும்வண்ணம்
பல்லோருங் காண என்றன்
பசுபாசம் அறுத்தானை
எல்லோரும் இறைஞ்சுதிலலை
அம்பலத்தே கண்டேனே!

4

555. கல்லாத புல்லறிவிந்
கடையட்ட நாயேனே
வல்லாளநாய் வந்து
வனப்பெய்தி இருக்கும் வண்ணம்
பல்லோரும் காண ஈன்றன்
பசுபாசம் அறுத்தானே
எல்லோரும் இறைஞ்சு திலலை
அம்பலத்தே கண்டேனே !

(திருமூரே ஆட - 31 பங்கி 25-32)

556. சாதிகுலம் பிறப்பென்னுஞ்
கழிப்பட்டுத் தடுமாறும்
ஆதமிலி நாயேனை
அல்லலறுத் தாட்கொண்டு
பேதைகுணம் பிறகுருவம்
யானெனதென் னுரைமாய்த்துக்
கோதிலமு தானானைக்
குலாவுவதில்லை கண்டேனே!

5

556. சாதிகுலம் பிறப்பென்னுந்
கழிப்பட்டுத் தடுமாறும்
ஆதமிலி நாயேனே
அல்லலறுத்தாட்கொண்டு
பேதேகுணம் பிறகுருவம்
யானெனதென் னுரைமாய்த்துக்
கோதிலமு தானானைத்
குலாவுவதில்லை கண்டேனே !

(திருமூரே ஆட - 31 பங்கி 33-40)

555. अनपढ़ अज्ञानी निपट मूर्ख था मैं
 पधारे प्रभु परम करुणा से औदार्य से
 काट दिए त्रिदोष जनन-मरण के बंधन
 देख रहा था सारा जग
 पशुपाश को काट दिया
 ताकि मैं पा सकूँ दिव्य जीवन
 ऐसे करुणामय नाथ को
 देखा मैंने तिल्लै चिदंबरम् में
 जो कि वंदित है सारे जग से।

(तिरुमुरै आठ - 31 पंक्ति 25-32)

556. डगमगा रहा था डूब रहा था
 जाति-कुल और जन्म के भंवर में पड़ा मैं
 आश्रयहीन इस श्वान के
 काट दिए सकल संताप, बंधन जनन-मरण के
 और अपनाया अपना बना लिया नाथ ने
 मिटाकर निःशेष ही सकल दोष
 अज्ञान जनिता भेदबुद्धि को
 'मैं' और 'मेरा' के भाव को
 दूर किया अद्वितीय आदिदेव ने
 देखा मैंने अमृतेश्वर नाथ को
 तिल्लै चिदंबरम् में आमोद से।

(तिरुमुरै आठ - 31 पंक्ति 33-40)

732 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

557. பிறவிதனை அறமாற்றிப்
பிணிமூப்பென் றிவையிரண்டும்
உறவினோடும் ஒழியச்சென்
றுலகுடைய ஒருமுதலைச்
செறிபொழிந்தும் தில்லைநகர்த்
திருச்சிறறம் பலம்மன்னி
மறையவரும் வானவரும்
வணங்கிடநான் கண்டேனே!

6

557. पिरवि तनै अरमाट्रिप्
पिणि मूप्पन्निवै इरण्डुम्
उरविनाडुम् आळियच् चन्
उलगुडैय आरुमुदलैच्
चंरि पाळिल् चूळ् तिल्लैनगर्त्
तिरुच्चिद्रम्बलम् मन्नि
मरैयवरुम् वानवरुम्
वणङ्गिड नान् कण्डेने !

(திருமுரே ஆட -31 பங்கி 41-48)

558. பத்திமையும் பரிசுமிலாப்
பகபாசம் அறுத்தருளிப்
பித்தனிவன் எனஎன்னை
ஆக்குவித்துப் பேராமே
சித்தமெனுந் திண்கயிற்றால்
திருப்பாதங் கட்டுவித்த
வித்தகனார் வினையாடல்
விளங்குதில்லை கண்டேனே!

7

558. पत्तिमैयुम् परिशुमिलाप्
पशुपाशम् अरुत्तरुळिप्
पित्तिनिवन् ऐन् ऐन्
आक्कुवित्तुप् பெராமே
चित्तமனும் திண்கயிட்ரால்
திருப்பாடம் கட்டடுவித்த
வித்தகனார் விஷையாடல்
விஷ்டு தில்லை கண்டேனே !

(திருமுரே ஆட -31 பங்கி 49-56)

557. काटकर जनन-मरण के बंधन को
 निःशेष ही प्रभु ने मुक्त किया
 रोग-शोक से जरा-शीर्णता से
 सकल भुवन के नाथ
 आदिदेव और अमूल्य निधि हैं
 ऐसे देवाधिदेव प्रभु को
 देखा मैंने सघन उपवन-वलयित
 तिल्लै चिदंबर में
 जहां स्तुतिरत हैं
 देवगण के संग अमरगण भी।

(तिरुमुरै आठ - 31 पंक्ति 41-48)

558. अनजान होकर पड़ा था मैं
 प्रेमाभक्ति से आराधन-क्रम से
 पधारे करुणामय प्रभु
 मुक्त किया कर्मबंधन से
 काटकर पशु सहज त्रिविध दोष
 बना दिया मुझे इस योग्य
 कि जगवासी कहें 'अरे यह तो बावरा है'
 यहीं रुके नहीं करुणामय प्रभु
 सुदृढ़ भक्ति की डोर से
 बांध लिया मेरे चित्त को
 अपने चरण-युगल के साथ
 ऐसे चमत्कार के धनी प्रभु को
 लीलामय परमेश्वर को
 देखा मैंने प्रशस्त तिल्लै धाम में।

(तिरुमुरै आठ - 31 पंक्ति 49-56)

734 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

559. அளவிலாப் பாவசுத்தால்
அமுக்குண்டிங் சுறிவின்றி
வினைவொன்றும் அறியாதே
வெறுவியனாய்க் கிடப்பேனுக்கு
அளவிலா ஆனந்தம்
அளித்தென்னை ஆண்டானைக்
களவிலா வானவருந்
தொழுந்தில்லை கண்டேனே!

8

559. अळविलाप् पावगत्ताल्
अमुक्कुण्डिङ् करिविन्नि
विळैवाङ्गम् अरियादे
वरुवियनाय्क् किडप्पेनुक्कु
अळविला आनन्दम्
अळित्तन्नै आण्डानैक्
कळविला वानवरुम्
ताळ्ळुम् तिल्लै कण्डेने !

(तिरुमुरै आठ - 31 पंक्ति 57-64)

560. பாங்கினொடு பரிசொன்றும்
அறியாத நாயேனை
ஒங்கியுளத் தொளிவளர
உலப்பிலா அன்பருளி
வாங்கிவினை மலம்அறுத்து
வாங்கருணை தந்தானை
நான்குமறை பயில்தில்லை
அம்பலத்தே கண்டேனே!

9

560. पाङ्गिनाडु परिशाङ्गम्
अरियाद नायेनै
ओङ्गि उळत्ताळि वळर
उलप्पिला अन्पुरुळि
वाङ्गि विनै मलमरुत्तु
वान् करुणै तन्दानै
नान्गु मरै पयिल्तिल्लै
अम्बलत्ते कण्डेने !

(तिरुमुरै आठ - 31 पंक्ति 65-72)

559. जड़ तुल्य पड़ा था ज्ञान-शून्य में
 छलना-माया में भ्रमित होकर बंजर भूमि सा
 अनजान था इस तथ्य से
 कि यह क्षेत्र भक्ति-बीज बोने योग्य है
 अनंत संभावनाओं से अनजान मुझे
 अपनाया प्रभु ने प्रदान किया असीम आनंद
 देखा मैंने करुणामय प्रभु को
 प्रशस्त तिल्लै धाम में
 जहाँ वंदना करते हैं प्रभु परमेश्वर की
 अघहीन अमरवृंद और देवगण आकर।

(तिरुमुरै आठ - 31 पंक्ति 57-64)

560. श्वान तुल्य मैं पड़ा था अनजान होकर
 प्रेमाभक्ति से आराधना के क्रमिक ढंग से
 करुणाकर प्रभु ने स्फुरित किया
 अंतर् में प्रेमभक्ति को, उसकी ज्योति को
 प्रेम-ज्योति वह संवर्धित हुआ धीरे-धीरे
 आकाश तक उत्तुंग करुणामय ने
 मुक्त किया मुझे कर्मबंधन से
 काटकर त्रिविध दोष
 ऐसे महिमामय अपने नाथ को
 देखा मैंने तिल्लै के दिव्य धाम में
 जहाँ निनादित हैं चतुर्वेद सर्वदा।

(तिरुमुरै आठ - 31 पंक्ति 65-72)

736 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

561. புதங்கள் ஐந்தாகிப்

புலனாகிப் பொருளாகிப்

பேதங்கள் அனைத்துமாய்ப்

பேதமிலாப் பெருமையனைக்

சேதங்கள் கெடுத்தாண்ட

கிளரொளியை மரசுதத்தை

வேதங்கள் தொழுதேத்தும்

விளங்குவதில்லை கண்டேனே!

10

561. पूतङ्गळ् ऐन्दागिप्

पुलनागिप् पारुळागिप्

पेदङ्गळ् अनैत्तुपायप्

पेदामिलाप् परुमैयिनैक्

केदङ्गळ् कडुत्ताण्ड

किळराळियै मरकतत्तै

वेदङ्गळ् ताळुदेत्तुम्

विळङ्गु तिल्लै कण्डेने !

(तिरुமுரै आठ - 31 பங்கித் 73-80)

561. जिधर देखो उसी का चमत्कार है
 प्रकट हुआ जो पंच-तत्त्व बन पंचेंद्रिय बन
 इंद्रियों के भोगने योग्य
 भेदमूलक विविध पदार्थ बन
 व्याप्त हुआ अग-जग में अभेद तत्त्व वह
 उसी परम ज्योति परमेश्वर ने
 अपनाया मुझे अपना बनाया
 दूर कर मेरे सकल कष्ट
 ऐसी महिमामय ज्योतिदेव को
 निखिल वेदों द्वारा आराधित
 जाज्वल्यमान मरकतमणि को
 देखा मैंने ज्योतिर्मय तिल्लै धाम में।

(तिरुमुरै आठ - 31 पंक्ति 73-80)



738 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - टी. एन. रामचन्द्रन्

Source : Tiruvaachakam by T.N. Ramachandran

Deluded by the senses and destined to repeated
Deaths, I was to live in many worlds
And eventually fall irredeemably into fell inferno.
He purified my intellect, caused me gain at-one-ment
With Sivam and conferred on me endless bliss.
Lo, I had His darshan at beautiful Tillai.

Trapped in the misery of Karmic embodiment, I did not
Think of Him at all and lay languishing.
He, in His great mercy, ruled me and snapped my
Future births. Lo, in the Ambalam at Tillai
Adored by the dwellers of all the worlds, I had
The darshan of Him — the peerless One.

Even when I was an amorphous foetus, He entered me,
Abode for good in my body and soul, blessed me with
Gnosis and, by His great mercy, redeemed and ruled me.
He is of Tirutthurutthi and His is the uncloying
And ever-sweet beatitude of bliss.
Lo, in abounding love, I a cur-like servitor,
Had His darshan at beautiful Tillai.

I was like a base dog, brainless and ill-versed
In learning ; He the competent One
Blessed me with spiritual beauty. Even as a good
Many witnessed, He annulled my *Pasu-Paasa*
Gnaanam. Lo, at Tillai Ambalam where all
Worship, I was blessed with His darshan.

I was like a hapless dog that, caught up
 In the maelstrom of caste, clan and birth, stood
 Bewildered. He did away with my misery, redeemed
 And ruled me. He quelled my nescience,
 My cognition of the forms of others, and my prattling
 Of I-ness and My-ness. Lo, at love-abounding
 Tillai, I had a darshan of Him — the One
 That is flawless and nectarean !

He completely transmuted my body ; did away with both my
 malady
 And my proclivity to age, and severed my nexus
 With my kith and kin. He is the peerless First One
 Who owns the worlds. Lo, when I reached the sacred
 Chitrambalam at Tillai girt with dense groves, I had
 His darshan who was adored by the Brahmins
 and the celestials.

Lines : 1 - 48

32

பிரார்த்தனைப்பத்து

प्रार्थनैप् पत्तु

சதாமுக்தி

सदामुक्ति

562. கலந்து நின்னடியா ரோடன்று
வாளா களித்தி ருந்தேன்
புலர்ந்து போன காலங்கள்
புகுந்து நின்ற திடர்பின்னாள்
உலர்ந்து போனேன் உடையானே
உலவா இன்பச் சுடர்காண்பான்
அலந்து போனேன் அருள்செய்யாங்
ஆர்வங் கூர அடியேற்கே!

1

562. कलन्दु निन्दिहारोडन्
वाळा कळितिरुन्देन्
पुलन्दुपोन कालङ्गळ्
पुगुन्दु निन्दि तिडर् पिन्नाळ्
उलन्दु पोनेन् उडैयाने
उलवा इन्वम् चुडर् काण्पान्
अलन्दु पोनेन् अरुळ् चय्वाय्
आर्वम् कूर अडियेर्के !

(திருமுரே ஆற - 32 பங்கி 1-8)

32

प्रार्थना-दशक

सदामुक्ति

562. सम्मिलित होकर तुम्हारी भक्तमंडली में
हर्ष पा रहा था वृथा ही
अवसर का सदुपयोग नहीं किया
चूक गया अवसर, लद गए वे दिन
बाद में घिर गया दुःख-संताप के तिमिर से
कष्ट सहते चूर हो गया हूँ नाथ
भटक रहा हूँ आस लेकर
तुम्हारे ज्योति-दर्शन के लिए
अनाथ के नाथ ! कृपा करो मुझ पर
सब ओर से हारे इस जन पर
पगे पनपे भक्तिभाव मुझमें।

(तिरुमुरै आठ - 32 पंक्ति 1-8)

742 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

563. அடியார் சிலருன் அருள்பெற்றார்
 ஆர்வங் கூர யான்அவமே
 முடையார் பிணத்தின் முடிவின்றி
 முனிவால் அடியேன் முக்கின்றேன்
 கடையே னுடைய கடுவினையைக்
 களைந்துன் கருணைக் கடல்பொங்க
 உடையாய் அடியேன் உள்ளத்தே
 ஓவா துருக அருளாயே !

2

563. அடியார் சிலர் உன்னருட் பட்டார்
 ஆர்வம் கூர யானவமே
 முடியார் பிணத்தின் முடிவின்றி
 முனிவாலடியேன் முக்கின்றேன்
 கடையேனுடைய கடு வினையே
 கடைந்துன் கருணைக் கடல் பாங்க
 உடையாய் அடியேன் உட்கத்தே
 ஓவா துருக அருளாயே !

(திருமூர்த்தி ஆட - 32 பங்கி 9-16)

564. அருளா ரமுதப் பெருங்கடல்வாய்
 அடியா ரெல்லாம் புக்கமுந்த
 இருளா ராக்கை யிதுபொறுத்தே
 எய்த்தேன் கண்டாய் எம்மானே
 மருளார் மனத்தோர் உன்மத்தன்
 வருமால் என்றிங் கெனைக்கண்டார்
 வெருளா வண்ணம் மெய்யன்பை
 உடையாய் பெறநான் வேண்டுகே !

3

564. அருளாமுதப் பருங்கடல்வாய்
 அடியார் எல்லாம் புவகமுந்
 இருளார்க்கை இது பார்த்தே
 எய்த்தேன் கண்டாய் எம்மானே
 மருளார் மனத்தோர் உன்மத்தன்
 வருமால் எந்ரிங் கெனைக்கண்டார்
 வருவாணம் மெய்யன்பை
 உடையாய் பெறநான் வேண்டுகே !

(திருமூர்த்தி ஆட - 32 பங்கி 17-24)

563. निष्ठापूर्ण निरंतर भक्तिभाव से
 पा गए कतिपय भक्तजन
 तुम्हारा प्रेममय अनुग्रह !
 किंतु हंत में पड़ा रहा यहाँ
 दुर्गन्धयुत मृतदेह सम असहाय-सा
 काल के चलते सठिया रहा हूँ
 हे करुणामय नाथ ! करो अनुग्रह
 काट कर मेरे कर्मबंधन
 अपना लो जिससे कि
 मेरे हृदय में उमगे भक्ति का अमंद आनंद।

(तिरुमुरै आठ - 32 पंक्ति 9-16)

564. निमग्न हैं सकल भक्तजन
 अनुग्रह-आनंद के असीम सागर में
 छक रहे हैं शिवानंद का अमृत
 हे नाथ ! मैं पड़ा हूँ इधर
 तमसावृत काया के प्राचीर में
 हे मेरे नाथ ! मेरे स्वामी !
 प्रदान करो मुझे भी वैसा अनुग्रह
 वैसी ही सच्ची प्रेमाभक्ति
 अन्यथा यों पड़े कलपते मुझे देखकर
 यही कहेगा लोक — देखो पड़ा है बावरा
 प्रलाप करता है उन्मत्त सा।

(तिरुमुरै आठ - 32 पंक्ति 17-24)

744 தமிழ் சைவபக்த கவி பாணிகவாசகர கृत திருவாசகம்

565. வேண்டும் வேண்டும் மெய்யடியா
 குள்ளே விரும்பி எனைஅருளாய்
 ஆண்டாய் அடியேன் இடர்களைந்த
 அமுதே அருமா மணிமுத்தே
 தூண்டா விளக்கின் கடரனையாய்
 தொண்ட னேற்கும் உண்டாங்கொல்
 வேண்டா தொன்றும் வேண்டாது
 மிக்க அன்பே மேவுதலே!

4

565. வேண்டும் வேண்டும் மெய்யடியா
 குள்ளே விரும்பி எனை அருளாய்
 ஆண்டாய் அடியேன் இடர்களைந்த
 அமுதே அருமாமணிமுத்தே
 தூண்டா விளக்கின் கடரனையாய்
 தொண்ட னேற்கும் உண்டாங்கொல்
 வேண்டா தொன்றும் வேண்டாது
 மிக்க அன்பே மேவுதலே!

(திருமூரே ஆட - 32 பங்கித 25-32)

566. மேவும் உன்றன் அடியாருள்
 விரும்பி யானும் மெய்ம்மையே
 காவி சேருங் கயற்கண்ணாள்
 பங்கா உந்தன் கருணையினால்
 பாவி யேற்கும் உண்டாமோ
 பரமா னந்தப் பழங்கடல்சேர்ந்து
 ஆவி யாக்கை யானெனதென்
 றியாது மின்றி அறுதலே?

5

566. மேவும் உன்றன் அடியாருள்
 விரும்பி யானும் மெய்ம்மையே
 காவி சேருங் கயற்கண்ணாள்
 பங்கா உந்தன் கருணையினால்
 பாவி யேற்கும் உண்டாமோ
 பரமா னந்தப் பழங்கடல்சேர்ந்து
 ஆவி யாக்கை யானெனதென்
 றியாது மின்றி அறுதலே?

(திருமூரே ஆட - 32 பங்கித 33-40)

565. अनुग्रह की आकांक्षा के संग
 तुम्हारे द्वार में पहुँचे
 भक्त-वृंद के मध्य में से
 तुमने मुझे चुन लिया बुलाया पास में
 अपना लिया अनुग्रह बरसाकर
 दूर कर सकल दुःख संताप
 हे अमृतस्वरूप ! महार्ध मणि-मुक्ता !
 अखंड दीप के जाज्वल्यमान ज्योतिराट् !
 बोलो इस दास को मिल पाएगी
 ऐसी मनोदशा जिसमें
 और किसी वस्तु की चाह न हो
 एक तुम्हारा प्रेमानुग्रह छोड़ कर ?

(तिरुमुरै आठ -32 पंक्ति 25-32)

566. वाम भाग दिया नाथ ! तुमने
 मीनलोचनी उमा को प्रेम से
 हे नित्य सत्य ! ज्योतिराट् !
 आ गया हूँ तुम्हारी शरण में
 अनुग्रह-कांक्षी भक्तमंडली के पीछे-पीछे
 उद्धार पाने की कामना से
 हे प्रभो ! करुणाकर !
 मिलेगी मुझे तुम्हारी कृपा और अनुग्रह
 जो पाप-पंक में लिप्त हूँ
 क्या यह संभव है, मैं भी
 सनातन चिरंतन शिवानंद सागर में
 डूब सकूँ छक सकूँ परमानंद
 जिससे मुक्त हो सकल बंधन
 मन-प्राण-काया का
 छूट जाए 'मैं' और 'मेरा' का भाव।

(तिरुमुरै आठ -32 पंक्ति 33-40)

746 தமிழ் சைவத்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

567. அறவே பெற்றார் நின்னன்பர்
அந்த மின்றி அகநெகவும்
புறமே கிடந்து புலைநாயேன்
புலம்பு கின்றேன் உடையானே
பெறவே வேண்டும் மெய்யன்பு
பேரா ஒழியாப் பிரிவில்லா
மறவா நினைவா அளவில்லா
மானா இன்ப மாகடலே!

6

567. अरवे पंद्रार् निन्नन्वर्
अन्तमिन्नि अगनंगवुम्
पुरमे किडन्दु पुलैनायेन्
पुलम्बुकिन्रेन् उडैयाने
पंरवे वेण्डुम् मय्यन्बु
पेरा वाळियाप् पिरिविल्ला
मरवा निनैया अळविल्ला
माळा इन्व माकडले !

(तिरुमुर्गे आठ - 32 पंक्ति 41-48)

568. கடலே அனைய ஆனந்தங்
கண்டா ரெல்லாங் கவர்ந்துண்ண
இடரே பெருக்கி ஏசற்றிங்
கிருத்த வழகோ அடிநாயேன்
உடையாய் நியே அருளுதியேன்
றுணர்த்தா தொழிந்தே கழிந்தொழிந்தேன்
கடரார் அருளால் இருள்நீங்கச்
சோதி இனித்தான் துணியாயே!

7

568. कडले अनैय आनन्दम्
कण्डारंल्लाम् कवर्न्दुण्ण
इडरे पंरुविक एंशट्रिड्
किरुत्तलळगो अडिनायेन्
उडैयाय् नीये अरुळुदियन्
रुणर्त्तादाळिन्दे कळिन्दाळिन्देन्
चुडशररुळाल् इरुळ् नीडगच्
चोति इनित्तान् तुणियाये !

(तिरुमुर्गे आठ - 32 पंक्ति 49-56)

567. पा गए अमंद असीम आनंद
 तुम्हारे भक्तवृंद निश्शेष ही
 इधर एकाकी श्वान तुल्य मैं
 पड़ा बिलख रहा हूँ ग्लानि से
 हे नाथ मेरे ! बरसा दो अनुग्रह
 पा जाऊँ अब्याज प्रेमाभक्ति
 शाश्वत संग जिसमें कभी न हो
 वियोग और बिछोह
 स्मृति-विस्मृति से परे सदानंद
 प्राप्त हो निस्सीम शिवानंद।

(तिरुमुऐ आठ - 32 पंक्ति 41-48)

568. धन्य हो गए भक्तवृंद
 शिवानंद का सागर पाकर
 पान कर रहे हैं छककर
 इधर विवश विकल निरुपाय होकर
 मेरा खड़ा रहना क्या शोभा देता है ?
 कभी निवेदन नहीं किया प्रभो
 'हे नाथ ! अनुग्रह बरसा दो'
 इसी से पराभूत हूँ
 हे ज्योतिस्वरूप ! अब तो कृपा करो
 ताकि हट जाए तमस
 दर्शन पाऊँ अमंद अनुग्रहज्योति का।

(तिरुमुऐ आठ - 32 पंक्ति 49-56)

748 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

569. துணியா உருகா அருள்பெருகத்
தோன்றுந் தொண்டர் இடைப்புருந்து
திணியார் மூங்கிற் சிந்தையேன்
சிவனே நின்று தேய்கின்றேன்
அணியா ரடியா குனக்குள்ள
அன்புந் தாராய் அருளளியத்
தணியா தொல்லை வந்தருளித்
தளிர்ப்பொற் பாதந் தாராயே !

8

569. तुणिया उरुगा अरुळ् पंरुगत्
तोन्ऱम् ताण्डरिडैप् पुगुन्दु
तिणियार मूङ्गिर् चिन्तैयेन्
शिवने निन्ऱु तेय्गिन्ऱेन्
अणियारडियार् उनक्कुळ्ळ
अन्बुम् ताराय् अरुळ्ळियत्
तणियादाल्लै वन्दरुळित्
तळिर्प्पापदिम् ताराये !

(திருமுரே ஆட - 32 பங்கி 57-64)

570. தாரா அருளொன் நின்றியே
தந்தாய் என்றுன் தமரெல்லாம்
ஆரா நின்றார் அடியேனும்
அயலார் போல அயர்வேனோ
சீரார் அருளாற் சிந்தனையைத்
திருத்தி ஆண்ட சிவலோகா
பேரா னந்தம் பேராமை
வைக்க வேண்டும் பெருமானே !

9

570. तारा अरुळ् आन्ऱिन्ऱिये
तन्दायन्ऱन् तमरल्लाम्
आरा निन्ऱार् अडियेनुम्
अयलार् पोल अयर्वेनो
चीरारुळाल् चिन्तनैयैत्
तिरुत्तियाण्ड शिवलोका
पेरानन्दम् पेरामै
वैक्क वेण्डुम् पंरुमाने !

(திருமுரே ஆட - 32 பங்கி 65-72)

569. नृत्यरत भक्तमंडली के मध्य में
 पहुँच गया हूँ जो नाच रहे हैं
 आनंद-विभोर होकर तुम्हारे अनुग्रह से
 इधर मैं खड़ा हूँ अनत होकर
 बांस के तने के समान
 खड़ा-खड़ा श्रांत हो रहा
 मेरे नाथ ! मुझे पर भी बरसा दो
 वही कृपा वही अनुग्रह
 जो निकटस्थ भक्त पर बरसाते हो
 ताकि पसीज उठे मेरा हृदय भी
 दर्शन दो आकर त्वरा से
 और प्रदान करो कनकमय चरणयुगल।

(तिरुमुरै आठ - 32 पंक्ति 57-64)

570. प्रमुदित होकर नाच रही है भक्तमंडली
 हर्षित हृदयों से हो रहा उद्घोष
 धन्य हैं हम धन्य हैं प्रभु
 वर्षित किया अनुग्रह अव्याज भाव से
 निमग्न हैं अमंद आनंद में
 उस मंडली से विलग मैं
 श्रांत-क्लांत खड़ा हूँ पराया बनकर
 मेरे हृदय में आकर
 जो तुमने मुझे अपनाया
 काट कर चित्त का भ्रमजाल
 मुझे अपना बनाया दास
 हे मेरे नाथ ! अनुग्रह करो
 असीम शिवानंद का।

(तिरुमुरै आठ - 32 पंक्ति 65-72)

750 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

571. மானோர் பங்கா வந்திப்பார்
மதுரக் கனியே மனநெகா
நானோர் தோளாச் சுரையொத்தால்
நம்பி இத்தால் வாழ்ந்தாயே
ஊனே புகுந்த உனையுணர்ந்தே
உருகிப் பெருகும் உள்ளத்தைக்
கோனே அருளுங் காலந்தான்
கொடியேற் கென்றோ கூடுவதே?

10

571. मानोर् पङ्गा वन्दिषार्
मदुरकनिये मननंगा
नानोर् तोळाच् चुरैयात्ताल्
नम्बि इत्ताल् वाळ्न्दाये
ऊने पुगुन्द उनै उणन्दै
उरुगिप् पंरुगुम् उळ्ळत्तैक्
कोने अरुळुम् कालम् तान्
काडियेर् कन्रो कूडुवदे ?

(तिरुमुறை आठ - 32 पंक्ति 73-80)

572. கூடிச் கூடி உன்னடியார்
குனிப்பார் சிரிப்பார் கனிப்பாரா
வாடி வாடி வழியற்றேன்
வற்றல் மரம்போல் நிற்பேனோ
ஊடி ஊடி உடையாயொடு
கலந்துள் ளுருகிப் பெருகிநெக்கு
ஆடி ஆடி ஆனந்தம்
அதுவே யாக அருள்கலந்தே!

11

572. कूडिक् कूडि उन्नडियार्
कुनिष्यार् चिरिष्यार् कलिष्यारा
वाडि वाडि वळियट्रेन्
वट्रल् मरम् पोल् निरपेनो
ऊडि ऊडि उडैयायांडु
कलन्दुळ्ळुरुगिप् पंरुगि नक्कु
आडि आडि आनन्दम्
अदुवे आग अरुळ् कलन्दे !

(तिरुमुறை आठ - 32 पंक्ति 81-88)

571. नाथ तुमने दिया निज वाम भाग
 हिरनी सरिस सुंदरी देवी उमा के लिए
 भक्ति करते भक्तजन के हित
 सुमधुर फल के तुल्य हो तुम
 देखो इस ओर भी
 भक्तिभाव-विहीन में खड़ा हूँ
 साबुत कुम्हड़ा-सा जिस पर छेद नहीं किया है
 इस तरह कैसे चलेगा नाथ
 वर्षित करो ऐसा अनुग्रह
 कि द्रवीभूत हो मेरा हृदय
 समा गए हो सदय होकर तुम
 वह दिन कब आएगा
 यह कठिन हृदय भी पसीज उठेगा
 और सराबोर निमग्न होगा शिवानंद में।

(तिरुमुऱै आठ - 32 पंक्ति 73-80)

572. जबकि तुम्हारे भक्तगण
 गीत-नृत्य में विभोर हैं मंडली बना-बनाकर
 हर्ष से आनंद से उछल-कूद करते हैं
 इधर मेरी नियति
 एकाकी खड़े रहने की है
 कुम्हलाए-मुरझाए तरु के समान ?
 मेरे स्वामी ! नाथ मेरे !
 ऐसी कृपा कर दो
 कि मैं भी उनके संग मिलकर
 नृत्य करूँ आनंद से आमोद से
 प्रेम में पगा हृदय पसीज उठे
 आनंदनृत्य करते करते
 विलीन हो जाऊँ शिवानन्द में।

(तिरुमुऱै आठ - 32 पंक्ति 81-88)



752 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - वर्ड बीटिफिक एस. ए. शंकरनारायनन्

Source : Tiruvacagam : Word Beatific by S.A. Sankaranarayanan

Stable, well based, partless-from-us-
 Ocean of great bliss for no forgetting
 nor remembering ! As your servitors
 true did melt incessantly, they got
 you in toto. I, outside their fold,
 lay futile. Now I lament I need
 bliss great, despite being cur-like-I.
 O, Lord. I must needs be granted
 True love that renders me deserving
 to attain the very love that's bliss.

O First one ! servitors that found the bliss
 Ocean shown afore, feel the bliss in force.
 Is it becoming that I-Curlike ever
 smarting, sorrowed, slaving, remain
 indolent ? I got perhaps dropped out
 for not declaring my want believing
 you my Lord would on your own
 grant that great bliss without my asking
 for. O Lumen-many hued ! - Hence, with
 your luminous grace - sword may
 you chop and fell my murk
 of nescience and slay it.

Civa Lord ! I like a stony bamboo
 thick, hard hearted meltless,
 in the thick of servitors who hope
 that you are their sole support
 and thus confirmed in thought,
 melting hearted with your holy
 grace beautifying them aglow
 greatly, remain on this earth
 dispirited, sagging. May you grant
 me the True Love reposed by
 your servitors true on you. Delaying
 not, soon should you appear in my
 heart gracing for grace to ripen and
 grant your golden feet unto me.

O Lord of Civalokam that rectified
 my heart, taking it with your
 especial grace ! knowing fullwell,
 your kin servitors all enjoy bliss
 you gave them knowing you've graced
 them entirely. Need I as an alien
 to your grace suffer and sag ?
 May you sanction it so that I
 for ever am soaked in bliss
 great consumingly.

Deer-like eyed-Uma-mother in Half !
 sweet fruit like one for the worshippers !
 O Lord, Are you happy over it
 that I stay put like uncared, vain
 hollow flask of a bottle gourd ?
 O, Lord, when would the hour
 come for you to grant me
 the mind that can receive
 gnosis melting in love
 knowing you who have
 taken this body as your
 dwelling, O, Me, Cruel !

Your servitors ceaseless join hands
 and jubilate, laugh adance
 priding over the grace ; but I am
 wearied woe-struck with way none
 to reach you, standing
 like a withered dry tuber.
 Won't you grace me that I
 Joining you who took me slave,
 warring, melting at heart,
 mind languishing, ceaseless
 dancing in bliss, may become
 the joy of aesthesis - Civa.

33

குழைத்தபத்து

कुष्ठैत्तपत्तु

ஆத்தும நிவேதனம்

आत्तुम निवेदनम्

573. குழைத்தாற் பண்டைக் கொடுவினையோய்
காவாய் உடையாய் கொடுவினையேன்
உழைத்தா லுறுதி யுண்டோதான்
உமையாள் கணவா எனைஆள்வாய்
பிழைத்தாற் பொறுக்க வேண்டாவோ
பிறைசேர் சடையாய் முறையோவேன்று
அழைத்தால் அருளா தொழிவதே
அம்மா னேஉன் னடியேற்கே?

1

573. कुष्ठैत्तार् पण्डैक्काडु विनै नोय्
कावाय् उडैयाय् काडुविनैयेन्
उष्ठैत्तालुरुपि उण्डो तान्
उमैयाळ् कणवा ऐनैयाळ्वाय्
पिष्ठैत्तार् पारुक्क वेण्डावो
पिरैचेर् चडैयाय् मुरैयो ऐन्
अष्ठैत्तालरुळा दाळिवदे
अम्माने उन्नडियेर्के ?

(तिरुமுரै आठ - 33 पंक्ति 1-8)

33

विगलित हृदय-दशक

आत्म निवेदन

573. हे मेरे स्वामी ! नाथ मेरे
 त्राण करो पुरातन कर्म-रोग से
 क्रूर कर्म का मारा मैं
 कलपता रहूँ कष्ट पाता रहूँ
 मेरे मन-प्राण को क्या लाभ होगा ?
 उमापते ! अपनाया तुमने मुझे दास रूप में
 दास से त्रुटि हो जाए तो
 क्षमा करना तुम्हारा धर्म नहीं है ?
 हे चंद्रकलाधर ! मैं जब पुकारता रहूँ
 नाथ, क्या उचित हो रहा मेरे साथ ?
 तो अनुगृहीत करने के स्थान पर
 छिप जाना कहाँ तक उचित है ?

(तिरुमुरै आठ - 33 पंक्ति 1-8)

756 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

574. அடியேன் அல்லல் எல்லாம்முன்
அகல ஆண்டாய் என்றிருந்தேன்
கொடியே ரிடையான் கூறாஎங்
கோவே ஆஆ என்றருளிச்
செடிசேர் உடலைச் சிதையாத
தெத்துக் கெங்கள் சிவலோகா
உடையாய் கூவிப் பணிகொள்ளா
தொறுத்தால் ஒன்றும் போதுமே?

2

574. अडियेनल्लल् ऐल्लाम् मुन्
अकल आण्डाय् ऐन्निरुन्देन्
काडियेरिडैयाळ् कूरा ऐम्
कोवे आवा ऐन्नरुळिच्
चंडिचेरुडलैच् चिदैयाद
तत्तुक्कङ्गळ् शिवलोका
उडैयाय् कूविप् पणिकाळ्ळाद
दाऱुत्ताल् आन्ऱम् पोदुमे ?

(तिरुमुरै आठ -33 पंक्ति 9-16)

575. ஒன்றும் போதா நாயேனை
உய்யக் கொண்ட நின்கருணை
இன்றே இன்றிப் போய்த்தோதான்
ஏழை பங்கா எங்கோவே
குன்றே அனைய குற்றங்கள்
குணமா மென்றே நீகொண்டால்
என்தான் கெட்ட திரங்கிடாய்
என்தோள் முக்கண் எம்மானே!

3

575. आन्ऱम् पोदा नायेनै
उय्यक्काण्ड निन् करुणै
इन्ऱे इन्ऱिप् पोय्तो तान्
एळै पङ्गा ऐम् कोवे
कुन्ऱे अनैयक् कुट्रङ्गळ्
गुणमाम् ऐन्ऱे नी काण्डाल्
ऐन्ऱान् कट्टदिरङ्गिडाय्
एण्तोळ् मुक्कण् ऐम्माने !

(तिरुमुरै आठ -33 पंक्ति 17-24)

574. हे नटराजराज ! वामभाग दिया तुमने
 तनुमध्यमा माँ शिवकामी को
 मेरी यही धारणा थी
 कि दास के दुःख संताप दूर करना
 स्वामी का कार्य है
 दास जो बना लिया था
 पापमय इस देह को नष्ट क्यों नहीं किया ?
 हे आनंदमय शिवलोक के स्वामी
 मेरे नाथ ! बुलाया नहीं
 सेवा में लगाया नहीं
 सीधे दंडित कर दिया
 क्या यह कार्य समुचित है ?

(तिरुमुरै आठ - 33 पंक्ति 9-16)

575. यह श्वान कहीं किसी योग्य नहीं था
 तुम्हारी करुणा-उदारता थी जो मुझको अपनाया था
 और उद्धार किया था
 क्या वह करुणा समाप्त हो गई आज ?
 हे दीन नाथ ! मेरे स्वामी !
 क्या हानि होगी प्रभो
 पहाड़ जितने दोष को
 मान लिया जाए गुण-रूप में
 अष्टभुजा के स्वामी ! त्रिनेत्र प्रभो !
 सदय होकर कृपा करो मुझ पर।

(तिरुमुरै आठ - 33 पंक्ति 17-24)

758 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

576. மானேர் நோக்கி மணவாளா
மன்னே நின்சீர் மறப்பித்திவ்
வூனே புகளன் தனைநூக்கி
உழல்ப் பண்ணு வித்திட்டாய்
ஆனால் அடியேன் அறியாமை
அறிந்து நீயே அருள்செய்து
கோனே கூவிக் கொள்ளுநான்
என்றென் றுன்னைக் கூறுவதே?

4

576. मानेर् नोक्कि मणवाळा
मन्ने निन् चीर् मरुपित्तिव्
वूने पुगवंन्नै नूक्कि
उळलप्पण्णु वित्तिट्टाय्
आनालडियेन् अरियामै
अरिन्दु नीचे अरुळ् चैय्दु
कोने कूविवकाळ्ळु नाळ्
ऐन्नन्नैक् कूरुवदे ?

(तिरुमुரै आठ - 33 पंक्ति 25-32)

577. கூறும் நாவே முதலாகக்
கூறுங் கரணம் எல்லாம்நீ
தேறும் வகைநீ திகைப்புநீ
தீமை நன்மை முழுதும்நீ
வேறோர் பரிசிங் கொன்றில்லை
மெய்ம்மை உன்னை விரித்துரைக்கில்
தேறும் வகைஎன் சிவலோகா
திகைத்தால் தேற்ற வேண்டாவோ?

5

577. कूरु नावे मुदलागक्
कूरुम् कारणमेल्लाम् नी
तेरुम् वगै नी तिगैप्पु नी
तीमै नन्नै मुळुदु नी
वंरोर् परिशिङ्कान्त्रिल्लै
मंयम्मैयुन्नै विरित्तुरैविकल्
तेरुम् वगैयन् शिवलोका
तिगैत्ताल् तेट्र वेण्डावो ?

(तिरुमुरै आठ - 33 पंक्ति 33-40)

576. मृगनयनी उमा के सुयोग्य पति
 सुंदरेश ! मेरे गुरुराज !
 यदि तुमने भुलवा दी निज महिमा
 और अस्थिचर्ममय देह में बसाया मुझे
 इस दास को मायामय प्रपंच में भटकने दिया
 जान लो उदार प्रभु ! अपने दास के अज्ञान को भी
 बोलो कब करोगे उद्धार की कृपा
 स्वतः कृपाकर अपने पास बुलाना
 तुम्हारा ही काम है
 इस से अधिक निवेदन क्या करूँ ?

(तिरुमुरै आठ - 33 पंक्ति 25-32)

577. बोल रही ज़िह्वा से लेकर
 ज़िह्वा से वर्णन योग्य सकल पदार्थ तुम हो
 दुःख संतप्त का दिलासा तुम हो
 दुःख संताप और सकपकाहट भी हो
 जड़-चेतन गुण-दोष सब तुम्हीं हो
 यदि तुम्हारी व्याख्या की जाए
 तुम्हें छोड़कर कोई वस्तु नहीं
 सकल पदार्थ में समाये तुम हो
 जब मैं संताप करूँ दुःख से सकपकाऊँ
 हे मेरे शिवनाथ !
 सांत्वना देना क्या तुम्हारा काम नहीं ?

(तिरुमुरै आठ - 33 पंक्ति 33-40)

760 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

578. வேண்டத் தக்க தறிவோய்நீ
 வேண்ட முழுதுந் தருவோய்நீ
 வேண்டும் அயன்மாற் காரியோய்நீ
 வேண்டி என்னைப் பணிகொண்டாய்
 வேண்டி நீயா தருள்செய்தாய்
 யானுமதுவே வேண்டின் அல்லால்
 வேண்டும் பரிசொன் றுண்டென்னில்
 அதுவும் உன்றன் விருப்பன்றே ?

6

578. वेण्डत्तक्कदरिवोय् नी
 वेण्ड मुळुदुम् तरुवोय् नी
 वेण्डुम् अयन् मार्करियोय् नी
 वेण्डि ऐन्नैप्पणि காण्डாய்
 वेण्डि नीयादरुळ् चय्दाय्
 யானுமதுவே வேண்டின் அல்லால்
 वेण्डुम् परिशान्दण्डन्निल्
 அதுவும் உன்றன் விருப்பம்த்ரே ?
 (திருமுரே ஆட - 33 பங்கி 41-48)

579. அன்றே என்றன் ஆவியும்
 உடலும் உடைமை எல்லாமுங்
 குன்றே அனையாய் என்னைஆட்
 கொண்ட போதே கொண்டிலையோ
 இன்றோர் இடையூ நெனக்குண்டோ
 எண்தோள் முக்கண் எம்மானே
 நன்றே செய்வாய் பிழைசெய்வாய்
 நானோ இதற்கு நாயகமே!

7

579. अन्त्रे ऐन्नन् आवियुम्
 उडलुम् उडैमैयेल्लामுम्
 குந்ரே அநையாய் ऐन्नையாட்
 காண்டபாடே காண்டிலையோ
 इन्द्रोरिडैयूरु ऐन्वकुण्डो
 ऐण்தோல் முக்கண் எம்மானே
 நந்ரே செய்வாய் பிழை செய்வாய்
 नानो इदकु नायकमे !
 (திருமுரே ஆட - 33 பங்கி 49-56)

578. वांछनीय क्या है तुम्हीं जानते हो
 वांछित वस्तुओं को बरबस देते हो
 तुम्हारी वांछा लेकर भटकते रहे
 विष्णु-विरिंचि-उनके लिए दुर्लभ थे तुम
 मुझे वांछा से इच्छा से अपनाया
 निज सेवकाई में नियुक्त किया
 जो भी अनुग्रह करोगे वही लूँगा
 और कोई वांछा नहीं है
 फिर भी मेरे अंदर इच्छा का लवलेश हो
 तो हे नाथ यही इच्छा करूँ
 कि तुम्हारी इच्छा ही मेरी इच्छा बने।

(तिरुमुऱै आठ - 33 पंक्ति 41-48)

579. हे कारुण्य शैल ! प्रभो !
 जिस दिन तुमने अपनाया
 लिया नहीं मेरा सर्वस्व
 तन-मन-धन-जीवन ?
 सब कुछ निछावर करने के बाद
 किस बात की चिंता कौन-सी बाधा ?
 अष्टभुजा के धनी त्रिनेत्र प्रभो !
 तुम मेरे साथ कुछ भी करो
 भला करो या बुरा करो
 इस पर मेरा कोई वश नहीं।

(तिरुमुऱै आठ - 33 पंक्ति 49-56)

762 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

580. நாயிற் கடையாம் நாயேனை
நயந்து நீயே ஆட்கொண்டாய்
மாயப் பிறவி உன்வசமே
வைத்திட் டிருக்கும் அதுவன்றி
ஆயக் கடவேன் நானோதான்
என்ன தோஇங் கதிகாரம்
காயத் திடுவாய் உன்னுடைய
கழற்கீழ் வைப்பாய் கண்ணுதலே!

8

580. नायिर् कडैया नायेनै
नयन्दु नीये आट्काण्डाय
मायप्पिरवि उन् वशमे
वैत्तिटिरुक्कुम् अदुवन्नि
आयक्कडवेन् नानो तान्
ऐन्नदो इङ्गादिकारम्
कायत्तिडुवाय् उन्नुडैय
कळर्कीळ् वैप्पाय् कण्णुदले !
(तिरुமுரै आठ - 33 पंक्ति 57-64)

581. கண்ணார் நுதலோய் கழலிணைகள்
கண்டேன் கண்கள் களிகூர
எண்ணா திரவும் பகலும்நான்
அவையே எண்ணும் அதுவல்லால்
மண்மேல் யாக்கை விடுமாறும்
வந்துள் கழந்தே புகுமாறும்
அண்ணா எண்ணக் கடவேனோ
அடிமை சால அழகுடைத்தே!

9

581. कण्णार् नुदलोय् कळलिणैकक्
कण्डेन् कण्गळ् कळिकूर
ऐण्णादिरवुम् पगलुम् नान्
अवैये ऐण्णुम् इदुवल्लाल्
मण्मेल् याक्कै विडुमारुम्
वन्दुन् कळर्कै पुगुमारुम्
अण्णा ऐण्णक्कडवेनो
अडिमै चाल अळ्ळुडैत्ते !

(तिरुமுரै आठ - 33 पंक्ति 65-72)

580. श्वान से भी गए बीते इस जीव को
 नाथ ! बरबस आकर तुमने अपना लिया
 ऐसा सौभाग्य पाने के बाद
 मायामय इस जीवन को
 तुम्हारे चरणों पर सौंपना ही करणीय है
 अब यह वस्तु मेरी नहीं है
 इस पर मेरा अधिकार नहीं
 जिस कल बिठाओ तुम मुझे
 उस कल वैदूंगा मेरे शिवराज
 इसे फिर से जन्म दे दो
 या चरण-सायुज्य दे दो
 भालनेत्र प्रभु ! सब तुम्हारी इच्छा है।

(तिरुमुरै आठ - 33 पंक्ति 57-64)

581. भालनेत्र प्रभु ! दर्शन-लाभ हुआ
 पावन चरणों का, धन्य हुए नयन
 इन चरणों पर केंद्रित रहें नयन
 निशि दिन अन्य किसी ध्यान बिन
 हे प्रभो इस कृपा के साथ ही
 ऐसा परम अनुग्रह करो सदय होकर
 कि मैं सदा चिंतन मनन करता रहूँ
 माटी के चोले के झड़ते ही
 समा जाऊँ तुम्हारे चरणों पर
 तुम्हारी सेवकाई में धन्य हूँ मैं।

(तिरुमुरै आठ - 33 पंक्ति 65-72)

764 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

582. அழகே புரிந்திப் டடிநாயேன்
 அரற்று சின்றேன் உடையானே
 திகழா நின்ற திருமேனி
 காட்டி என்னைப் பணிகொண்டாய்
 புகழே பெரிய பதம்எனக்குப்
 புராண நீதந் தருளாதே
 குழகா கோல மறையோனே
 கோனே என்னைக் குழைத்தாயே!

10

582. अळगे पुरिन्दिट्टडि नायेन्
 अरदरुकिन्नेन् उडैयाने
 तिगळा निन् तिरुमेनि
 काट्टि ऐन्नैप् पणिकाण्डाय्
 पुगळे परिय पदम् एनक्कुप्
 पुराण नी तन्दरुळादे
 कुळगा कोल मरैयोने
 कोने ऐन्नैक् कुळैताये !

(तिरुमुरै आठ - 33 पंक्ति 73-80)

582. (ईश को साक्ष्य बनाये बिना)
 यह श्वान कुछ कर गया अपने तई
 जिसके लिए परिताप करता रहा
 अब तक प्रलाप कर रहा है
 हे मेरे नाथ ! कांतिमय वपु दिखाकर
 तुमने अपनाया मुझे दास बनाया
 किंतु हे पुराणपुरुष ! सनातन चिरंतन !
 दिव्य अनुग्रह दिये बिना
 काहे मुझे भ्रमित कर रहे हो
 बताओ वेदनायक सुन्दरेश !

(तिरुमुऱै आठ - 33 पंक्ति 73-80)



766 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - डॉ. रेवरेण्ड जी. यू. पोप; 1900 ई.

Source : Tiruvacagam by Rev. G.U. Pope; 1900 A.D.

If cruel pain oppress from 'deeds of old,' guard Thou
 Who ownest me ! If I, a man of 'cruel deeds'
 Suffer, from this my woe doth any gain accrue ?
 O light of Umai's eyes, take Thou me for Thine own !
 And though I err, ah ! should'st not Thou forgive,—
 Thou on whose crest the crescent rests ? If I appeal,
 Wilt Thou withhold Thy grace, Father, from me Thy slave ?

Thy slave's afflictions all to drive far off I deem'd
 Thou mad'st me Thine, erewhile ; Thou Partner of the
Queen,
 Whose form is like the slender creeping plant ! Our King ;
 bidding me come, why didst Thou not in grace destroy
 This body vile ? Our Lord, Who dwell'st in you blest world !
 Thou called'st,—if my service not accepting now
 Thou dost afflict, Master, will any gain accrue ?

Thy mercy given to save one void of worth,
 a dog like me, hath it this day pass'd all away ?
 Thou Partner of the Tender One, our Mighty King,
 ev'n faults that like a mountain rise, to virtues turn,
 If Thou but say the word ! If Thou didst take me once
 for Thine, why dost Thou not—though ruined—pity take
 On me ? our Lord,—Thou of eight arms and triple eye !

Bridegroom of Her with fawnlike eyes ! Our King ! If Thou
 hast caused me Thine abiding glory to forget ;
 If Thou hast thrust me out in fleshly form to dwell ;
 if Thou hast caused Thy slave to wander here forlorn ;
 Knowing Thy servant's ignorance, O gracious King,
 when comes the day that Thou Thyself wilt show Thy
grace?
 Ah ! When, I cry, when wilt Thou call me back to Thee ?

The tongue itself that cries to Thee,—all other powers
 of my whole being that cry out,—all are THYSELF !
 Thou art my way of strength ! The trembling thrill that runs
 through me is Thee ! THYSELF the whole of ill and weal !
 None other here ! Would one unfold and truly utter Thee,
 what way to apprehend ? Thou Lord of Çiva-world !
 And if I trembling fear, should'st Thou not comfort me ?

Thou know'st what to DESIRE is meet,— when we DESIRE
 Thou'rt He that wholly grants ! To Ayan and to Māl
 DESIRING Thee, how hard to reach ! Yet me Thou didst
 DESIRE, my service claim ! DESIRING what didst Thou
 Bestow Thy grace ? That and naught else do I DESIRE !
 And if aught else there be that stirs in me DESIRE,
 That too, in sooth, is Thy DESIRE,— is it not so ?

Lines : 1 - 48

34

உயிர் உண்ணிப்பத்து

उयिर् उणिप् पतु

சிவானந்த மேலிடுதல்

शिवानन्द मेलिडुदल्

583. பைந்நாப்பட அரவேரல்குல்
உமைபாகம தாய்என்
மெய்ந்நாஸ்தொறும் பிரியாவினைக்
கேடாவிடைப் பாகா
செந்நாவலர் பரசும்புகழ்த்
திருப்பெருந்துறை உறைவாய்
எந்நாள்களித் தெந்நாள்இறு
மாக்கேன் இனியானே?

1

583. पैन्नाप्यड अरवेरलगुल्
उमै पागमदार्यन्
मय्यन्नाळ्तारुम् पिरियाविनैक्
केडाविनै पागा
चन्नावलर् परशुम् पुगळ्त्
तिरुप्परुन्तुरै उरैवा
ऐन्नाळ् कळित्त्न्नाळ्
इरुमाक्केन् इनि याने ?

(तिरुमुரै आठ - 34 पंक्ति 1-8)

34

जीव-निगलित दशक

शिवानन्द का अतिरेक

583. नागफन सदृश उज्ज्वल कमर की धनी
उमा को वाम भाग दिए मेरे नाथ !
सत्य ही नित्य मेरे संग रहते
मेरे नाथ ! वृषभारुढ़ प्रभु !
तिरुप्परुन्तुरै धाम के अधीश
जहाँ ज़िह्वा के धनी कीर्तिमान जन
कीर्तिगान करते हैं निरंतर
बोलो, कब आएगा वह दिन
जब मैं हर्षित-प्रमुदित होऊँ ?

(तिरुमुरै आठ - 34 पंक्ति 1-8)

770 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

584. நானாரடி யனைவானொரு
நாய்க்குத் தவிசிட்டிங்கு
ஊனாருடல் புகுந்தான்உயிர்
கலந்தான்உளம் பிரியான்
தேனார்சடை முடியான்மன்னு
திருப்பெருந்துறை உறைவான்
வானோர்களும் அறியாததோர்
வளம்சந்தனன் எனக்கே!

2

584. நானாரடியைவானொரு
நாய்க்குத் தவிசிட்டிங்கு
கலந்தான் உலகம் பிரியான்
தேனார் சடை முடியான் மன்னு
திருப்பெருந்துறை உறைவான்
வானோர்களும் அறியாததோர்
வளம்சந்தனன் எனக்கே !

(திருமூர் ஆட -34 பங்கி 9-16)

585. எனைநானென்ப தறியென்பகல்
இரவாவதும் அறியென்
மனவாசகங் கடந்தான் எனை
மத்தோன்மத்த னாக்கிச்
சினமால்விடை உடையான்மன்னு
திருப்பெருந்துறை உறையும்
பனவன்எனைச் செய்தபடி
றறியென் பரஞ்சுடரே!

3

585. ஐநை நானந்தரெய்ந் பகல்
இரவாவது அரெய்ந்
மனவாசகம் கடந்தான் ஐநை
மதம்மதநாவிக்
சினமால் விடை உடையான் மன்னு
திருப்பெருந்துறை உறையும்
பனவன் ஐநைச் சய்யதபடி
ரெய்ந் பரஞ்சுடரே !

(திருமூர் ஆட -34 பங்கி 17-24)

584. मेरी हस्ती ही क्या है
 जो मैं नाथ चरणों से जा लिपटूँ
 श्वान को भी कुछ माना यही बहुत है
 प्रविष्ट हो गए नाथ मेरी देह में
 घुस कर हृदय में, हिलमिल गए मन-प्राण में
 बने रहेंगे मेरे मन के ही संग सर्वदा
 मधु-स्त्रवित सुमन-सज्जित जटाधर
 तिरुप्परुन्तुरै धाम के अधीश ने
 प्रदान कर दी आनंद की निधि प्रेम से
 जो दुर्लभ है देवगण के लिए भी।

(तिरुमुऱै आठ - 34 पंक्ति 9-16)

585. नहीं जानता हूँ स्वयं को भी
 जानता नहीं हूँ कैसे दिन बदलता है रात में
 मन और वाणी से परे ईश ने
 मुझे बना दिया है बावरा
 नहीं जानता मैं कौन सा जादू वे खेल गए
 कुछ भी कर सकते हैं
 जिन्होंने विष्णु को वृष बना लिया था
 प्रभु विराज रहे हैं तिरुप्परुन्तुरै धाम में।

(तिरुमुऱै आठ - 34 पंक्ति 17-24)

772 தமிழ் சீவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கீர்த்தி திருவாசகம்

586. வினைக்கேடரும் உளரோபிறர்
 சொல்லீர்விய னுலகில்
 எனைத்தான்புகுந் தாண்டான்என
 தென்பின்புரை யுருக்கிப்
 பினைத்தான்புகுந் தெல்லேபெருந்
 துறையில்உறை பெம்மான்
 மனத்தான்கண்ணின் அகத்தான்மறு
 மாற்றத்திடையானே !

4

586. विनै केडरुमुळरो पिरர்
 चाल्लिर् वियनुलगिल्
 ऐनैत्तान् पुगुन्दाण्डान् ऐन्
 दन्पिन् पुरैयुरुविकप्
 पिनैत्तान् पुगुन्दल्ले பர்ந்
 துரையிலுரே பம்மான்
 மனத்தான் கண்ணிதான் அகத்தான்மறு
 மாற்றத்திடையானே !

(திருமுரே ஆட - 34 பவ்தி 25-32)

587. பற்றாங்கவை அற்றீர்பற்றும்
 பற்றாங்கது பற்றி
 நற்றாங்கதி அடைவோமெனிற
 கெடுவீரோடி வம்மின்
 தெற்றார்சடை முடியான்மன்னு
 திருப்பெருந்துறை இறைசீர்
 சுற்றாங்கவன் சுழல்பேனின்
 ரொடுங்குடுமின் சுலந்தே !

5

587. पट्राङ्गवै अट्रीर् पदरुम्
 पट्राङ्गदु पट्टि
 नट्राङ्गति अडैवोमनिल्
 कंडुवीरोडि वाम्मन्
 तट्टार् चडै मुडियान् मन्नु
 तिरुप्पर्नुतुरै इरैचीर्
 कट्राङ्गवन् कळल् पेणि
 रांडुम् कूडुमिन् कलन्दे !

(திருமுரே ஆட - 34 பவ்தி 33-40)

586. कर्मनाशक अन्य कोई दैवत है
जग में शिवराज को छोड़कर ?
प्रवेश कर गए काया में
अपनाया मुझे दास बनाया
और भी धंसते धंसते अंतर् में
मांस-मज्जा को पिघला दिया
नाथ वह अब हृदय में है
लो अब है नयन में
फिर आ गया है वाणी में
इस उत्तर में।

(तिरुमुरै आठ - 34 पंक्ति 25-32)

587. उद्धार मार्ग जाने बिना भटकते जन !
यदि तुम निराधार निराश्रित हो
खोज रहे हो आधार
तो आओ राजमार्ग यहां है
तज दो आसक्तियों के सकल बंधन
पकड़ लो उस आश्रय को
जिसको ग्रहण करना उपयुक्त है
अब पहुँचोगे तुम सिद्धि के राजमार्ग पर
इस मार्ग पर चल रह हैं ज्ञानीजन
जान ली है जिन्होंने
महिमा तिरुप्परुन्तुरै के अधीश की
नाथ वह सुशोभित है जटा-मुकुट से
सज्जित जो है मधु-स्रवित माल्य से
इन ज्ञानियों ने धर लिये हैं
नाथ के चरणयुगल हृदय में।

(तिरुमुरै आठ - 34 पंक्ति 33-40)

774 தமிழ் சீவமக்த கவி மாணிகவாசகர கீத திருவாசகம்

588. கடலின்திரை யநுபோல்வரு
கலக்கம்மலம் அறுத்தென்
உடலும்என துயிரும்புகுந்
தொழியாவண்ணம் நிறைந்தான்
கடருஞ்சுடர் மதிதடிய
திருப்பெருந்துறை உறையும்
படருஞ்சடை மகுடத்தெங்கள்
பரந்தான் செய்தபடிநே !

6

588. कडलिन् तिरैयदुपोल् वरु
कलकम् मलमरुत्तन्
उडलुम् ऐन्दुयिरुम् पुगुन्
दाळियावण्णम् निरैन्दान्
चुडरुम् चुडर्मति चूडिय
तिरुप्परुन्तुरै उरैयुम्
पडरुम् चडै मकुडत्तङ्गल्
परन्तान् चय्द पडिरे !

(திருமுரே ஆட - 34 பங்கி 41-48)

589. வேண்டேன்புகழ் வேண்டேன்செல்வம்
வேண்டேன் மண்ணும்விண்ணும்
வேண்டேன்பிறப் பிறப்புச்சிவம்
வேண்டார்தமை நானுந்
தீண்டேன்சென்று சேர்ந்தேன்மன்னு
திருப்பெருந்துறை இறைதான்
பூண்டென்புறம் போகேன்இனிப்
புறம்போகலொட் டேனே !

7

589. वेण्डेन् पुगळ् वेण्डेन् चंत्वम्
वेण्डेन् मण्णुम् विण्णुम्
वेण्डेन् पिरपिरप्युच्च चिवम्
वेण्डार् तमै नाळुम्
तीण्डेन् चंक् चैन्देन् मन्नु
तिरुप्परुन्तुरै इरैताळ्
पूण्डेन् पुरम्पोगेन् इनिप्
पुरम् पोगलादटेने !

(திருமுரே ஆட - 34 பங்கி 49-56)

588. सागर लहरों की भांति
 शृंखलाबद्ध रूप में आते दुःख-दुरित
 भांति को मेरे सकल मल को काट दिया
 करुणामय प्रभु ने और फिर
 प्रवेश कर गया मेरी काया में
 भर गया तन में मन में प्राण में
 लवलेश भी अंतराय विन
 यह चमत्कार किया, मेरे शिवनाथ ने
 जो विराजे है तिरुप्परुन्तुरै धाम में
 जटामुकुट पर हो रही शोभित उज्ज्वल चंद्रकला
 परात्पर वह परमेश्वर है।

(तिरुमुरै आठ - 34 पंक्ति 41-48)

589. चाह नहीं है विमल कीर्ति की, अतुल धन की
 चाह नहीं है धरणी और स्वर्ग के आधिपत्य की
 चाह नहीं है जनन-मरण की अंतहीन शृंखला
 चाह नहीं ऐसे जन को स्पर्श करने की
 जिन्हें चाह नहीं है शिव-परमेश्वर की
 पहुँच गया मैं विश्रुत तिरुप्परुन्तुरै धाम
 पहुँच गया वहाँ विराजे मेरे नाथ-चरण पर
 धर लिये नाथ के पावन चरणयुगल शीर्ष पर
 अब इनसे कभी विलग नहीं हूँगा
 और इन्हें स्वयं से विलग होने नहीं दूँगा।

(तिरुमुरै आठ - 34 पंक्ति 49-56)

776 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

590. கோற்றேன்னெனக் கென்கோகுரை
கடல்வாய்அமு தென்கோ
அற்றேன்னங்கள் அரனேஅரு
மருந்தேன தரசே
சேற்றார்வயல் புடைதூழ்தரு
திருப்பெருந்துறை உறையும்
நீற்றார்தரு திருமேனிநின்
மலனேஉனை யானே?

8

590. காட்ரேந் ஐனவக்னா
கூரே கடலவாய் அமுதந்நா
ஆட்ரேந் ஐங்குலரநே அரு
மருந்தே ஐனதரசே
சேட்ரார் வயல் புடை சூழ் தரு
திருப்பெருந்துரை உறையும்
நீட்ரார் தரு திருமேனிநின்
மலநே உனையானே ?

(திருமுறை ஆட - 34 பங்கித் 57-64)

591. எச்சம்அறி வேன்னான்எனக்
கிருக்கின்றதை அறியேன்
அச்சோஎங்கள் அரனேஅரு
மருந்தேன தமுதே
செச்சமலர் புரைமேனியன்
திருப்பெருந்துறை உறைவான்
நிச்சம்என நெஞ்சில்மன்னி
யானாகிநின் றானே!

9

591. ஐச்சமரீவேந் நான் ஐனவக்
இருவிகந்துரை அரீயேந்
அச்சு ஐங்குல அநே அரு
மருந்தே ஐனதமுதே
சேச்சு மலர் புரமேனியன்
திருப்பெருந்துரை உறவான்
நிச்சம் ஐந் நிச்சித் மனி
யானாகி நின்னானே !

(திருமுறை ஆட - 34 பங்கித் 65-72)

590. कैसे विशेषित करूँ तुम मेरे लिए क्या हो
 तुंग तरु-शाखा का सुमधुर मधु कहूँ
 या कोलाहलमय सागर के अमृत
 तुम्हारे बिना रह न पाता
 मेरे नाथ ! हे हर ! अनुपम औषध !
 मेरे शिवराज ! विराजे हो तुम
 केदार बलयित तिरुप्परुन्तुरै धाम में
 भस्म विलेपित कमनीय देह
 नित्य मैं स्तुति करूँ निर्मल महादेव की।

(तिरुमुऱै आठ - 34 पंक्ति 57-64)

591. गह लिया प्रपंचज्ञान
 परज्ञान को जाना नहीं
 यह नहीं जान पाया हाय !
 कि मेरे रूप में तुम्हीं तुम हो
 हंत ! मेरे नाथ ! हे हर !
 सिद्ध अमोघ औषधरूप !
 मेरे अमृतमय शिवनाथ !
 अरुणिम सुमन से अलंकृत होकर
 तिरुप्परुन्तुरै में विराजमान प्रभु
 वास करता है मेरे हृदय में नित्य ही
 और वह मेरे हृदय में रहता है
 अहं ब्रह्म रूप में—हा आश्चर्य है।

(तिरुमुऱै आठ - 34 पंक्ति 65-72)

778 தமிழ் சீவமக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

592. வான்பாவிய உலகத்தவர்
தவமேசெய அவமே
ஊன்பாவிய உடலைச்சுமந்
தடவிமர மாணேன்
தேன்பாய்மலர்க் கொன்றைமன்னு
திருப்பெருந்துறை உறைவாய்
நான்பாவியன் ஆனால்உனை
நல்காயென லாமே!

10

592. வான் பாவிய உலகத்தவர்
தவமே சீய அவமே
ஊன் பாவிய உடலேச் சும்ன்
தடவி மரமானேன்
தேன் பாய் மலர்க்கான்றை மன்னு
திருப்பெருந்துறை உறைவாய்
நான் பாவியன் ஆனால்உனை
நல்காய் ஈனலாமே !

(திருமுறை ஆட - 34 பதிவு 73-80)

592. नील नभ-वितान के तले
 तपस्या लीन हूँ मनस्वीजन
 मेरी तो दशा यह है
 वृथा ढोता फिरता हूँ
 अस्थि चर्ममय देह को
 अथवा कानन-तरु समान हूँ
 मधु स्रवित कान्त्रे फूल को
 जटाजूट में धरकर
 तिरुप्परुन्तुरै धाम में विराजे प्रभु !
 माना कि मैं पापी हूँ
 फिर भी प्रार्थना कर रहा हूँ
 अपने को दे दो मुझे प्रेम से।

(तिरुमुरै आठ - 34 पंक्ति 73-80)



780 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - डॉ रेवरेण्ड जी. यू. पोप; 1900 ई.

Source : Tiruvacagam by Rev. G.U. Pope; 1900 A.D.

Partner of Umai's loveliness ! Destroyer of the 'deeds'
 That to this frame cling fast ! Thou Guardian of the Bull !
Who dwell'st
 In Perun-turrai's sacred shrine by well-skilled bards extolled !
 When shall I joy, O when exulting sing, henceforth, I too ?

And who am I would reach His foot ? To me, mere cur, a throne
 He gave ; enter'd my flesh ; mixed with my life ; leaves not my
soul.
 With crown of honey-dripping-locks, blest Perun-turrai's Lord
 On me a gracious boon bestow'd that heavenly ones know not !

I know myself no more ; nor day's nor night's recurrence ; He
 Who mind and speech transcends with mystic madness
madden'd me ;
 He owns the angry mighty Bull,—blest Perun-turrai's Lord ;
 The Brāhman used to me wiles I know not,—O Beam divine !

And are there other sin-destroyers, say ! in this wide world ?
 Ent'ring me too, He made me His, melting my very bones !
 He bound me fast, O joy ! Lord, Who in Perun-turrai dwells,
 He fills my mind, in eye enshrin'd, midmost in every word !

Ye who are freed from clinging ties, cling ye where man should
cling !

If ye desire the blissful goal to reach, swift hasten on !
Learn ye the glory of the King, Who crowned with braided lock
In Perun-turrai dwells ; join ye with those who cherish there
His foot !

Foulness that heaves like billows of the sea He all destroy'd ;
My soul and body enter'd,—tills, and quits no more. He Who
In Perun-turrai dwells, with crown of spreading braided locks,
Wreath'd with the moon's bright beams, our Lord Supreme,
This is His wile !

Glory I ask not ; nor desire I wealth ; not earth or heaven I crave ;
I seek no birth or death ; those that desire not Çivan nevermore
I touch. I've reach'd the foot of sacred Perun-turrai's King,
And crown'd myself ! I go not forth ! I know no going hence again !

Lines : 1 - 56

35

அச்சப்பத்து

अचप्पत्तु

ஆனந்தம் உறுதல்

आनन्दम् उरुदल्

593. புற்றில்வாள் அரவும் அஞ்சேன்
பொய்யார்தம் மெய்யும் அஞ்சேன்
சுற்றைவார் சடைஎம் அண்ணல்
கண்ணுதல் பாதம் நண்ணி
மற்றும்ஓர் தெய்வந் தன்னை
உண்டென நினைந்தெம் பெம்மாற்
சுற்றிலா தவரைக்கண்டால்
அம்மநாம் அஞ்சு மாறே!

1

593. पुद्गिल् वाळरवुम् अञ्जेन्
पाय्यर् तम् संयुम् अञ्जेन्
कद्रैवार् चडै एम् अण्णल्
कण्णुदल् पादम् नणिण
मदरुमोर् तय्वम् तन्नै
उण्डेन निनैन्दम् पंम्मार्
कद्रिला दवरैक्कण्डाल्
अम्म नामञ्जुमारे !

(திருமுரே ஆட - 35 பங்கி 1-8)

35

भीति-दशक

आनन्द निमग्नता

593. भय नहीं है मुझे
बिल में निवसित नागसर्प से
डरूँगा नहीं मिथ्याभाषियों के सत्यभाषण से
किंतु डरता हूँ ऐसे जन को देखकर
जो विचार करते हैं
कि सघन जटा के धनी
भालनेत्र प्रभु परमेश्वर के अतिरिक्त
कोई देवता हो सकता है
ऐसे अज्ञानी पामर जन को देखकर
हंत ! मैं भीत-भीत हो जाता हूँ।

(तिरुमुरै आठ - 35 पंक्ति 1-8)

784 தமிழ் சீவமக்த கவி மாணிக்ஷாசகர கீத திருவாசகம்

594. வெருவரேன் வேட்கை வந்தால்
வினைக்கடல் கொளினும் அஞ்சேன்
இருவரால் மாறு காணா
எம்பிரான் தம்பி ரானாம்
திருவுரு அன்றி மற்றோர்
தேவரெத் தேவ ரென்ன
அருவரா தவரைக் கண்டால்
அம்மநாம் அஞ்சு மாறே !

2

594. वरुवरेन् वेदकै वन्दाल्
विनैक्कडल् काळिनुमञ्जेन्
इरुवराल் மாறு காணா
ஐம்பிரான் தம்பி ரானாம்
திருவூருவந் மறோர்
தேவர் எத் தேவர் என்ன
அருவரா தவரைக் கண்டால்
அம்ம நாம் அஞ்சு மாறே !

(திருமுறை ஆட -35 பங்கித் 9-16)

595. வன்புலால் வேலும் அஞ்சேன்
வனைக்கையார் கடைக்கண் அஞ்சேன்
என்பெலாம் உருக நோக்கி
அம்பலத் தாடு கின்ற
என்பொலா மணியை ஏத்தி
இனிதருள் பருக மாட்டா
அன்பிலா தவரைக் கண்டால்
அம்மநாம் அஞ்சு மாறே !

3

595. वन्पुलाल् वेलुमञ्जेन्
वळैक्कैयार् कडैक्कण् अञ्जेन्
ऐन्पलामुरुग नोविक
अम्बलत्ताडुकिन्
ऐन् पाला मणियै एत्ति
इनिदरुळ् परुगमाट्टा
अन्बिलादवरैक् कण्डाल्
अम्म नामञ्जुमारै !

(திருமுறை ஆட -35 பங்கித் 17-24)

594. भय नहीं खाऊँगा

यदि हावी हो जाए काम और सांसारिक इच्छाएँ
 डरूँगा नहीं फँसना पड़े
 कर्म-बंधन के पाश में
 किंतु जब देखता हूँ ऐसे जन को
 जो विष्णु विरिचि के लिए भी अज्ञात
 देवाधिदेव महादेव प्रभु को छोड़कर
 अन्य किसी दैवत को खोजते हैं
 ऐसे मतिहीन जन को देखकर
 हंत ! भीत-भीत हो जाता हूँ मैं।

(तिरुमुरै आठ - 35 पंक्ति 9-16)

595. भय नहीं खाता वर्छी-बल्लम से

जिससे लिपटा हो पशु का मांस
 डरूँगा नहीं कनक बलय शोभित
 कोमलांगी के कटाक्षपात से
 किंतु जब देखता हूँ ऐसे जन को
 जिनके मन में प्रीति नहीं है लवलेश भी
 अक्षत महार्ध मणितुल्य मेरे नाथ से
 जो नृत्यरत है तिल्लै चिदंबरम् में
 मुझे निहारते हुए वर्षा करते हैं अनुग्रह की
 पिघल कर द्रवीभूत हो जाता हूँ तब
 ऐसे जड़ तुल्य जन को देखकर
 हंत ! भीत-भीत हो जाता हूँ मैं।

(तिरुमुरै आठ - 35 पंक्ति 17-24)

786 தமிழ் சீவமக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

596. கிளியனார் கிளவி அஞ்சேன்
அவர்கிறி முறுவல் அஞ்சேன்
வெளியநீ றாடும் மேனி
வேதியன் பாதம் நண்ணித்
துளியுலாம் கண்ண ராகித்
தொழுதழு துள்ளம் நெக்கிங்கு
அளியிலா தவரைக் கண்டால்
அம்மநாம் அஞ்சு மாறே !

4

596. கிளியனார் கிளவி அஞ்ஜென்
அவர் கிரி முருவலஞ்ஜென்
வீகிய நீராடும் மெனி
வேதியன் பாதம் நண்ணித்
துளியுலாம் கண்ணராசித்
தாக்கு டுக்கு டுக்கு நவிகுடி
அவியிலா தவரைக் கண்டால்
அம்ம நாம் அஞ்ஜுமாரே !

(திருமுரே ஆட -35 பவ்தி 25-32)

597. பிணியெலாம் வாரினும் அஞ்சேன்
பிறப்பினோ டிறப்பும் அஞ்சேன்
துணிநிலா அணியி னான்தன்
தொழும்ப ரோடமுந்தி அம்மால்
திணிநிலம் பிளந்துங் காணாச்
சேவடி பரவி வெண்ணீறு
அணிகிலா தவரைக் கண்டால்
அம்மநாம் அஞ்சு மாறே !

5

597. பிணியிலாம் வரினும் அஞ்ஜென்
பிரிபினோ டிரபுஞ்ஜென்
துணி நிலாவணியினான் தன்
தாக்கு ம்வரோட்கு டு அம்மால்
திணி நிலம் பிண்குடும் காணாச்
சேவடி பரவி வண்ணிர்
அணிகிலா தவரைக் கண்டால்
அம்ம நாம் அஞ்ஜுமாரே !

(திருமுரே ஆட -35 பவ்தி 33-40)

596. भय नहीं खाता

शुकी सम मंजुवैनी से
 डर नहीं उनकी वंचक मुस्कान से भी
 किंतु डरता हूँ ऐसे जन से
 जो प्रेमाभक्ति से रहित होते हैं
 जो नमन करते नहीं वेदवंदित नाथ चरणों पर
 जो अश्रु बहाते नहीं भक्तिभाव से विह्वल होकर
 भस्मोद्धूलित परमेश्वर के ध्यान में
 कलपते नहीं प्रेम-पीड़ा में
 रो-रोकर द्रवित होता नहीं अंग-अंग
 ऐसे प्रेम विहीन जन को देखकर
 हंत ! भीत भीत हो जाता हूँ मैं।

(तिरुमुरै आठ - 35 पंक्ति 25-32)

597. भय नहीं खाता मैं

ग्रसित हो जाऊँ रोग-बाधा से
 डरूँगा नहीं बारंबार
 जनम-मरण के आवर्तन से
 किंतु डरता हूँ ऐसे जन को देखकर
 जो एकाकार होकर मिलते नहीं भक्तमंडली में
 महिमा समझते नहीं नाथ की
 जिनके दर्शन के लिए महाविष्णु ने
 धरती फाड़ फाड़कर नीचे जाकर ढूँढा था
 पर देख नहीं पाए थे
 डरता हूँ मैं उनसे
 धारण करते नहीं पावन भस्म को
 ऐसे जन को देखकर
 हंत ! भीत-भीत हो जाता हूँ मैं।

(तिरुमुरै आठ - 35 पंक्ति 33-40)

788 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

598. வாளுலாம் எரியும் அஞ்சேன்
வரைபுரண் டிடினும் அஞ்சேன்
தோளுலா நீற்றன் ஏற்றன்
சொற்பதம் கடந்த அப்பன்
தாளதா மரைக ளேத்தித்
தடமலர் புனைந்து நையும்
ஆளலா தவரைக் கண்டால்
அம்மநாம் அஞ்சு மாறே !

6

598. வாழுலாமீரியுமீ அழுஜேந்
வரீபுரழிழிழினுமீ அழுஜேந்
தோழுலா நீழுநீழுந்
சார்பீழுமீ கழுழுழு அழுழுந்
தாழு தாமரீரீரீரீரீரீ
தழுமலர் புநீநு நீயுமீ
அழுலாழுதவரீரீரீ கழுழுழு
அழுமீ நாமீ அழுழுமாரீ !

(திருமூரீ ஆட - 35 பங்கித 41-48)

599. தகைவிலாப் பழியும் அஞ்சேன்
சாதலை முன்னம் அஞ்சேன்
புகைமுகந் தொகை வீசிப்
பொலிந்தஅம் பலத்து ளாடும்
முகைநகைக் கொன்றை மாலை
முன்னவன் பாதமேத்தி
அகம்நெகா தவரைக் கண்டால்
அம்மநாம் அஞ்சு மாறே !

7

599. தரீவிலாப் பழியுமீஅழுஜேந்
சாழுதலீ முந்நமீ அழுஜேந்
புரீரீமுரீ தரீரீரீ வீசிப்
பாலிந்ந அழுந்நுழுழுழு
முரீ நரீரீரீ கரீந்நீரீமாலீ
முந்நவந் பாழுமேதி
அரீந்நீரீரீதவரீரீரீ கழுழுழு
அழுமீ நாமீ அழுழுமாரீ !

(திருமூரீ ஆட - 35 பங்கித 49-56)

598. भय खाता नहीं धधकती वह्निज्वाल से
 डरूँगा नहीं भले ही गिर जाएँ पहाड़ टूट कर
 किंतु जब देखता हूँ ऐसे जन को
 जिन के मन में प्रेमासक्ति नहीं है
 भस्मोद्धूतिम परमेश्वर के कमल निभ चरणों पर
 वृषभारूढ़ परात्पर प्रभु पर
 शब्द और अर्थ से परे विराजे
 प्रभु-चरणों पर जो वंदना नहीं करते
 कमल सरिस सुमन चढ़ाते नहीं
 उन चरणों पर शीर्ष रखते नहीं
 ऐसे जड़ तुल्य जन को जब देखता हूँ
 हंत ! भीत-भीत हो जाता हूँ मैं।

(तिरुमुरै आठ - 35 पंक्ति 41-48)

599. भय नहीं खाता अन्यायपूर्ण आरोपों से
 कभी का छोड़ चुका हूँ मृत्युभय को
 किंतु जब देखता हूँ ऐसे जन को
 जिनका हृदय द्रवित होता नहीं
 तरसता नहीं आदिदेव परमेश्वर के
 चरण कमलों की वंदना के लिए
 जो नृत्यरत हैं आनंद से
 तिल्लै चिदंबरम् के धाम में
 करतल पर धधक रही वह्निज्वाल
 विलसित है बदन पर मंदहास
 डोल रही है जटामुकुट पर 'कोन्नै' माल
 ऐसे महिमामय के चरण पर
 जो प्रणत नहीं होते उन्हें देखकर
 हंत ! भीत-भीत हो जाता हूँ मैं।

(तिरुमुरै आठ - 35 पंक्ति 49-56)

790 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

600. தறிசெறி களிறும் அஞ்சேன்
தழல்விழி உழுவை அஞ்சேன்
வெறிகமழ் சடையன் அப்பன்
விண்ணவார் நண்ண மாட்டாச்
செறிதரு கழல்க னேத்திச்
சிறந்தினி திருக்க மாட்டா
அறிவிலா தவரைக் கண்டால்
அம்மநாம் அஞ்சு மாறே !

8

600. तरि चरि कळिरुमञ्जेन्
तळल् विळि उळ्ळुवैयञ्जेन्
वरिकळल् चडैयनप्पन्
विण्णवर् नण्णमाट्टाच्
चरितरुकळल्गळ् एत्तिच्
चिरन्दिनि दिरुक्क माट्टा
अरिविलादवरैक् कण्डाल्
अस्म नाम् अञ्जुमारै !

(तिरुமுரै आठ - 35 पंक्ति 57-64)

601. மஞ்சலாம் உருமும் அஞ்சேன்
மன்னரோ டுறவும் அஞ்சேன்
நஞ்சமே அமுத மாக்கும்
நம்பிரான் எம்பி ரானாய்ச்
செஞ்செவே ஆண்டு கொண்டான்
திருமுண்டம் தீட்ட மாட்டா
தஞ்சுவா ரவரைக் கண்டால்
அம்மநாம் அஞ்சு மாறே !

9

601. मञ्जुलाम् उरुमुमञ्जेन्
मन्नरोडुरवुम् अञ्जेन्
नञ्जमे अमुदमाक्कुम्
नम्पिरान् ऐम्पिरानाय्च्
चञ्जव् आण्डु कोण्डान्
तिरुमुण्डम् தீட்டமாட்டா
தஞ்ஜுவாரவரैக் கண்டால்
அஸ்ம நாம் அஞ்ஜுமாரை !

(திருமுரै आठ - 35 पंक्ति 65-72)

600. भय नहीं खाता सांकलों को
 धड़ाधड़ तोड़ते कुंजरोँ से
 डरूँगा नहीं डरावने व्याघ्र से भी
 किंतु ऐसे जन को देखकर
 जो आसक्त नहीं होते
 जटाजूट के सुरभित चरणकमल पर
 ऐसे चरण जो दुर्लभ हैं देवगण के लिए भी
 इन चरणों पर प्रणत होकर
 नित्यानंद पाने की आसक्ति नहीं होती
 ऐसे जड़मति जनों को देखकर
 हंत ! भीत-भीत हो जाता हूँ मैं।

(तिरुमुरै आठ - 35 पंक्ति 57-64)

601. भय नहीं खाता मेघ-गर्जन से
 डरूँगा नहीं नृपति के नैकट्य से भी
 किंतु जब देखता हूँ ऐसे जन को
 जो आसक्त नहीं होते हमारे नाथ पर
 विषपान किया था जिसने जगत्-त्राण के हित
 प्रेम से परिपालन करते हैं सकल भुवन को
 ऐसे महिमामय परमेश्वर का त्रिपुंड्र
 धारण करने से जो डरते हैं
 ऐसे कदर्य जन को देखकर
 हंत, भीत-भीत हो जाता हूँ मैं।

(तिरुमुरै आठ - 35 पंक्ति 65-72)

792 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கீத திருவாசகம்

602. கோணிலா வாளி அஞ்சேன்
கூற்றுவன் சீற்றம் அஞ்சேன்
நீணிலா அணியி னானை
நினைத்துநைந் துருகி நெக்கு
வாணிலாங் கண்கள் சோர
வாழ்த்திநின் றேத்த மாட்டா
ஆணலா தவரைக் கண்டால்
அம்மநாம் அஞ்சு மாறே!

10

602. कोणिला वाळियञ्जेन्
कूट्रुवन् चीट्रम् अञ्जेन्
नीणिला अणियिनानै
निनैन्दु नैन्दुरुगि नक्कु
वाणिलाम् कण्गळ् चोर
वाळ्ति निन्ने तमाट्टा
आणलादवरैक् कण्डाल्
अम्म नाम् अञ्जुमाऱे !

(तिरुमुरै आठ - 35 पंक्ति 73-80)

602. भय नहीं खाता घातक असिधार से
 डरूँगा नहीं मृत्यु के प्रकोप से भी
 किंतु जब देखता हूँ ऐसे पौरुषहीन को
 जो कर नहीं सकते स्तवन
 चंद्रशेखर प्रभु का, हमारे नाथ का
 ध्यान करके प्रभु चरणों का
 जिनके नयन अश्रु बहाते नहीं
 जिनकी अस्थियाँ गल कर द्रवित होती नहीं
 ऐसे नपुंसक जन को देखकर
 हंत ! भीत-भीत हो जाता हूँ मैं।

(तिरुमुरै आठ - 35 पंक्ति 73-80)



स्रोत : पाथवे दू गोंड थू द तिरुवाचकम् - जी. वनमीकनाथन्

Source : Pathway to God through the Tiruvacagam by
G. Vanmikanathan

The snake living in the ant-hill I will not fear ;
the false one's (pseudo) "truths" I will not fear.
Only if I see those who,
thinking that there is probably another god,
even after arriving at the feet
of our supremely great One
of thick-set long matted locks —
the One with an eye in the forehead —
are not devoid of any attachment
other than to our great Lord,
Ah me ! it is then that we are frightened.

Fear I will not, if desire rises in me ;
even if the sea of karma were to engulf me,
I will not fear.
But if I see those who do not get disgusted,
saying : "What kind of god is any god
other than our Lord of sacred form —
He Who is the Lord unto Himself,
He who was not seen by the disputatious two"—
Ah me ! it is then that we are frightened.

The mighty lance with flesh clinging to it,
I will not fear ;
the glance through the corner of the eye
by bangled women I will not fear ;
but if we see the loveless ones
who do not adore my uncut Gem —
Who dances on the stage (in Thillai),
looking at me. and making all my bones melt —
and sweetly drink in His grace,
Ah me ! it is then that we are frightened.

Parrot-like prattle of women I will not fear ;
their crafty smile I will not fear.
But if I see those devoid
of the ripeness of devotion to approach the feet
of the Veda's Lord of body bathed in white ash,
and, becoming persons with teardrop - quivering eyes,
worship, weep and thaw in their minds,
Ah me ! it is then that we are frightened.

Even if diseases all were to come upon me
I will not fear ;
birth along with death I will not fear.
But if we see those who
do not get steeped in bliss along with devotees of Him
Who wears the fragmentary moon,
and wear the white-ash (on their bodies),
praising all the while His rosy feet,
which that (famed) Vishnu,
even by splitting open the hard earth,
could not see,
Ah me ! it is then that we are frightened.

Lines : 1 - 40

36

திருப்பாண்டிப் பதிகம்

திருப்பாண்டிப் பதிகம்

சிவானந்த விளைவு

சிவானந்த விளைவு

603. பருவரை மங்கைதன் பங்கரைப்
 பாண்டியற் காரமுதாம்
 ஒருவரை ஒன்று மிலாதவரைக்
 கழற்போ திறைஞ்சித்
 தெரிவர நின்றுருக் கிப்பரி
 மேற்கொண்ட சேவகனார்
 ஒருவரை யன்றி உருவறி
 யாதென்றன் உள்ளமதே!

1

603. பருவரே மङ्‌கைத் தன் பங்கரேப்
 பாண்டியர்கா முதாம்
 ஆருவரே ஆந் மிலாதவரேக்
 கழற் போதிர் ஐஜத்
 தெரிவரநிந் டுருவிகப்
 பரிமெல் காண்ட சேவகநார்
 ஆருவரே யந் டுருவரி
 யாத்ந்ந் தனுஷ்மதே!

(திருமூரே ஆட - 36 பதிவு 1-8)

36

पांड्य-भूमि दशक

शिवानन्द समृद्धि

603. हिमगिरि तनया उमा को
वामभाग में धरे सुंदरेश
अमृत निभ मधुरिम हैं पांड्यराज के लिए
ऐसे एकैक नायक प्रभु
निर्गुण निरामय परमेश्वर
अश्वारूढ़ होकर प्रकट हुए
मुझे धन्य बना दिया चित्त को पिघलाकर
ताकि मैं स्तवन करूं नूपुर-शिंजित चरणों का।

(तिरुमुरै आठ -36 पंक्ति 1-8)

604. சதுரை மறந்தறி மால்கொள்வர்
 சார்ந்தவர் சாற்றிச் சொன்னோம்
 சுதிரை மறைத்தன்ன சோதி
 சுழுக்கடை கைப்பிடித்துக்
 குதிரையின் மேல்வந்து கூடிடு
 மேற்குடி கேடுகண்மர்
 மதுரையர் மன்னன் மறுபிறப்
 போட மறித்திடுமே!

2

604. चतुरै मरन्तारि माल्काव्वर्
 चान्दवर् चाट्टिच् चान्नोम्
 कदिरै मरैतन्न चोति
 कळुक्कडै कैप्पिटितुक्
 कुतिरैयिन् मेल् वन्दु कूडिडु
 मेळुडि केडु कण्डीर
 मदुरैयर् मन्नन् मरुपिरप्
 पोड मरित्तिडुमे !

(திருமூரே ஆட - 36 பங்கி 9-16)

605. நீரின்ப வெள்ளத்துள் நீந்திக்
 குளிக்கின்ற நெஞ்சங்கொண்மர்
 பாரின்ப வெள்ளங் கொளப்பரி
 மேற்கொண்ட பாண்டியனார்
 ஓரின்ப வெள்ளத் துருக்கொண்டு
 தொண்டரை உள்ளங்கொண்டார்
 பேரின்ப வெள்ளத்துட் பெய்கழ
 லேசென்று பேணுமினே!

3

605. नीरिन्व वळ्ळत्तुळ् नीन्दिक्
 कुळिविक्कन् नञ्जम् காண்டீர்
 पारिन्व वळ्ळम् காळப்பரி
 मेர்காண்ட पाण्डियनார்
 ओरिन्व वळ्ळत्तुरुवकाण्डு
 தாண்டரே உல்கம் காண்டார்
 பேரிந் வல்கத் ப்ய்கல
 லேய்நு பேனுமினே !

(திருமூரே ஆட - 36 பங்கி 17-24)

604. कहूँगा मैं डंके की चोट पर
 कि जो अपनाते हैं शिव-सन्मार्ग को
 भूल जाते हैं भवबंधन के भ्रमजाल को
 जो पा गए दर्शन प्रभु के
 जाज्वल्यमान ज्योतिरूप में प्रकट हुए थे
 हाथ में शोभित था त्रिशूल
 आरूढ़ थे अपने अश्व पर
 इस दृश्य को जिसने भी देखा
 मुक्त हो गया भव-बंधन से
 जनन-मरण के चक्र से
 मदुरै के अधीश पांड्यराज को
 दर्शन मिल गया इस झांकी का
 इसलिए मुक्त है वह जन्म-मरण से।

(तिरुमुरै आठ - 36 पंक्ति 9-16)

605. भक्त-जन तुम सब आ जुटे हो
 आनंद-वारिधि में निमग्न होने के लिए
 पधारे हैं सुंदरेश प्रभु पांड्यराज
 अश्वारूढ़ होकर जिससे
 परमानंद-सागर भर जाए अग-जग में
 आए हैं भक्तजन के चित्त लेने के लिए
 चलो इस परमानंदसागर में
 रमने के लिए नूपुर-शिंजित चरणों पर।

(तिरुमुरै आठ - 36 पंक्ति 17-24)

800 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

606. செறியும் பிறவிக்கு நல்லவர்
செல்லன்மின் தென்னன்நன்னாட்
டிறைவன் கிளர்கின்ற காலமிக்
காலம்எக் காலத்துள்ளும்
அறிவொண் சுதிர்வான் உறைகழித்
தானந்த மாக்கடவி
எறியும் பிறப்பை எதிந்தார்
புரள இருநிலத்தே!

4

606. चरियुम् पिरविकु नल्लवर्
चल्लन्मिन् तन्नन् नन्नाट्ट
इरैवन् किळर्गिन् कालम्
इक्कालम् ऐक्कालत्तुळ्ळुम्
अरिवाण् कदिर्वाळ्ऱै कळित्
तानन्द माक्कडवि
ऐरियुम् पिरप्पै ऐदिन्दार्
पुरळ इरुनिलत्ते !

(திருமூரே ஆட -36 பங்கித் 25-32)

607. காலமுண் டாகவே காதல்செய்
துய்ம்மின் சுருதரிய
ஞாலமுண் டானொடு நான்முகன்
வானவர் நண்ணரிய
ஆலமுண் டான்எங்கள் பாண்டிப்
பிரான்தன் அடியவர்க்கு
மூலபண் டாரம் வழங்குகின்
றான்வந்து முந்துமினே!

5

607. कालमुण्डागवे कादल् चयदु
उय्मिन् करुदरिय
जालमुण्डानाडु नान्मुगन्
वानवर् नण्णरिय
आलमुण्डान् ऐङ्गळ् पाण्डिप्
पिरान् तन्नडियवक्कु
मूलपण्डारम् वळङ्गुळिन्नान्
वन्दु मुन्दुमिने !

(திருமூரே ஆட -36 பங்கித் 33-40)

606. प्रिय नहीं है सद्भवत्तों को
 वर्धित करना जन्म-मरण की शृंखला
 चलो विराजे हैं दक्षिणेश प्रभु
 यही समय अच्छा है सब काल से
 पधारे हैं प्रभु पांड्यदेश में
 शत्रुओं के संहार के लिए
 अश्व पर आरुढ़ होकर
 म्यान से उठा रहे हैं उज्ज्वल करवाल
 ज्ञान का करवाल
 ध्वस्त कर देंगे उन भक्तजनों के
 सकल जनन-मरण समूह को।

(तिरुमुरै आठ - 36 पंक्ति 25-32)

607. जग के निवासियो !
 समय रहते प्रेमासक्ति से
 प्राप्त कर लो उद्धार
 प्रभु परमेश्वर जो अज्ञेय रहे अदृश्य रहे
 माटी का अशन करते विष्णु
 और ब्रह्मलोक के निवासी विरिंचि के लिए
 ऐसे महादेव हलाहलपायी हमारे नाथ ने
 खोल रखा है अनुग्रह का असीम भंडार
 अपने भक्तजन के लिए
 त्वरा से आकर लूट लो।

(तिरुमुरै आठ - 36 पंक्ति 33-40)

802 தமிழ் சைவமக்த கவி மாணிகவாசகர் கீத திருவாசகம்

608. ஈண்டிய மாயா இருள்கெட
எப்பொரு ளும்விளங்கத்
தூண்டிய சோதியை மீனவ
னுஞ்சொல்ல வல்லன் அல்லன்
வேண்டிய போதே விலக்கிலை
வாய்தல் விரும்புமின்தாள்
பாண்டிய னாரருள் செய்கின்ற
முத்திப் பரிசிதுவே!

6

608. इण्डिय माया इरुक् कंड
एँपारुळुम् विळङ्गत्
तूण्डिय चोतियै मीनव
नुम्चाल्ल वल्लन् अल्लन्
वेण्डिय पोदे विलविकलै
वाय्दल् विरुम्बुमिन्नाल्
पाण्डियनारुळ् चंय्गिन्
मुत्तिप् परिशिदुदे !

(तिरुமுரै आठ - 36 पंक्ति 41-48)

609. மாயவ னப்பரி மேல்கொண்டு
மற்றவர் கைக்கொளலும்
போயறும் இப்பிறப் பென்னும்
பகைகள் புகுந்தவருக்கு
ஆய அரும்பெருஞ் சீரடைத்
தன்னரு ளே அருளுஞ்
சேய நெடுங்கொடைத் தென்னவன்
சேவடி சேர்மின்களே!

7

609. मायवनप् परिमेलकाण्डु
मद्रवर् कैवकाळुम्
पायर्म् इप्पिरप्पन्नुम्
पगैगळ् पुगुन्दवरुक्कु
आय अरुम्पर्म् चीरुडैत्
तन्नरुळे अरुळुम्
चेय नडुम् काडैत्तन्नवन्
चेवडि चेर्मिन्गळे !

(तिरुमुरै आठ - 36 पंक्ति 49-56)

608. ध्वस्त हुआ अज्ञान का तमस
 सब कुछ स्पष्ट हो गया हस्तामलकसम
 ज्ञानज्योति के प्रदीप्त होने पर
 चमत्कार सा घटित हुआ
 व्याख्यायित न कर पाए
 मत्स्य चिह्नधारी ध्वज वाले
 स्वयं पांड्यराज भी
 अक्षय अनुग्रह की निधि है
 जब चाहो पा सकते हो
 अबाध रूप से
 लूट ले जो चाहे जितना चाहे
 मुक्तिदाता सुंदरेश प्रभु पांड्यदेव का
 अनुग्रह अपरंपार है।

(तिरुमुरै आठ - 36 पंक्ति 41-48)

609. मायामय अश्व पर आरूढ़ होकर
 पधार रहे प्रभु को देखने मात्र से
 भाग खड़े होंगे जनन-मरण के रिपुगण
 समाप्त हो जाएँगे निःशेष ही
 इसलिए त्वरा से चलो
 पहुँच कर ग्रहण कर लो
 दक्षिणेश प्रभु के अरुणिम चरणयुगल
 चरण जो वर्षित करते हैं
 अमूल्य महार्घ वरदान
 अत्यंत औदार्य से उन भक्तों को
 जो शरण लेते हैं इन चरणों पर।

(तिरुमुरै आठ - 36 पंक्ति 49-56)

804 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

610. அழிவின்றி நின்றதோர் ஆனந்த
வெள்ளத் திடையழுத்திக்
கழிவில் கருணையைக் காட்டிக்
கடிய வினையகற்றிப்
பழமலம் பற்றறுத் தாண்டவன்
பாண்டிப் பெரும்பதமே
முழுதுல குந்தரு வான்கொடை
யேசென்று முந்துமினே!

8

610. अङ्गिविन्नि निन्दोर् आनन्द
वङ्गत्तिडै यङ्गुत्तिक्
कङ्गिविल् करुणैयैक् काट्किक्
कडिय विनैयकट्टिप्
पङ्गमलम् पट्टरुत्ताण्डवन्
पाण्डिप् पंरुम्पदमे
मुङ्गुदुलगुम् तरुवान् काडै
येचन्ऱ मुन्दुमिने !

(திருமூரே ஆட -36 பங்கி 57-64)

611. விரவிய தீவினை மேலைப்
பிறப்புமுந் நீர்கடக்கப்
பரவிய அன்பரை என்பருக்
கும்பரம் பாண்டியனார்
புரவியின் மேல்வரப் புந்திகொ
ளப்பட்ட பூங்கொடியார்
மரவியன் மேல்கொண்டு தம்மையுந்
தாம்அறி யார்மறந்தே!

9

611. विरविय तीविनै मेलैप्
पिरप्पु मुन्नीक्कडक्कप्
परविय अन्वरै एन्पुरुक्
कुम्परम् पाण्डियनार्
पुरवियिन् मेल्वरप् पुन्दिको
कप्पट्ट पूङ्काडियार्
मरवियन् मेर्काण्डु तम्मैयुम्
तामरियार् मरन्दे !

(திருமூரே ஆட -36 பங்கி 65-72)

610. बरसाते हुए अक्षय कृपा और अनुग्रह
 अनंत आनंद में निमग्न किया हमें
 शाश्वत मुक्ति के आनंद-सागर में
 निमज्जित किया था
 काटते हुए जनन-मरण का बंधन
 और पुराने त्रिमल,
 प्रदान करेंगे हमें उच्च पद
 पांड्यदेश का आधिपत्य ही नहीं,
 सकल भुवन का आधिपत्य भी
 इसलिए त्वरा से पहुँचें
 प्रभु के सन्निधान में पाने को वरदान।

(तिरुमुरै आठ -36 पंक्ति 57-64)

611. जन्म जन्मांतरों से संचित कर्म
 फैला हुआ सागर सम चतुर्दिक्
 तरण करने तरसते भक्तगण
 आ जुटे विनती करते हुए
 अहह ! पधारे परम-पांड्यराज सुंदरेश प्रभु
 अश्वारूढ़ होकर उनके सामने
 प्रभु-दर्शन से सुधबुध भूल गई
 धन्य-आत्मा सकल भक्तगण
 मन बुद्धि करण निज वश में नहीं रहे
 स्तब्ध होकर खड़े रह गए तरुवर समूह से
 स्वयं को भूलकर।

(तिरुमुरै आठ -36 पंक्ति 65-72)

806 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

612. கூற்றைவென் றாங்கைவர் கோக்களை
யும்வென் றிருந்தழகால்
வீற்றிருந் தான்பெருந் தேவியுந்
தானும்ஓர் மீனவன்பால்
ஏற்றுவந் தாகுமி குண்ட
திறலொற்றைச் சேவகனே
தேற்றமி லாதவர் சேவடி
சிக்கெனச் சேர்மின்களே !

10

612. கூடீ வ்நாடீவீர் கோக்கை
யுமீ வ்நிருந்நகால்
வீட்நிருந்நாந் ப்ருந்நெவியுமீ
தானுமீர் மீனவந்பால்
ஏடீருந்நாநிருந்ந
திரலாந்நீர் சேவகநே
தோந்நிருந்நாந் சேவடி
சிக்கெந்ந சேர்மிந்நகல் !

(திருமுரே ஆட -36 பங்கி 73-80)

612. मृत्युञ्जय हैं जीत चुके हैं पंचेंद्रिय
शील सौंदर्य से
पधारे मां पराशक्ति के संग
वृषभारूढ़ होकर
मीनकेतन पांड्यराज के सामने
और स्वयं संहार किया शत्रुदल का
हे अस्थिर चित्त वालो, चलो
गह लो दृढ़ता से
ऐसे महिमामय नाथ के अरुणिम चरणों को।

(तिरुमुरै आठ - 36 पंक्ति 73-80)



808 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - टी. एन. रामचन्द्रन्

Source : Tiruvaachakam by T.N. Ramachandran

As the time for salvation abounds, love Him and stand
 Redeemed. He is our God of the Paandya Realm,
 The One who ate the Halaahalaa, who is inaccessible
 To the Devas, the Four-Faced and the inconceivably
 Glorious one the devoured the earth. He, the source
 Original of Wealth, gives munificently to His
 Servitors Lo, foregather in all celerity.

For the death of the deathless darkness dense and for
 The splendorous revelation of all things,
 He induces the light of understanding. Lo, even
 The Paandya whose flag sports the signum of fish
 Is not valiant enough to speak of this. Lo, there is
 No bar to reach Him if the will is strong.
 Foster love for His feet. Thus indeed, Siva yclept
 Paandya, grants the guerdon of deliverance.

As He rode on the stallion of gramarye, others
 Were enchanted by Him. Unto them that seek Him,
 The foes of repetitive births will perish ; to them He gives
 His own glorious grace – rare, great and ever-during.
 Lo, reach the salvific feet of the Southerner,
 The One of ever-abounding munificence.

He immersed me in the flood of bliss that enures
 Endless, linked me with inseparable mercy,
 Removed my cruel Karma, snapped my hoary
Aanava mala, and thus redeemed me and ruled me.
 He will confer not only the great lordship over the Paandya Realm
 But the whole world. Hasten to gain His gift.

When devotees hail Him to help them cross the sea –
 Formed of triple waters –, of cruel Karma which
 Causes future birth, the Supernal Paandya melts
 Their bones, As He came riding on a charger,
 Damsels like unto flowery lianas, forfeited of their
 Buddhi stood like trees, their senses rapt,
 And wholly oblivious of themselves.

Having conquered Death and the pentad of Kings –
 The senses –, He with His great Consort sat
 Wondrously in splendour. He is the valiant and peerless
 Hero – who, for the sake of the Paandya whose flag
 Sports the signum of fish, did away with the lives
 Of his foes. O ye of wavering mind !
 Fare forth and hold fast His salvific feet.

Lines : 36 - 80

37

பிடித்தபத்து

पिडित्तपत्तु

முத்திக் கலப்பு

मुत्ति कलप्पु

613. உம்பர்கட் சுரசே ஒழிவற நிறைந்த
யோகமே ஊற்றையேன் தனக்கு
வம்பெனப் பழுத்தென் குடிமுழு தாண்டு
வாழ்வற வாழ்வித்த மருந்தே
செம்பொருட் டுணியே சீருடைக் கழலே
செல்வமோ சிவபெரு மானே
எம்பொருட் டுண்ணைச் சிக்கெனப் பிடித்தேன்
எங்கெழுந் தருளுவ தினியே?

1

613. उम्बर्गट्करशो आंढिवर निरैन्द
योगमे ऊत्तै ऐन् तनक्कु
वम्बनप् पळुत्तन् कुडि मुळु दाण्डु
वाळ्वर वाळ्वित्त मरुन्दे
चम्पारुळ् तुणिवे चीरुडैक् கळலே
चत्वमे शिवपरुमाने
ऐम्பார்ட்டுன்னैச் சிவகன்னப் பிடித்தேன்
எஃங்கு ன்ருளுவதினியே?

(திருமுரே ஆட - 37 பங்கி 1-8)

कसकर पकड़ना

मुक्ति-मिलन

613. अमरगणों के अधीश्वर ! अग-जग में
 सर्वत्र अंतराय बिन परिव्याप्त योगानन्द !
 भवरोग-ग्रस्त मेरे उद्धार के हित
 आए तुम समय के पूर्व ही
 परिपक्व औषधि-फल बनकर
 और तार दिया मेरे वंश-कुल को
 काट कर मुझे जग-जीवन से
 लगा लिया शाश्वत जीवन के मोक्ष लोक में
 सार्थक हो अन्वर्थ हो निज नाम के
 हे शिवराज ! कमनीय हैं तुम्हारे चरण
 मेरे अक्षयनिधि परमेश्वर
 कस कर पकड़ लिया तुम्हें
 बोलो पधारोगे अब किस ओर।

(तिरुमुरै आठ - 37 पंक्ति 1-8)

812 தமிழ் சைவத்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

614. விடைவிடா துசந்த விண்ணவர் கோவே
வினையனே னுடையமெய்ப் பொருளே
முடைவிடா தடியேன் முத்தற மண்ணாய்
முழுப்புழுக் குரம்பையிற் கிடந்து
கடைபடா வண்ணம் காத்தெனை ஆண்ட
கடவுளே சுருணைமா கடலே
இடைவிடா துண்ணைச் சிக்கெனப் பிடித்தேன்
எங்கெழுந் தருளுவ தினியே?

2

614. विडै विडादुगन्द विण्णवर् कोवे
विनैयनेनुडैय मंयप्पारुळे
मुडै विडादडियेन् मूतर मण्णाय्
मुळ्ळु पुळ्ळुक् कुरम्बैयिर् किडन्दु
कडैपडा वण्णम् कात्तनैयाण्ड
कडवुळे करुणै माकडले
इडैविडादुन्नैच् चिक्कनप् पिडित्तेन्
ऐङ्गळ्ळुन्दरुळुवदिनिये ?

(तिरुमुரै आठ -37 पंक्ति 9-16)

615. அம்மையே அப்பா ஒப்பிலா மணியே
அன்பினில் விளைந்த ஆரமுதே
பொய்ம்மையே பெருக்கிப் பொழுதினைச் சுருக்கும்
புழுத்தலைப் புலையனேன் தனக்குச்
செம்மையே ஆய சிவபதம் அளித்த
செல்வமே சிவபெரு மானே
இம்மையே உன்னைச் சிக்கெனப் பிடித்தேன்
எங்கெழுந் தருளுவ தினியே?

3

615. अन्मैये अप्पा आपिला मणिये
अन्बिनिल् विळैन्द आरमुदे
पाय्म्मैये परुविकप् पाळ्ळुदिनैच् चुरुक्कुम्
पुळ्ळुत्तलैप् पुलैयनेन् तनक्कुच्
चन्मैये आय चिवपदमळित्त
चत्वमे शिवपरुमाने
इम्मैये उन्नैच् चिक्कनप् पिडित्तेन्
ऐङ्गळ्ळुन्दरुळुवदिनिये ?

(तिरुमुरै आठ -37 पंक्ति 17-24)

614. वृषवाहन पर सानंद विराजे
 देवाधिदेव प्रभो ! सत्यस्वरूप !
 कर्म के मारे इस लघुजन के तारक हो तुम
 पड़ा था मैं इस मर्त्य-लोक में
 कृमिकीट के संग पड़ा सड़ रहा था
 ऐसे मुझको बचा लिया तुमने
 अन्यथा बंधा रहता इस दुर्गंधपूर्ण काष्ठ से
 मेरे नाथ ! स्वामी मेरे !
 करुणा और अनुग्रह के सागर हो
 तुम खिसक न जाओ यह सोचकर
 कसकर पकड़ लिया
 बोले अब पधारोगे किस ओर।

(तिरुमुरै आठ -37 पंक्ति 9-16)

615. ओ मेरे तात-मात ! अनुपम महार्घ मणि
 प्रेमाभक्ति में उपजे मधुरिम अमृत !
 मृषामय मिथ्या में डूबकर
 वृथा कालयापन करते इस
 कीट-तुल्य नीच जन को भी
 हे मेरे नाथ ! परमेश्वर ! प्रदान करो
 कल्याणमय शिवपद !
 अक्षयनिधि मेरे शिवराज !
 अभी इसी समय कस कर पकड़ लिया
 बोलो पधारोगे अब किस ओर।

(तिरुमुरै आठ -37 पंक्ति 17-24)

4

(तिरुमुरै आठ - 37 पंक्ति 25-32)

5

(तिरुमुरै आठ - 37 पंक्ति 33-40)

616. हे अनुग्रह-आनन्द-ज्योति ! परिपक्व फल !
 तपोधनों के लिए सुलभ अमृत
 ओ सकल कलास्वरूप और उनके सार रूप !
 ओ वर्णनातीत आनन्दानुभव !
 योग में कलित आनन्द
 भक्तजनों के चित्त में
 प्रविष्ट होते आनन्द-कोष ! शिवराज !
 अंधकार से भरे स्थान में भी
 चीन्ह कर तुम्हें पकड़ लिया मैंने कसकर
 बोलो पधारोगे अब किस ओर।

(तिरुमुरै आठ - 37 पंक्ति 25-32)

617. हे अनुपम अद्वितीय स्वामी !
 एकैकनायक प्रभो ! इस जन के
 हृदय में भासमान दिव्य ज्योति !
 ओ प्रेमधन ! तुमने सर्वस्व प्रदान किया
 ज्ञानरहित गुणरहित इस जन को
 वाचामगोचर ज्योतिराट् !
 मेरे अक्षयनिधि ! शिवराज !
 थके हारे मैंने कसकर पकड़ लिया
 बोलो पधारोगे अब किस ओर।

(तिरुमुरै आठ - 37 पंक्ति 33-40)

816 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

618. அறவையேன் மனமே கோயிலாக் கொண்டான்
 டளவினா ஆனந்த மருளிப்
 பிறவிலே ரறுத்தென் குடிமுழு தாண்ட
 பிஞ்சுகா பெரியஎம் பொருளே
 திறவிலே கண்ட காட்சியே அடியேன்
 செல்வமே சிவபெரு மானே
 இறவிலே உன்னைச் சிக்கெனப் பிடித்தேன்
 எங்கெழுந் தருளுவ தினியே?

6

618. अरवैयेन् मनमे कोयिलाक् काण्डाण्
 डळविला आनन्दमरुळि
 पिरक्क वेरुत्तन् कुडि मुळ् दुण्ड
 पिञ्जका परिय एम्पारुळे
 तिरविले कण्ड काट्टियडियेन्
 चलवमे शिवपरुमाने
 इरविले उन्नैच् चिक्कनपिडित्तेन्
 एङ्गळ् न्दरुळुवदिनिये ?

(तिरुमुரै आठ - 37 पंक्ति 41-48)

619. பாசவே ரறுக்கும் பழம்பொருள் தன்னைப்
 பற்றுமா றடியனேற் கருளிப்
 பூசனை உகந்தென் சிந்தையுட் புகுந்து
 பூங்கழல் காட்டிய பொருளே
 தேகடை விளக்கே செழுஞ்சுடர் மூர்த்தீ
 செல்வமே சிவபெருமானே
 ஈசனே உன்னைச் சிக்கெனப் பிடித்தேன்
 எங்கெழுந் தருளுவ தினியே?

7

619. पाशवेरुक्कुम् पळम्पारुळ् तन्नैप्
 पट्टुमारुडियनेर्करुळिप्
 पूशनै उगन्दन् चिन्तैयुட் पुगुन्दु
 पूङ्कळल् काट्टिय पारुळे
 तेशुडै विळक्के चळ् चुडर् मूर्ती
 चल्वमे शिवपरुमाने
 ईशने उन्नैच् चिक्कनपिडित्तेन्
 एङ्गळ् न्दरुळुवदिनिये ?

(तिरुमुரै आठ - 37 पंक्ति 49-56)

618. निराश्रित होकर पड़ा था
 अनाथ अशरण में
 तुमने आकर अपनाया इस जन को
 मेरा हृदय बना तुम्हारा मंदिर
 इससे प्राप्त हुआ मुझे परम आनंद
 मैं तुम्हारा दास हूँ तुम मेरे स्वामी
 दूर हुआ मेरा जन्म-मरण का भवरोग
 प्रकट रूप में दर्शन पाया मैंने
 अद्भुत अवर्णनीय था वह दृश्य
 मेरे अक्षय निधि ! शिवराज !
 अंत में कस कर पकड़ लिया
 बोलो पधारोगे अब किस ओर।

(तिरुमुरै आठ - 37 पंक्ति 41-48)

619. नाथ मेरे ! तुमने अनुग्रह किया
 प्रेम-आसक्ति जगाई मेरे मन में
 जिससे कट गया सांसारिक पाश
 यही नहीं, प्रेम से स्वीकार किया
 मेरा पूजन और आराधन
 हृदय में प्रविष्ट होकर नाथ !
 दर्शाया सुमन सदृश चरणयुगल
 हे सारस्वरूप ! तेजोमय दीप !
 जाज्वल्यमान ज्योतिराट् !
 मेरे अक्षयनिधि ! शिवराज !
 हे मेरे ईश ! तुम्हें कसकर पकड़ लिया
 बोलो पधारोगे अब किस ओर।

(तिरुमुरै आठ - 37 पंक्ति 49-56)

818 தமிழ் சீவமக்த கவி மாணிக்வாசகர் கீத திருவாசகம்

620. அத்தனே அண்டர் அண்டமாய் நின்ற
 ஆதியே யாதும் ஈறில்லாச்
 சித்தனே பத்தர் சிக்கெனப் பிடித்த
 செல்வமே சிவபெரு மானே
 பித்தனே எல்லா உயிருமாய்த் தழைத்துப்
 பிழைத்தவை அல்லையாய் நிற்கும்
 எத்தனை உன்னைச் சிக்கெனப் பிடித்தேன்
 எங்கெழுந் தருளுவ தினியே?

8

620. अत्तने अण्डर् अण्डमाय् निन्
 आदिये यादुमीरिल्लाच्
 चित्तने पत्तर् चिककनप् पिडित्त
 चंत्वमे शिवपरुमाने
 पित्तने एँल्ला उयिरुमायत् तळैत्तुप्
 पिळैत्तवै अल्लैयाय् निक्कुम्
 ऐत्तने उन्नैच् चिककनप् पिडित्तेन्
 ऐङ्गळ् ந்ருவதினியே ?

(திருமூரே ஆட - 37 பங்கி 57-64)

621. பால்நினைந் தூட்டுந் தாமினுஞ் சாலப்
 பரிந்துந் பாவினே னுடைய
 ஊனினை உருக்கி உள்ளொளி பெருக்கி
 உலப்பிலா ஆனந்த மாய்
 தேனினைச் சொரிந்து புறம்புறத் திரிந்த
 செல்வமே சிவபெரு மானே
 யானுனைத் தொடர்ந்து சிக்கெனப் பிடித்தேன்
 எங்கெழுந் தருளுவ தினியே?

9

621. पाल् निनैन्दूदट्टम् तायिनुम् चालप्
 परिन्दु नी पावियेनुडैय
 ऊनिनै उरुविक उळ्ळळि पंरुविक
 उलपिला आनन्दमाय
 तेनिनैच् चारिन्दु पुरम्पुरम् तिरिन्द
 चंत्वमे शिवपरुमाने
 यानुनैत्ताडन्दु चिककनपिडित्तेन्
 ऐङ्गळ் ந்ருவதினியே ?

(திருமூரே ஆட - 37 பங்கி 65-72)

620. हे मेरे तात ! आदि अनादि देव तुम
 व्याप्त हो अंड-बहिरंग-रूप में
 जिसका नहीं है आदि-मध्य-अंत
 हे चिति स्वरूप ! ज्ञान-ज्योति !
 हे अक्षयनिधि शिवराज
 तुम्हें भक्तजनों ने बांध रखा है कसकर
 हे उन्मत्त ! तुम कैसे हो क्या हो समझ में नहीं आता
 सब जीवों के रूप में स्थित तुम हो
 और इस प्रपंच से निपट पृथक् रहते हो
 छलिया बनकर ! ओ इंद्रजालिक !
 तुम्हें कसकर पकड़ लिया
 बोलो पधारोगे अब किस ओर।

(तिरुमुरै आठ - 37 पंक्ति 57-64)

621. समय चूके बिना शिशु को स्तन्य पिलाती
 ममतामयी माँ से भी अधिक
 वात्सल्य के संग
 हे मातृस्वरूप देव ! तुमने पिघला दिया
 इस लघुजन के चित्त को हृदय को
 प्रसरित कर दी अंतःज्योति
 क्षणक्षण जो वर्धित हुई
 अमंद आनंद बन कर व्याप्त हुई
 स्रवित हुआ मधु का उत्स
 मेरे अक्षयनिधि ! शिवराज
 अखंड सर्वव्यापी तुम बाहर भी व्याप्त हो
 तुम्हारे पीछे पड़कर
 कसकर बांध लिया तुम्हें
 बोलो अब पधारोगे किस ओर !

(तिरुमुरै आठ - 37 पंक्ति 65-72)

820 தமிழ் சீவமக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

622. புன்புலால் யாக்கை புரைபுரை கனியப்
 பொன்னெடுங் கோயிலாப் புகுந்தென்
 என்பெலாம் உருக்கி எளியையாய் ஆண்ட
 ஈசனே மாசிலா மணியே
 துன்பமே பிறப்பே இறப்பொடு மயக்காந்
 தொடக்கெலாம் அறுத்தநற் சோத்
 இன்பமே உன்னைச் சிக்கெனப் பிடித்தேன்
 எங்கெழுந் தருளுவ் தினியே?

10

622. पुनपुलाल् याकै पुरैपुरै कनियप्
 परन्नुम् कोयिलाप् पुगुन्दन्
 ऐन्पलामुरुक्कि ऐळियैया आण्ड
 ईशने माशिलामणिये
 तुन्बमे पिरप्पे इरप्पाडु मयक्काम्
 ताडक्कलामरुत्त नर्चोती
 इन्बमे उन्नैच् चिक्कनप् पिडित्तेन्
 ऐङ्गेळुन्दरुळुवदिनिये ?

(திருமுரே ஆட - 37 பங்கி 73-80)

622. हे मेरे स्वामी !

धन्य-धन्य हो गया यह दास

प्रवेश कर गए तुम मेरे

अस्थि-चर्ममय देह को

स्वर्णिम मंदिर मानकर

आस्थान बना लिया मेरे हृदय को

हे परमेश्वर ! निर्मलमणि !

ज्योतिराट् ! तुमने काट दिये सारे बंधन

दूर कर सकल दुःख-संताप और भ्रमजाल

हे आनन्दस्वरूप !

दृढ़ता से पकड़ लिया तुम्हें

बोलो पधारोगे अब किस ओर।

(तिरुमुरै आठ - 37 पंक्ति 73-1



822 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - वर्ड बीटिफिक एस. ए. शंकरनारायणन्

Source : Tiruvacagam : Word Beatific by S.A. Sankaranarayanan

O king of the celestials ! Ens
 spread immanently everywhere
 in non-dual union. For me guilty
 minded, you have come in newness,
 to say, gracing ripe, and taken
 my home entire ; and as ambrosia
 made all abide in bliss great
 to the exclusion of this worldly life.
 O salient scriptural Quintessence.
 One of especial holy feet of grace.
 Eternal opulence ! Civa Lord, I
 do grasp you firm for us
 to be sustained. Where could
 you go forth hence ?

When fair Maal pined to bear you
 in the shape of Taurus - mount,
 you fain accepted him as such
 O head of the celestials.
 O Ens True, having this cruel
 deeded me your slave ! Barring
 me from getting worse, ageing,
 decrepit, lying within this
 flesh foul vermiculating hole,
 O God you have secured me.
 You are the Ocean of Grace.
 Ceaseless, I do firmly grasp.
 Where could you go forth hence ?

Mother, Father, Ruby non pareil.
 Rare to be got ambrosia
 resulting in the sea of love.
 With knowledge detouring
 to things fleeting, and thus
 expanding, I am too worse,

vermiculating within, whiling
 the time in vain ; but you've
 granted me Civa-aesthetic thisness
 of Sempiternal weal. Civa Lord.
 Right in this birth I do grasp you
 firm. Where could you
 go forth leaving me hence ?

Mercy - fine lamp ! Ripe rare fruit
 non pareil ! O, king, for those
 that did perform powerful
 difficult-to-do acts of askesis,
 you are the one explainer-text
 of True Ens. You Transcender
 Past praising, became Civaesthesia,
 Fruit of yoking explicated,
 Weal pooled in the hearts
 of servitors on the spur
 of going clarified. Civa Lord,
 On this earth nescience hovering,
 I do grasp you firm.
 Where could you go hence ?

O One unparalleled by any
 O Lumen of Gnosis instinct
 in my heart, your slave !
 O matchless love - incarnate
 one granting a stance great
 for me who couldn't know
 the verity wanting in aptitude !
 O fertile luminal form
 hard to fancy in wordage !
 Eternal weal ! Civa Lord !
 On my lean days, I do grasp you
 firm. Where could you
 go hence leaving me ?

38

திருவேசறவு

तिरुवेशरवु

சுட்டறிவு ஒழித்தல்

सुट्टरिवु ओळित्तल्

623. இரும்புதரு மனத்தேனை
 ஈர்த்தீர்த்தென் என்பருக்கிக்
 கரும்புதரு சுவைஎனக்குக்
 காட்டினைஉன் கழலினைகள்
 ஒருங்குதிரை உலவுசடை
 உடையானே நரிகளெல்லாம்
 பெருங்குதிரை ஆக்கியவா
 றன்றேஉன் பேரருளே.

1

623. इरुम्बु तरु मनत्तेनै
 ईत्तीर्त्तु ऐन् ऐन्बुरुविकक्
 करुम्बु तरु चुबै ऐन्வकुक्
 काट्टिनै उन् कळलिणैगळ्
 आरुंगु तिरै उलवुचडै
 उडैयाने नरिकळेल्लाम्
 परुङ्कुदिरै आविकयवा
 रन्ने उन् पेररुळे ।

(तिरुमुரै आठ -38 पंक्ति 1-8)

38

स्मृति और पीड़ा

वस्तुनिष्ठता से निवृत्ति

623. लौह सदृश कठिन हृदय मुझको
बारंबार रिझा कर अपनी ओर
अंग अंग पिघलाया प्रभु तुमने
चखाया इक्षुखंड का मधुरिम स्वाद
दिखाया अपना चरण-युगल
भंगिमा के संग
लहरा रही जटाओं के धनी
तुमने उस दिन
सियारों को शक्तिशाली अश्व बनाकर
दिखा दिया महाचमत्कार !

(तिरुमुरै आठ - 38 पंक्ति 1-8)

826 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

624. பண்ணார்ந்த மொழிமங்கை
பங்கநின் ஆளானார்க்கு
உண்ணார்ந்த ஆரமுதே
உடையானே அடியேனை
மண்ணார்ந்த பிறப்பறுத்திட்
பாவாய்நீ வாவென்னக்
கண்ணார உய்ந்தவா
றன்றேஉன் கழல்கண்டே !

2

624. पण्णान्दं माळिमङ्गै
पङ्गा निन्नाळानाक्कु
उण्णान्दं आरमुदे
उडैयाने अडियेनै
मण्णान्दं पिरप्पुत्तिद्
टाळ्वाय् नी वार्वन्नक्
कण्णार उयन्दवारु
अन्ने उन् कळल् कण्डे !

(திருமுரே ஆட -38 பங்கி 9-16)

625. ஆதமலி யான்பிறப்
பிறப்பென்னும் அருநரகில்
ஆர்தமகும் இன்றியே
அமுந்துவேற்கு ஆஆவென்று
ஓதமலி நஞ்சுண்ட
உடையானே அடியேற்குன்
பாதமலர் காட்டியவா
றன்றேளம் பரம்பரனே !

3

625. आदमिलि यान् पिरप्पु
इरुप्पन्नुम् अरुनरकिल्
आर् तमरुमिन्निये
अळ्ळुन्दुवेकु आआर्वन्
ओद मलि नञ्जुण्ड
उडैयाने अडियेकुन्
पादमलर् काट्टियवारु
अन्ने ऍम्परम्परने !

(திருமுரே ஆட -38 பங்கி 17-24)

624. मंजुल मधुबैनी उमा को
 वाम भाग में धरे परमेश्वर !
 अशन करने योग्य अमृत हो तुम
 उनके लिए जो तुम्हारे हो गए
 हे स्वामी ! काट दिये थे मेरे जन्म-बंधन
 जिसने बरबस बांधे रखा था मुझे
 इस मायामय प्रपंच से
 अहा ! ये ही वे दिव्य चरण
 जिनके दर्शनमात्र से
 उद्धार पा गया था मैं।

(तिरुमुरै आठ -38 पंक्ति 9-16)

625. सागर-उत्थित हलाहल का अशन करके
 जगत् का त्राण करने वाले मेरे नाथ !
 निराश्रित होकर तड़प रहा था मैं
 जनन-मरण के घोर नरक में
 बंधु-बांधव स्वजनों के बिना
 उस समय
 दिखा दिये थे तुमने मुझे
 अपने सुमन सदृश चरणकमल
 तभी तो हे परात्पर ! शिवनाथ !
 उद्धार पा सका उस घोर नरक से।

(तिरुमुरै आठ -38 पंक्ति 17-24)

828 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

626. பச்சைத்தால் அரவாட்டி
படர்சடையாய் பாதமலர்
உச்சத்தார் பெருமானே
அடியேனை உய்யக்கொண்டு
எச்சத்தார் சிறுதெய்வம்
ஏத்தாதே அச்சோஎன்
சித்தத்தா றுய்ந்தவா
றன்றேஉன் திறம்நினைந்தே.

4

626. पच्चैत्ताल्रवादटी
पडर् चडैयाय् पादमलर्
उच्चत्तार् परुमाने
अडियेनै उय्यक्काण्डु
ऐच्चत्तार् चिरुतय्वम्
एत्तादे अच्चा ऐन्
चित्तत्ता रुयन्दवारु
अन्ने उन् तिरम् निनैत्ते।

(திருமுரே ஆட - 38 பங்கித் 25-32)

627. சுற்றறியேன் கலைஞானம்
கசிந்துருகேன் ஆயிடினும்
மற்றறியேன் பிறதெய்வம்
வாக்கியலால் வார்கழல்வந்து
உற்றிறுமாந் திருந்தேன்எம்
பெருமானே அடியேற்குப்
பொற்றவிசு நாய்க்கிடுமா
றன்றேநின் பொன்னருளே.

5

627. कद्र्रियेन् कलैज्ञानम्
कशिन्दुरुगेन् आयिडिनुम्
मद्र्रियेन् पिरतेय्वम्
वाक्कियलाल् वार्कळल् वन्दु
उद्र्रिमान्दिरुन्देन् ऐम्
परुमाने अडियेकुप्
पाद्र्रविशु नाय्विकडुमा
इन्ने निन् पान्नरुळे।

(திருமுரே ஆட - 38 பங்கித் 33-40)

626. मंजुल मृदुल जिह्वा के धनी
 नाग सर्पों को नचाते इंद्रजालिक !
 सघन विशाल जटा के धनी
 शोभित हैं तुम्हारे कमलचरण
 तपोधनों के शीर्ष पर
 क्या यह भी तुम्हारा चमत्कार नहीं था
 कि अन्य देवताओं पर रीझे बिना
 मेरा चित्त मग्न रहा करता है
 तुम्हारे ध्यान में, स्मरण में, उपासना में।

(तिरुमुरै आठ - 38 पंक्ति 25-32)

627. नहीं थी मेरे पास कला की चातुरी
 नहीं थी अनुग्रह पाने की तृषा
 नहीं आती थी द्रवित होकर
 भक्ति प्रकट करने की भंगिमा
 फिर भी इतना सत्य है मेरे स्वामी
 अपने पास जो भी शब्द-सामर्थ्य है
 लगाया नहीं उसे
 अन्य छोटे देवताओं की प्रशंसा में
 मैं तुम्हारा और केवल तुम्हारा गान करता रहा
 इस पर गर्व भी करता रहा
 बस इतनी सी मेरी बात पर
 तुमने जो यह अनुग्रह-वर्षा की
 वह ऐसा चमत्कार है प्रभो
 जैसे श्वान को उठाकर बिठा दिया
 रत्न-खचित कनक-सिंहासन पर।

(तिरुमुरै आठ - 38 पंक्ति 33-40)

830 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

628. பஞ்சாய அடிமடவார
கடைக்கண்ணால் இடர்ப்பட்டு
நஞ்சாய துயர்கூர
நடுங்குவேன் நின்னருளால்
உயஞ்சேன்எம் பெருமானே
உடையானே அடியேனை
அஞ்சேலென் றாண்டவா
றன்றேஅம் பலத்தமுதே!

6

628. पञ्चाय अडि मडवार्
कडैक्कण्णालिडर् पट्टु
नञ्जाय तुयर्कूर
नडुङ्गुवे निन्नरुळाल்
उय्य्चेनम् परुमाने
उडैयाने अडियेनै
अञ्जेलन्ராण्डवा
रन्ने अम्बलत्तமுदे !

(तिरुमुरै आठ - 38 पंक्ति 41-48)

629. என்பாலைப் பிறப்பறுத்திங்
கிமையவார்க்கும் அறியவொண்ணாத்
தென்பாலைத் திருப்பெருந்
துறையுறையுஞ் சிவபெருமான்
அன்பால்ந் அகம்நெகவே
புகுந்தருளி ஆட்கொண்டது
என்பாலே நோக்கியவா
றன்றேஎம் பெருமானே !

7

629. ँन्पालैप् पिऱप्पऱुत्तिड्
किमैयवक्कुम् अरियवाण्णात्
तन्पालैत् तिरुप्पर्नु
तुरैयुरैयुम् शिवपरुमान्
अन्बाल் अगनीम् नंगवे
पुगुन्दरुळि आट्काण्ड
तन्पाले नोक्कियवा
रन्ने ँम्परुमाने !

(तिरुमुरै आठ - 38 पंक्ति 49-56)

628. रुई के सदृश मृदुल चरण
 कामिनियों के नयन-कोर के आघात से
 पीड़ित मैं तड़प रहा था पड़कर
 विष भरे प्रपंच के वंचक गर्त में
 थर-थर कांप रहा था उद्धार का मार्ग न पाकर
 मेरे नाथ ! तुम्हारी असीम करुणा से
 बच गया इस मायामय प्रपंच से
 मेरे हृदय-मंच में विराजे अमृत
 क्या यह चमत्कार उस समय
 घटित न हुआ ?
 जब तुमने कहा था मेरे कान में
 'भय मत करो आ गया मैं'।

(तिरुमुरै आठ - 38 पंक्ति 41-48)

629. हे प्रभु परमेश्वर !
 अज्ञेय हो तुम देवगणों के लिए भी
 विराजे हो यहाँ इस दिव्यधाम
 तिरुप्परुन्तुरै में आमोद से
 तुमने जो किया वह चमत्कार नहीं था ?
 निहारा मेरी ओर बस एक बार
 मेरे प्रति करुणा से, अनुग्रह से
 काटकर मेरे सकल कर्म-बंधन
 मृदुल बना दिया कठिन हृदय को
 प्रवेश कर मेरे हृदय में
 कटाक्ष वीक्षण के मार्ग से।

(तिरुमुरै आठ - 38 पंक्ति 49-56)

832 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

630. முத்தானே முவாத

முதலான முடிவிலா
ஒத்தானே பொருளானே
உண்மையுமாய் இன்மையுமாய்ப்
புத்தானே புருந்திங்குப்
புரள்வேனைக் கருணையினால்
பேர்த்தேநீ ஆண்டவா
றன்றேளம் பெருமானே !

8

630. மூத்தானே மூவாத

முதலானே முடிவிலா
ஆத்தானே பாருளானே
உண்மையுமாய் இன்மையுமாய்ப்
பூத்தானே புருந்திங்குப்
புரள்வேனைக் கருணையினால்
பேர்த்தேநீ ஆண்டவா
றன்றேளம் பெருமானே !

(திருமூர்த்தி ஆட - 38 பங்கி 57-64)

631. மருவினிய மலர்ப்பாத்தம்

மனத்தில்வளர்ந்த துள்ளருகத்
தெருவுதொறும் மிக அலறிச்
கிவபெருமா னென்றேத்திப்
பருகியநின் பரங்கருணைத்
தடங்கடலிற் படிவாமாறு
அருளெனக்கிங் கிடைமருதே
இடங்கொண்டஅம்மானே !

9

631. மருவினிய மலர்ப்பாத்தம்

மனதில் வலர்ந்த துள்ளருகத்
தெருவுதொறும் மிக அலறிச்
கிவபெருமா னென்றேத்திப்
பருகியநின் பரங்கருணைத்
தடங்கடலிற் படிவாமாறு
அருளெனக்கிங் கிடைமருதே
இடங்கொண்டஅம்மானே !

(திருமூர்த்தி ஆட - 38 பங்கி 65-72)

630. हे आदिदेव ! अनादिदेव !
 सनातन चिरंतन महादेव ! चिरयुवा !
 वेदों के सार रूप ! वेद संस्तुत देवाधिदेव !
 दृश्यमान प्रपंच भी तुम हो
 अदृश्य मूल प्रकृति भी !
 सदसत्-स्वरूप मेरे नाथ ! शिवराज !
 हृदय में प्रवेशकर अपनाया था मुझे
 जब मैं लोटता रहा प्रपंच की धूल-माटी में
 फिर से उद्धार किया तुमने
 असीम करुणा, से अनुग्रह से।

(तिरुमुरै आठ - 38 पंक्ति 57-64)

631. इडैमरुदूर के दिव्यधाम में
 विराजे मेरे शिवराज !
 अनुगृहीत करो मुझे यहीं इसी क्षण
 मधुर-मधुरिम अपने चरण
 धर दो मेरे हृदय में
 वर्धित हो मेरी प्रेमाभक्ति
 वीथियों में घूम घूमकर
 पुकारता रहूँ शिवनाम
 गली-गली में करूँ तुम्हारा कीर्तिगान
 अहा ! चख रहा हूँ कृपा का आनंद
 असीम सागर सम उड़ता अनुग्रह-आनंद।

(तिरुमुरै आठ - 38 पंक्ति 65-72)

834 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

632. நானேயோ தவஞ்செய்தேன்
சிவாயநம எனப்பெற்றேன்
தேனாய்இன் அமுதமுமாய்த்
தித்திக்குஞ் சிவபெருமான்
தானேவந் தெனதுள்ளம்
புகுந்தடியேற் கருள்செய்தான்
ஊனாகும் உயிர்வாழ்க்கை
ஒறுத்தன்றே வெறுத்திடவே.

10

632. नानेयो तवम् चयदेन्
शिवायनम एनप्पंद्रेन्
तेनाय् इन्नमुदमुमायत्
तित्तिकुम् शिवपरुमान्
ताने वन्देन्दुळ्ळम्
पुगुन्दडियेर्करुळ् चयदान्
ऊनारुमुयिर् वाळ्ळकै
आरुत्तन्ने वरुत्तिडवे।

(திருமுரே ஆட - 38 பங்கித் 73-80)

632. शि-वा-य-न-म का महामंत्र
 पाने के निमित्त
 मैंने कोई बड़ी तपस्या की ?
 यह तो मेरे नाथ परमेश्वर की
 परमकृपा थी असीम अनुग्रह था
 जो स्वयं पधारे
 बस गए मेरे हृदय में प्रवेश कर
 मधु बन कर मधुरिम अमृत बनकर
 आए मेरे नाथ शिवराज
 अनुगृहीत किया इस दास को
 जिससे उपज गया विराग
 जग-जीवन से।

(तिरुमुरै आठ - 38 पंक्ति 73-80)



स्रोत : पाथवे दू गोंड शू द तिरुवाचकम् - जी. वनमीकनाथन्

Source : Pathway to God through the Tiruvacagam by
G. Vanmikanathan

Forcibly drawing and drawing me of steely mind unto You,
and melting my bones,
you showed me the sugar-cane-like taste
of Your anklet girt twin feet.
O You with matted locks
lapped by the subdued waves of Ganga !
Was it not Your supreme grace
which turned all the foxes into big horses ?

O Partner of the Dame of melodious speech !
O highly edible delicious Ambrosia
to those who have become Your slaves !
O Owner of this slave !
O You Who, severing my very earthy birth.
enslave me !
Was it not because You bade me come
that I, gaining a vision of Your anklet-girt feet
to the delight of my eyes,
have been redeemed ?

O my Owner Who ate the poison surging from the sea !
O our transcendently transcendent One !
Was it not through Your saying :
"Ah" to succourless me
who, with no kin, was sinking
in the cruel hell called birth and death,
that I, through Your showing Your feet blossom to me,
(was able to shed the demonstrative method of knowing ?)

O Charmer of snakes of soft tongues !
 O You with spreading locks !
 O great Lord of devotees
 whose heads are adorned by Your feet blossom !
 Lo ! Was it not through Your rescuing me
 from worshipping petty gods with shortcomings
 that the trend of my mind
 was turned to contemplate Your greatness ?

Though I would not learn the wisdom of the scriptures,
 and I would not thaw and melt,
 yet I do not know any other god but You.
 Through the power of Your WORD,
 having arrived at Your anklet-girt far-reaching feet,
 I am proudly abiding there.
 Our great I Lord,
 is not Your golden graciousness towards me, Your slave,
 even like providing a golden seat for a dog ?

Falling into trouble through the side-long glances
 of women with cotton-like soft feet,
 I was trembling with mounting poisonous misery.
 By Your grace I was saved.
 O our Lord ! O our Owner !
 O Ambrosia on the stage (of my heart) !
 Was this not through Your telling me, Your slave :
 "Fear not !", and enslaving me ?

Lines : 1 - 48

39

திருப்புலம்பல்

திருபுலம்பல்

சிவானந்த முதிர்வு

शिवानन्द मुदिरवु

633. பூங்கமலத் தயனொடுமால்
 அறியாத நெறியானே
 கோங்கலர்சேர் குவிமுலையாள்
 கூறாவெண் ணீறாடி
 ஒங்கெமில்சூழ் திருவாரூர்
 உடையானே அடியேன்றின்
 பூங்கமல்கள் அவையல்லா
 தெவையாதும் புகழேனே !

1

633. பூங்கமலத்தயனாடு மால்
 அறியாத நெறியானே
 கோங்கலர்சேர் குவிமுலையாள்
 கூறாவெண் ணீறாடி
 ஒங்கெமில்சூழ் திருவாரூர்
 உடையானே அடியேன்றின்
 பூங்கமல்கள் அவையல்லா
 தெவையாதும் புகழேனே !

(திருமுறை ஆட - 39 பங்கித் 1-8)

39

प्रलाप

शिवानन्द परिपक्वता

633. तुम्हें प्राप्त करने का वह विशिष्ट ज्ञानमार्ग
न कमलनयन को ज्ञात था न विरिंचि को
ओ सुभगस्तनी उमा सुकुमारी को
वामभाग दिए अर्धनारीश्वर प्रभु !
भस्मोद्धूलित सुमनोहर
तुंग प्राचीरों से वलयित
तिरुवारूर धाम के नाथ !
मेरे स्वामी ! यह तुम्हारा सेवक
नहीं करेगा प्रशस्तिगान और किसी का
तुम्हारे सुमन सरिस चरण छोड़कर।

(तिरुमुदै आठ - 39 पंक्ति 1-8)

840 தமிழ் சைவக்த கவி மாணிக்வாசகர கृत திருவாசகம்

634. சடையானே தழலாட
தயங்குமு விலைச்சுலப்
படையானே பரஞ்சோதீ
பகபதீ மழவெள்ளை
விடையானே விரிபொழித்தும்
பெருந்துறையாய் அடியேன்நான்
உடையானே உணையல்லா
துறுதுணைமற் றறியேனே.

2

634. चडैयाने तळलाडी
तयङ्गु मूविलै शूलप्
पडैयाने परञ्जोती
पशुपती मळवळ्ळै
विडैयाने विरिपाळिल् चूळ्
परन्तुरैयान् अडियेन् नान्
उडैयाने उनैयल्लादु
उरुतुणै मद्रियेने।

(तिरुमुரै आठ -39 पंक्ति 9-16)

635. உற்றாரை யான்வேண்டேன்
ஊர்வேண்டேன் பேர்வேண்டேன்
கற்றாரை யான்வேண்டேன்
கற்பனவும் இனியமையும்
குற்றாலாத் தமர்ந்துறையுங்
கூத்தாடன் குரைகழற்கே
கற்றாவின் மனம்போலக்
கசிந்துருக வேண்டுவனே.

3

635. उद्रारै यान् वेण्डेन्
ऊर् वेण्डेन् पेर्वेण्डेन्
कद्रारै यान् वेण्डेन्
कर्पनवुम् इनियमैयुम्
कुद्रालत्तमन्दुरैयुम्
कूत्ता उन् कुरैकळक्
कद्राविन् मनम् पोलक्
कशिन्दुरुग वेण्डुवने।

(तिरुमुरै आठ -39 पंक्ति 17-24)

634. ओ सघन जटा के धनी गंगाधर
 नर्तन करते हो जब
 नाच रही करतल पर अग्नि-ज्वाल
 शोभित है अपर हस्त पर त्रिशूल
 परंज्योति स्वरूप ! पशुपते !
 धवलोज्ज्वल वृषभ पर आरुढ़ प्रभो
 विशाल उपवनों से बलयित
 तिरुप्परुंतुरै के अधीश !
 इस दास के स्वामी !
 तुम्हें छोड़कर मेरी
 कहीं कोई शरण नहीं है।

(तिरुमुरै आठ - 39 पंक्ति 9-16)

635. हे कुट्टालम् धाम के अधीश !
 मेरे नाथ ! नहीं चाहिए मुझे आसक्ति
 अपने बंधुजन पर
 नहीं चाहिए मुझे कोई नाम-धाम
 अभीष्ट नहीं है विद्या-कला पर आसक्ति भी
 मुझे वही आसक्ति चाहिए
 जो बछड़े के अंतस् में
 अपनी मां गाय के प्रति रहती है
 ऐसी ही आसक्ति चाहिए मुझे तुम पर।

(तिरुमुरै आठ - 39 पंक्ति 17-24)



842 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - डॉ रेवरेण्ड जी. यू. पोप; 1900 ई.

Source : Tiruvacagam by Rev. G.U. Pope; 1900 A.D.

O Thou Whose way Ayan, from flow'ry lotus sprung, knows not,
nor Māl !
Partner of her whose swelling bosom wears the Gongu flower !
Whose form
White ash displays ! Owner of blest Ārūr, begirt with lofty wall !
Saving Thy flower-like feet, nought else will I Thy servant ever
praise !

Thou of the braided tuft ! Fire-wielder ! Thou Whose weapon is
the dart
Three-leav'd and gleaming ! Light superne ! Lord of the flock !
The soft, white bull
Is thine ! O Lord of Perun-turrai girt by spreading groves ! Thy
slave
Am I. Owner, I know in truth no other present help than Thee.

Nor friends, nor kin I seek ; no city I desire ; no name I crave ;
No learned ones I seek ; and henceforth lessons to be conned
suffice.
Thou dancer, in Kuṭṭālam dwelling blissful, Thy resounding feet
I'll seek, that as the cow yearns for its calf, my longing soul may
melt.

Lines : 1- 24



40

उल्लास-दशक

अनस्यूत आनन्दानुभव

636. भिक्षापात्र और कौपीन मात्र को
 साथी रूप में चुन लिया
 और प्राप्य वस्तु के रूप में चयन किया
 शिवराज का कमनीय चरणयुगल
 आनंद-तुंदिल हो रहा है
 मेरा तन-मन-प्राण
 पाया मैंने नर्तित नटराज का
 आनंदमय तिल्लैधाम
 नाथ परमेश्वर का दिव्यधाम।

(तिरुमुऱै आठ -40 पंक्ति 1-4)

637. माना कि मैं काम-मोहित था
 कामिनियों के डमरु तुल्य कटितट पर
 मधुबैनी तन्वंगियों के सुकोमल स्कंध पर
 और किये ये इस तरह के कितने ही दुष्कर्म
 फिर भी नाथ के चरणों में शरण ली है
 और मेरे नाथ ने
 चूंकि अपने चरणों पर आसक्त बना लिया मुझे
 अब जनन-मरण का कोई प्रश्न नहीं है
 दास मैं पहुँच गया आनंदमय तिल्लै धाम
 नाथ परमेश्वर का दिव्य धाम।

(तिरुमुऱै आठ -40 पंक्ति 5-12)

846 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

638. என்புள் னருஞ்சுக்கி இருவினையை ஈடழித்துத்
துன்பங் களைந்து துவந்துவங்கள் தூய்மைசெய்து
முன்புள்ள வற்றை முழுதழிய உள்புகுந்த
அன்பின் குலாத்தில்லை ஆண்டானைக்

கொண்டன்றே ! 3

638. ஏன்புலுருகிக் கருவினையே இடவிடத்து
துன்பங் கடைந்து துவந்துவங்கு தூய்மை செய்து
முன்புலுருகி முழுதழிய உள்புகுந்த
அன்பின் குலாத்திலை ஆண்டானைக் காண்டந்நே !

(திருமுறை ஆட - 40 பங்கித் 13-16)

639. குறியும் நெறியும் குணமுமிலா குழாங்கள்தமைப்
பிறியும் மனத்தார் பிறிவாரிய பெற்றியனைச்
செறியும் கருத்தில் உருத்தமுதாஞ் சிவபதத்தை
அறியும் குலாத்தில்லை ஆண்டானைக் கொண்டன்றே !

4

639. கரியும் நரியும் குணமுமிலா குழாங்குள்தமைப்
பிரியு மனத்தார் பிரிவாரிய ப்ரியனைச்
சரியும் கருதிற் றுருத்தமுதா சிவபததை
அரியும் குலாத்திலை ஆண்டானைக் காண்டந்நே !

(திருமுறை ஆட - 40 பங்கித் 17-20)

640. பேருங் குணமும் பிணிப்புறும்இப் பிறவிதனைத்
தூரும் பாசு தூசிசுறுத்துத் தொண்டரெல்லாம்
சேரும் வகையாற் சிவன்கருணைத் தேன்பருகி
ஆருங் குலாத்தில்லை ஆண்டானைக் கொண்டன்றே !

5

640. பேருங்குணமும் பிணியுருமிப் பிரிவிதனைத்
தூரும் பரிசு துரிசுருதுத் தாண்டரெல்லாம்
சேரும் வகையாற் சிவன் கருதித் தைன் பருகி
யாரும் குலாத்திலை அண்டானைக் காண்டந்நே !

(திருமுறை ஆட - 40 பங்கித் 21-24)

638. पिघलाकर मेरे अंतर को
मिटा दिया प्रभु ने द्वंद्व को
पाप-पुण्य को संचित कर्म को
जो जनन-मरण के मूल हैं
हटा कर सकल मल-कलुष को
प्रवेश किया प्रभु ने हृदय में
ताकि मैं पूर्ण रूप से जान सकूँ उन्हें
पा सकूँ आनंदमय तिल्लैधाम
नाथ परमेश्वर का दिव्यधाम।

(तिरुमुरै आठ - 40 पंक्ति 13-16)

639. जग-जीवन पर आसक्त जन को
मिलाते नहीं अनासक्त भक्त
अपनी मंडली में, भले ही बसता है नाथ
अच्छे-बुरे सभी जनों के हृदय में,
किंतु उनका स्वरूप
अमृत सम बनकर मधुसम मधुरिम लगता है
केवल उनके हृदय में जो जीवबोध तजकर
शिवबोध में रमते हैं
पहुँचते हैं जो आनंदमय तिल्लै धाम में
नाथ परमेश्वर के दिव्य धाम में।

(तिरुमुरै आठ - 40 पंक्ति 17-20)

640. पहुँचते हैं तुम्हारे सच्चे साधक
लक्ष्य स्थान पर और
पान करते हैं शिवानंद मधु का
नाम-रूप और त्रिगुण को तजकर
मुक्त होकर जीवबोध से
उसी भांति
शिवसन्मार्ग पर चलकर
पान करूँगा शिवानंदमधु
पहुँचकर आनंदमय तिल्लैधाम
नाथ परमेश्वर का दिव्यधाम।

(तिरुमुरै आठ - 40 पंक्ति 21-24)

848 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

641. கொம்பில் அரும்பாய்க் குவிமலராய்க் காயாகி
வம்பு பழுத்துடலம் மாண்டிங்ஙன் போகாமே
நம்புமென் சிந்தை நணுகும்வண்ணம் நானணுகும்
அம்பொன் குலாத்தில்லை ஆண்டானைக்

கொண்டன்றே! 6

641. காமிலருமாய்க் குவிமலராய்க் காயாசி
வம்பு பழுத்துடல மாண்டிங்ஙன் போகாமே
நம்புமென் சிந்தை நணுகும்வண்ணம் நானணுகும்
அம்பொன் குலாத்தில்லை ஆண்டானைக்

(திருமூரே ஆட - 40 பங்கி 25-28)

642. மதிக்குந் திறலுடைய வல்அரக்கன் தோள்நொய
மிதிக்குந் திருவடி எந்தலைமேல் வீற்றிருப்பக்
கதிக்கும் பகபாசம் ஒன்றுமிலோம் எனக்களித்திங்கு
அதிரக்குங் குலாத்தில்லை ஆண்டானைக்

கொண்டன்றே! 7

642. மதிக்குந் திறலுடைய வல்அரக்கன் தோள்நொய
மிதிக்குந் திருவடி எந்தலைமேல் வீற்றிருப்பக்
கதிக்கும் பகபாசம் ஒன்றுமிலோம் எனக்களித்திங்கு
அதிரக்குங் குலாத்தில்லை ஆண்டானைக்

(திருமூரே ஆட - 40 பங்கி 29-32)

643. இடக்குங் கருமுருட் டேனப்பின் கானகத்தே
நடக்குந் திருவடி எந்தலைமேல் நட்மையால்
கடக்குந் திறல்ஐயவர் கண்டகர்தம் வல்லாட்டை
அடக்குங் குலாத்தில்லை ஆண்டானைக்

கொண்டன்றே! 8

643. இடக்குந் கருமுருட் டேனப்பின் கானகத்தே
நடக்குந் திருவடி எந்தலைமேல் நட்மையால்
கடக்குந் திறல்ஐயவர் கண்டகர்தம் வல்லாட்டை
அடக்குந் குலாத்தில்லை ஆண்டானைக்

(திருமூரே ஆட - 40 பங்கி 33-36)

641. तरु डाल पर खिलता फूल
फल बनता है फिर मिटता है
इसी भांति निरर्थक है
जननी की कोख में जन्म लेकर
बड़ा होकर मर जाना
जिस तरह मेरी आस्था लगी है
प्रभु के संग वह बनी रहे निरंतर
और पहुँचूँ मैं आनंदमय तिल्लैधाम
प्रभु परमेश्वर का दिव्य धाम।

(तिरुमुरै आठ - 40 पंक्ति 25-28)

642. मात्र पादांगुष्ठ से
दबोच दिए प्रभु ने
जाने-माने भुजबल पराक्रमी
रावण के सशक्त स्कंध
धर दिये वही चरण
मेरे शीर्ष पर
थम गया झटिति में
उत्थित पशुपाश मेरे मन में
पा गया मैं आनंद तिल्लैधाम
नाथ परमेश्वर का दिव्य धाम।

(तिरुमुरै आठ - 40 पंक्ति 29-32)

643. कानन में
माटी खोदते शूकर के पीछे
किरात रूप लेकर चलते हुए
धर दिए प्रभु ने निज चरण मेरे शीर्ष पर
तत्क्षण ही नियंत्रण में आ गया
पंचेंद्रियों का अदम्य पराक्रम
पा गया मैं आनंदमय तिल्लै धाम
परमेश्वर का दिव्य धाम।

(तिरुमुरै आठ - 40 पंक्ति 33-36)

850 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

644. பாழ்ச்செய் வினாவிப் பயனிலியாய்க் கிடப்பேற்குக்
கீழ்ச்செய் தவத்தாற் கிழியீடு நேர்பட்டுத்
தாட்செய்ய தாமரைச் சைவனுக்கென் புன்தலையால்
ஆட்செய் குலாத்தில்லை ஆண்டானைக்

கொண்டன்றே ! 9

644. पाळ्च् चय् विळाविप् पयनिलियाय्क् किडप्पेर्कुक्
कीळ्च्चय् तवत्तिरत्ताल् किळियीडु नेर् पट्टुन्
ताट् चय्य तामरैच् चैवनुक्कन् पुनतलैयाल्
आट्चय् कुलात्तिल्लै आण्डानैक् काण्डन्ने !

(திருமுரே ஆட - 40 பங்கித 37-44)

645. கொம்மை வாரிமுலைக் கொம்பனையாள் கூறனுக்குச்
செம்மை மனத்தால் திருப்பணிகள் செய்வேனுக்கு
இம்மை தரும்பயன் இத்தனையும் ஈங்கெழிக்கும்
அம்மை குலாத்தில்லை ஆண்டானைக் கொண்டன்றே.

10

645. कामै वरिमुलैक् काम्वनैयाळ् कूरनुक्कुक्
चंमै मनत्ताल् तिरुप्पणिगळ् चय्वेनुक्कु
इम्मै तरुन् पयन् इत्तनैयुमीडगाळ्विक्कुम्
अम्मै कुलात्तिल्लै आण्डानैक् काण्डन्ने !

(திருமுரே ஆட - 40 பங்கித 45-52)

644. पड़ा था धरणी-तल पर व्यर्थ जन्म लेकर
 बंजर में रोपे गए पौध सम
 पूर्व जन्म में कृत सुकृत से
 पाया संपर्क परमेश्वर से
 अमूल्य निधि तुल्य है यह
 नाथ के सुभग सुंदर चरणकमल की
 सेवा कर रहा हूँ मैं निज शीर्ष से
 भाग्य से पाया मैंने
 तिल्लै चिरंबरम् का आनन्दधाम
 नाथ परमेश्वर का दिव्य धाम।

(तिरुमुरै आठ - 40 पंक्ति 37-44)

645. अर्चना-आराधना में निरत रहा मैं
 अनन्य भाव से
 सुभगस्तनी उमा सुकुमारी को
 वाम भाग दिए प्रभु की सेवा में
 इसी के फलस्वरूप
 इस जन्म में कृत
 सकल कर्मफल से हुआ मुक्त
 पा गया मोक्ष-साम्राज्य
 पहुँच गया मैं
 तिल्लै चिदंबरम् के आनंदधाम में
 जिसके अधिष्ठाता देव मेरे नाथ हैं।

(तिरुमुरै आठ - 40 पंक्ति 45-52)



852 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : पाथवे दू गोंड श्रू द तिरुवाचकम् - जी. वनमीकनाथन्
 Source : Pathway to God through the Tiruvacagam by
 G. Vanmikanathan

Is it not through (eternal) communion
 with the Lord Who enslaved me at Thillai
 that I, deciding that the begging bowl
 and the loin cloth only shall be my kin,
 and, with melting mind, becoming certain
 that the wealth to seek
 is Civan's anklet-girt feet only,
 curvet about and dance
 with my body and soul reeling (with bliss).

Is it not through (eternal) communion
 with my Enslaver of Thillai
 Who knit me to His feet
 that howsoever many sin-ridden evils
 I, His slave, may do
 due to lust for the arms of women
 of narrow waist like the hour-glass shaped drum,
 and sophisticated speech,
 I will neither be ruined nor be born again ?

Is it not (eternal) communion
 with the Thillai Enslaver
 which made Him enter me out of love,
 melt my bones,
 destroy the might of the twin deeds,
 extirpate my sorrows.
 cleanse me of (sense of) dualities,
 and completely destroy
 all my past ?

Is it not through (eternal) communion
 with the Thillai Enslaver that I know Him —
 the Civanhood which takes shape
 as ambrosia in my surging thoughts —
 Who is noted for never parting from those
 who are minded to part from the cliques of people
 without ideals or code of conduct or character.

Is it not through (eternal) communion
 with the Thillai Enslaver
 that, having been rid of the *malams*
 to the end that this birth
 bound to a name and characteristics may cease,
 I am replete with drinking the honey
 of Civan's mercy, gaining it in the same manner
 by which all other servitors get at it?

Lines : 1 - 24

41

அற்புதப்பத்து

अद्भुतप् पतु

அனுபவம் ஆற்றாமை

अनुभवम् आद्रामै

646. மைய லாய்இந்த மண்ணிடை
வாழ்வெனும் ஆழியு ளகப்பட்டுத்
தைய லாரெனுஞ் சுழித்தலைப்
பட்டுநான் தலைதடு மாறாமே
பொய்யெ லாம்விடத் திருவருள்
தந்துதன் பொன்னடி யிணைகாட்டி
மெய்ய னாய்வெளி காட்டிமுன்
நின்றதோர் அற்புதம் விளம்பேனே !

1

646. मैयलायिन्द मणिण्डै वाळ्वनुम
अळियुळ् अगप्पददुत्
तैयलார்नुम् चुळित्तलैप्
पददुनान् तलै तडुमारामே
पाय्यलाम् विडत्तिरुवरुळ् तन्दुतन्
पान्निडि यिणै காட்டி
मय्यनाय् वळिकादटि मुन्
निन्दोर् अर्पुदम् विळम्बेने !

(திருமுரீ ஆட - 41 பங்கி 1-8)

41

चमत्कार-दशक

अनिर्वचनीय आनन्द

646. इस प्रपंच जीवन के भ्रमजाल में
काम-मोहित मैं
कामिनी-सुख के गहन गर्त में फंसकर
डगमगाऊँ नहीं, इसलिए सदय होकर
प्रभु ने अनुग्रह की वर्षा की
ताकि मिट जाए अंतर् का सकल मालिन्य
नाथ ने दिखाया कनकमय चरणयुगल
प्रकट हुए सत्यस्वरूप होकर
मेरे सामने
वर्णनातीत है ऐसा अद्भुत !

(तिरुमुरै आठ - 41 पंक्ति 1-8)

856 தமிழ் சைவக்த கவி மாணிக்வாசகர் கீத திருவாசகம்

647. ஏய்ந்த மாமல ரிட்டுமுட்

பாததோர் இயல்பொடும் வணங்காதே
சாந்த மார்குழைத் தையல்நல்
லாரோடுந் தலைதடு மாறாகிப்
போந்து யான்துயர் புகாவணம்
அருள்செய்து பொற்கழ விணைகாட்டி.
வேந்த னாய்வெளி யேஎன்முன்
நின்றதோர் அற்புதம் விளம்பேனே !

2

647. एयन्द मामलरिट्टु मुट्

टाददोर् इयल्पाडुम् वणङ्गादे
चान्दमार् मुलै तैयल् नल्
लाराडुम् तलै तडुमारागिप्
पोन्दु यान्दुयर् पुगावणम्
अरुळ् चय्युदु पार्कळलिणै काट्टि
वेन्दनाय् वळिये ऐन्मुन्
निन्दोर् अर्पुदम् विळम्बेने !

(திருமூரே ஆட - 41 பங்கி 9-16)

648. நடித்து மண்ணிடைப் பொய்மினைப்

பலசெய்து நானென தெனும்மாயக்
கடித்த வாமிலே நின்றமுன்
வினைமிகக் கழறியே திரிவேனைப்
பிடித்து முன்னின்றப் பெருமறை
தேடிய அரும்பொருள் அடியேனை
அடித்த டித்துஅக் காரமுன்
தீற்றிய அற்புதம் அறியேனே !

3

648. नडित्तु मण्णिडैप् पाय्यिनैप्

पलचय्युदु नार्नन्दनुमायक्
कडित्त वायिले निन्दुमुन्
विनैमिगक् कळरिये तिरिवेनैप्
पिडित्तु मुन्निन् पंरुमरै
तेडिय अरुम् पारुळ् अडियेनै
अडित्तडित्तु अक्कार मुन्
तीद्रिय अर्पुद मरियेने !

(திருமூரே ஆட - 41 பங்கி 17-24)

647. सुरभित सुमनों से पूजन करते हुए
समर्पण-भाव से प्रभु-चरणों में
नमन करना छोड़कर
अंगराग रंजित कुंभस्तनियों के
प्रेम जाल में फंसा रहा
अहह ! कृपा कर दी नाथ ने
उद्धार किया मेरा
दुःख-संताप के गहन गर्त से
नटराजराज ने
दर्शाये कनकमय चरणयुगल
प्रकट हुए नृपति रूप में
मेरे सामने
कैसे वर्णन करूँ इस अद्भुत कृत्य का।

(तिरुमुरै आठ - 41 पंक्ति 9-16)

648. मेरी समझ के बाहर है
यह अद्भुत कृत्य
वेद खोजते फिरते हैं जिन्हें
ऐसे नाथ मुझे खोजते आए
थप्पड़ पर थप्पड़ देकर खिलाया मिश्री खांड
इस जन को
जिसने अनित्य लोक को नित्य मानकर
किए अनेक कर्म-दुष्कर्म
जन्म-मरण बढ़ाने के कृत्य में लीन रहा
उपजा 'मैं मेरा' का भाव
उगल रहा था अहंकार का सर्प
प्रारब्धकर्म का विष
विवश विकल निरुपाय मुझको
तार दिया प्रभु ने
अवर्णनीय है यह अद्भुत कृत्य।

(तिरुमुरै आठ - 41 पंक्ति 17-24)

858 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

649. பொருந்தும் இப்பிறப் பிறப்பிவை
நினைவாது பொய்களே புகன்றுபோய்க்
கருங்கு முலினார் கண்களால்
ஏறுண்டு கலங்கியே கிடப்பேனைத்
திருந்து சேவடிச் சிலம்பவை
சிலம்பிடத் திருவொடும் அகலாதே
அருந்து ணைவனாய் ஆண்டுகொண்
டருளிய அற்புதம் அறியேனே!

4

649. பார்த்துமிபிரபிரபிவீ
நினையாது பாய்க் புகன்று
கருங்கு முலினார் கண்களால்
ஏறுண்டு கலங்கியே கிடப்பேனைத்
திருந்து சேவடிச் சிலம்பவை
சிலம்பிடத் திருவொடும் அகலாதே
அருந்து ணைவனாய் ஆண்டுகொண்
டருளிய அற்புதம் அறியேனே !

(திருமுறை ஆட - 41 பங்கி 25-32)

650. மாடுஞ் சுற்றமும் மற்றுள
போகமும் மங்கையர் தம்மோடுங்
கூடி அங்குள குணங்களால்
ஏறுண்டு குலாவியே திரிவேனை
விடுதல் தென்றன் வெந்தொழில்
விட்டிட மென்மலர்க் கழல்காட்டி
ஆடு வித்தென தகம்புகுந்
தாண்டதோர் அற்புதம் அறியேனே!

5

650. மாடுஞ் சுற்றமும் மற்றுள
போகமும் மங்கையர் தம்மோடுங்
கூடி அங்குள குணங்களால்
ஏறுண்டு குலாவியே திரிவேனை
விடுதல் தென்றன் வெந்தொழில்
விட்டிட மென்மலர்க் கழல்காட்டி
ஆடு வித்தென தகம்புகுந்
தாண்டதோர் அற்புதம் அறியேனே !

(திருமுறை ஆட - 41 பங்கி 33-40)

649. तनिक भी विचार किये बिना
जनन-मरण के इस रोग का
लगा रहता था मैं मिथ्याभाषण में
श्यामल कुंतला कामिनियों के
नयनबाण से विद्ध होकर
विवश विकल पड़ा था मैं निरुपाय
पधारे नाथ मेरे पास
झनक रहे थे नूपुर-शिंजित पुण्यचरण
आये नाथ माँ उमा के संग
साथी के रूप में आकर अपनाया मुझे
वर्णनातीत है यह अद्भुत कृत्य।

(तिरुमुरै आठ - 41 पंक्ति 25-32)

650. भूला था मैं पाकर धन संपत्ति
परिजनों के संग सांसारिक सुख-भोग में
रम कर कामिनियों के मध्य में
आसक्त पड़ा था जगजीवन की माया पर
अभिभूत होकर उनके प्रभाव से
उन्मत्त की भांति भटक रहा था
हुआ नाथ का असीम अनुग्रह
व्यर्थ के इन कामों से छुटकारा देकर
मुक्ति प्रदान करने के लिए
प्रभु ने दिखाए निज मृदुल चरण
नचाकर मुझे प्रविष्ट हुए मेरे अंतर् में
और अपनाया मुझे करुणा से
अवर्णनीय है यह अद्भुत कृत्य।

(तिरुमुरै आठ - 41 पंक्ति 33-40)

860 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

651. வணங்கும் இப்பிறப் பிறப்பிவை
நினையாது மங்கையர் தம்மோடும்
பிணைந்து வாயிதழ்ப் பெருவெள்ளத்
தழுந்திநான் பித்தனாய்த் திரிவேனைக்
குணங்க ளுங்குறி களுமிலாக்
குணக்கடல் கோமளத் தொடுங்கட்டி
அணைந்து வந்தெனை ஆண்டுகொண்
டருளிய அற்புதம் அறியேனே !

6

651. वणङ्गुमिप्पिरप्पिरप्पिवै
निनैयादु मङ्गैयर् तम्माडुम्
पिणैन्दु वायिदळ्पुर्वळ्ळत्
अळुन्दि नान् पित्तनाय्त्तिरिवेनैक्
कुणङ्गळुम् कुरिङ्गळुमिलाक्
कुणक्कडल् कोमळत्ताडुम् कूडि
अणैन्दु वन्दनै आण्डुकाण्
डरुळिय अर्पुदम् अरियेने !

(திருமுரே ஆட - 41 பங்கி 41-48)

652. இப்பி றப்பினில் இணைமலர்
கொய்துநான் இயல்பொடஞ் செழுத்தோதித்
தப்பி லாதுபொற் கழல்களுக்
கிடாதுநான் தடமுலை யார்தங்கள்
மைப்பு லாங்கண்ணால் ஏறுண்டு
கிடப்பேனை மலரடி யிணைகாட்டி
அப்பன் என்னைவந் தாண்டுகொண்
டருளிய அற்புதம் அறியேனே !

7

652. इप्पिरप्पिनिल् इणैमलர்
काय्दुनान् इयल्पाडु अज्जळ् तोदिத்
तप्पिलादु पार्कळ्ळाळ्
किडादु नान् तडमुलैयाர் तङ्गळ्
मैप्पुलाङ्कण्णाल् एरुण्डு
கிடப்பேனே மலரடி இணை காட்டி
அப்பனனே வந்தாண்டுகாணு
டருகிய அர்புதம் அரியேனே !

(திருமுரே ஆட - 41 பங்கி 49-56)

651. विचार किये बिना
बारी-बारी से आ रही
जनन मरण की शृंखला पर
संपृक्त होकर पड़ा था मैं
कामिनियों के संग
उनके अधरामृत में धंसकर
इस तरह उन्मत्त की भांति
भटकते इस मूर्ख जन के पास आए
गुणातीत नामरूपातीत प्रभु
अनुग्रह का महासागर
कोमलांगी उमा सुकुमारी के संग
तात ने मुझे जो अपनाया
वर्णनातीत है यह अद्भुत कृत्य।

(तिरुमुरै आठ - 41 पंक्ति 41-48)

652. मानव-जीवन को धन्य करने का मार्ग है
सुरभित सुमनों का संचय कर
विधिपूर्वक पंचाक्षर मंत्र का जाप करते हुए
ईश के कनकमय चरणयुगल पर चढ़ाना
किंतु मैं पड़ा था
स्फीत-स्तनी कामिनियों के
अंजनरंजित नयनों का आघात पाकर
इस कदर्य जन को
दिखाया नाथ ने सुमन सरिस चरणयुगल
तात ने आकर जो मुझे अपनाया
इस अद्भुत का वर्णन कैसे करूँ मैं ?

(तिरुमुरै आठ - 41 पंक्ति 49-56)

862 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

653. ஊச லாடுமில் வுடலுயி

ராயின இருவினை அறுத்தென்னை
ஒசையாலுணர் வார்க்குணர்
வரியவன் உணர்வுதந் தொளியாக்கிப்
பாச மானவை பற்றறுத்
துயர்ந்ததன் பரம்பெருங் கருணையால்
ஆசை தீர்த்தடி யாரடிக்
கூட்டிய அற்புதம் அறியேனே!

8

653. ऊशलाट्टुम् इव्युडलुयि

रायिन वरुविनै अरुत्तन्नै
ओशैयालुणर्वाक्कुणर्
वरियवन् उणर्वु तन्दारि याविकप्
पाशमानवै पट्टरुत्
तुयन्द तन् परम् परुकरुणैयाल्
आशै तीर्त्तडियार् अडिक्
कूट्टिय अर्पुदम् अरियेने !

(திருமூரே ஆட - 41 பங்கி 57-64)

654. பொச்சை யான இப்பிறவியிற்

கிடந்துநான் புழுத்தலை நாய்போல
இச்சை யாயின ஏழையர்க்
கேசெய்தங் கிணங்கியே திரிவேனை
விச்ச கத்தரி அயனுமெட்
பாததன் விரைமலர்க் கழல்காட்டி
அச்சன் என்னையும் ஆண்டுகொண்
டருளிய அற்புதம் அறியேனே!

9

654. पांच्चैयान इप्पिरवियिर्

किडन्दु नान् पुळुत्तलै नाय् पोल
विच्चैयायिन एळैयर्क्
कैय्युदडन्नु इण्डुगिये तिरिवेने
विच्चगत्तु अरि अयनुमद
टाद तन् विरैमलक्कळल् काट्टि
अच्चनन्नैयुम् आण्डुकाण्
डरुळिय अर्पुदम् अरियेने !

(திருமூரே ஆட - 41 பங்கி 63-72)

653. झूले में सुलाने की भांति
 तन को प्राण को जहाँ तहाँ
 जन्म देने के हेतुक पाप-पुण्य को
 काट दिया प्रभु ने
 भाषाज्ञान से पांडित्य से
 विद्या-कला के ज्ञान से
 अप्राप्य नाथ ने
 जगाया आत्मबोध मेरे अंतर् में
 प्रसरित कर दी ज्ञान की ज्योति
 हटा दिया सकल बंध-पाश
 और मिला लिया निज भक्तमंडली में
 इससे महान् आश्चर्य
 आंखों ने नहीं देखा कानों ने नहीं सुना।

(तिरुमुरै आठ - 41 पंक्ति 57-64)

654. भटक रहा था श्वान तुल्य मैं
 जनन-मरण के निबिड़ वन में
 नाचता था कामिनियों की उंगलियों पर
 खपा रहा था जीवन को
 उनकी इच्छा अभिलाषाओं को पूरा करता हुआ
 नाथ का असीम अनुग्रह
 दिखाया मुझे अपना समुन्नत चरणयुगल
 सुदुर्लभ जो था विष्णु विरिंचि के लिए भी
 नाथ परमेश्वर ने इस जन को जो अपनाया
 वर्णनातीत है वह अद्भुत कृत्य।

(तिरुमुरै आठ - 41 पंक्ति 65-72)

864 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

655. செறியும் இப்பிறப் பிறப்பிவை
 நினையாது செறிசூழலார் செய்யுங்
 கிறியுங் கீழ்மையுங் கெண்டையங்
 கண்களும் உன்னியே கிடப்பேனை
 இறைவன் எம்பிரான் எல்லையில்
 லாததன் இணைமலர்க் கழல்காட்டி
 அறிவு தந்தெனை ஆண்டுகொண்
 டருளிய அற்புதம் அறியேனே!

10

655. चरियुम् इप्परपिवै
 निनैयादु चरि कुळलार् चय्युम्
 किरियुम् कीळ्मैयुम् कण्डैयड्
 कण्गळुम् उन्निये किडप्पेनै
 इरैवर्नम्पिरान् ऐल्लैलि
 लाद तन् इणैमलक्कळुल् काट्टि
 अरिवु तन्दनै आण्डुकाण्
 डरुळिय अर्पुदम् अरियेने !

(திருமுரே ஆட - 41 பங்கி 73-80)

655. तनिक भी विचार किये बिना
 बढ़ रही जनन-मरण की शृंखला पर
 भूला पड़ा था मैं
 सघनकुंतला कामिनियों के मोहपाश में
 ललना की छलना में
 मुग्ध होता हुआ उनके दीर्घ नयनों पर
 धन्य हो गया मैं
 नाथ के असीम अनुग्रह से
 दिखा कर अपना अनुपम चरणयुगल
 प्रदान की मुझे सदबुद्धि
 अपनाया दास रूप में
 रहस्यमय है यह अद्भुत !

(तिरुमुरै आठ - 41 पंक्ति 73-80)



866 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - टी. एन. रामचन्द्रन्

Source : Tiruvaachakam by T.N. Ramachandran

Linked with riches, kin, pleasures galore and damsels,
I roamed about rejoicing overwhelmed by their
Influence. To manumit me from these and to annual
My evil deeds, our God revealed to me His soft
And flowery feet. Entering my being, He causes me
To dance. Lo, I am not valiant to con this miracle.

Unmindful of the cycle of birth and death, I had union
With women, and immersed in their great labial
And salival flood rejoiced, and roamed about like
A mad man. He is a sea of *gunas* compact of *Sat*,
Chit and *Ananda* ! He is without *gunas* of *Satvam*, *Rajas*
And *Tamas*. He is without attributes. Even He,
Came to me with Her of divine beauty and ruled me.
Lo, I am not valiant to con this miracle.

In this birth, I did not gather choice flowers, chant,
As ordained, the mystic pentad of letters
And strew them at the auric and ankleted feet.
I but lay overwhelmed by the collyrium-touched eyes
Of women with buxom breasts. Unto me, my Sire came,
Revealed His flower feet twain and redeemed me
And rules me. Lo, I am not valiant to con this miracle.

He is not to be known by them who resort to the sound
Of uttered words or books. He blessed me with
The Light of Gnosis and clear consciousness.
He snapped my twyfold Karma by which
Life and body are swung as in a swing.
He annulled my nexus with them all – the three
Malas –, and by His great and lofty and supernal
Mercy, extirpated Desire and placed me at the Feet
Of His servitors. Lo, I am not valiant to con this theurgy !

Living on this earth – a (pathless) wood -- I roamed
 About like a dog with a worm - infested pate.
 To please the women with whom I found my life
 Agreeable, I did deeds and circummigrated.
 He revealed to me His fragrant and flower feet
 Unreachable by Vishnu and Brahma on this earth.
 The Sire redeemed even me and ruled me in grace.
 Lo, I am not valiant to con this theurgy !

Regardless of the recurring cycle of birth and death,
 I lay contemplating the tricks and wanton wiles
 Of the carp-eyed women of dense and dark tresses.
 The Lord, our God, revealed to me
 His flowery and ankleted feet than know no bourne,
 Blessed me with *Pati - Gnaanam* and rules me in grace.
 Lo, I am not valiant to con this theurgy !

Lines : 33 - 80

42

சென்னிப்பத்து

चंनिप्पत्तु

சிவ விளைவு

शिव-विज्ञैव

656. தேவ தேவன் மெய்ச் சேவகன்
தென்பெ ருந்துறை நாயகன்
முவ ராலும் அறியொ ணாமுத
லாய ஆனந்த முர்த்தியான்
யாவ ராயினும் அன்ப ரன்றி
அறியொ ணாமலர்ச் சோதியான்
தூய மாமலர்ச் சேவ டிக்கணம்
சென்னி மன்னிச் சுடருமே!

1

656. तेवतेवन् मय्येवकन्
तन्परन्तुरै नायकन्
मूवरालुम् अरियाणा मुद
लाय आनन्द मूर्तियान्
यावरायिनुम् अन्वरन्ति
अरियाणा मलरच्योतियान्
तूय मामल चेवडिवकणम्
चंनि मन्निच्चुडुरुमे !

(திருமூரே ஆட - 42 பங்கி 1-8)

42

शीर्ष-दशक

शिव-सम्प्राप्ति

656. देवदेव महादेव प्रभु
दक्षिण परंतुरे के अधीश हैं
अपरंपार है महिमा
जिन्हें जानना दुष्कर है त्रिदेव के लिए
अविदित है सबके लिए
विदित होता है केवल भक्तों के लिए
ऐसे परंज्योति स्वरूप के
सुभग सुमन-सरिस चरणयुगल पर
ज्योतिर रहें हमारे शीर्ष नित्य ही।

(तिरुमुरै आठ - 42 पंक्ति 1-8)

870 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

657. அட்ட முர்த்தி அழகன், இன்னமு
தாய ஆனந்த வெள்ளத்தான்
சிட்டன் மெய்ச்சிவ லோக நாயகன்
தென்பெ ருந்துறைச் சேவகன்
மட்டு வார்குமல் மங்கை யாளையோர்
பாகம் வைத்த அழகன்தன்,
வட்ட மாமலர்ச் சேவ டி.க்கணம்
சென்னி மன்னி மலருமே!

2

657. अट्टमूर्ति अळगनिन्मुदु
आय आनन्द वळ्ळत्तान्
चिट्टन् मयच्चिवलोक नायकन्
तन्परन्तुरैच्चेवकन्
मट्टुवार्कुळल् मङ्गैयाळैयोर्
पागम् वैत्त अळगन् तन्
वट्टमामलर्च्चैवडिवकणम्
चैन्नि मन्नि मलरुमे !

(திருமுரே ஆட - 42 பங்கி 9-16)

658. நங்கை மீரெனை நோக்குமின் நங்கள்
நாதன் நம்பணி கொண்டவன்
தெங்கு சோலைகள் சூழ்பெ ருந்துறை
மேய சேவகன் நாயகன்
மங்கை மார்கையில் வளையுங் கொண்டெம்
உயிருங் கொண்டெம் பணிகொள்வான்
பொங்கு மாமலர்ச் சேவ டி.க்கணம்
சென்னி மன்னிப் பொலியுமே!

3

658. नङ्गैमीर् ऐनै नोक्कुमिन् नङ्गळ्
नादन् नम् पणि काण्डवन्
तङ्गु चोलैगळ् चूळ् परन्तुरै
मेय चेवकन् नायकन्
मङ्गैமார் கையிற் வळையும் காண்டம்
उयिरुम् காண்டம் பணி காட்வான்
पाङ्गु मामलर्च्चैवडिवकणम्
चैन्नि मन्निप् पालियुमे !

(திருமுரே ஆட - 42 பங்கி 17-24)

657. अष्टमूर्ति सुंदरेश वह
 अमृतमय आनंद-धार है
 शिष्ट उत्कृष्ट देवदेव महादेव वह
 सत्य शिवलोक के नाथ हैं
 विराजे हैं दक्षिण परंतुरै के धाम में
 आनंद से आमोद से
 वाम भाग दिया जिन्होंने
 सुगंधकुंतला देवी उमा को
 ऐसे महिमामय सुंदरेश प्रभु के
 सुभग सुमन सरिस चरण युगल पर
 कलिन विकसित रहें हमारे शीर्ष।

(तिरुमुरै आठ - 42 पंक्ति 9-16)

658. नारियो ! आओ यहाँ सुनो मेरी बात
 मुझे प्रेम से अपनाया दास रूप में
 नाथ वह विराजे हैं
 नारिकेल उपवन बलियित
 सुभग सुंदर परंतुरै धाम में
 नायक वह मोहित करता है
 नारियों के कर से चौर्य करता है
 उनकी चूड़ियों को, प्राण को
 इस तरह अपना बनाकर देता है
 मुक्ति का आमोद
 महिमामय सुमन सरिस नाथचरण पर
 विलसे रहें हमारे शीर्ष नित्य ही।

(तिरुमुरै आठ - 42 पंक्ति 17-24)

872 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

659. பத்தர் துழப் பராபரன்
 பாரில் வந்துபார்ப் பானெனச்
 சித்தர் துழச் சிவபிரான்
 தில்லை முதுார் நடஞ்செய்வான்
 எத்த னாகிவந் தில்பு குந்தெமை
 ஆளுங் கொண்டெம் பணிகொள்வான்
 வைத்த மாமலர்ச் சேவ டிச்சகணம்
 சென்னி மன்னி மலருமே!

4

659. पत्तर् दूळप्परापरन्
 पारिल् वन्दु पाप्पार्निनच्
 चित्तर् दूळ शिवपिरान्
 तिल्लै मूदर् नड्मच्यवान्
 ऐत्तनागि वन्दिल् पुगुन्दमै
 आळुम् काण्डम् पणिकाळ्वान्
 वैत्त मामलचर्चेवडिवकणम्
 चन्नि मन्नि मलरुमे !

(திருமுரே ஆட - 42 பங்கி 25-32)

660. மாய வாழ்ச்சையை மெய்யென் றெண்ணி
 மதித்தி டாவகை நல்கினான்
 வேய தோளுமை பங்கன் எங்கள்
 திருப்பெ ருந்துறை மேவினான்
 காயத் துள்ளமு தூற ஊறநீ
 கண்டுகொள்ளென்று காட்டிய
 சேய மாமலர்ச் சேவ டிச்சகணம்
 சென்னி மன்னித் திகழுமே!

5

660. माय वाळ्वकैयै मय्यन्ऱणि
 मदितिडा वगै नल्लिनान्
 वेय तोळुमै पङ्गनङ्गळ्
 तिरुप्पर्न्तुरै मेविनान्
 कायत्तुळ्ळमुदूर ऊरनी
 कण्डुकाळ्ळन्ऱु काट्टिय
 चेयमामलचर्चेवडिवकणम्
 चन्नि मन्नि तिगळु मे !

(திருமுரே ஆட - 42 பங்கி 33-40)

659. परात्पर परमेश्वर
 निज भक्तमंडली के संग
 पधारे प्राचीन तिल्लै में
 द्विज रूप धर कर
 दिखाया भव्य नृत्य चिदंबर में
 वही छलिया बनकर प्रविष्ट हुए
 मेरे अंतर् में और दास बनाकर
 नियुक्त किया निज सेवा में
 नाथ के सुमन सरिस चरणयुगल पर
 कलित-विकसित रहें हमारे शीर्ष।

(तिरुमुरै आठ - 42 पंक्ति 25-32)

660. बोध दिया नाथ ने
 कि अनित्य जीवन को नित्य मानो नहीं
 वंशी सरिस सुकोमल स्कंध की
 उमा सुकुमारी को वाम भाग दिया प्रभु ने
 विराजे हैं हमारे नाथ
 तिरुप्परुन्तुरै के दिव्यधाम में
 हृदय में बसकर मधुर मधुरिम लगे
 प्रभु मानो यही बता रहे हैं
 रिसता रहेगा अमृत निरंतर
 छक लो जितनी इच्छा है
 नाथ के कमल निभ अरुणिम चरणों पर
 शाश्वत रूप से लसित रहें हमारे शीर्ष।

(तिरुमुरै आठ - 42 पंक्ति 33-40)

874 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

661. சித்த மேபுகுந் தெம்மையாட் கொண்டு
தீவி னைகெடுத்த துய்யலாம்
பத்தி தந்துதன் பொற்க ழற்கணே
பன்மலர் கொய்து சேர்த்தலும்
முத்தி தந்திந்த முவுல குக்கும்
அப்பு றத்தெமை வைத்திடும்
அத்தன் மாமலர்ச் சேவ டிக்கணம்
சென்னி மன்னி மலருமே!

6

661. चित्तमे पुगुन्दम्मे आट्कोण्डु
तीविनै कंडुचुय्यलाम्
पत्ति तन्दुतन् पांर्कळर्कणे
पन्मलर् काय्दु चेर्त्तलुम्
मुत्ति तन्दिन्द मूकुलगुक्कुम्
अप्पुरत्तमै वैत्तिडुम्
अत्तन् मामलर्च्चेवडिवकणम्
चन्नि मन्नि मलरुमे !

(திருமூரே ஆட - 42 பங்கி 41-48)

662. பிறவி யென்னுமிக் கடலை நீந்தத்தன்
பேர குள்தந் தருளிநான்
அறவை யென்றடி யார்கள் தங்கள்
அருட்கு ழாம்புக விட்டுநல்
உறவு செய்தெனை உய்யக் கொண்ட
பிரான்தன் உண்மைப் பெருக்கமாம்
திறமைகாட்டிய சேவ டிக்கணம்
சென்னி மன்னித் திகழுமே!

7

662. पिरवि ऐन्नुमिवकडलै नीन्दत्तन्
पेररुळ् तन्दरुळिनान्
अरवै ऐन्डियार्गळ् तङ्गळ्
अरुळ् कुळाम् पुगविट्टु नल्
उरवु चय्दनै उय्यक्काण्ड
पिरान् तनुण्मैप् பர்வகமாம்
तिरमै काट्टिय चेवडिवकणम्
चन्नि मन्निத் திகழுமே !

(திருமூரே ஆட - 42 பங்கி 49-56)

661. परमदयालु नाथ ने
 प्रविष्ट होकर मेरे हृदय में
 अपनाया मुझे दास रूप में
 काट दिया सकल कर्मबंधन
 दिखाया उद्धार का भक्तिमार्ग
 चर्चा अर्चा आराधना का सन्मार्ग
 और फिर मोक्ष-साम्राज्य दिया
 स्थान दिया तीनों लोकों के ऊपर
 ऐसे मेरे तात के सुभग चरणों पर
 कलित-विकसित रहे हमारे शीर्ष
 शाश्वत रूप में।

(तिरुमुरै आठ - 42 पंक्ति 41-48)

662. जनन-मरण के भवसागर को तरने के लिए
 नाथ ने प्रदान की निज नाम की नौका
 सब भांति अनाथ निराश्रित मानकर मुझे
 मिला लिया निज भक्तमंडली में
 अनुगृहीत भक्तों का सत्संग दिलाकर
 उद्धार कर दिया प्रभु परमेश्वर ने
 नाथ की महिमा का विस्तार कर रहे
 सत्यमय सुभग चरणों पर
 नित्य ही विलसित रहें हमारे शीर्ष।

(तिरुमुरै आठ - 42 पंक्ति 49-56)

876 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

663. புழுவி னாற்பொதிந் திடுகு ரம்பையிற்
பொய்த னையொழி வித்திடும்
எழில்கொள் சோதியெம் ஈசன் எம்பிரான்
என்னு டையப்பன் என்றென்று
தொழுத கையினராகித் தூய்மலர்க்
கண்கள் நீர்மல்குந் தொண்டர்க்கு
வலுவி லாமலர்ச் சேவ டிக்கணம்
சென்னி மன்னி மலருமே!

8

663. पुळु विनाः पादिन्दिडु कुरम्बैयिल्
पाय्तनै आळिवित्तिडुम्
एळिल् काळ् चोति ऐम्मीशनम्पिरान्
ऐन्नुडैयप्पन्नन्
ताळ्द कैयिन रागित् तूयमलरव्
कण्गळ् नीर् मल्लुम् ताण्डवकु
वळु विला मलर्च्चैवडिवकणम्
चन्नि मन्नि मलरुमे !

(திருமுறை ஆட - 42 பங்கி 57-64)

664. வம்ப னாய்த்திரி வேனை வாவென்று
வல்வி னைப்பகை மாய்த்திடும்
உம்ப ரான்உல கூட றுத்தப்
புறத்த னாய்நின்ற எம்பிரான்
அன்ப ரானவர்க் கருளி மெய்யடி
யார்கட் கின்பந் தழைத்திடுஞ்
செம்பொன் மாமலர்ச் சேவ டிக்கணம்
சென்னி மன்னித் திகழுமே!

9

664. वम्बनायत् तिरिवेनै वावन्
वल्विनै पगै मायत्तिडुम्
उम्ब रान् उलगूडरुत्तप्
पुर्त्तनाय् निन् ऐम्पिरान्
अम्बरानवकर्कळि मय्यडि
यार्कटकम्बम् तळैत्तिडुम्
चम्पान् मामलर्च्चैवडिवकणम्
चन्नि मन्निगळु मे !

(திருமுறை ஆட - 42 பங்கி 65-72)

663. कृमि-कीटपूरित मृषामय काया के
 कल्मष को दूर किया प्रभु ने
 परिपक्व भक्तगण सुध-बुध भूलकर
 ध्यान में, स्तवन में, कीर्तन में रत हैं —
 सौंदर्यमय ज्योतिराट् ! मेरे ईश ! नाथ !
 मेरे तात-मात !
 स्तुतिगान कर रहे हैं
 अंजलिबद्ध करों पर सुंदर सुमन हैं
 स्रवित हो रही नयनों से वारिधार
 ऐसे भक्तों का उद्धार करते
 अमोघ दिव्य सुमन सरिस चरणों पर
 कलित विकसित होते रहें हमारे शीर्ष।

(तिरुमुरै आठ - 42 पंक्ति 57-64)

664. लक्ष्यभ्रष्ट मैं भटक रहा था
 जब नाथ ने बुलाया प्रेम से और
 नष्ट कर दिया संचित आगामी कर्म के शत्रु को
 व्याप्त हैं प्रभु निखिल भुवनों में
 और स्थित हैं उनके परे भी
 प्रदान करते हैं आनंददायक चरणयुगल
 अपने भक्तजनों को अनुग्रहपूर्वक
 इन सुमन सरिस चरणयुगल पर
 शोभित रहें हमारे शीर्ष।

(तिरुमुरै आठ - 42 पंक्ति 65-72)

878 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

665. முத்த னைமுதற்சோதி யைமுக்க
 ணப்ப னைமுதல் வித்தினைச்
 சித்தனைச் சிவ லோ கனைத்திரு
 நாமம் பாடித் திரிதரும்
 பத்தர் காள் இங்கே வம்மின் நீருங்கள்
 பாசந் தீரப் பணிமினோ
 சித்த மார்தருஞ் சேவ டிக்கணம்
 சென்னி மன்னித் திகழுமே!

10

665. मुत्तनै मुदर्चातियै मुक्क
 णप्पनै मुदल् वित्तिनै
 चित्तनै शिवलोकनैत्तिर
 नामम् पाडित् तिरितरम्
 पत्तर्गाळ् इङ्गे वम्मिन् नीरुङ्गळ्
 पाशम् तीरप् पणिमिनो
 चित्तमार् तरम् चेवडिक्कणम्
 चान्निथिल् तिगळ् मे !

(तिरुमुरै आठ - 42 पंक्ति 73-80)

665. नित्य मुक्त ! परम ज्योति !
 त्रिनेत्र प्रभु ! आदिदेव !
 ज्ञानेश्वर ! शिवलोक नाथ !
 नाथ के दिव्यनाम
 गाते हुए भ्रमण करते भक्तवृंद
 आएँ इधर प्रणत हों
 प्रभु के चरणयुगल पर इस भावना के संग
 कि कट जाए भव के पाश बंध निःशेष ही
 हृदय में भर कर आनंदित करने
 दिव्य चरण प्रकाशित होंगे
 हमारे शीर्ष पर।

(तिरुमुरै आठ - 42 पंक्ति 73-80)



880 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - वर्ड बीटिफिक एस. ए. शंकरनारायणन्

Source : Tiruvacagam : Word Beatific by S.A. Sankaranarayanan

Head of the celestials, Truly valiant
 fair king of Holy Perunthurai
 Bliss-begun-form unknowable
 to Trinity, flower - lustrous
 mien'd known to none except servitors,
 is He. At His Lotus like, pure pure
 ruddy feet holy may our crest
 lie in firm repose.

Fair is He with forms eight ; from
 Him is released sweet ambrosian bliss.
 Great one, True Ens, Lord of Civalokam,
 valiant one abiding at fair Perunthurai
 Honey-smell nestling long-lock'd
 Uma, fair He has for His half.
 At His round lotus like ruddy feet
 may our crest lie in firm repose.

O ! Damsels ! you see, Our Lord
 wears Ganga as an ornament.
 He is the first valiant abiding at
 coconut grove-girt fair Perunthurai.
 He is the Taker all of women's
 bangles off their hands, and
 our lives and services and attendance.
 At His glowing lotus-similar
 Carmine feet may our crests
 lie in firm credit.

With His retinue of servitors
 the Great Supreme Lord, besides
 gracing guised as a Brahmin
 on this earth, has, through
 dancing on ancient Tillai Dais,
 as Civa the trickster, entered
 our homes ; taken us slaves ;
 and acknowledged our services.
 To His Holy feet lotuses placed
 on the crests, may our minds
 get hitched, in firm lustre.

Bamboo ship-shape shoulder'd Uma
 in Half, the willing abider
 at fair Perunthurai, viewing-this
 - worldly - life - false - as - true did
 away with ; and thus coursing me,
 with bliss ambrosian oozing
 in flesh, for me to know of
 the state of ecstasy, He
 indicated with signs of His
 red holy lotus feet where
 may our crests lie in firm lustre.

Lines : 1 - 40

43

திருவார்த்தை

திருவார்தை

அறிவித்தின்புறுதல்

அறிவித்தின்புறுதல்

666. மாதிவர் பாகன் மறைபயின்ற
 வாசகன் மாமலர் மேயசோதி
 கோதில் பரங்கரு ணையடியார்
 குலாவுநீதி குணமாக நல்கும்
 போதலர் சோலைப் பெருந்துறையெம்
 புண்ணியன் மண்ணிடை வந்திழிந்து
 ஆதிப் பிரமம் வெளிப்படுத்த
 அருளறி வார்எம்பி ரானாவாரே!

1

666. மாதிவர் பாகன் மறைபயின்ற
 வாசகன் மாமலர் மேயசோதி
 கோதில் பரங்கரு ணையடியார்
 குலாவுநீதி குணமாக நல்கும்
 போதலர் சோலைப் பெருந்துறையெம்
 புண்ணியன் மண்ணிடை வந்திழிந்து
 ஆதிப் பிரமம் வெளிப்படுத்த
 அருளறி வார்எம்பி ரானாவாரே!

(திரும்புரை ஆட - 43 பங்கி 1-8)

43

श्रीवार्ता

आनन्द बाँटना

666. अर्धनारीश्वर प्रभु
जिनके मुखकमल में पुष्पित वचन वेदवाक्य हैं
अमोघ असीम कृपा का
नीति-सम्मत अनुग्रहवर्षा का
गुणगान कर रहे हैं भक्तगण प्रेम से
सुमन पूरित उपवनवलयित
परुन्तुरै के अधीश हैं
जो समझ सकते हैं नाथ-महिमा को
जिस भांति महादेव ने
पधार कर धरणीतल में
निज ब्रह्मरूप को प्रकट किया
ऐसे ज्ञानधनी हमारे नाथ हैं।

(तिरुमुरै आठ - 43 पंक्ति 1-8)

884 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

667. மாலயன் வானவர் கோனும்வந்து
வணங்க அவர்க்கருள் செய்தாசன்
ஞாலம் அதனிலை வந்திழிந்து
நன்னெறி காட்டி நலம்திகழும்
கோல மணியணி மாடநீடு
குலாவு மிடைவை மடநல்லாட்குச்
சீலமிகக்கரு ணையளிக்குந்
திறமறி வார்எம்பி ரானாவாரே!

2

667. मालयन् वानवर् कोनुम् वन्दु
वणङ्ग अवर्करुळ् चय्द ईशन्
आलमदनिडै वन्दिळिन्दु
नन्निंरि काट्टि नलन्निगळुम्
कोलमणियणि माडनीडु
कुलावुम् इडवैमडम् नल्लादकुच्च
चीलमिगक् करुणैयळिवकुम्
तिरुमरिवार् ऐम्पिरानாவारे !

(திருமுரே ஆட - 43 பங்கி 9-16)

668. அணிமுடி ஆதி அமரர்கோமான்
ஆனந்தக் கூத்தன் அறுசமயம்
பணிவகை செய்து படவதேறிப்
பாரொடு விண்ணும் பரவியேத்தப்
பிணிகெட நல்கும் பெருந்துறையெம்
பேரரு ளாளன்பெண் பாலுகந்து
மணிவலை கொண்டுவான் மின்விசிறும்
வகையறி வார்எம்பி ரானாவாரே!

3

668. अणिमुडि आदि अमरर् कोमान्
आनन्दक् कूतनरुचमयम्
पणिवगै चय्दु पडवदेरिप्
पारांडु विण्णुम् परवियेत्तप्
पिणिकंड नलुम् परन्तुरैयम्
पेरुळाळन् पण्पालुगन्दु
मणिवलै काण्डु वान्मीन् विशिरुम्
वगैयरिवार् ऐम्पिरानாவारे !

(திருமுரே ஆட - 43 பங்கி 17-24)

667. वही हमारे नाथ हैं
 जो समझ सकते हैं नाथ महिमा को
 जिनके चरणतल पर प्रणत हैं
 विष्णु विरिंचि के संग देवेंद्र भी
 अनुगृहीत करते हैं देवाधिदेव परमेश्वर
 धरणीतल पर पधारकर
 हमें दर्शाते हैं शिव-सन्मार्ग
 जिन्होंने बरसाया कृपापूर्ण अनुग्रह
 तुंग प्राचीर-वलयित
 इडैमरुदूर की सुशील नारी पर।

(तिरुमुरै आठ - 43 पंक्ति 9-16)

668. आदिदेव अनादिनाथ रत्न-किरीटधर
 वह महादेव देवाधिदेव हैं
 चिदंबर में नर्तित नटराजराज भी
 व्यवस्थित किया उपासना-मार्ग को
 षण्मत स्थापना करके
 जन्म-रोग को ध्वस्त करते हैं
 पेरुंतुरै के अधीश
 लीलामय आरूढ़ हुए नौका पर
 धरणी और अंबर जब स्तवन कर रहे
 मछुआरिन कुमारी बनी उमा पर आसक्त होकर
 उसके संग मणिमय जाल फैला रहे हैं
 आमोद से नभ-मीन ग्रसित करने के लिए
 प्रभु परमेश्वर की इन महिमाओं को
 जो समझते हैं वे हमारे नाथ हैं।

(तिरुमुरै आठ - 43 पंक्ति 17-24)

886 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

669. வேடுகு வாகி மயேந்திரத்து
 மிகுகுறை வானவர் வந்துதன்னைத்
 தேட இருந்த சிவபெருமான்
 சிந்தனை செய்தடி யோங்களுய்ய
 ஆடல்அமர்ந்த பரிமா ஏறி
 ஐயன் பெருந்துறை ஆதிஅந்நாள்
 ஏடர்களையெங்கும் ஆண்டுகொண்ட
 இயல்பறி வார்எம்பி ரானாவாரே !

4

669. வேடுருவாகி மயேந்திரத்து
 மிகுகுறே வானவர் வந்து தன்னைத்
 தேட இருந்த சிவபெருமான்
 சிந்தனை செய்தடியோங்களுய்ய
 ஆடல்அமர்ந்த பரிமா ஏறி
 ஐயன் பெருந்துறை ஆதிஅந்நாள்
 ஏடர்களையெங்கும் ஆண்டுகொண்ட
 இயல்பறிவார்எம்பி ரானாவாரே !

(திருமுறை ஆட - 43 பவ்தி 25-32)

670. வந்திமை யோர்கள் வணங்கியேத்த
 மாக்கரு ணைக்கட லாய்அடியார்
 பந்தனை விண்டற நல்கும் எங்கள்
 பரமன் பெருந்துறை ஆதிஅந்நாள்
 உந்து திரைக்கட லைக்கடந்தன்
 றோங்கும் மதிலிலங் கைஅதனிற்
 பந்தனை மெல்விர் லாட்கருளும்
 பரிசுறி வார்எம்பி ரானாவாரே !

5

670. வந்திமையோர்க் வணங்கியேத்
 மாக்கருணைக்கட லாய்அடியார்
 பந்தனை விண்டற நல்கும் எங்கள்
 பரமன் பெருந்துறை ஆதிஅந்நாள்
 உந்து திரைக்கட லைக்கடந்தன்
 றோங்கும் மதிலிலங் கைஅதனிற்
 பந்தனை மெல்விர் லாட்கருளும்
 பரிசுறிவார்எம்பி ரானாவாரே !

(திருமுறை ஆட - 43 பவ்தி 33-40)

669. व्याधरूप धरकर महादेव
 विराज रहे थे महेंद्र पर्वत पर
 परिवाद लेकर आ रहे देवगण के लिए
 उन्हें दूँड पाना दुर्लभ हो गया था
 ऐसे महिमाय प्रभु
 भक्तगण के उद्धार हेतु
 नटनकला में सुदक्ष अश्व पर
 आरुढ़ हो कर पधारे धरणीतल पर
 आदिदेव वह परुन्तुरै के अधीश हैं
 आकर निज दासों को अपनाया था
 प्रभु की इस महानता को
 जो समझ सकते हैं वे हमारे नाथ हैं।

(तिरुमुरै आठ - 43 पंक्ति 25-32)

670. देवगण ने पा लिया परमेश्वर को
 चरणतल पर प्रणत होकर हुए स्तुतिरत
 असीम करुणासागर प्रभु ने
 अनुग्रह बरसाया दासगण पर
 काटकर उनका जनन-मरण का बंधन
 आदिदेव परमेश्वर वह अधीश हैं
 परुन्तुरै घाम के
 उस दिन —
 पारकर तरंगसंकुल सागर को
 पहुँच गए प्राचीर-वलयित लंका में
 अनुगृहीत करने के लिए
 कुंदक सम मृदुल उंगलियों की धनी
 मंदोदरी को
 प्रभु की इन महिमाओं को
 जो समझते हैं वे हमारे नाथ हैं।

(तिरुमुरै आठ - 43 पंक्ति 33-40)

888 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

671. வேவத் திரிபுரம் செற்றவில்லி
 வேடுவ னாய்க்கடி நாய்கள்துழ
 ஏவற் செயல்செய்யுந் தேவர்முன்னே
 எம்பெரு மான்தான் இயங்குகாட்டில்
 ஏவுண்ட பன்றிக் கிரங்கியீசன்
 எந்தை பெருந்துறை ஆதிஅன்று
 கேவலங் கேழலாய்ப் பால்கொடுத்த
 கிடப்பறி வார்எம்பி ரானாவாரே!

6

671. वेवत् तिरिपुरम् चंद्रविल्लि
 वेडुवनायकडि नायगळ् चूळ
 एवल् चय्युम् तेवर् मुन्ने
 एम्परुमान् तानियङ्गु काट्टिल्
 एवुण्ड पन्निक्करङ्गि ईशन्
 ऐन्तै परुन्नुரै आदि अन्
 केवलम् केळलायप् पाल् काडुत्त
 किडप्परिवार ऐम्पिरानாவारे !
 (तिरुमुரै आठ - 43 पंक्ति 41-48)

672. நாதம் உடையதோர் நற்கமலப்
 போதினில் நண்ணிய நன்னுதலார்
 ஒதிப் பணிந்தலர் தூவியேத்த
 ஒளிவளர் சோதியெம் ஈசன்மன்னும்
 போதலர் சோலைப் பெருந்துறையெம்
 புண்ணியன் மண்ணிடை வந்துதோன்றிப்
 பேதங் கெடுத்தருள் செய்பெருமை
 அறியவல் லார்எம்பி ரானாவாரே!

7

672. नादमुडैयदोर् नर्कमलप्
 पोदिनिल् नण्णिय नन्नुदलार्
 ओदिप् पणिन्दलर् तूवियेत्त
 आळिवळर् चोतियम्मीशन् मन्नुम्
 पोदलर् चोलैप् परुन्नुरै येम्
 पुण्णियन् मण्णिडै वन्दु तोन्निय
 पेदम् कडुत्तरुळ् चय् परुमै
 अरियवल्लार् ऐम्पिरानாவारे !
 (तिरुमुरै आठ - 43 पंक्ति 49-56)

671. धू-धू कर त्रिपुर को जलाया
 देवाधिदेव परमेश्वर ने
 वही व्याध रूप धरकर एक बार
 कानन में कर रहे थे संचार
 नाथ के संग प्रचुर संख्या में श्वान भी थे
 देवगण सेवारत हो साथ-साथ लगे थे
 इतने में देखा परमेश्वर ने
 बाण-विद्ध होकर मृत शूकरी को
 स्तन्य के लिए त्रसित
 शूकर शावकों पर दया कर के
 सेवारत देवगण के सामने ही
 देवाधिदेव ने शूकरी माँ का रूप धरा
 और पिलाया स्तन्य शूकर शावकों को
 महेश्वर की इस महिमा को
 जो समझते हैं वे हमारे नाथ हैं।

(तिरुमुरै आठ - 43 पंक्ति 41-48)

672. उद्यान-सरोवर में
 अंतर्स्थित भ्रमरों के गुंजार से
 नादरत हैं कमलसरोवर
 सरोवर के चारों ओर स्थित
 सुंदरी नारियाँ स्तुतिगान कर रही हैं
 प्रभु-महिमा का अर्चन कर रही हैं
 नाना रंग के सुमन से
 इस तरह ज्योतिष है
 ज्योतिराट् परमेश्वर से अधिवसित
 सुमनसरोवर वलयित परुन्तुरै धाम
 जहाँ पुण्यपुरुष परमेश्वर पधारे हैं धरणीतल पर
 धरती में उत्पन्न सकल भेद का विनाशकर
 अनुग्रहवर्षा करने को
 प्रभु की इस अपार महिमा को
 जो समझते हैं वे हमारे नाथ हैं।

(तिरुमुरै आठ - 43 पंक्ति 49-56)

890 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

673. பூவலர் கொன்றையம் மாலையார்பன்
 போருகிர் வன்புலி கொன்றவிரன்
 மாதுநல் லாளுமை மங்கைபங்கன்
 வண்பொழில் துழ்நென் பெருந்துறைக்கோன்
 ஏதில் பெரும்புகழ் எங்கள்நசன்
 இருங்கடல் வாணற்குத் தீயில்தோன்றும்
 ஒவிய மங்கையர் தோள்புணரும்
 உருவறி வார்எம்பி ரானாவாரே!

8

673. பூவலர் காந்ரேய மாலே மாவ்ந்
 போருகிர் வன்புலி காந்ர விரந்
 மாது நல்லாடும் மட்குபாபாந்
 வண்பாடில் தூண்டந் ப்ருந்துரைகொந்
 எதில் ப்ருமபுகழ் எங்கள்நசந்
 இருங்கடல் வாணற்குத் தீயில்தோன்றும்
 ஒவிய மங்கையர் தோள்புணரும்
 உருவறிவார் எம்பிரானாவாரே !

(திருமூரே ஆட - 43 பங்கித் 57-64)

674. தூவெள்ளை நீரணி எம்பெருமான்
 சோதி மயேந்திர நாதன்வந்து
 தேவர் தொழும்பதம் வைத்தநசன்
 தென்னன் பெருந்துறை ஆளினன்று
 காதல் பெருகக் கருணையாட்டித்
 தன்கழல் காட்டிக் கசிந்துருகக்
 கேதங் கெடுத்தென்னை ஆண்டருளுங்
 கிடப்பறி வார்எம்பி ரானாவாரே!

9

674. தூவ்வுளே நீரணி எம்பெருமான்
 சோதி மயேந்திரநாதன் வந்து
 தேவர் தாடும் பதம் வைத்தநசன்
 தென்னன் ப்ருந்துரை ஆளினன்று
 காதல் ப்ருகக் கருணை யாட்டித்
 தன்கழல் காட்டிக் கசிந்துருகக்
 கேதங் கெடுத்தென்னை ஆண்டருளுங்
 கிடப்பறிவார் எம்பிரானாவாரே !

(திருமூரே ஆட - 43 பங்கித் 65-72)

673. वक्ष पर कान्चै-हार के संग शोभित हैं
 महावीर जिन्होंने निग्रह किया
 नखदंत भयंकर व्याघ्र को रंगांगण में
 और वाम भाग दिया निज अंग का
 उमा सुकुमारी नारी शिरोमणि को
 उपवन वलयित परंत्तुरै के अधीश ने
 महादेव की महाकीर्ति असीम है
 अपरंपार है - हमारे नाथ ने पुराकाल में
 वारिधीश वरुणदेव के यज्ञकुंड से
 समुत्पन्न अगणित सुंदरियों को
 तन्मय बनाया शिवमय बना लिया
 नाथ की ऐसी दिव्य महिमाओं को
 जो समझते हैं ऐसे महज्जनों के
 हम दास हैं वे हमारे नाथ हैं।

(तिरुमुरै आठ - 43 पंक्ति 57-64)

674. धवल भस्म विभूषित मेरे नाथ
 ज्योतिस्वरूप जो विराजे हैं
 महेन्द्र पर्वत पर
 स्वयं पधारे धरणीतल पर
 धर दिये मेरे शीर्ष पर
 अपने श्रीलसित चरणकमल
 जो देवगणों द्वारा आराधित है
 महादेव प्रभु परंत्तुरै के अधीश ने
 उस दिन दिखाई परम करुणा
 दर्शाया निज चरणयुगल
 दूर कर सकल दुःख-दुरित
 अपनाया मुझे अनुग्रहपूर्वक
 प्रभु की इस महिमा को
 जो जानते हैं यथातथ्य रूप में
 वे हमारे नाथ हैं।

(तिरुमुरै आठ - 43 पंक्ति 65-72)

892 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

675. அங்கணன் எங்கள் அமரர் பெம்மான்
 அடியார்க் கமுதன் அவனிவந்த
 எங்கள் பிரான்இரும் பாசந்தீர்
 இகபர மாயதோர் இன்பபெய்தச்
 சங்கங் கவர்ந்துவண் சாத்தினோடுஞ்
 சதுரன் பெருந்துறை ஆளிஅன்று
 மங்கையர் மல்கும் மதுரைசேர்ந்த
 வகையறி வார்எம்பி ரானாவாரே!

10

675. அட்கணந் ஐங்கல் அமரர் பம்மான்
 அடியார்க்முதந் அவனி வந்த
 ஐங்கல் பிரான் இருமபாசந் தீர்
 இஹபரமாயதோர் இன்பம் பெய்தச்
 சங்கம் கவர்ந்து வண் சாத்தினோடுஞ்
 சதுரன் பெருந்துறை ஆளி அன்று
 மங்கையர் மல்கு மதுரை சேர்ந்த
 வகை அறியார் எம்பி ரானாவாரே !

(திருமுறை ஆட - 43 பங்கி 73-80)

675. देवाधिदेव महादेव प्रभु
 कृपादृष्टि रखते हैं सदैव ही
 निज भक्तजनों के लिए अमृतस्वरूप है
 पधारे स्वयं धरणीतल पर
 दूर करके हमारी लौकिक आसक्ति को
 प्रदान किया आनंद इह-पर सौख्य भी
 प्रभु पहुँचे थे एकदा
 भद्रनारियों से पूरित मधुरा नगरी में
 शंख-निर्मित कटक-चूड़ियाँ लेकर
 सुभग सुंदर विपणन वस्तुएँ लेकर
 प्रभु की इन महिमाओं को
 जो जानते हैं और समझते हैं
 वे महज्जन हमारे नाथ हैं।

(तिरुमुरै आठ - 43 पंक्ति 73-80)



894 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : पाथवे दू गोंड थू द तिरुवाचकम् - जी. वनमीकनाथन्
Source : Pathway to God through the Tiruvacagam by
G. Vanmikanathan

The Lord with a Dame-nestling side,
a Chanter Who specialises in the Vedas,
Effulgence Which has taken abode
in the great flower (my heart),
transcendent Mercy without any shortcomings,
Impartiality cherished by devotees,
the pure One of Perunthurai
surrounded by groves abounding in florets
Who bestows grace
with impartiality as His characteristic —
those who can comprehend
the graciousness in His coming down on earth
and revealing His primal Godhead,
they will be our masters.

They will be our masters
who can comprehend the significance of our Lord —
Who, on Vishnu and Brahma
and the King of the heavenly ones
coming and worshipping Him,
bestowed grace on them —
in coming down into this world
and showing the right path to us,
and, (moreover) in bestowing mercy
on the artless good damsel
in prosperous and long established Idaivai
with beautiful gem-mansions
that virtue may increase in her.

The primal Being of bejewelled crown,
King of the immortals, blissful Dancer,
He Who made the six categories of religions
worship Him (alone),

our magnanimous Dispenser of Grace at Perunthurai
 Who bestows grace on us
 to the detriment of the disease of birth,
 He, falling in love with a damsel,
 boarded a boat
 while heaven and earth stood by
 praising and adoring Him,
 and cast a fine mesh net for the great (*keliru*) fish.
 Those who understand the (esoteric) nature
 of this act of Him
 will be our masters.

They will be our masters
 who can understand the intrinsic nature
 of the enslavement of the whole lot of my companions
 on that day by the great Lord Civan
 Who, assuming the form of a hunter,
 abode in Mahendra mountain
 while the heavenly ones of many grievances
 came in search of Him —
 our Sire, the primordial Being of Perunthurai
 who came riding on the prancing horse
 having a mind to redeem us slaves.

Lines : 1 - 32

44

எண்ணப்பதிகம்

ஏண்ப்படிம

ஒழியா இன்பத்து உவகை

அஃயா இந்நு உவகை

676. பாரூரு வாய பிறப்பற வேண்டும்
பத்திமை யும்பெறவேண்டுஞ்
சீருரு வாய சிவபெரு மானே
செங்கமல மலர்போல்
ஆருரு வாயஎன் னாரமு தேஉன்
அடியவர் தொகைநடுவே
ஒருரு வாயநின் திருவருள் காட்டி
என்னையும் உய்யக்கொண்டருளே !

1

676. பாரூருவாய பிர்ஃபர் வேண்டும்
பத்திமையும்து பர் வேண்டும்
சீருருவாய சிவ பர்மானே
சங்கமல மலர்போல்
ஆருருவாய ஂனாரமுதென்
அடியவர் தாங்ை நடுவே
ஆருருவாய நின்றிருவருள் காட்டி
ஂனையும்து உய்யக்கொண்டருளே !

(திருமுரே அட - 44 பங்கி 1-8)

सुविचार दशक

अक्षुण आनन्द में विभोर होना

676. प्रभो मुझे चाहिए छुटकारा
जनन-मरण के भव-बंधन से
मुझे चाहिए प्रभो ! मेरे नाथ
तुम्हारे चरणों पर अचंचल भक्ति
मंगलमय मेरे नाथ ! परमेश्वर !
अरुणिम कमल निभ
देहकांतियुत ! अमृत स्वरूप !
कृपा करो स्थान दो मुझे
मिला लो परिपक्व भक्तमंडली के
मध्य में मुझे
बरसा दो अनुग्रह वर्षा
उद्धार करो इस दास का भी।

(तिरुमुऱै आठ - 44 पंक्ति 1-8)

898 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

677. உரியேன் அல்லேன் உனக்கடிமை
உன்னைப் பிரிந்திங் கொருபொழுதுந்
தரியேன் நாயேன் இன்னதென்
றறியேன் சங்கரா கருணையினாற்
பெரியோன் ஒருவன் கண்டுகொள்
என்றுன் பெய்கழல் அடிகாட்டிப்
பிரியேன் என்றென் றருளியஅருளும்
பொய்யோ எங்கள்பெ ருமானே ?

2

677. अरियेनल्लेन् उनक्कडिमै
उन्नैप् पिरिन्दिङ्गார் पाळुदुम्
तरियेन् नायेन् इन्नदन्
अरियेन् शङ्करा करुणैयिनार्
परियोनारुवन् कण्डुकाळ्
ऐन्ருन् पय्कळ् ஆடிகாட்டிப்
பிரிபென்னர்ருளிய அருளும்
பாய்யோ ஐங்கல் பருமானே ?

(திருமுரே ஆட - 44 பவ்தி 9-16)

678. என்பே உருக நின்அருள்
அளித்துன் இணைமலர் அடிகாட்டி
முன்பே என்னை ஆண்டுகொண்ட
முனிவா முனிவர் முழுமுதலே
இன்பே அருளி எனையுருக்கி
உயிருண் கின்ற எம்மானே
நன்பே யருளாய் என்னுயிர்
நாதா நின்னருள் நாணாமே.

3

678. ऐन्चे उरुग निन्नरुळ्
अळित्तुन् इणैमलरडि काट्टि
मुन्चे ऐन्नै आण्डुकाण्ड
मुनिवा मुनिवर् मुळुमुदले
इन्चेयरुळि ऐनैयुरुवிக
उयिरुण்கिन्ऱ् ऐम्माने
नण्वे अरुळायन्नुयिर्
नाद निन्नरुळ् नाणामे ।

(திருமுரே ஆட - 44 பவ்தி 17-24)

677. नाथ ! बन न पाया
 मैं तुम्हारे योग्य दास अब भी
 तुमसे विलग होकर
 धर न पा रहा हूँ धीरज यहाँ
 क्षण भर भी
 नहीं जान पाता प्रभो
 इस का मर्म क्या है रहस्य क्या है
 हे शंकर ! उस दिन वृद्ध रूप में
 प्रकट होकर मेरे सामने
 अनुग्रह बरसाया तुमने आमोद से
 दिखा कर निज चरणयुगल
 अपनाया था मुझे वात्सल्य से
 प्रभो मेरे नाथ बोलो
 क्या वह सब अलीक था ?

(तिरुमुरै आठ - 44 पंक्ति 9-16)

678. हे मुनिश्रेष्ठ ! परमेश्वर !
 पसीज-पसीज उठा था मेरा अंग-अंग
 जब तुमने मुझे अपनाया पूर्व में
 बरसा कर अनुग्रह-वर्षा
 दिखाया सुमन सरिस चरण युगल
 हे सुंदर परिपूर्ण !
 याचना करता हूँ अब भी
 बरसा दो वही अनुग्रह अव्याज रूप से
 कि मैं पसीज-पसीज जाऊँ
 हे मेरे प्राणों के प्राण ! लेकर मेरे प्राण
 मिटा दो जीवबोध
 ताकि विलसित रहे केवल शिवबोध।

(तिरुमुरै आठ - 44 पंक्ति 17-24)

900 தமிழ் சைவத்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

679. பத்தில னேனும் பணிந்தில

னேனும்உன் உயர்ந்தபைங் கழல்காணப்
பித்தில னேனும் பிதற்றில னேனும்
பிறப்பறுப்பாய் எம்பெருமானே
முத்தனை யானே மணியனை யானே
முதல்வனே முறையோஎன்று
எத்தனை யானும் யான்தொடர்ந் துன்னை
இனிப்பிரிந் தாற்றேனே !

4

679. पत्तिलनेनुम् पणिन्दिल

नेनुमुन् उयर्न्द पैङ्कळल् काणप्
पित्तिलनेनुम् पिदट्टिलनेनुम्
पिरप्परुप्पाय् ऐम्परुमाने
मुत्तनैयाने मणियनैयाने
मुदल्वने मुरैयो ऐन्
ऐत्तனै யானும் யான் தாண்டுந்
இனிப்பிரிந்தாற்றேனே !

(திருமூரே ஆட - 44 பங்கித் 25-32)

680. காணும் தொழிந்தேன் நின்திருப்

பாதங் கண்டுகண் களிகூரப்
பேணும் தொழிந்தேன் பிதற்றும்
தொழிந்தேன் பின்னைஎம் பெருமானே
தானுவே அழிந்தேன் நின்னினைந்
துக்குந் தன்மைஎன் புன்மைகளாற்
காணும் தொழிந்தேன் நீயினி
வரினுங் காணவும் நாணுவனே !

5

680. काणुमदांदिन्देन् नित्तिरुप्पादम्

कण्डु कण्कळि कूरप्
पेणुमदांदिन्देन् पिदट्टरुम्
दांदिन्देन् पिनै ऐम्परुमाने
ताणुवे अदिन्देन् निन्नैनैन्
दुरुगुम् तन्नैयन् पुन्नैगळाल्
काणुमदांदिन्देन् नीयिनि
वरिनुम् काणवुम् नाणुवने !

(திருமூரே ஆட - 44 பங்கித் 33-40)

679. भले ही मैं भक्तिहीन हूँ निपट
 नमन भी नहीं करता तुम्हारे सामने
 भले ही मेरे अंदर ललक नहीं है
 तुम्हारे श्रेष्ठ चरणों के दर्शन की
 भले ही मैं बावरा बनकर
 बड़बड़ाता नहीं तुम्हारे नामों को
 फिर भी मेरे नाथ ! कृपा करके
 काट दो जनन-मरण का बंधन
 हे मुक्ता-सदृश मणि-सदृश प्रभो !
 हे देवाधिदेव ! अब मैं
 धर न पाता धीरज
 अब तो अपनाओ ! जी नहीं सकता
 मैं तुम्हारे बिना क्षण भर भी।

(तिरुमुरै आठ - 44 पंक्ति 25-32)

680. हंत ! छूट गया मेरा अभ्यास
 तेरे चरण-कमल के दर्शन का
 चरण-कमलों का दर्शन कर
 आह्लादित हो नर्तन करने का
 चरणकमल-पूजन का ध्यान का
 भाव विभोर होकर जल्पन का
 हे स्थाणु ! शाश्वत तत्त्व !
 जब छूट गया अपना अभ्यास
 तुम्हारे ध्यान में स्मरण में पिघलने का
 हाय ! मैं मिट गया हूँ धूलि में
 अब यदि तुम दया करके
 दर्शन देने आओ भी
 लज्जित होऊँगा तुम्हारे सामने
 आते हुए भी।

(तिरुमुरै आठ - 44 पंक्ति 33-40)

902 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கீத திருவாசகம்

681. பாற்றிரு நீற்றெம் பரமனைப்
 பரங்கரு ணையோடும் எதிர்ந்து
 தோற்றிமெய் யடியார்க் கருட்டுறை
 யளிக்குஞ் சோதியை நீதியிலேன்
 போற்றியென் அமுதே எனநினைந் தேத்திப்
 புகழ்ந்தழைத் தலறியென்னுள்ளோ
 ஆற்றுவ னாக உடையவ
 னேஎனை ஆவஎன் றருளாயே!

6

681. पाट्रिरु नीट्रंस्परमनैप्
 परङ्करुणैयोडुम् ऐदित्तु
 तोट्रि मय्यडियाक्करुळ् तुरै
 अळिक्कुम् चोतियै नीतियिलेन्
 पोट्रियन्नुमुदे ऐन् निनैन्देत्तिप्
 पुगळ्न्दळैत्तलरि ऐन्नुळ्ळ
 आट्रुवनाग उडैयव
 नेयनै आव ऐन्ருळ्ळायே !

(तिरुमुरै आट - 44 पंक्ति 41-48)

681. दुग्ध धवल भस्मलेपित प्रभु
 इतने परम कृपालु भक्तवत्सल हैं
 कि स्वयं प्रकट हो जाते हैं आमोदपूर्वक
 अपने भक्तों के सामने
 और अनुग्रह-वर्षा करते हैं अव्याज रूप से
 ऐसे ज्योतिराट् परम ज्योति
 तुम्हें मैं
 सतत ध्यान करूँ स्मरण करूँ
 नाम लेकर पुकारता रहूँ
 मेरे अमृत ! मेरे प्राणों के प्राण !
 तड़पूँ चीखूँ और अपने अंदर पा लूँ
 ऐसी कृपा करो मेरे नाथ !

(तिरुमुरै आठ - 44 पंक्ति 41-48)



904 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - डॉ रेवरेण्ड जी. यू. पोप; 1900 ई.

Source : Tiruvacagam by Rev. G.U. Pope; 1900 A.D.

Would birth in earthly forms might cease, devoted love so might
I gain !
O Çiva-Perumān, Whose form is beauteous like red lotus-flower ;
Thou art my rare Ambrosia ; midst the assembly of Thy saints
Thy sacred grace unique show Thou : be gracious, take me too
and save !

I'm not my own, Thy slave am I ; sever'd from Thee no
moment can
I live ; a cur, I nothing know,— O Çaṅkaran ! In pitying grace
Thou Mighty said'st to me, 'Behold,' and showed'st Thy jewell'd
feet. Our Lord,
And was the promise false that said, 'I sever nevermore from
Thee ?

Melting my frame, granting Thy grace, showing to me Thy
flow'ry feet,
Erewhile Thou madest me Thine own, O Sage, O First of sages
all !
My Bliss, Thou didst dissolve my soul, and dost my life consume.
Grant me Thy love, King of my soul ; that so Thy grace from
shame may shield !

Of piety I'm void, nor bow at vision of Thy golden feet ;
My heart is dead, my lips are seal'd ;—yet cause this 'birth' to
cease, our Lord !
Pearl-like Thou art, gem-like Thou art ! First One, I utter my
complaint :
So oft I've follow'd Thee, henceforth apart from Thee I bear not
life !

I see Thy gracious feet no more, which seeing erst mine eyes
were glad ;
I've ceased to cherish Thee ; I've ceased to utter childlike
praise ; and thus
Tāṇu, my mighty Lord, I'm lost ; the state, that melting thinks
on Thee,
By meannesses I've ceas'd to know ; 'twere shame to me to see
Thee come !

Thee, Lord supreme, with milk-white ash adorn'd, meeting with
 grace superne Thy servants true,
Who dost appear, and show the hav'n of grace,—Thee, glorious
 Light, I, void of righteousness,
Extol as my Ambrosia, praising Thee,—praise, glorify, invoke
 with weepings loud !
Master, thus working in me mightily, in grace O speak, in pity
 speak !

Lines : 1 - 48

45

யாத்திரைப்பத்து

यातिरैप्पत्तु

அனுபவாதீதம் உரைத்தல்

अदुबवातीतम् उरैत्तल्

682. புவார் சென்னி மன்னனெம்
 புயங்கப் பெருமான் சிறியோமை
 ஓவா துள்ளம் கலந்துணர்வாய்
 உருக்கும் வெள்ளக் கருணையினால்
 ஆஆ என்னப் பட்டன்பாய்
 ஆட்பட் டர்வந் தொருப்படுமின்
 போவோங் காலம் வந்ததுகாண்
 பொய்விட் டுடையான் கழல்புகவே!

1

682. पूवार् चन्नि मन्ननम्
 पुयङ्गप् परुमान् चिरियोमै
 ओवादुल्लम् कलन्दुणर्वाय्
 उरुक्कुम् वल्लम् करुणैयिनाल्
 आआ ऐन्नप्पट्टन्बाय्
 आट्पट्टीर् वन्दु आरुप्पडुमिन्
 पोवोम् कालम् वन्ददु काण्
 पाय् विट्टुडैयान् कळल् पुगवे !

(திருமூரே ஆட - 45 பங்கி 1-8)

45

यात्रा दशक

अलौकिक आनन्द की अभिव्यक्ति

682. भूषित है शिर पर कमनीय कोन्ने हार
भूषित है कंठ देश पर भुजंग
देवाधिदेव महादेव प्रभु वह
हम लघु जनों पर अनुग्रह बरसाने के हित
आ रहे हैं धरणी पर
आकर मन-प्राण में घुल मिलकर
बस जाएँगे हृदय-देश में
ऐसे करुणावारिधि का स्वागत करने के लिए
आतुर होकर, विह्वल होकर
एकजुट हो जाइए मेरे भक्त भाइयो !
मायामय देह को तजकर
तेजोमय शिवमय बनने की
शुभ घड़ी आ गई है।

(तिरुमुरै आठ - 45 पंक्ति 1-8)

908 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

683. புகவே வேண்டா புலன்களில்நீர்
 புயங்கப் பெருமான் பூங்கழல்கள்
 மிகவே நினைமின் மிக்கவெல்லாம்
 வேண்டா போக விடுமின்கள்
 நகவே ஞாலத் துள்புகுந்து
 நாயே அனைய நமையாண்ட
 தகவே யுடையான் தனைச்சாரத்
 தளரா திருப்பார் தாந்தாமே!

2

683. புகவே வேண்டா புலநாடினீர்
 புயங்கம் பருமான் பூங்கழல்
 மிகவே நினையின் மிக்கவெல்லாம்
 வேண்டா போக விடுமினாக்
 நகவே ஞாலத்து புருந்து
 நாயே அனைய நமையாண்ட
 தகவே உடையான் தனையார்
 தளரா திருப்பார் தாந்தாமே !

(திருமூரே ஆட - 45 பங்கி 9-16)

684. தாமே தமக்குச் சுற்றமுந்
 தாமே தமக்கு விதிவகையும்
 யாமார் எமதார் பர்சமார்
 என்ன மாயம் இவைபோகக்
 கோமான் பண்டைத் தொண்டரோடும்
 அவன்தன் குறிப்பே குறிக்கொண்டு
 போமா றமைமின் பொய்நீக்கிப்
 புயங்கன் ஆள்வான் பொன்னடிக்கே!

3

684. தாமே தமக்குச் சூடமுந்
 தாமே தமக்கு விதிவகையுந்
 யாமார்மதார் பாசமார்
 என்ன மாயமெவ் போகக்
 கோமான் பண்டைத் தாண்டாடும்
 அவன்தன் குறிப்பே குறிக்கொண்டு
 போமாநமையின் பாய்நீக்கிப்
 புயங்கன் ஆடவான் பன்னடிக்வே !

(திருமூரே ஆட - 45 பங்கி 17-24)

683. सुन लो गुर, गुन लो मन में
 इंद्रियों के दिखाए मार्ग पर जाना नहीं
 एकाग्रचित्त से, समेकित मन से
 ध्यान करो भुजंग-भूषित प्रभु के
 सुमन सरिस चरण-कमलों का
 भटकना नहीं अन्य देवताओं के पीछे
 करुणाकर परमेश्वर को छोड़कर
 कहीं जाना नहीं
 परमज्योति यह करुणा का वरुणालय है
 इतना असीम अपरंपार अनुग्रह
 बरसाता है कि
 चकित होते हैं सच्चे भक्त
 अहह ! इतनी करुणा कहीं संभव है !

(तिरुमुरै आठ - 45 पंक्ति 9-16)

684. हम कौन हैं ? अपना कौन है यहाँ ?
 बंध-पाश किसके साथ ध्रुव है
 इस जग में
 अरे यह कैसी माया है !
 इन सब भ्रम-विभ्रमों से मुक्त होना है
 आत्मा में व्यक्त है परमेश्वर
 आत्मा ही अपना बंधु-मित्र है
 साथी-सखा है जिसके सहारे
 कर लेना है स्वयं अपना उद्धार
 साधकों का मार्गदर्शक है नाथ परमेश्वर
 उसकी इच्छा को मान लें अपनी इच्छा
 चलें उनके बताए सन्मार्ग पर
 जो पहुँचा देता है लक्ष्य स्थान पर
 स्वर्णिम चरण-युगल पर
 पन्नग-भूषण परमेश्वर
 प्रश्रय देंगे अपनाएँगे हमें निश्चय ही।

(तिरुमुरै आठ - 45 पंक्ति 17-24)

910 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

685. அடியார் ஆனார் எல்லாம்
 அகல விடுமின் வினையாட்டைக்
 கடிசே ரடியே வந்தடைந்து
 கடைக்கொண் டிருமின் திருக்குறிப்பைச்
 செடிசே ருடலைச் செலநீக்கிச்
 சிவலோ கத்தே நமைவைப்பான்
 பொடிசேர் மேனிப் புயங்கன்தன்
 புவார் கழற்கே புகவிடுமே!

4

685. அடியா ரானீர் எல்லீரம்
 அகல விடுமிந் வினையாட்டைக்
 கடிசேரடியே வந்தடைந்து
 கடைக்கொண்டிருமின் திருக்குறிப்பைச்
 செடிசே ருடலைச் செலநீக்கிச்
 சிவலோகத்தே நமைவைப்பான்
 பொடிசேர் மேனிப் புயங்கன்தன்
 புவார் கழற்கே புகவிடுமே !

(திருமூரே ஆட - 45 பங்கி 25-32)

686. விடுமின் வெகுளி வேட்கைநோய்
 மிகவோர் காலம் இனிமில்லை
 உடையான் அடிக்கீழ்ப் பெருஞ்சாத்தோ
 டுடன்போ வதற்கே ஒருப்படுமின்
 அடைவோம் நாம்போய்ச் சிவபுரத்துள்
 அணியார் கதவ தடையாமே
 புடைபட் டுருகிப் போற்றுவோம்
 புயங்கன் ஆள்வான் புகழ்களையே!

5

686. விடுமிந் வங்குலி வேட்கை நோய்
 மிகவோர் காலமினியிலு
 உடையான் அடிக்கீழ் பெருஞ்சாத்தோ
 டுடன்போ வதற்கே ஒருப்படுமின்
 அடைவோம் நாம்போய்ச் சிவபுரத்துள்
 அணியார் கதவ தடையாமே
 புடைபட்டருகிப் போற்றுவோம்
 புயங்கன் ஆள்வான் புகழ்களையே !

(திருமூரே ஆட - 45 பங்கி 33-40)

685. मेरे शिवभक्त भाइयो !

क्या रखा है संसार की लीला में
तज दो मोह जग की माया से
पहुँच जाओ परमेश्वर के
सुरभित चरण-युगल पर
बना लो उसकी इच्छा को अपनी इच्छा
समर्पित कर दो निज को प्राणपण से
दूर कर देगा देहमाया को
प्रदान करेगा स्थान शिवलोक में
स्थिर करें मन को
भुजंग-भूषण के सुमन सदृश चरणों पर।

(तिरुमुरै आठ - 45 पंक्ति 25-32)

686. अल्प समय का है जग जीवन

तज दो इस पर आसक्ति को, काम-क्रोध-राग को
निज को प्रस्तुत करो पुनीत यात्रा के लिए
भक्तमंडली के संग
अपने नाथ के दिव्य चरण को लक्ष्य कर
चल पड़ें हमे, पहुँचें मंगलम् शिवानंद नगरी
प्रणत हो जाएँ चरणकमल पर
अञ्जलिबद्ध कर हों, द्रवित गलित हृदय हो।

(तिरुमुरै आठ - 45 पंक्ति 33-40)

912 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

687. புகழ்மின் தொழுமின் பூப்புனைமின்
புயங்கன் தாளே புந்திவைத்திட்டு
இகழ்மின் எல்லா அல்லலையும்
இனியோர் இடையு றடையாமே
திகழுஞ் சீரார் சிவபுரத்துச்
சென்று சிவன்தாள் வணங்கிநாம்
நிகழும் அடியார் முன்சென்று
நெஞ்சம் உருகி நிற்போமே!

6

687. புகழ்மின் தாழ்மின் பூப்புனைமின்
புயங்கன் தாழ் புந்தி வைத்திட்டு
இகழ்மின் அல்லலையும்
இனியோர் இடையு றடையாமே
திகழுஞ் சீரார் சிவபுரத்துச்
சென்று சிவன்தாள் வணங்கிநாம்
நிகழும் அடியார் முன்சென்று
நெஞ்சம் உருகி நிற்போமே!

(திருமுறை ஆட - 45 பங்கி 41-48)

688. நிற்பார் நிற்கநில் லாவுலகில்
நில்லோம் இனிநாம் செல்வோமே
பொற்பால் ஒப்பாந் திருமேனிப்
புயங்கன் ஆள்வான் பொன்னடிக்கே
நிற்பார் எல்லாந் தாழாதே
நிற்கும் பரிசே ஒருப்படுமின்
பிற்பால் நின்று பேழ்கணித்தாற்
பெறுதற் கரியன் பெருமானே!

7

688. நிற்பார் நிற்க நில்லா உலகினில்
நில்லோம் இனிநாம் செல்வோமே
பொற்பால் ஒப்பாந் திருமேனிப்
புயங்கன் ஆள்வான் பொன்னடிக்கே
நிற்பார் எல்லாந் தாழாதே
நிற்கும் பரிசே ஒருப்படுமின்
பிற்பால் நின்று பேழ்கணித்தாற்
பெறுதற் கரியன் பெருமானே!

(திருமுறை ஆட - 45 பங்கி 49-56)

687. भक्त भाइयो ! करो प्रशस्तिगान प्रभु का
 नमन करो चरण युगल पर
 गूँथ कर सुरभित सुमनों की माला
 समर्पित करो चरणयुगल पर
 स्थापित कर लो मन प्राण बुद्धि में
 भुजंग-भूषण प्रभु के चरणकमल
 ताकि सदा के लिए छूट जाए
 मायामय जग के सकल दुःख संताप
 पहुँचें हम श्रीलसित शिवानंद नगरी
 भक्तमंडली के मध्य
 प्रणत हों नाथ-चरण पर
 अञ्जलिबद्ध कर हों, द्रवित गलित हृदय हो।

(तिरुमुरै आठ - 45 पंक्ति 41-48)

688. छोड़ो रहने दो उन्हें
 जो रहना चाहते हैं इस नश्वर जग में
 चलो चलें हम अब करें न विलंब
 पहुँचें स्वर्णिम कांतियुत प्रभु
 भुजंग-भूषण के कनकमय चरण पर
 मन को केंद्रित करें
 ठहरने के लिए अब समय नहीं है
 ठहरे तो फिर पछताना पड़ेगा बाद में
 जो साथ नहीं चल रहे हैं
 उनकी तरह।

(तिरुमुरै आठ - 45 पंक्ति 49-56)

914 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

689. பெருமான் பேரா னந்தத்துப்
பிரியா திருக்கப் பெற்றீர்காள்
அருமா லுற்றுப் பின்னைநீர்
அம்மா அழுங்கி அரற்றாதே
திருமா மணிசேர் திருக்கதவந்
திறந்த போதே சிவபுரத்துத்
திருமா லறியாத் திருப்புயங்கள்
திருத்தாள் சென்று சோர்வோமே!

8

689. परुमान् पेरानन्दचुप्
पिरियादिरुक्कप् पंद्रीगीळ्
अरुमालुट्ठरप् पिन्नैनीर्
अम्मा अळुङ्गि अरट्रादे
तिरुमा मणिचेर् तिरुक्कदवम्
तिरन्दपोदे शिवपुरचुत्
तिरुमालरियात् तिरुप्पुयङ्गन्
तिरुत्ताळ् चन्ऱ् चेरवोमे !

(तिरुमुரै आठ - 45 पंक्ति 57-64)

690. சேரக் கருதிச் சிந்தனையைத்
திருந்த வைத்துச் சிந்திமின்
போரிற் பொலியும் வேற்கண்ணாள்
பங்கள் புயங்கள் அருளமுதம்
ஆரப் பருகி ஆராத
ஆர்வங் கூர அழுந்துவீர்
போரப் புரிமின் சிவன்கழற்கே
பொய்மிற் கிடந்து புரளாதே!

9

690. चेरक्करुदिच् चिन्तनैयैत्
तिरुन्द वैचुच् चिन्तिमिन्
पोरिल् पालियुम् वेल् कण्णाळ्
पङ्गन् पुयङ्गन् अरुळमुदम्
आरप्परुगि आराद
आर्वम् कूर अळुन्दुवीर्
पोरप्पुरिमिन् शिवन् कळर्क्
पाय्यिर् किडन्दु पुरळादे !

(तिरुमुरै आठ - 45 पंक्ति 65-72)

689. भक्त भाइयो, पहुँच गए हैं
 प्रभु-सान्निध्य में परमानंद दशा में
 शाश्वत सदानंद में निमग्न हैं
 अब कभी भी ललक न उठे
 जगमाया की तड़क-भड़क की
 जो तुम्हें फंसा देगा फिर से
 जन्म-मरण की दल-दल में
 अब खुलने वाला मणिमय कपाट
 श्रीलसित शिवानंद नगरी का
 पहुँचेंगे हम शीघ्र ही
 भुजग-भूषण के कनकमय चरण पर।

(तिरुमुरै आठ - 45 पंक्ति 57-64)

690. चित्त को स्थिर कर लो
 चिंतन हमारा एक यही हो
 पहुँचना है नाथ के चरण-कमल पर
 भुजग-भूषण सुंदरेश के चरण युगल
 जिन्होंने स्थान दिया वाम भाग में
 रणांगण में जाज्वल्यमान
 भाल सदृश दीर्घ नेत्र युत उमा को
 हृदय में एक ही ललक हो, एक तृषा हो
 शिवानंद-अमृत को छककर पान करने की,
 धंसेंगे नहीं फिर जगमाया में
 चाहेंगे केवल शिवचरण
 यही शुभ संकल्प हो, यही शिवसंकल्प है।

(तिरुमुरै आठ - 45 पंक्ति 65-72)

916 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

691. புரள்வார் தொழுவார் புகழ்வாராய்
 இன்றே வந்தாள் ஆகாதீர்
 மருள்வீர் பின்னை மதிப்பாரார்
 மதியுட் கலங்கி மயங்குவீர்
 தெருள்வீ ராகில் இதுசெய்ம்மின்
 சிவலோ கக்கோன் திருப்பயங்கன்
 அருளார் பெறுவார் அகலிடத்தே
 அந்தோ அந்தோ அந்தோவே!

10

691. புரவார் தாழ்வார் புகழ்வாராய்
 இந்ரே வந்தா஑ாதிர்
 மருவ்வீர் பின்னே மதிப்பார் ஆர்
 மதியுட் கலங்குவீர்
 தெருவ்வீரகில் இது செய்ம்மின்
 சிவலோகம் கொன் திருப்பயங்கன்
 அருளார் ப்ருவார் அகலிடத்தே
 அந்தோ அந்தோ அந்தோவே !

(திருமூரே ஆட - 45 பங்கித் 73-80)

691. नाथ को प्राप्त करने की ललक के संग
 आज ही निकलना नहीं चाहते
 यदि शिव-सन्मार्ग पर
 लोटकर धरणी पर प्रणत हो बारंबार
 भावविभोर होकर प्रशस्तिगान
 नहीं करोगे आज ही
 फिर फंस जाओगे रह जाओगे यहीं पर
 कोई पूछनेवाला नहीं मिलेगा
 स्मृति-भ्रंश होगा, बुद्धिनाश होगा
 पछताना पड़ेगा जन्म-जन्मांतर तक
 यदि बचना है इस स्थिति से
 तो अभी कटिबद्ध होकर निकलो
 अब नहीं चेते तो कैसे पाओगे उद्धार
 हंत ! हंत कर चिंतामग्न बनोगे
 जन्म जन्मांतर तक।

(तिरुमुरै आठ - 45 पंक्ति 73-80)



918 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - वर्ड बीटिफिक एस. ए. शंकरनारायणन्

Source : Tiruvacagam : Word Beatific by S.A. Sankaranarayanan

Praise only the Snake - Charming
 Lord's holy feet. Offer flowers
 only unto them. Fixing them in
 mind, dispraise all sorrows.
 Hereafter, for us not to suffer
 from any evil, may we peregrinate
 to famed Civapuram glowing,
 and have a darshan of the holy feet
 of Civa Lord, and stand, melting
 in heart, before the indwelling servitors there in.

Let those that love to last
 on earth transient wait.
 We won't hang on there. Hence, we,
 would go unto auric holy feet
 of our ruler, snake charming Lord
 whose mien holy, in Beauty
 equals only His. Only to reach
 unto His auric feet all stand.
 Without any long wait, may you
 learn to wait and follow. If
 we go to the rear and pride on
 our own, Lord would be rare to reach at.

You have got Civa-bliss great
 that would never part form you.
 Leaving it, dizzied in world,
 uncrossable, later sorrowed,
 may you not bewail 'O ! Ma'
 when the doors, fair big gems
 inlaid, of Civapuram are open,
 may we reach unto the holy feet
 of snake-charming Lord's unknown
 to fair Mall.

Thinking of going unto Civapuram,
 correcting the heart, deliberate
 only on Lord's feet. Glowing
 war - spear like eyed Uma
 in half, He is Snake - charming
 Lord whose grace holy ambrosian
 if consumed liberally, you will
 immerse in bliss sublime.
 Wallowing not in this pseudo
 fleeting life, desire to reach
 unto Civa's holy feet.

With love rolling, circumambulating
 dextrously, worshipping, praising
 propitiating, if you do not
 come into Lord's fold, later,
 you would be irked by murk ;
 dizzy you would and swoon
 into Curiosity ! who would
 regard you ? Be clarified,
 if you can, get into fold
 and do this forthwith. Who
 shall attain the holy grace
 of the Lord of Civalokam,
 the snake charming Lord,
 the giver of Release. Alas ! Alas ! Alas !

Lines : 41 - 80

46

திருப்படை யெழுச்சி

திருப்படை எஃகுச்சி

பிரபஞ்சப்போர்

பிரபஞ்சப்போர்

692. ஞானவாள் ஏந்தும்ஐயர்
நாதப் பறையறையின்
மானமா ஏறும்ஐயர்
மதிவெண் குடைகவிமின்
ஆனநீற் றுக்கவசம்
அடையப் புகுமின்கள்
வானவூர் கொள்வோம்நாம்
மாயப்படை வாராமே!

1

692. ஜானவா஁ந்தும் ஏயர்
நாடபுரே அரேமிந்
மானமா ஁ரூமேயர்
மதி வ்ணுகுடே கவிமிந்
ஆன நீடரூக் கவசம்
அடேயப் புகுமிநா஁
வானவூர் கா஁வோம் நாம்
மாயபுடே வாராமே !

(திரும்புரே ஆட - 46 பங்கி 1-8)

46

सैन्य अभियान

प्रपंच-संग्राम

692. मुरज बजा दो जान लें दिशाएँ
पधार रहे हैं नाथ हमारे
करतल पर शोभित है ज्ञान का खड्ग
समुन्नत वृषभ पर आरुढ़ हैं
देवी उमा के संग
आच्छादित है सिर के ऊपर
सित चंद्रातप
धवलोज्ज्वल भस्म का कवच
चल पड़ी नाथ परमेश्वर की
ज्ञानवाहिनी
चलें हम शिवानंदपुरी की ओर
पास तक नहीं भटकेगी
माया की वाहिनी।

(तिरुमुरै आठ - 46 पंक्ति 1-8)

693. தொண்டர்காள் தூசிசெல்லீர்
 பத்தர்காள் சூழப்போகீர்
 ஒண்திறல் யோகிகளே
 பேரணி உந்தீர்கள்
 திண்திறல் சித்தர்களே
 கடைக்கூழை செல்மின்கள்
 அண்டர்நா டாள்வோம்நாம்
 அல்லற்படை வாராமே!

2

693. ताण्डर्गाळ् तूसि चंल्लीर्
 पत्तर्गाळ् चूळप् पोगीर्
 आण्डिर्ल् योगिकळे
 पेरणि उन्दीर्गाळ्
 तिण्डिर्ल् चित्तर्गळे
 कडैक्कूळै चंल्मिन्गाळ्
 अण्डर् नाडाळ्वोम् नाम्
 अल्लर् पडै वारामे !

(तिरुमुறை आठ - 46 पंक्ति 9-16)

693. सेवक जनो ! चलो अग्रिम पंक्ति पर
 भक्तजन आगे बढ़ो
 व्यूह रचना करते हुए
 समर समर्थ योगियो
 ज्ञानवाहिनी का करो संचालन
 वज्र सम शक्तिशाली
 सिद्धजन बढ़ते जाओ
 पश्च भाग की रक्षा करते हुए
 चलो पहुँचें हम अमरलोक
 और वहाँ का शासन संभाल लें
 फटकने नहीं देंगे दुःखवाहिनी को
 कहीं भी।

(तिरुमुरै आठ - 46 पंक्ति 9-16)



924 तमिल शैवभक्त कवि माणिक्यवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - टी. एन. रामचन्द्रन्

Source : Tiruvaachakam by T.N. Ramachandran

Drum the Pranava-Drum of Him – the sublime One
 Who wields the sword of Gnosis. Over the crown of Him,
 The sublime One that rides the great and glorious charger,
 Hold the unfolded, moon-white umbrella. Encase
 Yourselves in the cuirass of the Holy Ash. Lo, let us capture
 The celestial city forfending the onslaught of Maya's army.

O Servitors, form the front line ; O Bhaktas, proceed
 Encircling ; O splendorous and puissant Yogis, lead
 The main army ; O doughty and mighty Siddhas, form
 The rear - guard. Lo, we will rule over the celestial
 domain,
 Forfending the onslaught of the army of worries.

Lines : 1 - 16



47

திருவெண்பா

திருவண்பா

அணைந்தோர் தன்மை

अणैन्तोर तन्मै

694. வெய்ய வினைமிரண்டும் வெந்தகல மெய்யுருகிப்
பொய்யும் பொடியாகா தென்செய்கேன் – செய்ய
திருவார் பெருந்துறையான் தேனுந்து செந்தீ
மருவா திருந்தேன் மனத்து!

1

694. वय्य विनैयिरण्डुम् वन्दगल मय्युरुगिप्
पाय्युम् पांडियागार्दन् चय्यगेन् – चय्य
तिरुवार् परुन्तुरैयान् तेनुन्दु चन्ती
मरुवादिरुन्देन् मनत्तु !

(திருமூரே ஆட - 47 பங்கி 1-4)

695. ஆர்க்கோ அரற்றுக்கோ ஆடுக்கோ பாடுக்கோ
பார்க்கோ பரம்பரனே என்செய்கேன் – தீர்ப்பரிய
ஆனந்த மாலேற்றும் அத்தன் பெருந்துறையான்
தானென்பார் ஆரொருவர் தாழ்ந்து!

2

695. आर्क्को अरट्ठुगो आडुगो पाडुगो
पार्क्को परम्परने एन् चय्यकेन् – तीर्प्परिय
आनन्द मालेट्ठुम् अत्तन् परुन्तुरैयान्
तान्च्चार आरावर् ताळ्न्दु !

(திருமூரே ஆட - 47 பங்கி 5-8)

47

श्री छंद

सिद्ध-लक्षण

694. श्री लसित परुन्तुरै का अधीश
 मधु आभा में शोभित ज्ञानाग्नि हैं
 जिसके संस्पर्श से जल उठेंगे
 पीड़ा जनक कर्मद्वय धू-धू करके
 पिघल उठेगी यह देह
 ज्वलित अग्नि में नष्ट होंगे असत्य
 केवल भस्म बच जाएगी
 हंत ! वरण करने से चूक गया मैं
 मन में स्थापित करने से रह गया मैं
 महिमामय ज्ञानाग्नि को।

(तिरुमुरै आठ - 47 पंक्ति 1-4)

695. कोई तो बता दे मुझे
 आनंदमय अमृत जो मैंने चखा था
 वह परुन्तुरै के शिव स्वयं हैं
 वही प्रदान कर सकते हैं ऐसा उन्मत्त आनंद
 सूझ नहीं रहा है मुझे इसे चखने के बाद
 क्या करूँ, कैसे व्यक्त करूँ आनंद को
 कोलाहल करूँ, चीखूँ, चिल्लाऊँ
 गाऊँ या नृत्य करूँ
 या घूर कर देखूँ जो दूर खड़े हैं
 हे परात्पर उनको भी
 इधर खींचने के लिए क्या करूँ
 बताओ प्रभो !

(तिरुमुरै आठ - 47 पंक्ति 5-8)

928 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

696. செய்த பிழையறியேன் சேவடியே கைதொழுதே
உய்யும் வகையின் உயிர்ப்பறியேன் - வையத்து)
இருந்துறையுள் வேல்மடுத்தென் சிந்தனைக்கே கோத்தான்
பெருந்துறையில் மேய பிரான் !

3

696. चंयद् पिळैयरियेन् चेवडिये कैताळु दे
उय्युम् वगैयिन् उयिर्प्यरियेन् - वैयात्तु
इरुन्दुरैयुम् वेल्मडुत्तु ऐन् चिन्तैक्के कोत्तान्
परुन्तुरैयिल् मेय पिरान् !

(திருமூரே ஆட - 47 பங்கித் 9-12)

697. முன்னை வினையிரண்டும் வேரறுத்து முன்னின்றான்
பின்னைப் பிறப்பறுக்கும் பேராளன்-தென்னன்
பெருந்துறையில் மேய பெருங்கருணை யாளன்
வருந்துயரங் தீர்க்கும் மருந்து !

4

697. मुन्नै विनैयिरण्डुम् वेरुत्तु मुन्निराल्
पिन्नैप् पिरप्पळ्ळुकुम् पेराळन् - तन्नन्
परुन्तुरैयिन् मेय परुङ्करुणैयाळन्
वरुम् तुयरम् தீர்க்கும் மருந்து !

(திருமூரே ஆட - 47 பங்கித் 13-16)

698. அறையோ அறிவார்க் கனைத்துலகும் ஈன்ற
மறையோனும் மாலும்மால் கொள்ளும் இறையோன்
பெருந்துறையுள் மேய பெருமான் பிரியாது
இருந்துறையும் என்னெஞ்சத் தின்று !

5

698. अरैयो अरिवाक्कु अनैत्तुलगुमीन्
मरैयोनु मालु मयल् काळ्ळुम् - इरैयोन्
परुन्तुरैयुळ् मेय परुमान् पिरियादु
इरुन्दुरैयुम् என்னைஞ்சத்தின்று !

(திருமூரே ஆட - 47 பங்கித் 17-20)

696. अज्ञान में निमग्न में
 जानता नहीं हूँ कौन-कौन से अपराध किये
 उद्धार का मार्ग जाने बिन
 श्रीलसित चरणों पर प्रणत हुआ
 शिवानंदलोक से आकर
 परंत्तुरै में विराजे नृपतिसम प्रभु ने
 खींच लिया ज्ञान-खड्ग म्यान से
 भोंक दिया मेरे वक्ष पर
 दूर हुए भ्रम-विभ्रम
 प्रशस्त हुआ उद्धार का मार्ग।

(तिरुमुदै आठ - 47 पंक्ति 9-12)

697. जड़-मूल से काटकर पूर्व के कर्मद्वय
 आगामी कर्म के विच्छेदन हेतु
 समुद्यत समक्ष खड़े थे नाथ मेरे
 भक्तजन पर उदार-हृदय
 दक्षिणेश वह परंत्तुरै का अधीश है
 असीम अपरंपार करुणा का महाधनी
 औषधि तुल्य है
 आगामी कर्म और दुःख दुरित के लिए।

(तिरुमुदै आठ - 47 पंक्ति 13-16)

698. बताने की आवश्यकता नहीं है
 सर्वविदित है यह तथ्य
 कि अहंता में भूला हृदय
 शिवानंद को नहीं पा सकता
 सकल भुवन के स्रष्टा और पालक हरि भी
 ईश को जाने बिना
 भ्रम में पड़े रहे थे
 वही महिमामय परमेश्वर
 जो परंत्तुरै में सानंद विराजे है
 विराज रहे हैं मेरे मानस में भी
 बिछुड़े बिना कभी भी।

(तिरुमुदै आठ - 47 पंक्ति 17-20)

930 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

699. பித்தென்னை ஏற்றும் பிறப்பறுக்கும் பேச்சரிதாம்
மத்தமே யாக்கும்வந் தென்மனத்தை - அத்தன்
பெருந்துறையான் ஆட்கொண்டு பேரருளால் நோக்கும்
மருந்திறவாப் பேரின்பம் வந்து!

6

699. पित्तन्नै एदरुम् पिरप्पुरुक्कुम् पेच्चरिदாம்
मत्तमे आक्कुम् वन्दन् मनतै - अत्तन्
परुन्तुरैयान् आट्काण्डु पेरुळानोक्कुम्
मरुन्निरवाप् पेरिन्वम् वन्दु !

(திருமுரே ஆட - 47 பங்கித 21-24)

700. வாரா வழியருளி வந்தெனக்கு மாறின்றி
ஆரா அமுதாய் அமைந்தன்றே - சீரார்
திருத்தன் பெருந்துறையான் என்சிந்தை மேய
ஒருத்தன் பெருக்கும் ஒளி!

7

700. वारा वळियरुळि वन्दनक्कु मारिन्नि
आरा अमुदाय् अमैन्दन्ने - चीरार्
तिरुत्तन् परुन्तुरैयोन् एन् चिन्तै मेय
आरुत्तन् परुक्कुम् आळि !

(திருமுரே ஆட - 47 பங்கித 25-28)

701. யாவார்க்கும் மேலாம் அளவிலாச் சீருடையான்
யாவார்க்குஞ் கீழாம் அடியேனை - யாவரும்
பெற்றறியா இன்பத்துள் வைத்தாய்க்கென் எம்பெருமான்
மற்றறியேன் செய்யும் வகை!

8

701. यावक्कु मेलाम् अळविलाच् चीरुडैयान्
यावक्कुम् कीळाम् अडियेन् - यावरुम्
पंद्रिया इन्वत्तुळ् बैत्तायक्कन्न्म्परुमान्
मद्रियेन् चय्युम् वगै !

(திருமுரே ஆட - 47 பங்கித 29-32)

699. परुन्तुरै में विराजे मेरे
तात-मात नाथ प्रभु ने
अपना लिया मुझे निज दास रूप में
आनंददायक अमृतमय औषध है
जिसे प्राप्त करके
उन्मत्त हो गया है मेरा मन
कट चुके हैं जनन-मरण के बंधन
आनंदामृत चखते-चखते
स्तंभित हो गई वाणी मेरी।

(तिरुमुरै आठ - 47 पंक्ति 21-24)

700. दक्षिणेश महादेव
श्रीलसित परुन्तुरै के अधीश
सदाशिव रूप में विराजे हैं
मेरे हृदय में शुद्ध चैतन्य रूप में
जाज्वल्यमान परंज्योति
अनुगृहीत किया मुक्त करके
जनन-मरण के बंधन से
प्रदान किया अमृतमय शिवानंद।

(तिरुमुरै आठ - 47 पंक्ति 25-28)

701. सबसे श्रेष्ठ सबके स्वामी
अपरिमित महिमा के धनी ने
सबसे निकृष्ट सबसे तुच्छ मुझे
तन्मय बनाया, शिवमय बनाया
प्रदान किया सर्वश्रेष्ठ आनंद
जो किसी ने पाया नहीं अभी तक
इस परम करुणा की, असीम अनुग्रह की
किन शब्दों में व्यक्त करूँ कृतज्ञता
प्रतिदान के लिए कुछ नहीं है मेरे पास।

(तिरुमुरै आठ - 47 पंक्ति 29-32)

702. மூவரும் முப்பத்து மூவரும் மற்றொழிந்த
தேவருங் காணாச் சிவபெருமான் - மாவேறி
வையகத்தே வந்திழிந்த வார்கழல்கள் வந்திக்க
மெய்யகத்தே இன்பம் மிகும்!

9

702. மூவரு முப்து மூவரு மட்ரா஢்ந்
தேவரு காணாச் சிவபெருமான்-மாவேரி
வையகத் தே வந்தி஢்நத் வார்கழல்கள் வந்திக்க
மெய்யகத் தே இந்஢ம் மிகும் !

(திருமூரே ஆட - 47 பங்கித் 33-36)

703. இருந்தென்னை ஆண்டான் இணையடியே சிந்தித்து
இருந்திரந்து கொள்ளெஞ்சே எல்லாந் - தருங்காண்
பெருந்துறையில் மேய பெருங்கருணை யாளன்
மருந்துருவாய் என்மனத்தே வந்து!

10

703. இரூந்ந்ந் ஆண்டான் இணையடியே சிந்தித்து
இருந்திரந்து காண் ந்ந்ந் எல்லாம் - தரும் காண்
பெருந்துறையிந் மேய பெருங்கருணையாண்
மருந்துருவாய் என்மனத் தே வந்து !

(திருமூரே ஆட - 47 பங்கித் 37-40)

704. இன்பம் பெருக்கி இருளகற்றி எஞ்ஞான்றும்
துன்பந் தொடர்வறுத்துச் சோதியாய் - அன்பமைத்துச்
சீரார் பெருந்துறையான் என்னுடைய சிந்தையே
ஊராகக் கொண்டான் உவந்து!

11

704. இந்஢ம் பெருக்கி இரூளகற்றி எஞ்ஞான்றும்
துன்பந் தொடர்வறுத்துச் சோதியாய் - அந்஢மைத்துச்
சீரார் பெருந்துறையான் என்னுடைய சிந்தையே
ஊராகக் காண்டானுவந்து !

(திருமூரே ஆட - 47 பங்கித் 41-44)

702. त्रिदेव के लिए, तैंतीस के लिए
 अन्य अगणित देवगण के लिए
 अविदित अज्ञात हैं परमेश्वर
 ऐसे महिमामय महादेव
 भक्तजन के उद्धार हेतु
 दृष्टिगोचर बन कर
 अवनी में उतर आए हैं
 ताकि चरण-वंदना कर सकें भक्तगण
 अपरंपार है असीम है नाथ की करुणा।

(तिरुमुरै आठ - 47 पंक्ति 33-36)

703. हे मन ! करो चिंतन निरंतर
 नाथ के चरण-युगल का
 जिन्होंने हृदय में बसकर
 हमें अपनाया था
 परंत्तुरै में विराजे नाथ
 परम उदार हैं करुणा वरुणालय हैं
 बसे हैं मानस में आकर
 अमोघ औषधि रूप में
 कल्पतरु हैं वह
 प्राप्त कर सकते हैं सब कुछ
 उन्हीं से।

(तिरुमुरै आठ - 47 पंक्ति 37-40)

704. विस्तार करते हुए आनंद का
 दूर करते हुए अज्ञान-तम चतुर्दिक् से
 ध्वस्त करते हुए दुःख-दुरित-परंपरा को
 और स्थापित करते हुए शिवानंद
 मेरे हृदय में
 विराजे हैं श्रीलसित परंत्तुरै के अधीश
 परंज्योति रूप में
 बना लिया मेरे हृद्-देश को
 अपनी आस्थान-नगरी तुल्य ही।

(तिरुमुरै आठ - 47 पंक्ति 41-44)



स्रोत : तिरुवाचकम् - डॉ रेवरेण्ड जी. यू. पोप; 1900 ई.

Source : Tiruvacagam by Rev. G.U. Pope; 1900 A.D.

What shall I do while twofold deeds' fierce flame burns still

out,—

Nor doth the body melt,—nor falsehood fall to dust ?

In mind no union gained with the 'Red Fire's honey'

The Lord of Perun - turrai fair !

Shall I cry out, or wail, or dance, or sing, or watch ?

O Infinite, what shall I do ? The Sire Who fills

With rapturous amaze,—great Perun-turrai's Lord

Let all with me bending adore !

No sense of fault had I ! Nor of refreshment knew,

In safety's path, by worship at His roseate feet.

He stood on earth, His dart shot forth, and to my thought

Linked Himself ;—Perun-turrai's Lord !

He stood before me, rooting out my 'twofold deeds,'—

The mighty Ruler Who at last shall cut off 'birth' ;

Lord of the south ; in Perun-turrai great in grace,

Who dwells ; Balm of all human woes !

To them that know what word can praise the King ?—Him, Who

All worlds brought forth, Whom Vedic god and Māl knew not ;

The mighty Lord, Whose seat is Perun-turrai's shrine ;—

In me to-day, and evermore !

He filled with frenzy ; set me free from 'births' ; my soul
 With speechless fervours thrilled,—blest Perun-turrai's Lord,—
 The Sire in grace exceeding made me His ; the balm
 For all my pain ; the deathless BLISS !

He shouwed the realm where 'births' return no more ; He came
 In grace that no requital knows, Ambrosia sating not !
 This is the light diffus'd within my thought by Him,
 The Lord of Perun-turrai's shrine !

Lines : 1 - 28

48

பண்டாய நான்மறை

पण्डाय नान्मरै

அனுபவத்துக்கு ஐயமின்மை உரைத்தல்

अनुबपत्तुक्कु ऐयमिन्मै उरैतुल्

705. பண்டாய நான்மறையும் பாலனுசா மாலயனும்
கண்டாரு மில்லைக் கடையேனைத்—தொண்டாகக்
கொண்டருளுங் கோகழிஎங் கோமாரற்கு நெஞ்சமே
உண்டாமோ கைம்மா றுரை?

1

705. पण्डाय नान्मरैयुम् पालणुगा मालयनुम्
कण्डारुमित्तैक् कडैयेनैत् - ताण्डागक्
काण्डरुळुम् कोगळि ऍङ् कोमार्कु नञ्जमे
उण्डामो कैम्मरुरै ?

(திருமுரே ஆட - 48 பங்கி 1-4)

706. உள்ள மலமுன்றும் மாய உகுபெருந்தேன்
வெள்ளந் தரும்பாரியின் மேல்வந்த வள்ளல்
மருவும் பெருந்துறையை வாழ்த்துமின்கள் வாழ்த்தக்
சுருவுங் கெடும்பிறவிக் காடு!

2

706. उळ्ळ मलमूर्नु माय उगु परुन्तेन्
वळ्ळम् तरुम् परियिन् मेल् वन्द-वळ्ळल्
मरुवुम् परुन्तुरैयै वाळ्त्तुमिनाळ् वाळ्त्तक्
करुवुम् कडुम् पिरविक् काडु !

(திருமுரே ஆட - 48 பங்கி 5-8)

48

आदि चतुर्वेद

आनन्दानुभव का अमोघत्व

705. अप्राप्य है वह पुरातन चतुर्वेद के लिए
 अदृश्य रहा विष्णु और विरिञ्चि के लिए
 ऐसे महिमामय परमेश्वर
 कोकळिधाम के अधीश ने
 अनुगृहीत किया इस जन को
 निज सेवक रूप में नियुक्त कर
 रे मन ! बोल, इस अपरंपार कृपा का
 कोई प्रतिदान भी है ?

(तिरुमुरै आठ - 48 पंक्ति 1-4)

706. रे मन ! प्रशस्तिगान कर
 पुण्यमय परुन्तुरै धाम का
 जहाँ विराज रहे हैं नाथ परमेश्वर
 अश्वारूढ़ होकर प्रकट हुए जो
 प्रदान करते हैं अनुग्रह-मधु हमें
 जलौध सम प्रचुर मात्रा में
 जिससे नष्ट हो जाते हैं तीनों मल
 प्रशस्ति गाओ महिमामय महेश्वर की
 प्रशस्ति गान से
 जड़-मूल से नष्ट होता है
 जनन-मरण का घोर विपिन।

(तिरुमुरै आठ - 48 पंक्ति 5-8)

938 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

707. காட்டகத்து வேடன் கடலில் வலைவாணன்
நாட்டிற் பரிப்பாகன் நம்வினையை - வீட்டி
அருளும் பெருந்துறையான் அங்கமல பாதம்
மருளுங் கெடநெஞ்சே வாழ்த்து !

3

707. काटटगतु वेडन् कडलिल् वलैवाणन्
नाट्टिर् परिप्पागलम् विनैयै-बीट्टि
अरुळुम् परुन्तुरैयानङ्कमल पादम्
मरुळुम् कड नञ्जे वाळ्तु !

(திருமுரே ஆட - 48 பங்கி 9-12)

708. வாழ்ந்தார்கள் ஆவாரும் வல்வினையை மாய்ப்பாரும்
தாழ்ந்துலகம் ஏத்தத் தருவாருஞ் - தூழ்ந்தமரர்
சென்றிறைஞ்சி ஏத்தும் திருவார் பெருந்துறையை
நன்றிறைஞ்சி ஏத்தும் நமர் !

4

708. वाळ्न्दार्गळ् आवारुम् वल्विनैयै मायप्पारुम्
ताळ्न्दुलग मेद्रत् तगुवारुम् - दूळ्न्दमरर्
चन्त्रिरैज्जि एत्तुम् तिरुवार् परुन्तुरैयै
नन्त्रिरैज्जि येत्तु नमर् !

(திருமுரே ஆட - 48 பங்கி 13-16)

709. நண்ணிப் பெருந்துறையை நம்மிடர்கள் போயகல
எண்ணி எழுகோ கழிக்கரசைப் - பண்ணின்
மொழியாளோ டுத்தர கோசமங்கை மன்னிக்
கழியா திருந்தவனைக் காண் !

5

709. नण्णिप् परुन्तुरैयै नम्मिडर्गळ् पोयगल
एण्णि एळु गो कळिक्करशैप् - पण्णिन्
माळियाळोडु उत्तरकोशमङ्गै मन्निक्
कळियादिरुन्दवनैक् காண் !

(திருமுரே ஆட - 48 பங்கி 17-20)

707. रे मन ! गान कर

तू प्रशस्तिगान कर महिमामय परमेश्वर का
 उनके कमल सरिस चरणयुगल का
 परुन्तुरै के अधीश्वर नाथ का
 जो वन में व्याध बन आए थे
 जो समुद्र में मछुआरे सा जाल फैलाये हैं
 जो नगरी में अश्वपालक बन आए थे
 हमारे लिए
 पधारकर नाश करते हैं कर्म-विपाक का
 प्रशस्तिगान कर चरण कमल का
 ध्वस्त हो जाएगा सकल अज्ञान।

(तिरुमुरै आठ - 48 पंक्ति 9-12)

708. ये हमारे साथी भक्तजन

जो प्रशस्तिगान करते हैं प्रशस्त रूप से
 पुण्यमय पेरुन्तुरै धाम का
 उनका ही जीवन सार्थक है जग में
 वही अपने कर्मबंधन से मुक्त होते हैं
 देवगण के संग सकल अमरवृंद
 आकर जहाँ प्रणत होते हैं
 नाथ के चरणकमल पर
 इतना महिमामंडित है पेरुन्तुरै का धाम।

(तिरुमुरै आठ - 48 पंक्ति 13-16)

709. रे मन ! पहुँच जा महिमामय परुन्तुरै धाम

जिससे दूर हो जाएँ हमारे दुःख - दुरित
 मन मेरे ! चिंतन कर ध्यान कर
 परुन्तुरै के अधीश हमारे नाथ का
 जो विराजे हैं उत्तरकोशमंगै धाम में
 गीत-नाद सम मधुवचनी
 उमा सुकुमारी के संग
 शाश्वत रूप में भक्तजन के हित।

(तिरुमुरै आठ - 48 पंक्ति 17-24)

940 தமில் சீவபக்த கவி மாணிக்வுகவாககர கृत திருவாககம்

710. காணுங் கரணங்கள் எல்லாம்பே ரின்பமெனப்
பேணும் அடியார் பிறப்பகலக் - காணும்
பெரியானை நெஞ்சே பெருந்துறையில் என்றும்
பிரியானை வாயாரப் பேசு!

6

710. காணும்காரணங் கல் லாமு ப்ரெந்ந்மனம்
பெருமடியார் பிர்வுகலக் - காணும்க
பிரியானை நன் னுபெருந்நுறையில் ஐன்றும்
பிரியானை வாயாரம் ப்ரெசு !

(திருமுரே ஆட - 48 பங்கித 21-24)

711. பேசும் பொருளுக் கிலக்கிதமாம் பேச்சிறந்த
மாசின் மணியின் மணிவார்த்தை - பேசிப்
பெருந்துறையே ஐன்று பிறப்பறுத்தேன் நல்ல
மருந்தினடி ஐன்மனத்தே வைத்து!

7

711. ப்ரெசும் பாருவுககு இலகிகதமாம் ப்ரெச்சிர்ந்ந்
மாசின் மணியின் மணிவார்த்தை - ப்ரெசிம்
பெருந்நுறையே ஐன்று பிர்வுபறுத்தேன் நல்ல
மருந்நினடி ஐன் மனத்தே வுத்து !

(திருமுரே ஆட - 48 பங்கித 25-28)

710. अंतर्यामी बन विराज रहे हैं
 सकल करण के साक्षी बनकर
 उसकी कृपा से, उसके अनुग्रह से
 विचार जब विलीन होते हैं
 दृश्य होता है वह अमृतमय
 आनंदरूप में निज साधकों के लिए
 रे मन ! ऐसे महिमामय परमेश्वर का
 परुन्तुरै में नित्यवास करते
 हमारे नाथ का गान कर
 प्रशस्तिगान कर मुंह भर कर।

(तिरुमु्रै आठ - 48 पंक्ति 21-24)

711. सकल वाणी का शब्द-अर्थ का
 एक मात्र लक्ष्य वही है
 जिसके पास जाने पर
 मूक हो जाती है वाणी भी
 ऐसे निर्दोषमणि महार्धमणि का
 मणिरत्न सरिस शब्दों से
 प्रशस्ति-गान कर
 रे मन ! पुण्यमय परुन्तुरै का नाम लेकर
 प्रशस्ति-गान कर
 स्थापित कर निज अंतर् में
 मणि-मंत्र-औषध स्वरूप
 नाथ चरणों को
 कट जाए जिससे जनन-मरण का बंधन।

(तिरुमु्रै आठ - 48 पंक्ति 25-28)



942 तमिल शैवभक्त कवि माणिक्यवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : पाथवे दू गोंड थू द तिरुवाचकम् - जी. वनमीकनाथन्

Source : Pathway to God through the Tiruvacagam by
G. Vanmikanathan

The ancient four Vedas cannot approach Him.
Vishnu and Brahma have not seen Him
Tell me, O my heart ! Is there anything
we can do in return to our King of Kokazhi
Who has graciously accepted base me as His servitor ?

Praise Perunthurai where abides the munificent One —
Who came mounted on a horse —
Who bestows on us great flood of gushing honey (of grace)
that the three *malams* inherent in us may perish.
On praising it, even the very seeds
of the forest of births will perish.

O heart ! That your delusion may perish,
Praise the lotus-like beautiful feet
of the Lord of Perunthurai —
a Hunter in the forest,
a Person who lives by casting the net in the sea,
the Rider on a horse in the city —
Who, destroying our (*sanchita*) karma, bestows grace on us.

Our Kinsmen who befittingly adore
beauty-abounding Perunthurai —
where the immortals go and gather
to pray and praise —
are the only people who live,
they alone will exterminate their potent karma ;
and they alone are fit
for the world to adore in humility.

Remembering the King of eminent Kokazhi,
approach Perunthurai that impediments may quit,
and behold Him
Who along with Her of musical speech
is established there eternally without leaving it.

O my heart ! Praise to Your mouth's content
Him Who never departs from Perunthurai —
the great One Whom those devotees
who cherish all their organs of perception
as tools for gaining supreme bliss
behold that their births may quit them.

Cherishing the feet of the goodly Medicine
in my mind,
and uttering the gem the of a word
of the ineffable flawless Gem —
the object of everything I speak —
I said : "O Perunthurai !" and severed my birth.

Lines : 1 - 24

49. திருப்படையாட்சி

तिरुप्पडैयाट्चि

சிவோபாதி ஒழிதல்

जीवोपाति आंळिदल्

712. கண்க ளிரண்டும் அவன்கழல்
 கண்டு களிப்பன ஆகாதே
 காரிகை யார்கள்தம் வாழ்விலென்
 வாழ்வு கடைப்படும் ஆகாதே
 மண்களில் வந்து பிறந்திடு
 மாறு மறந்திடும் ஆகாதே
 மாலறி யாமலர்ப் பாதம்
 இரண்டும் வணங்குதும் ஆகாதே
 பண்களி கூர்தரு பாடலொ
 டாடல் பயின்றிடு மாகாதே
 பாண்டிநன் னாடுடை யான்படை
 யாட்சிகள் பாடுது மாகாதே
 விண்களி கூர்வதோர் வேதகம்
 வந்து வெளிப்படு மாகாதே
 மின்வலை வீசிய கானவன்
 வந்து வெளிப்படு மாயிடிலே?

1

712. कण्गळिरण्डुमवन् कळल् कण्डु कळिप्पन आगादे
 कारिगैयर्गळ्त्तम् वाळ्विल्न् वाळ्वु कडैप्पडुमागादे
 मण्गळिल् वन्दु पिरन्दिडु मारु मरन्दिडुम् आगादे
 मालरिया मलर्प्यादम् इरण्डुम् वणङ्गुदुमागादे
 पण् कळिकूर् तरु पाडलां डाडल् पयिन्दिडुमागादे
 पाण्डि नन्नाडुडैयान् पडै याट्चिगळ् पाडुदुमागादे
 विण् कळिकूर्वदोर् वेदकम् वन्दु वळिप्पडुमागादे
 मीन्वलै वीशिय कानवन् वन्दु वळिप्पडुमायिडिले ?

(तिरुमुரै आठ - 49 पंक्ति 1-8)

विजय-पताका

जीवोपाधि से निवृत्ति

712. प्रभुदित नहीं होते मेरे नयन-युगल
 प्रभु तुम्हारे कनकाभ चरणयुगल के दर्शन से
 उबरता नहीं कामिनियों के संग काम के लिस
 धरणीतल में बारंबार जन्म-मरण के झंझट से
 प्रणत होता नहीं महाविष्णु के लिए भी
 अविदित तुम्हारे चरणांबुज पर
 संलग्न नहीं होता सुंदर राग-रागिनियों में
 लय-ताल युत गीत-वाद्य-नृत्य में
 आनंददायक दिव्य भजन-संकीर्तन में
 पांड्य-अधीश के रूप में
 तुम्हारे सुशासन के कीर्तिगान में
 प्राप्त नहीं करता दिव्य शक्तियों का
 जिन्हें पाकर देवगण उल्लसित हैं
 इनमें से कुछ भी संभव न होता
 निकृष्ट जन में रसवाद क्रिया भी न होती
 यदि समुद्र में जाल फैलाते प्रभु
 तुम मेरे सामने प्रकट न होते
 और मुझे तुमने अपनाया न होता।

(तिरुमुरै आठ - 48 पंक्ति 1-8)

713. ஒன்றினொ டொன்றுமோ
 ரைந்தினொ டைந்தும் உயிர்ப்பறு மாகாதே
 உன்னடி யாரடி யாரடி
 யோமென உய்ந்தன வாகாதே
 கன்றை நினைந்தெழு தாயேன
 வந்து கணக்கது ஆகாதே
 காரண மாகும் அனாதி
 குணங்கள் கருத்துறு மாகாதே
 நன்றிது தீதென வந்த
 நடுக்கம் நடந்தன ஆகாதே
 நாமுமெ லாமடி யாருட
 னேசெல நண்ணுது மாகாதே
 என்றுமென் அன்பு நிறைந்த
 பராவமு தெய்துவ தாகாதே
 ஏறுடை யான்எனை ஆளுடை
 நாயகன் என்னுள் புகுந்திடிலே.

2

713. आर्त्तिनां डांरुमो
 रैन्दिनां डैन्दुमुयिर्पादु मागादे
 उन्नडियारडि यारडि
 योमन उयन्दन वागादे
 कन्रै निनैन्दळु दायन
 वन्द कणक्कदु आगादे
 कारणमागु मनादि
 गुण्डगळ् करुत्तुरु मागादे
 नन्दिदु तीदन वन्द
 नडुक्कम् नडन्दन वागादे
 नामुमेलामडि யாருட
 नेचल नण्णुदु मागादे
 ऐन्ர்மनन्बु निरैन्द
 परावमुदय्दुव दागादे
 एरुडैयाननै आळुண்டே
 नायकनन्बुळ् पुगुन्दिडिले ।

(திருமூரே ஆட - 49 பங்கித் 9-16)

713. एक से एक का पाँच का पाँच से संयोग न होता
 और इस तरह तन में प्राण का संयोग न होता
 पंचकरणों-पंचेंद्रियों के माध्यम से
 बाह्य-लोक का दर्शन न मिलता
 जीव का, व्यक्ति का अस्तित्व न होता
 जीव-ब्रह्म के बीच पशु-पति का संबंध न होता
 भक्तमंडली में दास बन कर
 तुम्हारी कृपा के लिए अनुग्रह के लिए याचना करना न होता
 बछड़े पर गाय के वात्सल्य समान
 भक्तगण पर भगवान् का वात्सल्य न झरता
 तुम्हारे गुणगणों का विभूतियों का
 चिंतन-मनन-ध्यान न होता
 पुण्य-पाप का विपाक न होता, पाप से डरना न होता
 भक्तजन की संगति पाकर
 उद्धार-कामना का मनोभाव न होता
 प्रेमानंद के अमृत का छककर पान करना न होता
 यह सब कुछ संभव ही न होता
 यदि वृषभारूढ़ प्रभु मेरे नाथ मेरे स्वामी ने
 मेरे अंतर् में प्रवेश न किया होता।

(तिरुमुरै आठ - 49 पंक्ति 9-16)

948 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கீத திருவாசகம்

714. பந்த விகார குணங்கள் பறிந்து
 மறிந்திடு மாகாதே
 பாவனை யாயகருத்தினில் வந்த
 பராஅமு தாகாதே
 அந்த மிலாத அகண்டமும் நம்முள்
 அகப்படு மாகாதே
 ஆதி முதற்பர மாய பரஞ்சுடர்
 அண்ணுவ தாகாதே
 செந்துவர் வாய்மட வாரிட ரானவை
 சிந்திடு மாகாதே
 சேலன கண்கள் அவன்திரு மேனி
 திளைப்பன ஆகாதே
 இந்திர ஞால இடர்ப்பிற வித்துய
 ரேகுவ தாகாதே
 என்னுடை நாயக னாகிய ஈசன்
 எதிர்ப்படு மாமிடிலே.

3

714. पन्द विकार गुणङ्गळ् परिन्दु
 मरिन्दिडु मागादे
 पावनै याय करुत्तिनिल् वन्द
 परा अमुदागादे
 अन्तमिलाद अकण्डमु नम्मुळ्
 अगप्पडु मागादे
 आदि मुदर्परमाय परञ्चुडर्
 अण्णुव दागादे
 चन्तुवर् वाय् मडवारिडरानवै
 चिन्तिडु मागादे
 चेलन कण्गळवन् तिरुमेनि
 तिळैप्पन वागादे
 इन्दिर आल इडर्प्पिरवितुय
 रेगुव दागादे
 ऐन्नुडै नायकनागिय ईशन्
 ऐदिर्प्पडु मायिडिले ।

(तिरुमुரै आठ - 49 पंक्ति 17-24)

714. मुक्त होकर सांसारिक बंधपाश की माया से
 नाथ परमेश्वर को मन में जानना न होता
 मन में भावना में चित्त में
 अमृत सरिस मधुरिम लगते शिवानंद का बोध न होता
 अंतर में अंतहीन अंड-ब्रह्मांड के दर्शन न होते
 आद्यन्त-विहीन आदि परंज्योति का सामीप्य न मिलता
 प्रवाल सरिस अधर युत कामिनियों के
 उत्पन्न होते अकथ संकट से छूट पाना न होता
 मेरे नयनों का नाथ की देह कांति का
 छककर पान करना न होता
 जनन-मरण के चक्र का इंद्रजाल सम
 विलीन होना हुआ न होता
 यदि मेरे नाथ परमेश्वर ने दर्शन न दिया होता।

(तिरुमुरै आठ - 49 पंक्ति 17-24)

950 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

715. என்னணி யார்முலை ஆகும் அளைந்துடன்
 இன்புறு மாகாதே
 எல்லையில் மாக்கரு ணைக்கடல் இன்றினி
 தாடுது மாகாதே
 நன்மணி நாதம் முழங்கியென் ஊன்ற
 நண்ணுவ தாகாதே
 நாதன் அணித்திரு நீற்றினை நித்தலும்
 நண்ணுவ தாகாதே
 மன்னிய அன்பரில் என்பணி முந்துற
 வைகுவ தாகாதே
 மாமறை யும்அறி யாமலர்ப் பாதம்
 வணங்குது மாகாதே
 இன்னியற் செங்கழு நீர்மலர் எந்தலை
 எய்துவ தாகாதே
 என்னையு டைப்பரு மான்அருள் ஈசன்
 எழுந்தரு ளப்பெறிலே.

4

715. ऐन्नणियार् मुलै
 यागम् मळैन्दुड निन्पुरु मागादे
 ऐल्लैयिन् माक्करुणैक्कडल् इरिनि
 दाडुदु मागादे
 नन्मणि नाद मुळङ्गियिन् उळ्ळुर
 नण्णुवदागादे
 नादनणित् तिरुनीद्रिनै नित्तलुम्
 नण्णुव दागादे
 मन्निय वन्परि लन्पणि मुन्दुर
 वैगुव दागादे
 मामरैयुम् मरियामलர்ப் पादम्
 वणङ्गुदु मागादे
 इन्नियर् चङ्कळु नीर् मलर् ऐन्तलै
 ऐयुदुव दागादे
 ऐन्नैयुडैप् परुमानरुळ् ईशन्
 ऐळ् न्दुरुळ्प् परिंले ।

(तिरुमुरै आठ - 49 पंक्ति 25-32)

715. प्राणनाथ मेरे सदय होकर पधारे न होते
 मेरे सुभग-स्तन नाथवक्ष पर लगकर
 समलंकृत न हुए होते
 प्रिय की असीम करुणा के सागर में डूबकर
 आनंद नृत्य करना न होता
 अंतर् में अनहद-नाद का श्रवण न होता
 अमृतेश्वर का मधुमय समागम न हुआ होता
 नाथ की विभूति-रंजित देह-कांति पर आसक्ति न बढ़ती
 भक्तमंडली में मेरी सेवा को मिला
 अग्रिम स्थान न मिला होता
 वेदों के लिए भी अविदित
 प्रशस्त चरणों पर प्रणत होना न होता
 कमल सरिस अरुणिम चरणों का
 मेरे शीर्ष पर शोभित होना न होता
 यदि नाथ ने आकर मुझे प्रेम से अपनाया न होता।

(तिरुमुरै आठ - 49 पंक्ति 25-32)

716. மண்ணினில் மாயை மதித்து வகுத்த
 மயக்கறு மாகாதே
 வானவ ரும்அறி யாமலர்ப் பாதம்
 வணங்குது மாகாதே
 கண்ணிலி காலம் அனைத்தினும் வந்த
 கலக்கறு மாகாதே
 காதல்செ யும்அடி யார்மனம் இன்று
 களித்திடு மாகாதே
 பெண்ணலி ஆணென நாமென வந்த
 பிணக்கறு மாகாதே
 பேரறி யாதஅ நேகப வங்கள்
 பிழைத்தன ஆகாதே
 எண்ணிலி யாகிய சித்திகள் வந்தெனை
 எய்துவ தாகாதே
 என்னையு டைப்பெரு மான்அருள் ஈசன்
 எழுந்தரு ளப்பெறிலே.

5

716. मणिनिन् मायै मदित्तु वगुत्त
 मयक्करु मागादे
 वानवरुम् मरिया मरियामलरप् पादम्
 वणङ्गुदु मागादे
 कणिलि काल मनैत्तिनुम् वन्द
 कलक्करु मागादे
 कादल् चय्युमडियार् मनम् इन्
 कळित्तिडु मागादे
 पण्णलि यार्णन नार्मन वन्द
 पिणक्करु मागादे
 पेररियाद अनेक पवङ्गळ्
 पिळैत्तन வாगादे
 எணிலி யாபிய சித்திபல் வந்தனெ
 எயுதுவ டாபாदे
 என்னுடெ யுடெப் பர்மானருல் இசன்
 எல்லு நருழ்ப்ரிலே ।

(திருமுரே ஆட - 49 பங்கித 33-40)

716. जानबूझकर माया से विरचित
भ्रमजाल से छूटना न हुआ होता
देवगण के लिए भी अविज्ञेय
चरणकमल पर प्रणत होना न होना
जन्मजन्मांतर से चले आ रहे
मायामोह से मुक्त न हुआ होता
प्रेमाभक्ति से उपासनारत भक्तगण के
मन-मयूर का नाचना न होता
नर-नारी-क्लीव आदि भेदभावों का मिटना
सकल सचराचर के साथ एकाकर होना न होता
असंख्य जन्मों से अगणित लोकों से मुक्त होना न होता
अगणित सिद्धियों का मुझमें समावेश हुआ न होता
यदि मेरे नाथ परमेश्वर ने पधारकर
मुझे अपनाया न होता।

(तिरुमुरै आठ -49 पंक्ति 33-40)

717. பென்னிய லுந்திரு மேனிவெண் ணீறு
 பொலிந்திடு மாகாதே
 பூமழை மாதவர் கைகள் குவிந்து
 பொலிந்திடு மாகாதே
 மின்யில் நுண்ணிடை யார்கள் கருத்து
 வெளிப்படு மாகாதே
 வீணை முரன்றெழும் ஓசையில் இன்பம்
 மிகுந்திடு மாகாதே
 தன்னடி யாரடி எந்தலை மீது
 தழைப்பன ஆகாதே
 தானடி யோம்உட னேய வந்து
 தலைப்படு மாகாதே
 இன்னியம் எங்கும் நிறைந்தினி தாக
 இயம்பிடு மாகாதே
 என்னைமுன் ஆளுடை ஈசன்என் அத்தன்
 எழுந்தரு ளப்பெறினே.

6

717. பான்னியலும் திருமேனி வண்ணீர்
 பாலிந்நிடு மாगादे
 பூமழை மாதவர் கைக் குவிந்நு
 பாஹிந்நிடு மாगादे
 மின்னியல் நுண்ணிடை யார்க்கு கருது
 வெளிப்படு மாगादे
 வீணை முரன்றெழும் ஓசையிற் இன்பம்
 மிகுந்நிடு மாगादे
 தன்னாடி யாராடி எந்தலை மீந்நு
 தலைப்பன வாगादे
 தானாடியோ முடனே உய வந்நு
 தலைப்படு மாगादे
 இன்னியமங்கு நிறைந்நினி தாக
 இயம்பிடு மாगादे
 என்னையுமுன் ஆளுடை ஈசன்என் அத்தன்
 எழுந்தரு ளப்பெறினே ।

(திருமறை ஆட - 49 பங்கி 41-48)

717. धवलोज्ज्वल भस्म लेप से जाज्वल्यमान
 कनकाभ देहकांति का दर्शन न हुआ होता
 तपोधनी उपासकों के मुकुलित करकमलों से
 अविराम झरती सुमनवर्षा का दर्शन न हुआ होता
 तटिल्लता-सी तन्वंगी कामिनियों के
 यथार्थ मनोगत का मुझे भान न हुआ होता
 वीणा-वेणु-मुरज-मृदंग घंटा ध्वनियुत
 अनाहत नाद का अंतर में श्रवण न हुआ होता
 नाथ के दासवृंद के चरणकमल
 मेरे शीर्ष पर शोभित यह संयोग न हुआ होता
 भक्तमंडली के संग आकर
 मेरा उद्धार पाना न हुआ होता
 दिग्दिगंत में मधुर-स्वन वाद्यों का
 निनाद न उठा होता
 यदि मेरे नाथ प्राणेश परमेश्वर
 अंतर् के पधार न होते।

(तिरुमुरै आठ - 49 पंक्ति 41-48)

956 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

718. சொல்லிய லாதெழு தூமணி யோசை
 சுவைதரு மாகாதே
 துண்ணென என்னுளம் மன்னிய சோதி
 தொடர்ந்தெழு மாகாதே
 பல்லியல் பாய பரப்பற வந்த
 பராபர மாகாதே
 பண்டறி யாதப ரானுப வங்கள்
 பரந்தெழு மாகாதே
 வில்லியல் நன்னுத லார்மயல் இன்று
 விளைந்திடு மாகாதே
 விண்ணவ ரும்அறி யாத விழுப்பொருள்
 இப்பொரு ளாகாதே
 எல்லையி லாதன எண்குண மானவை
 எய்திடு மாகாதே
 இந்து சிகாமணி எங்களை ஆள
 எழுந்தரு ளப்பெறிலே.

7

718. चाल्लियलादळ् तूमणि योशै
 चुवैतरु मागादे
 तुण्णन वन्नुळ मन्निय चोति
 तांडरन्दळ् मागादे
 पल्लियल् पाय परप्पर वन्द
 परापर मागादे
 पण्डरियाद परानु बवङ्गळ्
 परन्दळ् मागादे
 बिल्लियल् नन्नुदलार् मयल् इन्ऱु
 विळैन्दिडु मागादे
 विण्णवरुमरियाद विळ् पुप्पारुळिप् पारु
 ळ्आगादे
 ऐन्ल्लैयिलादन ऐणुगुण मानवै .
 ऐय्दिडु मागादे
 इन्दु शिकामणि ऐङ्गळै याळ
 ऐळ् न्दुरुळप् पॅरिले ।

(तिरुमुरै आठ - 49 पंक्ति 49-56)

718. सहज निनादित मंजु नूपुर-धुन के संग
घंटा-रणन का अंतर में श्रवण न होता
हृदय में अकस्मात् ही जाज्वल्मान
ज्योतिदर्शन न हुआ होता
वैविध्यपूर्ण अंड-बहिरंड में व्याप्त
परात्पर का मेरे अंतर् में दर्शन न हुआ होता
अब तक अननुभूत
दिव्य अनुभूतियों का भान न हुआ होता
धनुष सदृश भाल-शोभित
कामिनियों के मोहजाल से घूटना न हुआ होता
अमरगण के लिए अविज्ञात
आदिदेव पूर्णब्रह्म का दर्शन न हुआ होता
असीम अगणित अष्ट महा-
सिद्धियों का प्राप्त होना न होता
यदि चंद्रशेखर प्रभु ने हमें
अपनाने की कृपा न की होती।

(तिरुमुरै आठ - 49 पंक्ति 49-56)

719. சங்கு திரண்டு முரன்றெழும் ஒசை
 தழைப்பன ஆகாதே
 சாதி விடாத குணங்கள் நம்மோடு
 சலித்திடு மாகாதே
 அங்கிது நன்றிது நன்றெனு மாயை
 அடங்கிடு மாகாதே
 ஆசை லாம்அடி யாரடி யோம்எனும்
 அத்தனை யாகாதே.
 செங்கயல் ஒண்கண் மடந்தையர் சிந்தை
 திளைப்பன ஆகாதே
 சீரடி யார்கள் சிவானு பவங்கள்
 தெரிந்திடு மாகாதே
 எங்கும் நிறைந்தமு தூறு பரஞ்சுடர்
 எய்துவ தாகாதே
 ஈற்றி யாமறை யோன்எனை ஆள
 எழுந்தரு ளப்பெறிலே.

8

719. चङ्गु तिरण्ड मुरन्ळु मोशै
 तळैप्पन वागादे
 चादि विडाद गुणङ्गळ् नम्मांडु
 चलित्तिडु मागादे
 अङ्गिदु नन्दिदु नन्नेनु मायै
 अडङ्गिडु मागादे
 आशैयला मडियारडि योमनुम्
 अत्तनै यागादे
 चङ्कयलाण् कण् मडन्दैयर् चिन्तै
 तिलैप्पन वागादे
 चीरडियार्गळ् शिवानु बवङ्गळ्
 तरिन्दिडु मागादे
 ऐङ्गु निरैन्दमुदूरु परञ्चुडर्
 ऐय्दुव दागादे
 ईररिया मरैयोन्नै याळ
 वळ्ळुन्दरुळप् पॅरिले।

(तिरुमुरै आठ - 49 पंक्ति 57-64)

719. शंखों के घनीभूत प्रणव का
 सांद्र मधुर-नाद अंतर् में श्रवित न होता
 निज प्रकृति से कभी न बिछुड़ते
 त्रिगुण का हम से बिछुड़कर जाना न होता
 माया का विभ्रम कि 'यह सुंदर है'
 'वह सुंदरतर' के तारतम्य का लोप न होता
 'अब हमारा लक्ष्य नाथ के दासों का
 दासानुदास बनना है' इस भाव का उदय न होता
 शफरी-मीन सी चंचल लोचनियों के
 लोल दृगों के मोह से विराग न हुआ होता
 प्रेमाभक्ति में सिक्त भक्तगण को
 अननुभूत शिवबोध का भान न होता
 अग-जग में व्याप्त नाथ का
 अमृत सम अनुभव अंतर् में न हुआ होता
 वेद भी नहीं जानते जिनका आदि-अंत
 ऐसे नाथ परमेश्वर का पधारना
 मुझे अपना ना न हुआ होता।

(तिरुमुरै आठ - 49 पंक्ति 57-64)



960 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - डॉ. रेवरेण्ड जी. यू. पोप; 1900 ई.

Source : Tiruvacagam by Rev. G.U. Pope; 1900 A.D.

Eyes the twain His jewell'd Feet beholding shall be glad ;—
 SHALL IT NOT BE ?
 Joy amid joys of damsels beautiful shall cease to lure ;—
 SHALL IT NOT BE ?
 The round of birth in earthly worlds shall in oblivion pass;—
 SHALL IT NOT BE ?
 Twin flow'ry Feet that Māl knew not adoring shall we bow ;—
 SHALL IT NOT BE ?
 To sing with gladsome melody, and dance our endless task ;—
 SHALL IT NOT BE ?
 The warriors of the fair Pāṇḍi-land's Lord we shall sing ;—
 SHALL IT NOT BE ?
 The mystic change for which the heav'ns are glad will come ;—
 SHALL IT NOT BE ?
 If He who cast the net,—the Woodman,—come, in grace made
 manifest to me ?

One with one, and five with five,—the life shall last ;—
 SHALL IT NOT BE ?
 Thy servants' servants' servants made, we shall be free ;
 SHALL IT NOT BE ?
 The Mother thinks on her young, and rising hastes ; so shall He
 come ;—SHALL IT NOT BE ?
 The causal qualities that no beginning own shall fill the
 thought ;— SHALL IT NOT BE ?
 At 'this is good,' and 'this is ill,' no more shall trembling shake ;—
 SHALL IT NOT BE ?
 We too to join Thy saints above shall onward pass ;—
 SHALL IT NOT BE ?
 Th' Ambrosia supreme that fills my loving thought we then shall
 gain ;— SHALL IT NOT BE ?
 If the bull's Lord, my Master, Whose I am, within my soul shall
 entering come ?

Lines : 1 - 32

50

ஆனந்த மாலை

आनन्द मालै

சிவாநுபவ விருப்பம்

शिवानुभव विरुप्पम्

720. மின்னே ரனைய பூங்கழல்க்
எடைந்தார் கடந்தார் வியனுலகம்
பொன்னே ரனைய மலர்கொண்டு
போற்றா நின்றார் அமரரெல்லாம்
கன்னே ரனைய மனக்கடையாய்க்
கழிப்புண் டவலக் கடல்வீழ்ந்த
என்னே ரனையேன் இனியுன்னைக்
கூடும் வண்ணம் இயம்பாயே !

1

720. मिन्नैरनैय पूङ्कळलगळ्
अडैन्दार् कडन्दार् वियनुलगम्
पांन्ने रनैय मलर् काण्डु
पोट्रा निन्नार् अमररल्लाम्
कन्नैरनैय मनक्कडैयायक्
कळिप्पुण्डवलक् कडल् वीळ्न्द
ऐन्नैरनैयेन् इनियुन्नैक्
कूडुम् वण्णमियम्बाये !

(तिरुमुரै आठ - 50 पंक्ति 1-8)

50

आनन्द माला

शिवानुभव लालसा

720. तर गए पार चले गए भवसागर के
 वे तुम्हारे भक्तगण
 पहुँच गए तुम्हारे विद्युल्लता सम
 सुमनचरणों पर
 अमरगण पंक्ति-बद्ध खड़े होकर
 वर्षित कर रहे हैं सुमन कनकाभ चरण पर
 और सतत स्तुतिरत हैं भक्ति-भाव से
 नाथ ! परमेश्वर ! बोलो
 कैसे पाएँ मुझ सरिस जन तुम्हारे चरण-कमल
 जो पाषाण सम कठिन हृदय नराधम है
 निमग्न है दुःख-दुरित के भवसागर में।

(तिरुमुरै आठ - 50 पंक्ति 1-8)

964 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

721. என்னால் அறியாப் பதம்தந்தாய்
 யான தறியா தேகெட்டேன்
 உன்னால் ஒன்றுங் குறைவில்லை
 உடையாய் அடிமைக் காரென்பேன்
 பன்னாள் உன்னைப் பணிந்தேத்தும்
 பழைய அடிய ரொடுங்கூடாது
 என்நா யகமே பிற்பட்டிங்
 கிருந்தென் நோய்க்கு விருந்தாயே.

2

721. ऐन्नालரியாप् पदम् तन्दायु
 यानदरियादे कट्टेन्
 उन्नालान्त्तम् कुरैविल्लै
 उडैयाय अडिमैक्कारन्पेन्
 पन्नाळुन्नैप् पणिन्देन्तुम्
 पळैय अडियराडुमु कूडादु
 ऐन्नायकमे पिरपट्टिडु
 इरुन्दन् नोय्क्कु विरुन्दाये।

(तिरुमुरै आठ - 50 पंक्ति 9-16)

722. சீல மின்றி நோன்பின்றிச்
 செறிவே மின்றி அறிவின்றித்
 தோலின் பாவைக் கூத்தாட்டாய்ச்
 கழன்று விழுந்து கிடப்பேனை
 மாலுங் காட்டி வழிகாட்டி
 வாரா உலக நெறியேறக்
 கோலங் காட்டி ஆண்டானைக்
 கொடியேன் என்றோ கூடுவதே?

3

722. शीलमिन्त्रि नोन्पिन्त्रिच्
 चरिवेयिन्त्रि अरिविन्त्रित्
 तोलिन् पावैक्कूत्ताट्टायुच्
 चुळन्न् विळुन्दु किडपोनै
 मालुम् काट्टि वळि काट्टि
 वारा उलग नरियेरक्
 कोलम् काट्टि याण्डानैक्
 काडियेन्नो कूडुवदे ?

(तिरुमुरै आठ - 50 पंक्ति 17-24)

721. सदय होकर समुन्नत पद दिया था मुझे
 समझ नहीं पाया हे नाथ !
 विनष्ट हुआ मैं
 दोष मेरा था तुम्हारा नहीं
 मेरे स्वामी ! और किससे गुहार करूँ
 चिरकाल से तुम्हें नमन करते
 आराधित करते विश्रुत भक्तों के साथ
 सत्संग किये बिना
 अबोध मैं पिछड़ा रहा
 हे नाथ ! पड़ा रहा यही
 भोज बन गया भवरोग के लिए।

(तिरुमुरै आठ - 50 पंक्ति 9-16)

722. हे स्वामी ! मेरे नाथ !
 कब पहुँच पाऊँगा तुम्हारे चरणों पर
 अधम मूर्ख मैं,
 शीलहीन नियम-निष्ठा-हीन
 बुद्धि-विवेक हीन मैं
 व्यर्थ ही नाचता रहा
 चर्म-निर्मित पुतली के समान
 अब नाचते-नाचते थकित श्रांत हूँ
 हा ! कब मिल पाऊँगा तुमसे
 जिन्होंने अपनाया मुझे वात्सल्य से
 सन्मार्ग दिखाया स्नेह का प्रशस्त मार्ग
 जहाँ पहुँचकर लौटना नहीं है।

(तिरुमुरै आठ - 50 पंक्ति 17-24)

966 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

723. கெடுவேன் கேடுமா கெடுகின்றேன்
கேடி லாதாய் பழிகொண்டாய்
படுவேன் படுவ தெல்லாம்நான்
பட்டாற் பின்னைப் பயனென்னே
கொடு நரசுத் தழுந்தாமே
காத்தாட் கொள்ளுங் குருமணியே
நடுவாய் நில்லா தொழிந்தக்கால்
நன்றோ எங்கள் நாயகமே?

4

723. கண்டுவேன் கண்டுமா கண்டுகின்றேன்
கெடிலாடாய்ப் பழிகொண்டாய்
படுவேன் படுவ தெல்லாம்நான்
பட்டாற் பின்னைப் பயனென்னே
கொடு நரசுத் தழுந்தாமே
காத்தாட் கொள்ளுங் குருமணியே
நடுவாய் நில்லா தொழிந்தக்கால்
நன்றோ எங்கள் நாயகமே?

(திருமூர்த்தி ஆட - 50 பங்கி 25-32)

724. தாயாய் முலையைத் தருவானே
தாரா தொழிந்தாற் சவலையாய்
நாயேன் கழிந்து போவேனோ
நம்பி யினித்தான் நல்குதியே
தாயே யென்றுன் தாளடைந்தேன்
தயாநீ என்பால் இல்லையே
நாயேன் அடிமை உடனாக
ஆண்டாய் நான்தான் வேண்டாவோ?

5

724. தாயாய் முலையேத் தருவானே
தாராடாண்டிந்தார் சவலையாய்
நாயேன் கலிந்து போவோ
நமசி இனிதான் நல்குதியே
தாயே ஐந்தான் தாண்டிந்தேன்
தயா நீ ஐந்தால் இல்லையே
நாயேன் அடிமை உடனாக
ஆண்டாய் நான்தான் வேண்டாவோ?

(திருமூர்த்தி ஆட - 50 பங்கி 33-40)

723. विनश्यमान मैं उपक्रम कर रहा हूँ
 और विनष्ट होने के लिए
 दोष-रहित रूप में उस दिन
 तुमने अपनाया था मुझे
 फिर बिगड़ने दिया तो
 नियंत्रणहीन होकर मैं विनष्ट होता गया
 इसका दोष भी देखो आ गया तुम्हीं पर
 मैं सह लूँगा जो भी सहना है
 जितना भी सहना है
 किंतु सोचो तुम्हारे अनुग्रह का क्या अर्थ है?
 हे गुरुमणि ! तुमने मुझे उबारा था
 घोर नरक के गर्त में गिरने से
 और अपनाया था दास रूप में
 अब यदि तुम्हीं विफल हो गए
 निष्पक्ष बनने में
 मैं क्या कह सकता हूँ तुम्हीं सोच लो।

(तिरुमुरै आठ - 50 पंक्ति 25-32)

724. वत्स को स्तन्य (ज्ञान) पिलाती माँ
 तुम नहीं पिलाओ दुग्ध
 तो क्या दुर्बल वत्स नहीं बनूँगा मैं ?
 हे करुणाकर ! अब भी करो कृपा अनुग्रह
 माँ मानकर पहुँचा हूँ तुम्हारे चरणों पर
 तनिक भी दया नहीं मुझ पर ?
 फिर उस दिन क्यों अपनाया था मुझे
 अन्य भक्तों के संग
 अवांछित हो गया अब मैं ?

(तिरुमुरै आठ - 50 पंक्ति 33-40)

968 தமில் சீவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

725. கோவே யருள வேண்டாவோ
கொடியேன் கெடவே அமையுமே
ஆவா வென்னா விடிலென்னை
அஞ்சேல் என்பார் ஆரோதான்
சாவா ரெல்லாம் என்னளவோ
தக்க வாறன் றென்னாரோ
தேவே தில்லை நடமாட
திகைத்தேன் இனித்தான் தேற்றாயே.

6

725. कोवे यरुळ वेण्डावो
कांडियेन् कंडवे अमैयुमे
आवा वन्ना विडिलेन्नै
अज्जेलन्पार् आरोतान्
चावा रंल्ला मन्नकवो
तक्कवारन् रन्नारो
तेवे तिल्लै नडमाडी
तिगैत्तेन् इन्नितान् तेद्राये।

(तिरुमुரै आठ - 50 पंक्ति 41-48)

726. நரியைக் குதிரைப் பரியாக்கி
ஞால மெல்லாம் நிகழ்வித்துப்
பெரிய தென்னன் மதுரையெல்லாம்
பிச்சு தேற்றும் பெருந்துறையாய்
அரிய பொருளே அவிநாசி
அப்பா பாண்டி வெள்ளமே
தெரிய அரிய பரஞ்சோதீ
செய்வ தொன்றும் அறியேனே!

7

726. नरियैक् कुदिरैप् परियाक्कि
जालमल्लाम् निगळ्वित्तुप्
परिय तन्नन् मदुरै यल्लाम्
पिच्चदेटरुम् परन्तुरैयाय्
अरिय पारुळे अविनाशि
अप्पा पाण्डि वळ्ळमे
तरिय वरिय परञ्चोती
चोय्वदान्क् अरियेने !

(तिरुमुरै आठ - 50 पंक्ति 49-56)

725. हे मेरे नाथ ! नटराजराज !

मुझे अनुगृहीत करना क्या तुम्हारा धर्म नहीं है ?

अनुग्रह बिना मैं नष्ट हो जाऊँगा

यदि तुम तरस खाकर नहीं कहोगे 'हा, हंत !'

सोचो कौन है यहाँ जो मुझे अभय दे

मैं पूछ रहा हूँ नाथ

जो नष्ट हो रहे हैं कृपा के बिना

वे मेरे ही स्तर के हैं

क्या अन्य भक्त तुम्हें उलाहना नहीं देंगे ?

कि मेरे साथ जो हुआ अन्याय हुआ

मुझे यों अधर में छोड़ना नहीं चाहिए था

सोचो मेरे नाथ ! तिल्लै में नर्तित नटराज

श्रांत क्लान्त मैं डगमगा रहा हूँ

अब तो दया करो ! दो अवलंब।

(तिरुमुरै आठ - 50 पंक्ति 41-48)

726. हे मेरे नाथ !

तुमने एक बार दिखाई जादूगरी

मधुरा नगरी में

शृगालों को हृष्ट-पुष्ट अश्व बनाकर

चकित भ्रमित रह गए मधुरा के निवासी

और मधुराधिपति पांडुराज भी

तिरुप्परुन्तुरै के अधीश !

महार्ध सत्य वस्तु ! परमात्मन् !

अवनाशी ! मेरे तात !

करुणा के वरुणालय !

नयनों के लिए अदृश्य आत्मज्योति !

मैं चकित भ्रमित हूँ रास्ता न पा रहा

तुममें सायुज्य पाने का।

(तिरुमुरै आठ - 50 पंक्ति 49-56)



970 तमिल शैवभक्त कवि माणिकवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - डॉ. रेवरेण्ड जी. यू. पोप; 1900 ई.

Source : Tiruvacagam by Rev. G.U. Pope; 1900 A.D.

Th' Immortals all have gained Thy flower-like feet,
 bright as the lightning's glance ;—have crossed
 The world's wide sea, and bearing golden flowers
 they praise ! Reveal in love, I pray,—
 Thou Refuge of the stony worthless heart,—
 how one like me, — distressed, —cast off,—
 Sunk in the sea of fond desire, — at length,
 how may I come to Thee ?

Thou gav'st the station blest I knew not of ;
 but I knew not Thy grace, —was lost !
 Master, no failure is in Thee at all ;
 Who comes to aid Thy slave ? I cry !
 Not joined with Thine own ancient saints, —
 who serve and praise Thee many a day ;
 My Leader loved, here left behind I stay ;—
 Thou see'st my lonely pain !

Of virtue void, of penitential grace
 devoid, undisciplined, untaught,—
 As leathern puppet danced about, giddy,
 I whirling fell, lay prostrate there !
 He showed me wondrous things ; He showed the way
 to pass to worlds not reached before ;
 The raft He show'd : when shall I come, a wretch,
 to Him Who made me His ?

I perish, as to perish is my doom ;
 the blame, Imperishable One,
 Thou tak'st ; and, if to suffering doomed, I bear
 my destined woes, what is the gain ?
 O Guru-Gem, Who dost defend and rule,—
 that I sink not in cruel hell ;
 Is't good, our Leader lov'd, that Thou withdraw,
 and stand not in the midst ?

Thou Who dost cherish men like mother dear,—
 uncherish'd, left, a weakling here,—
 And must I perish, I a cur ! In love
 henceforth Thy goodness show to me !—
 I've called Thee 'Mother,' sought Thy sheltering foot,—
 but now Thou hast no grace for me,—
 Vile me, whom Thou 'mid saints didst make Thine own !
 I'm he ! Should'st Thou not save ?

Lines : 1 - 20

51

அச்சோப் பதிகம்

अच्चोष्पदिगम्

அனுபவ வழி அறியாமை

अनुबव वळि अरियामै

727. முத்திநெறி அறியாத
முர்க்கரொடு முயல்வேனைப்
பத்திநெறி அறிவித்துப்
பழவினைகள் பாறும்வண்ணம்
சித்தமலம் அறுவித்துச்
சிவமாக்கி எனைஆண்ட
அத்தனெனக் கருளியவா
றார்பெறுவார் அச்சோவே.

1

727. मुत्तिनरियरियाद
मूर्कराडु मुयल्वेनैप्
पत्तिनरि अरिवित्तुप्
पळविनैगळ् पारुम् वण्णम्
चित्तमल मरुवित्तुच्
चिवमाक्कि ँनैयाण्ड
अत्तननक्करु कियवा
रार् पंरुवारच्चोवे !

(तिरुमुரै आठ - 51 पंक्ति 1-8)

51

विस्मय दशक

ज्ञानदेशिक की अपार करुणा

727. निर्लक्ष्य भटक रहा था मैं
मुक्तिमार्ग से अनभिज्ञ
मूर्ख जनों के संग
ऐसे कदर्य इस जन को
दिखाया भक्ति का सन्मार्ग
काट दिये चित्त के त्रिदोष
जिससे छुटकारा मिला पूर्व-संचित कर्म से
प्रभु ने मुझे शिवमय बनाकर
अपना लिया निज दास रूप में
अहह ! इतनी महती कृपा तथा
अनुग्रह और किसे मिला है
तात रूप प्रभु से !

(तिरुमुरै आट - 51 पंक्ति 1-8)

974 तमिल शैवभक्त कवि माणिक्यवाचकर कृत तिरुवाचकम्

728. நெறியல்லா நெறிதன்னை
நெறியாக நினைவேனைச்
சிறுநெறிகள் சேராமே
திருவருளே சேரும்வண்ணம்
குறியொன்றும் இல்லாத
கூத்தன்தன் கூத்தையெனக்கு
அறியும்வண்ணம் அருளியவா
றார்பெறுவார் அச்சோவே!

2

728. नरियिल्ला नरितनै
नरियाग निनैवेनैच्
चिरुनरिगळ् चेरामे
तिरुवरुळे चेरुम् वण्णम्
कुरियान्मिल्लाद
कूतन् तन् कूतैयनक्कु
अरियुम् वण्णमरुळियवा
रार् पंरुवारच्चोवे !

(तिरुमुऱै आठ - 51 पंक्ति 9-16)

729. பொய்யெல்லாம மெய்யன்று
புணர்முலையார் போகத்தே
மையலுறக் கடவேனை
மாளாமே காத்தருளித்
தையலிடங் கொண்டபிரான்
தன்கழலே சேரும்வண்ணம்
ஐயன்னனக் கருளியவா
றார்பெறுவார் அச்சோவே!

3

729. पाय्यंला मय्यन्
पुणर्मुलैयार् पोगत्ते
मैयलुरक् कडवेनै
माळामे कात्तरुळित्
तैयलिडम् काण्ड पिरान्
तन् कळले चेरुम् वण्णम्
ऐयननक्करुळियवा
रार् पंरुवारच्चोवे ।

(तिरुमुऱै आठ - 51 पंक्ति 17-24)

728. कुपथ को पथ मानकर
 चल रहा था मैं अज्ञान से
 तात रूप प्रभु ने तब
 सुपथ दिखाकर अनुगृहीत किया
 जिससे मैं पहुँचूँ शिवानंद नगरी
 क्षुद्र मार्गों में भटके बिना
 नटराजराज प्रभु ने
 समझा दिया मुझे
 अपना नर्तन-रहस्य भी
 अहह ! ऐसी महती कृपा
 और अनुग्रह किसको मिला है।

(तिरुमुरै आठ - 51 पंक्ति 9-16)

729. असत्य को मृषा को
 सत्य मानकर लिप्त रहा मैं
 सांसारिक विषयों में कामवासना में
 नारी को वामभाग में धरे प्रभु ने
 रक्षित किया मुझे
 रोककर अधोगति के मार्ग से
 ऐसा अनुग्रह किया
 कि मैं पहुँच पाया नाथ चरणयुगल पर
 तात ने जो कृपा बरसाई
 इतना अनुग्रह किसने पाया
 इस जग में।

(तिरुमुरै आठ - 51 पंक्ति 17-24)

976 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

730. மண்ணதனிற் பிறந்தெய்த்து
மாண்டுவிழக் கடவேனை
எண்ணமிலா அன்பருளி
எனையாண்டிட் டென்னையுந்தன்
கண்ணவெண்ணீ றணிவித்துத்
தூய்நெறியே சேரும்வண்ணம்
அண்ணல்எனக் கருளியவா
றார்பெறுவார் அச்சோவே!

4

730. मण्णदनिर् पिरन्द्यत्तु
माण्डु विळक् कडवेनै
एँण मिला अन्यरुळि
एँनैयाण्डिट्टु एँनैयुन्तन्
चुण्णवण्णीरणिवित्तु
तूयनरिये चेरुम् वण्णम्
अण्णलनक्करुळियवा
रार् परुवारच्चोवे !

(திருமுரே ஆட - 51 பங்கி 25-32)

731. பஞ்சாய அடிமடவார்
கடைக்கண்ணால் இடர்ப்பட்டு
நெஞ்சாய துயர்கூர
நிற்பேன்உன் அருள்பெற்றேன்
உயஞ்சேன்நான் உடையானே
அடியேனை வருகஎன்று
அஞ்சேல்என் றருளியவா
றார்பெறுவார் அச்சோவே!

5

731. पञ्जाय अडिमडवार्
कडैक्कण्णाल् इडर्प्पट्टु
नञ्जाय तुयर्कूर
निर्पेनुन् उन् अरुळ् पट्रेन्
उयञ्जेन् नान् उडैयाने
अडियेने वरुगवन्ऱु
अञ्जेलेन्ऱुळियवा
रार् परुवारच्चोवे !

(திருமுரே ஆட - 51 பங்கி 33-40)

730. माटी में जन्म लेकर
 बिता रहा था निरर्थक जीवन
 और मिलने को था माटी में
 प्रभु ने बरसाया अकूत प्रेम-अनुग्रह
 अपनाया, अपना बना लिया
 लेपन कराया विशुद्ध विभूत से
 लगा दिया शिव-सन्मार्ग में
 ऐसा अनुग्रह भला
 जगतीतल में पाया किसने
 मुझे छोड़कर।

(तिरुमुरै आठ - 51 पंक्ति 25-32)

731. ओ मेरे नाथ !
 यदि आपने अपनाया नहीं होता
 मैं खड़ा रहता यही निरंतर
 दुःख-संतप्त भारी हृदय के साथ
 लक्ष्य बन जाता
 सुदीर्घनयना मृदुलगात्रा
 ललनाओं के कटाक्ष-वीक्षण का
 तात ! तुम्हारी कृपा से अनुग्रह से
 उद्धार पा गया मैं भवसागर से
 नाथ ! तुमने बुलाया मुझे वात्सल्य से
 'आओ वत्स ! भय मत करो'
 कहते हुए
 ऐसा अनुग्रह किसे मिला है जग में ?

(तिरुमुरै आठ - 51 पंक्ति 33-40)

978 தமிழ் சைவமத கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

732. வெந்துவிழும் உடற்பிறவி
மெய்யென்று வினைபெருக்கிக்
கொந்துகுழல் கோல்வளையார்
குவிமுலைமேல் வீழ்வேனைப்
பந்தமறுத் தெனையாண்டு
பரிசறஎன் தூரிதமறுத்து
அந்தமெனக் கருளியவா
றார்பெறுவார் அச்சோவே!

6

732. வ்நு விழ்முடர் பிர்வி
மர்ய்ந் விநைபர்விக்
காந்நு குழர் கொல்வலையார்
குவிமுலை மேல் விழ்வைநைப்
பந்நமர்றுத் தெனையாண்டு
பரிசற என் தூரிதமர்றுத்து
அந்நமெனக் கருளியவா
ரார் பர்வாரழ்வை !

(திருமுரே ஆட - 51 பங்கித் 41-48)

733. தையலார் மையலிலே
தாழ்ந்துவிழக் கடவேனைப்
பையவே கொடுபோந்து
பாசமெனுந்து தாழ்ருவி
உய்யுநெறி காட்டுவித்தட்
டோங்காரத் துட்பொருளை
ஐயன்னக் கருளியவா
றார்பெறுவார் அச்சோவே!

7

733. தையலார் மையலிலே
தாழ்ந்நு விழ்வகட்வைநைப்
பையவை காடு ப்ந்நு
பாசமர்ந்நு தாழ்ருவி
உய்யுந்நி காட்துவித்தித்நு
ஓட்காரத்நுத் பர்ருவை
ரையந்நக் கருளியவா
ரார் பர்வாரழ்வை !

(திருமுரே ஆட - 51 பங்கித் 49-56)

732. अहह, कौन प्राप्त कर सकता है
 इतनी कृपा ऐसा अनुग्रह
 जो नाथ ने मुझपर बरसाया
 अंत हो गया जनन-मरण के चक्र का
 जब काट दिया कर्म-बंधन के पाश को
 दूर करके मेरे सकल दोष
 अपनाया मुझे निज दास रूप में
 जो अज्ञानवश समझते हुए
 नश्वर देह को सत्य
 बढ़ा रहा था कर्म-शृंखला को
 फंसने को था इस प्रपंच में
 तुंग-स्तनियों के सुगंधित वक्ष पर
 शंख-सीपियों-निर्मित कटक-चूड़ियों पर।

(तिरुमुरै आठ - 51 पंक्ति 41-48)

733. फंसकर नष्ट होने को था
 ललनाओं के प्रेमजाल में
 नीचे-नीचे धंसने को था
 भवसागर के गर्त में
 नाथ ने धीरे से उठा लिया मुझे
 हटा दिया बंध-पाश के सांकल को
 दिखाया उद्धार का सन्मार्ग
 क्रम-क्रम से परिपक्व बनाकर
 ऊँकार का गूढ़ार्थ समझा दिया
 ऐसी कृपा ऐसा अनुग्रह
 किसने पाया इस जग में ?

(तिरुमुरै आठ - 51 पंक्ति 49-56)

980 தமிழ் சைவபக்த கவி மாணிக்கவாசகர் கृत திருவாசகம்

734. சாதல்பிறப் பென்னுந்
தடஞ்சுழியில் தடுமாறிக்
காதலின்மிக் கணியிழையார்
கலவியிலே விழுவேனை
மாதொருகூ றுடையபிரான்
தன்கழலே சேரும்வண்ணம்
ஆதியெனக் கருளியவா
றார்பெறுவார் அச்சோவே!

8

734. चादल् पिरप्पन्नुम्
तडञ्चुळियिर् तडुमारिक्
कादलिन् मिगक्कणि इळैयार्
कलवियिले विळुवेनै
मादार् कूळैय पिरान्
तन् कळले चेरुम् वण्णम्
आदि ऐनक्करुळियवारु
रार् पंरुवारच्चोवे ! (तिरुमुरै आठ - 51 पंक्ति 57-64)

735. செம்மைநலம் அறியாத
சிதடரொடுந் திரிவேனை
மும்மைமலம் அறுவித்து
முதலாய முதல்வன்தான்
நம்மையும்ஓர் பொருளாக்கி
நாய்சிவிகை ஏற்றுவித்த
அம்மையெனக் கருளியவா
றார்பெறுவார் அச்சோவே!

9

735. चंमै नलम् अरियाद
चिदडराडुम् तिरिवेनै
मुम्मै मलम् अरुवित्तु
मुदलाय मुदत्वन् तान्
नम्मैयुमोर् पारुळाविक
नाय् चिविगै एट्रुवित्त
अम्मै ऐनक्करुळियवा
रार् पंरुवारच्चोवे ! (तिरुमुरै आठ - 51 पंक्ति 65-72)

திருச்சிற்றம்பலம்

734. जनन-मरण के भंवर में
 डगमगाता हुआ मैं गिरने को था
 छलनामय प्रपंच के गर्त में
 फंसकर तन्वंगी ललनाओं के भोग में
 नारी को अर्ध अंग दिये प्रभु ने
 अनुग्रह बरसाया दिखाया सन्मार्ग
 आदि अनादि विद्या का उपदेश किया
 जिससे मैं पहुँच गया
 नाथ के चरणयुगल पर
 अहह ! ऐसी कृपा ऐसा अनुग्रह
 किसने पाया है इस जग में ?

(तिरुमुरै आठ - 51 पंक्ति 57-64)

735. अनभिज्ञ होकर कल्याणकारी मार्ग से
 मतिहीनों के संग भटक रहा था मैं
 नाथ ने कृपा बरसाई
 मातृरूप तात ने आदिमूल प्रभु ने
 काट दिया करुणा से मेरे त्रिदोष को
 इस तरह इस अकिंचन को बना दिया कुछ
 जैसे श्वान को चढ़ा दिया हो पालकी पर
 ऐसी करुणामय माँ ने
 जो अनुग्रह मुझ पर बरसाया
 अहह ! ऐसा अनुभव किसने पाया है
 इस जगतीतल में ?

(तिरुमुरै आठ - 51 पंक्ति 65-72)

திருச்சிற்றம்பலம்

982 तमिल शैवभक्त कवि माणिक्यवाचकर कृत तिरुवाचकम्

स्रोत : तिरुवाचकम् - डॉ रेवरेण्ड जी. यू. पोप; 1900 ई.

Source : Tiruvacagam by Rev. G.U. Pope; 1900 A.D.

To me, who toiled and moiled 'mid fools, that knew not WAY of
final peace,
 He taught the WAY of pious love ;—and that 'old deeds' might
cease and flee,
 Purging the foulness of my will, made me pure bliss, took for
His own ;—
 'Twas thus the FATHER gave me grace : O RAPTURE !
WHO SO BLEST AS I ?

A WAY that was no rightful WAY I followed, deeming it the
WAY,—
 That I might seek no meaner WAY, but only seek His sacred grace
 To gain,—He, Whom no signs describe, His mystic DANCE has
given to know !
 'Twas thus the DANCER gave me grace : O RAPTURE ! WHO SO
BLEST AS I ?

Me trusting every lie as truth,—plunged in desire of women's
charms,—
 He guarded that I perished not with soul perturb'd,—the Lord
Superne,
 On whose left side the Lady dwells ! He brought me nigh His
jewell'd feet,—
 'Twas thus my GURU gave me grace : O RAPTURE ! WHO SO
BLEST AS I ?

Afflicted sore by glancing eyes of silly damsels, soft of foot,—
I stood, my mind by sorrow pierced ; and then Thy grace I
gain'd,—was sav'd,—
Ev'n I, O MASTER mine ! Thou bad'st Thy servant come ; 'Fear
not,' Thou said'st !
'Twas thus that grace to me was given : O RAPTURE ! WHO SO
BLEST AS I ?

Birth of this frame that burns and falls I took for true,—did many
deeds ;
In converse joy'd with maidens wreathed in flowers, with
lustrous armlets deck'd.
My bonds He cut, made me His own, cleansed foulness so no
trace was left !
'Twas thus the LAST-ONE gave me grace : O RAPTURE ! WHO SO
BLEST AS I ?

Lines : 1 - 24

डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

लगभग चार दशक से साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय भावात्मक एकता के लिए निष्ठापूर्वक साधनारत डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ हिन्दी, तमिल, संस्कृत एवं पंजाबी के प्रतिष्ठित विद्वान् हैं। आपने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठियों एवं सम्मेलनों में सक्रिय भाग लेकर ख्याति अर्जित की है। हिन्दी अकादमी, दिल्ली (1986, 1989), बिहार राजभाषा विभाग (1986) द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित; 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान' द्वारा सौहार्द सम्मान और तमिलनाडु की 'अमुद सुरभि' द्वारा 'तिरुवल्लुवर-भारती सम्मान'; अन्तर्राष्ट्रीय कला एवं संस्कृति परिषद् नजीबाबाद (उ. प्र.) द्वारा 1995 का 'अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी साधक सम्मान-समग्र लेखन' तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की हिन्दी अकादमी एवं भारतीय अनुवाद परिषद् द्वारा अलंकृत डॉ. रवीन्द्र सेठ तमिल-साहित्य को कोटि-कोटि हिन्दी भाषियों के लिए निरंतर प्रसारित करने वाले एकमात्र उत्तरभारतीय विद्वान् हैं। 'तमिल शैवभक्त कवि : सुन्दरमूर्ति नायनार्, अप्पर एवं तिरुज्ञानसम्बन्धर', 'तमिलनाडु के मंदिर', 'तिरुक्कुरल-तमिल का गौरव-ग्रंथ'; 'तिरुमंतिरम्'; 'रामलिंग स्वामी-वल्ललार की ज्योति साधना'; 'परियपुराणम्'; 'तमिल का प्राचीन साहित्य'; 'तमिल महाकवि : तिरुवल्लुवर'; 'तमिल वैष्णव-भक्त कवि : आळ्वार'; 'भक्ति की प्रारम्भिक कृति : मुकुन्दमाला'; 'सुब्रह्मण्य भारती'; 'नीति कुसुमाञ्जलि'; 'तिरुवल्लुवर एवं कबीर का तुलनात्मक अध्ययन' (शोध-ग्रंथ) इत्यादि ग्रंथों द्वारा आपने भारतीय साहित्य में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। इसके अतिरिक्त रेडियो और दूरदर्शन के माध्यम से अनेकानेक वार्त्ताओं तथा नौ भारतीय भाषाओं के साहित्य के मूलभूत वैचारिक ऐक्य का संदेश देने वाले 'चयन' शीर्षक दूरदर्शन धारावाहिक कार्यक्रम द्वारा आपने अपनी अलग पहचान बनाई है। विविध समाचार पत्रों, पत्रिकाओं में आपके साहित्यिक योगदान पर अग्रलेख प्रकाशित होने तथा आकाशवाणी के साक्षात्कारों द्वारा आपके कार्य के राष्ट्रीय महत्त्व की स्वीकृति हुई है। डॉ. रवीन्द्र सेठ द्वारा आस्थापूर्ण साहित्य-साधना के माध्यम से तमिल और हिन्दी के बीच एक सशक्त सेतु प्रस्तुत हुआ है इस सेतु का आधार है : प्रेम, सद्भाव तथा पारस्परिक विश्वास और लक्ष्य है : साहित्य और संस्कृति के सम्यक् ज्ञान द्वारा राष्ट्र की भावात्मक एकता को सुदृढ़ करना। आप 'तमिल हिन्दी संगम' के संस्थापक अध्यक्ष एवं 'आथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया (दिल्ली)' के पूर्व-संयोजक तथा राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य और इंस्टीच्यूट ऑफ एशियन स्टडीज़ के परामर्शदाता के रूप में साहित्यिक गतिविधियों में सक्रिय योगदान करते रहे हैं। सम्प्रति दिल्ली विश्वविद्यालय के पी. जी. डी. ए. वी. (सांध्य) कॉलेज में हिन्दी विभाग में रीडर के पद पर कार्यरत हैं।

साहित्य शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित

तमिल साहित्य एवं संस्कृति विषयक प्रागाणिक सागगी हिन्दी में प्रथम बार उपलब्ध। राष्ट्रीय भावात्मक ऐक्य को सुदृढ़ करनेवाली संग्रहणीय गहत्वपूर्ण कृतियाँ, डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ की तीन दशकों की अनवरत साधना का प्रतिफल। मूल तमिल स्रोतों से सागगी प्रस्तुत कर हिन्दी को सगृह्य करने का गहव् कार्य। इसके अतिरिक्त संस्कृत, गराठी, मलयालग आदि भारतीय भाषाओं की सागगी का आकलन।

तिरुवाचकम् : तमिल शैव भक्त कवि माणिक्यवाचकर कृत

लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिल साहित्य का भक्ति और रहस्यवादी चिंतन से युक्त प्राचीन ग्रंथ। आस्था और प्रकाश का अद्भुत संयोग; ईश्वर की अगाध करुणा के रहस्यों को जानने की प्रक्रिया; अद्भुत भावपूर्ण आलोड़न, 'आनन्द के सागर' में डूबने के लिए एक प्रामाणिक कृति। तमिल साहित्य ही नहीं, भारतीय भक्ति-परम्परा और चिंतधारा के संदर्भों को स्पष्ट करने में इस हिन्दी अनुवाद की उपादेयता असंदिग्ध है। प्रारम्भिक अंश में इस कृति का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। विविध अंग्रेजी अनुवादों के कतिपय चयनित अंश तुलनात्मक अध्ययन के लिए प्रस्तुत किए गए हैं। समग्र कृति का मूल तमिल, देवनागरी लिप्यंतरण एवं हिन्दी भावानुवाद पांच चयनित प्रसिद्ध अंग्रेजी अनुवादों से तुलनीय सामग्री सहित पृष्ठ 984; मूल्य रु. 650/- प्रथम संस्करण 2004 ई. | ISBN 81-850 73-21-X

तमिल शैवभक्त कवि : सुन्दरमूर्ति नायनार्

प्रधान सम्पादक : डॉ. एन्. महालिंगम्

लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिल के तेवारम् ग्रंथों के आधार पर तमिल के प्रभु-मित्र कवि सुन्दरमूर्ति नायनार् के चार सौ पद मूल तमिल, लिप्यंतर एवं हिन्दी भावानुवाद सहित। सुन्दरमूर्ति के काव्य एवं अन्य प्रामाणिक स्रोतों के आधार पर उनकी भक्ति, साधना तथा चिंतन का विस्तृत विवेचन एवं अध्ययन। पृष्ठ IV + 424; मूल्य रु. 360/- प्रथम संस्करण 2003 ई. | ISBN 81-85073-19-8

तमिल शैवभक्त कवि : अप्पर

प्रधान सम्पादक : डॉ. एन्.महालिंगम्
लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिल के तेवारम् ग्रंथों के आधार पर तिरुनापुक्करसु—अप्पर के चार सौ पद मूल तमिल, लिप्यंतर एवं हिन्दी भावानुवाद सहित। अप्पर के काव्य एवं अन्य प्रामाणिक स्रोतों के आधार पर उनकी भक्ति-साधना, समाज-चेतना तथा चिंतन का विस्तृत विवेचन एवं अध्ययन। पृष्ठ xl + 375; मूल्य रु. 360/-, प्रथम संस्करण - 2002 ई.। ISBN 81 - 85073 - 18 - X

तमिलनाडु के मंदिर

प्रधान सम्पादक : डॉ. एन्. महालिंगम्
लेखक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिलनाडु की धार्मिक, सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक विविध मंदिरों का विशद परिचय, काव्य और जीवन के साथ इन मंदिरों का सम्बन्ध इस ग्रंथ का मूल स्वरूप है। इस कृति में चिदम्बरम्, रामेश्वरम्, काँचीपुरम्, कन्याकुमारी, श्रीरंगम्, पार्थसारथी, बृहदीश्वर, कुंभकोणम्, कपालीश्वर आदि मंदिरों का विस्तृत परिचय है। राष्ट्रीय भावात्मक एवं सांस्कृतिक एकता के आधारस्तम्भ इन मंदिरों का अध्ययन निश्चय ही महत्त्वपूर्ण है। पृष्ठ 216, मूल्य रु. 150/-, प्रथम संस्करण - 2002 ई. आठ रंगीन चित्रों सहित। ISBN 81 - 85073 - 17 - 1

(तमिल साहित्य और संस्कृति ग्रंथमाला का द्वितीय मुक्तामणि)

तमिल शिव-भक्त कवि तिरुज्ञानसम्बन्धर

प्रधान सम्पादक : डॉ. एन्. महालिंगम्
लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिलनाडु की शैव-भक्ति परम्परा में सातवीं शती के अद्वितीय बालक-संत, ईश्वर-पुत्र ज्ञानसम्बन्धर के काव्य से चयनित 350 पद। मूल तमिल, देवनागरी लिप्यंतर एवं हिन्दी भावानुवाद सहित ज्ञानसम्बन्धर की भक्ति, ज्ञान और साधना के विविध पक्षों का विस्तृत, मूल तमिल स्रोतों से विवेचन। पृष्ठ XIV + 352, मूल्य रु. 320/- प्रथम संस्करण 2000 ई.। ISBN 81 - 85073 - 15 - 5

तिरुक्कुरल—तमिल का गौरव ग्रंथ

प्रधान सम्पादक : डॉ. एन्. महालिंगम्
लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ
सह-अनुवादक : डॉ. एच. बालसुब्रह्मण्यम्

तिरुवल्लुवर कृत तिरुक्कुरल तमिल का अद्वितीय ग्रंथ है। धर्म, अर्थ, काम तीनों विषयों पर इसकी सामग्री विश्वविख्यात है। इस कृति का मूल तमिल, देवनागरी लिप्यंतर और प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद। वी. वी. एस. अय्यर के 1915 ई. के अंग्रेजी अनुवाद सहित; धर्म, अर्थ और काम का डॉ. रवीन्द्र सेठ द्वारा विस्तृत अध्ययन। तिरुक्कुरल के अधिकारी विद्वान् डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ और तमिलभाषी हिन्दी विद्वान् डॉ. एच. बालसुब्रह्मण्यम् का एक नवीन प्रयास। रु. 400/-, पृष्ठ 600, संस्करण - 1999 ई. | ISBN 81-85073-12-0

जीवन मोक्ष

प्रधान सम्पादक : डॉ. एन्. महालिंगम्
लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ
सह-अनुवादक : डॉ. एच. बालसुब्रह्मण्यम्

जीवन को मोक्ष बनाने में सक्षम तमिल के प्राचीन ग्रंथ तिरुवल्लुवर कृत तिरुक्कुरल का सम्पूर्ण हिन्दी अनुवाद। एक अद्वितीय नीति ग्रंथ, तमिलनाडु की सांस्कृतिक धरोहर, धर्म, अर्थ और काम का विशद काव्यमय विवेचन। रु. 120/-, पृष्ठ 200, संस्करण - 1999 ई.।

ISBN 81-85073-13-9

नीति कुसुमाञ्जलि

संकलन, अनुवाद : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ
एवं संपादन : डॉ. देवकन्या जगन्नाथ

मानव-कल्याण, लोकमंगल और नैतिक दृष्टि का लक्ष्य लेकर वेद, उपनिषद्, स्मृति-ग्रंथ, प्रमुख महाकाव्य, नाटक तथा कथा-साहित्य से संकलित नीतिवचनों का अद्भुत, प्रामाणिक संग्रह; मूल संस्कृत, हिन्दी अनुवाद सहित। रु. 320/-, पृष्ठ 330, दो रंगों में छपाई। संस्करण - 2000 ई. | ISBN 81-85073-20-1

तमिल आगमशास्त्र : तिरुमूलर कृत तिरुमंतिरम्

प्रधान सम्पादक : डॉ. एन्. महालिंगम्
लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिल के प्राचीन आगमशास्त्र तिरुमूलर कृत तिरुमंतिरम् का अध्ययन। मूल तमिल, देवनागरी लिप्यंतर एवं हिन्दी काव्यानुवाद सहित 800 से अधिक पदों का चयन। ज्ञान और साधना का प्रामाणिक स्रोत; तंत्र, मंत्र, यंत्र तथा आध्यात्मिक दृष्टि से नवीन, मौलिक सामग्री। रु. 450/-, पृष्ठ 650, संस्करण - 1998 ई.। आर्टपेपर-मुद्रित 12 रंगीन चित्रों सहित।

ISBN 81-85073-11-2

रामलिंगस्वामी - वल्ललार की ज्योति-साधना

प्रधान सम्पादक : डॉ. एन्. महालिंगम्
लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिलनाडु के भक्त-चिंतक वल्ललार— रामलिंग स्वामी के 250 से अधिक मूल तमिल पद, लिप्यंतर एवं भावानुवाद सहित। कवि-साधक के भक्ति, साधना, दर्शन, समाज, पर्यावरण आदि विषयों पर विवेचन सहित एक हृदयग्राही संकलन। रु. 360/-, पृष्ठ 480, 12 रंगीन चित्रों सहित, संस्करण - 1996 ई.। ISBN 81-85073-09-0

सचित्र पेरियपुराणम्

प्रधान सम्पादक : डॉ. एन्. महालिंगम्
लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

ग्यारहवीं शती के तमिल भाषा के 'तिरुत्तोण्डर पुराणम्'—जो पेरिय पुराणम् के नाम से प्रसिद्ध है—को आधार बनाकर संक्षिप्त कथा-रूप तथा 300 से अधिक चयनित पदों का भाषांतर। 63 रंगीन चित्रों एवं इतने ही रेखाचित्रों से युक्त यह कृति भक्ति-साहित्य का अद्भुत ग्रंथ है। भारतीय भक्ति-साहित्य, विशेषतः शैव-भक्ति की परम्परा का यह ग्रंथ पहली बार हिन्दी में प्रस्तुत किया गया है। 63 भक्तों की अभूतपूर्व गाथाएँ। रु. 200/-, पृष्ठ 250, जिसमें आर्टपेपर पर 63 रंगीन एवं 63 रेखाचित्र हैं। 23 × 18 सें. मी. आकार में उपलब्ध। संस्करण - 1994 ई.। ISBN 81-85073-08-02

तमिल शैव-भक्ति साहित्य

लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ
भूमिका : डॉ. एन्. महालिंगम्

सातवीं शती से उन्नीसवीं शती तक के आठ प्रमुख तमिल शैव-भक्तों के काव्य के मूल तमिल से चयनित पद, देवनागरी लिप्यंतरण, संदर्भ, भावानुवाद, साहित्य एवं भक्ति-भावना का परिचय। आर्टपेपर पर ग्यारह रंगीन चित्र : 428 पृष्ठ, रु. 450/-, प्रथम संस्करण - 1993 ई. | ISBN 81-85073-06-6

तमिल शैव-भक्त कवि : नायनमार

लेखक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिल के आठ प्रमुख शिव-भक्त कवियों के जीवन, साहित्य, चिंतन, भक्ति-भावना, सामाजिक योगदान आदि का प्रामाणिक परिचय; संस्कृत एवं तमिल में 'शिव' की अवधारणा का विकास, 'शैव-सिद्धान्त' दर्शन का विवेचन। रु. 150/-, पृष्ठ 192, संस्करण - 1993 ई. | ISBN 81-85073-07-4

तमिल महाकवि : तिरुवल्लुवर

लेखक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिलनाडु की चिंतन-प्रक्रिया एवं सांस्कृतिक चेतना के परिचायक आधार-भूत ग्रंथ 'तिरुक्कुरल' का सम्पूर्ण अध्ययन। रु. 60/-, पृष्ठ 120, संस्करण - 1992 ई. | ISBN 81-85073-01-5

तमिल का प्राचीन साहित्य

लेखक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

ईसा से कई शती पूर्व का तमिल व्याकरण तालकाप्पियम्, पांचवीं शती से पूर्व की अद्भुत काव्यकृतियां एट्टुतोगै (अष्टकाव्य संग्रह), पत्तुप्पाट्टु (दस दीर्घ कविताएँ), तिरुक्कुरल आदि के विषय में असाधारण सामग्री। रु. 100/-, पृष्ठ 208, संस्करण - 1991 ई. | (हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा 'श्रेष्ठकृति पुरस्कार' प्राप्त कृति) | ISBN 81-85073-00-7

तमिल वैष्णव-भक्त कवि : आळ्वार

लेखक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

भारतीय वैष्णव भक्ति-परम्परा के स्रोतों का आकलन, पांचवीं से नवीं शती के बारह आळ्वार वैष्णव-भक्त कवियों का समग्र, प्रामाणिक परिचय। नम्माळ्वार, पेरियाळ्वार, आण्डाळ, तोण्डरअडिपोडि आळ्वार, कुलशेखर आळ्वार आदि का मूल तमिल स्रोतों से विवेचन। रु. 100/-, पृष्ठ 180, संस्करण - 1991 ई. |

ISBN 81-85073-04-X

(हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा 'श्रेष्ठकृति पुरस्कार' से सम्मानित कृति)।

सुब्रह्मण्य भारती

लेखक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिल के राष्ट्रीय महाकवि सुब्रह्मण्य भारती के क्रांतिकारी जीवन और साहित्य का अध्ययन। राष्ट्रीय कविताएँ (देसिय गीतंगळ), कृष्ण-गीत (कण्णन् पाट्टु), कोयलगीत (कुयिल् पाट्टु), पांचाली की शपथ (पांचाली शपथम्), दार्शनिक तथा प्रकृति विषयक कविताओं आदि का परिचय, चार चित्रों सहित। रु.100/-, पृष्ठ 202, संस्करण - 1991 ई. | ISBN 81-85073-02-3

(राजभाषा विभाग, बिहार सरकार द्वारा अखिल भारतीय श्रेष्ठग्रंथ पुरस्कार प्राप्त कृति)।

भक्ति की प्रारम्भिक कृति : मुकुन्दमाला

लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

संस्कृत में तमिल वैष्णव कवि कुलशेखर आळ्वार की नवीं शती की प्रसिद्ध कृति, आळ्वार वैष्णव-साहित्य का संक्षिप्त परिचय, मूल संस्कृत, हिन्दी अनुवाद, विशेष टिप्पणियों सहित। रु. 50/-, पृष्ठ 112, संस्करण - 1991 ई.।

ISBN 81-85073-03-1

तिरुवल्लुवर एवं कबीर का तुलनात्मक अध्ययन

लेखक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

दिल्ली विश्वविद्यालय का तमिल-हिन्दी तुलनात्मक विषयक प्रथम प्रकाशित महत्त्वपूर्ण शोध-प्रबन्ध; शोधकार्य अथवा शिक्षा संस्थानों के लिए सीमित संख्या में प्रतियां उपलब्ध हैं।

तुकाराम एवं कबीर का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. (श्रीमती) रमेश सेठ द्वारा मूल मराठी से प्रस्तुत एक प्रामाणिक, शोधपरक अध्ययन

लेखिका : डॉ. (श्रीमती) रमेश सेठ

महाराष्ट्र के वारकरी सम्प्रदाय और वैष्णव-भक्ति परम्परा के संदर्भ में संत तुकाराम और कबीर का शोधपरक तुलनात्मक अध्ययन। दोनों कवियों के भक्ति, ज्ञान, चिंतन, सामाजिक-जीवन, दर्शन और काव्य का विस्तृत विवेचन, विश्लेषण। रु. 260/-, पृष्ठ 326, संस्करण - 1992 ई.।

ISBN 81-85073-05-8

महाराष्ट्र की वैष्णव-भक्ति परम्परा और तुकाराम २११

लेखिका, अनुवादक : डॉ. (श्रीमती) रमेश सेठ

महाराष्ट्र के महान् संत कवि तुकाराम के काव्य से चयनित 200 पदों का मूल मराठी सहित हिन्दी अनुवाद; तुकाराम के मूल हिन्दी पदों के संकलन सहित। अनन्य भक्ति से युक्त 'तुकाराम-गाथा' राष्ट्र की भक्ति-परम्परा और आध्यात्मिक चिंतन की एक अमूल्य और शाश्वत धरोहर है। तुकाराम के चिंतन को वैष्णव-भक्ति परम्परा के संदर्भ में प्रस्तुत करने के लक्ष्य से आधारभूत सामग्री सहित। डॉ. (श्रीमती) रमेश सेठ के सतत अध्ययन और साधना का प्रतिफल। पृष्ठ 200, मूल्य रु. 150/-, प्रथम संस्करण - 2002 ई. | ISBN 81-85073-14-7

महात्मा गांधी : चिंतन का व्यावहारिक पक्ष

लेखक : डॉ. एन् महालिंगम

अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

डॉ. एन्. महालिंगम् कृत महात्मा गांधी विषयक 19 लेखों का तमिल से हिन्दी अनुवाद। भारतीय संदर्भों और समस्याओं का प्रामाणिक विवेचन, विश्लेषण। पंचायतराज, अहिंसातत्त्व, अर्थ-शास्त्रीय चिंतन, धर्माधता का प्रभावी विकल्प आदि अनेक विषयों पर तमिलनाडु के प्रख्यात गांधीवादी चिंतक डॉ. एन्. महालिंगम् की सशक्त, स्पष्ट चिंतन-शैली के लेख। गांधीजी के 12 चित्र आर्टपेपर पर; रु. 100/-, पृष्ठ 144, संस्करण - 1997 ई.।

ISBN 81-85073-10-4

प्रकाशनाधीन कृतियां

तमिल साहित्य और संस्कृति ग्रन्थमाला

तमिल के विष्णु भक्त कवि :

लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिल साहित्य के विष्णु-भक्त कवियों का गम्भीर, गहन विवेचन और परिचय। प्रत्येक कवि की चयनित कविताएँ देवनागरी लिप्यंतरण एवं हिन्दी अनुवाद सहित। तमिल के वैष्णव भक्ति साहित्य के लिए मौलिक, नवीन सामग्री।

तमिल के शिव भक्त कवि :

लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिल की विशाल भक्ति-परम्परा के शिवभक्त कवियों का साहित्य, चिंतन, भक्ति-भावना, समाज-चेतना आदि पर नवीन सामग्री। प्रत्येक कवि की चयनित कविताओं का मूल तमिल, देवनागरी, लिप्यंतरण एवं हिन्दी अनुवाद सहित।

तमिलनाडु के शिवभक्त

लेखक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

पेरियपुराणम् में वर्णित शिव-भक्तों की अनूठी कहानियाँ। त्याग, तपस्या, ज्ञान, भक्ति की भावनाओं को पोषित करनेवाली इन गाथाओं से तमिलनाडु के शैव भक्ति-मार्ग का विस्तृत एवं गहन-गम्भीर परिचय प्राप्त होता है।

रामलिंगस्वामी और उनका काव्य

लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिलनाडु के आधुनिक काल के महान् चिंतक, संत, समाज सुधारक रामलिंगस्वामी के काव्य का विविध पक्षों से परिचय एवं विश्लेषण तथा मूल तमिल से एक सौ कविताओं का अनुवाद।

(इसके अतिरिक्त डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ द्वारा लिखित

‘सुब्रह्मण्य भारती’, ‘तिरुक्कुरल’ एवं ‘भारती के विचार’ शीर्षक से

तीन पुस्तकें प्रकाशन विभाग, भारत सरकार

द्वारा प्रकाशित हैं।)



திருவாசகம்

சைவ இலக்கியக் கவி மாணிக்கவாசகர்

ஆசிரியர், மொழிபெயர்ப்பாளர்
டாக்டர் ரவீந்தராகுமார் சேத்



साहित्य शोध



संस्थान

साहित्य
शोध
संस्थान

साहित्य शोध संस्थान

8ए/141, पश्चिमी विस्तार क्षेत्र, करोलबाग,
नई दिल्ली-110005 दूरभाष : 2572-6216

SAHITYA SHODH SANSTHAN
8-A/141, W.E.A. KAROL BAGH
NEW DELHI-110005, PHONE: 2572-6216